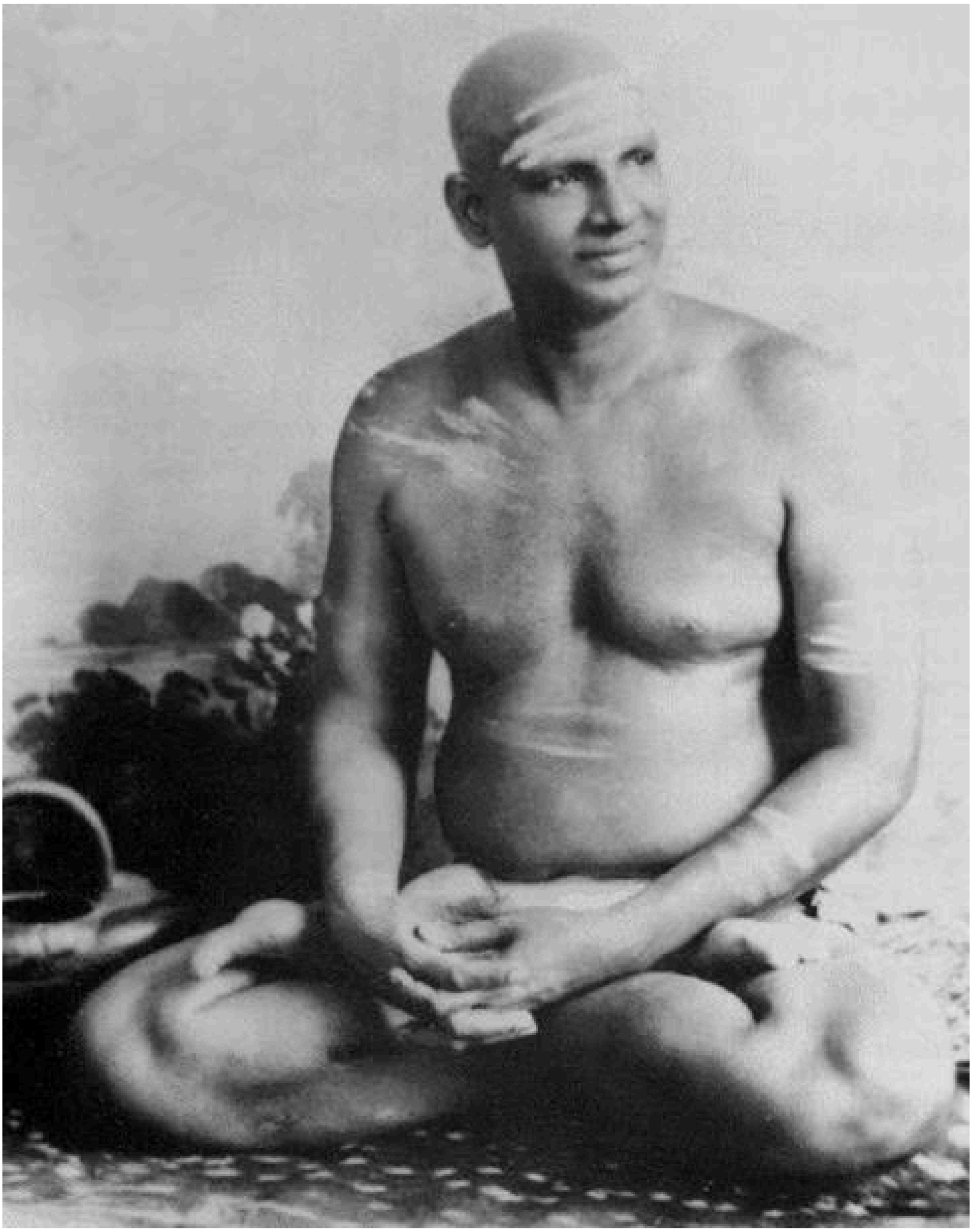
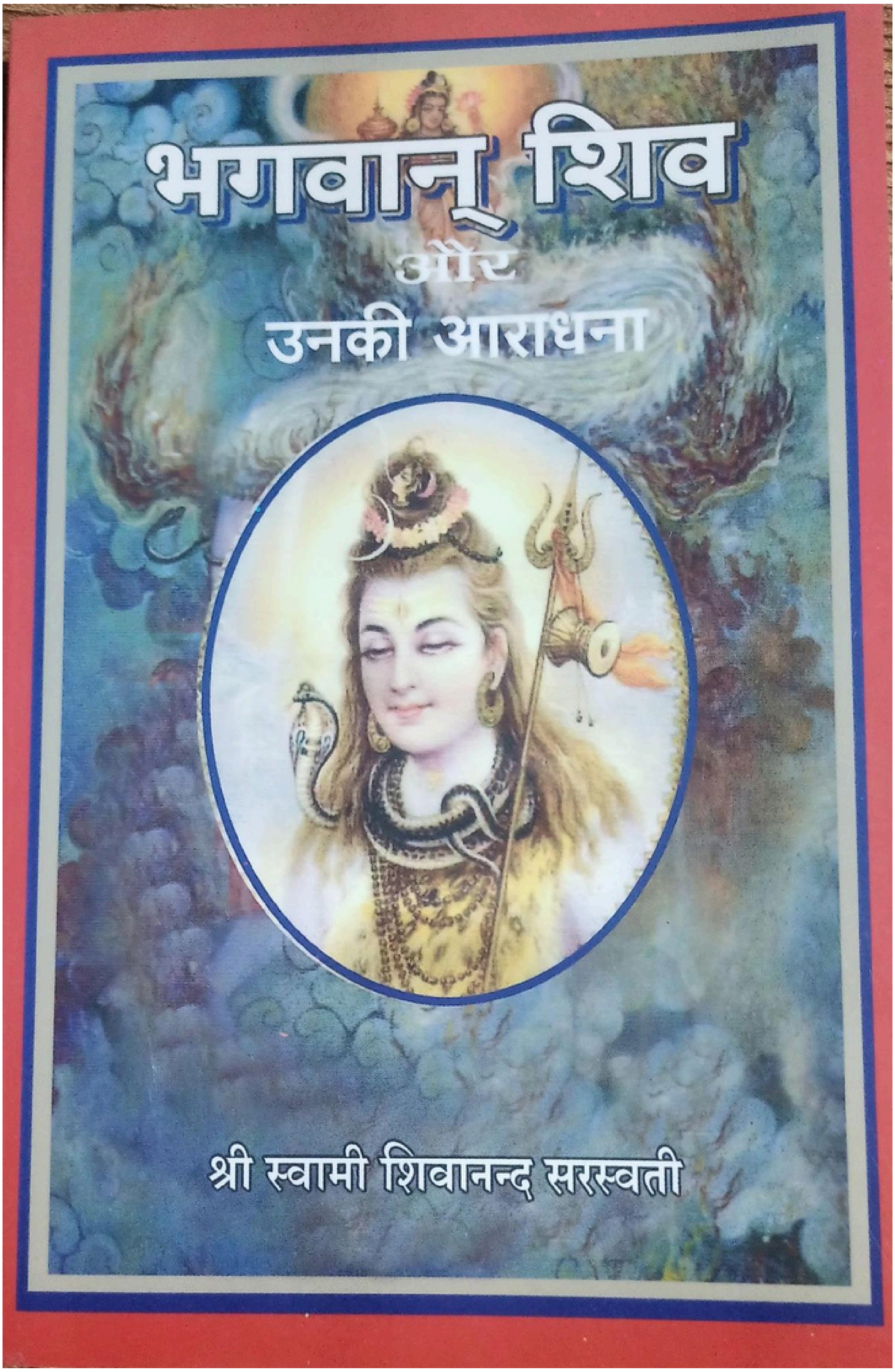



भगवान् शिव
और
उनकी आराधना
श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

भगवान शिव

और

उनकी आराधना

LORD SIVA AND HIS WORSHIP काहिन्दीभाषान्तर

लेखक

श्री स्वामी शिवानन्द सरस्वती

अनुवाहदका

स्वामी शिवाश्रश्रतानन्द माता जी

प्रकिाक

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय श़िवानन्दनगर – २४९१९२

जजला ह्नटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ि्(हिमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, wwwldishq.org

प्रथम हिन्दी संस्करण : २००७

द्ववतीय हिन्दी संसं्करण : २०१९

(५०० प्रततया)ाँ

HS1

PRICE:₹150/-

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर' के शलए स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशित तथा उन्ीिके द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकिोमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, जज. हटिरी गढ़वाल, उत्तराखण्ि, वपन २४९१९२' में मुहित ।

For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

उमा, गौरी या पावतवी

के परम पतत तथा

ाश्वित परमानन्द, ज्ञान एवंअमरत्व

के प्रदाता

भगवान् ्शिव को समवपतव

ॐ

हदव्य आत्मन्,◌्

भगवान् ◌्शिव प्रेम स्वरूप ◌िैं। उनकी कृपा तनिःसीम ◌िै। वे ◌ेमुजततदाता ◌िैं, गुरु ◌िैं। वे ◌ेउमाकान्त ◌िैं। वे ◌े सत्यम्,◌् शिवम्,◌् ◌िुभम्,◌् सुन्दरम् ◌्कान्तम् ◌्◌िैं। वे ◌ेआप सबके हृदयों में दीप्त ◌िोनेवाली परम ज्योतत ◌िैं। उनके स्वरूप का ध्यान करें। उनकी लीलाओं ◌ंका श्रवण करें। उनके मन्त्र 'ॐ नमिः शिवाय' का जप करें। शिवपुराण का स्वाध्याय करें। उनकी प्रततहदन आराधना करें। समस्त नाम रूपों में उनके दिनव करें। वे ◌े अपने दिनव दे कर आपको कृताथ वकर देंगे।

स्वामी शिवानन्द

प्रकािकीय वततव्य

समस्त जजज्ञासुओं, साधकों तथा वविेष रूप से भगवान् ्शिव के भततों के शलए यि पुस्तक अत्यश्रधक बिुमूल्य और शिक्षाप्रद िै। इसमें पन्द्रि अध्याय िैं। शिव-तत्त्व अथवा ईश्वर - साक्षात्कार की प्राजप्त के शलए इसमें व्याविाररक साधना के शलए पयाप्वत तनदेिन उपलब्ध िै। यि इसके अध्याय स्वयं शसद्ध करते िैं। शिव ताण्वि, जितत योग तथा शिव-तत्त्व के रिस्यों का तनरूपण अत्यन्त सौन्दयपूवण वि। िैव उपतनषदों की प्रस्तुतत और भी भव्य रूप से की गयी िै। शिवाचायों, भततों तथा नायनारों की जीवनगाथाए ाँअत्यन्त ममस्वपिी िैं। उनके जीवन के अध्ययन से व्यजतत का जीवन पावन और उदात्त िो सकता िै।

इसका दितवनक भाग पाठकों के शलए अत्यश्रधक प्रबोधक तथा सियक िै। पुस्तक में समस्त िैवपुराणों यथा पेररय पुराण, शलंगं पुराण, शिव पराक्रम और ततरुववलयिाल पुराण इत्यािद का सार तनहित िै। कततपय शिव-स्तोत्रों को हिन्दी अनुवाद सहित सजममशलत कर लेने ने इसके मूल्य में और वृद्श्रध कर दी िै।

पुस्तक अत्यन्त सरल, बोधगमय और स्पष्ट ढंग से शलखी गयी िै। आध्याजत्मक दृजष्टकोण से पयाप्वत मित्त्वपूण व िोनेके कारण समस्त धाशमकव प्रवृवृत्त के व्यजततयों को इसका तनजश्चत रूप से अध्ययन करना चाहिए।

- द डिवाइन लाइफ सोसायटी

ववषय-सूची

भगवान शिव

और

उनकी आराधना

अध्याय १

शिवमन्त्रतथास्तोत्र

शिव मन्त्र

१. ॐ नमः शिवाय

ॐ सत्–्श्रचत्–्आनन्द परब्रह्म ि◌ै। **'नमः शिवाय'** का अथ वि◌-भगवान शिव को नमस्कार ! यि भगवान् ◌्
शिव का पाचाँ अक्षरों वाला पंचाक्षर मन्त्र ि◌ै। यि अत्यन्त ि◌जततिाली मन्त्र ि◌ै और यि मन्त्र, जपनेवाले को
परमात्मा का परम आनन्द प्रदान करने वाला ि◌ै।

२. ॐ तत्पुरुषाय ववद्महे महादेवाय धीमहह।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ◌्॥

मि उन यिस्वी परम पुरुष की अनुभूतत करते ि◌ैं, और उन मिान देव मिादेव का ध्यान करते ि◌ैं; वे रुि
मिें इसकी प्रेरणा दें। यि रुि गायत्री मन्त्र ि◌ै।

३. ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगनन्धंपुनटिवधनधम् ◌्।
उवारुधकशमव बन्धनान्मृत्योमुक्षधीय मामृतात् ◌्॥

म ◌ैंउन त्रत्रनेत्रधारी भगवान् ◌्शिव को नतमस्तक प्रणाम करता ि◌ूँ जो मधुर सुगन्ध से पूण विं, जो समस्त प्राखणयों
को पुजष्ट प्रदान करने वाले ि◌ैं। वे मुझे ◌ेमृतूयु से उसी प्रकार मुतत करें जैसे ◌ेककड़ी का फल अपनी लता के बन्धन
से सिजता सेछूट जाता ि◌ै। वे मुझे ◌ेअमृतृत्व प्रदान करें। यि मिामृतूयुंजय मन्त्र ि◌ै।

शिवपंचाक्षरस्तोत्रम् ◌्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भसमांगरागाय महेश्वराय ।
ननत्याय ि◌ुद्धाय हदगम्बराय तसमै नकाराय नमः शिवाय ॥ १ ॥

कण्ठ में सपों के ि◌ार वाले, तीन नेत्रों वाले, भस्म से अनुलेवपत, हदिाओंके वस्त्र वाले (अथात् व ◌्नग्न), उन
ुद्धि अववनिाी मिेश्वर 'न' कार स्वरूप शिव को नमस्कार ि◌ै।

मन्दाककनीसशललचन्दनचर्चतधायनन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुटपबहुपुटपसुपूनजतायतसमैमकारायनमःशिवाय॥२ ॥

म ◌ैंउन 'म' कार स्वरूप शिव को प्रणाम करता ि◌ूँ जो मन्दार तथा अन्यान्य ऐसे ि◌ी हदव्य पुष्पों से पूजजत
ि◌ैं, गंगाजल और चन्दन से जजनकी अचा विुई ि◌ै, जो नन्दी के अश्रधपतत और प्रमथ गणों के स्वामी ि◌ैं।

शिवाय गौरीवदनारववन्दसूयायध दक्षाऽध्वरनिाकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषृध्वजाय तसमै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥

“शि' कार स्वरूप नीलकण्ठ भगवान् ्शिव को, दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने वाले तथा गौरी के मुख-कमल को ववकशसत करने वाले सूय वस्वरूप को, ध्वजा में बैल का श्रचह्न धारण करने वाले िोभिाली भगवान् ्को िमारा नमस्कार िै।

वशसटठकुम्भोद्भवगौतमायमुधनीन्द्रदेवाऽर्चतधिखराय ।

चन्द्राकधवैश्वानरलोचनाय तसमै वकाराय नमः शिवाय ॥४ ॥

जजनकी पूजा वशसष्ठ, अगस्त्य तथा गौतम आहद श्रेष्ठ मुतनयों ने तथा इन्् आहद देवताओंने सदैव की िैं, चन्िमा, सूय वव अजग्न जजनके तीन नेत्र िैं, उन 'व' कार स्वरूप, देवों के देव, मिादेव को नमस्कार िै।

यक्षसवरूपाय जिाधराय वपनाकहसताय सनातनाय ।

हदव्याय देवाय हदगम्बराय तसमै यकाराय नमः शिवाय ॥५ ॥

उन हदव्य सनातन पुरुष, उन हदगमबर देव 'य' कार स्वरूप शिव को नमस्कार िै जजन्िोंने यक्ष रूप धारण ककया िै, जो जटाधारी िैं और जजनके िाथ में वपनाक िै।

पंचाक्षरशमदं पुण्यं यः पठेनछिवसनन्नधौ ।

शिवलोकमवाप्नोनत शिवेन सह मोदते॥ ६ ॥

जो शिव के सममुख इस पववत्र पंचाक्षर का पठन करता िै, वि परम शिवधाम को प्राप्त करता िै और विााँ शिव के साथ परमानन्द को भोगता िै।

शिव - षिाक्षर-स्तोत्रम् ्

ॐकार त्रबन्दुसुंयुक्तं ननत्यं ध्यायनन्त योर्गनः ।

कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः ॥ १ ॥

मि सदैव उस त्रबन्दु ुयुतत 'ॐ' कार को प्रणाम करते िैं, जजसका योगी तनरन्तर ध्यान करते िैं और जो समस्त कामनाओं तथा परम मोक्ष को देनेवाला िै।

नमनन्तऋषयोदेवानमन्त्यप्सरसांगणाः ।

नरा नमनन्त देविं नकाराय नमो नमः ॥ २ ॥

मनुष्य और सन्त, देवता और अप्सराओंके समूि, उस 'न' कार स्वरूप परमात्मा को नमस्कार करते िैं। मिारा उन्िें बारमबार नमस्कार िै।

**महादेवंमहात्मानंमहाध्यानं परायणम्। ् **

महापापहरंदेवंमकारायनमो नमः॥३॥

'म' कार स्वरूप देदीप्यमान परमात्मा जो लोकातीत िैं, समस्त पापों का नाक िैं, उपासना और ध्यान का श्रेष्ठतम लक्ष्य िै—को िमारा बारमबार प्रणाम िै।

**शिवंिान्तिंजगन्नाथंलोकानुग्रहकारकम्। ् **

शिवमेकपदं ननत्यंशिकारायनमोनमः॥४ ॥

वि सवकवल्याणकारी और सविवजततमान् ्ववश्वनाथ 'शि' कार स्वरूप, जो जगत् ्को सुख–िाजन्त प्रदान करने वाला िै, जो एक िाश्वत शिव िै, को िमारा बारमबार प्रणाम िै।

**वाहनंवृषभोयसय वासुककः कण्ठभूषणम्। ् **

वामेिक्तधरंदेवंवकाराय नमोनमः॥५॥

जो बाय ेंिाथ में िजतत धारण ककये िुए िैं, बैल जजसका विान िै, सपरवाज वासुकी जजसके कण्ठ का आभूषण िै, उन 'व' कार स्वरूप शिव को िम बारमबार नमस्कार करते िैं।

यिि नसथतोदेवःसवव्धयापी महेश्वरः।

योगुरुः सवदेधवानांयकारायनमो नमः॥६॥

'य' कार स्वरूप उन सवव्वयापक मिेश्वर को, जो साकार भी िैं और तनराकार भी, जो समस्त देवताओंके गुरु िैं और िमारे भी गुरु िैं, वे जिा–ाँकिीं ंभी िों उन्िें िमारा बारमबार प्रणाम िै।

षडक्षरशमदंसर्तोयःपठेनछिवसनन्नभौ ।

शिवलोकमवाप्नोनत शिवेनसहमोदते॥७ ॥

जो इस षिक्षर स्तोत्र 'ॐ नमिः शिवाय' का भगवान शिव के सममुख पाठ करता िै, वि परम शिवधाम में परम आनन्द को प्राप्त करता िै।

शलंगाष्टकम् ्

**ब्रह्ममुराररसुरार्चतध शलंगं ननमलधभावषतिोशभत शलंगम्।् **

जन्मजदुःखववनािकशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम्॥्१ ।।

म ैंउन सदाशिव शलंगं को प्रणाम करता िूाँ जो ब्रह्मा, ववष्णु ुतथा अन्य देवों द्वारा पूजजत िै, जो तनमलव और पववत्र वाखणयों द्वारा प्रिंशसत िै तथा जो जन्म-मरण के बन्धन को काटने ेवाला िै।

देवमुननप्रवरार्चतध शलंगंकामदहं करुणाकरशलंगंम्। ्

रावणदपवधववनािनशलंगं तत्प्रणमाशम सदाशिवशलंगंम् ्॥ २ ॥

वि शलंगं देवताओं और मुतनयों द्वारा पूजजत ि ै। वि कामदेव को नष्ट करने वाला तथा असीम दया का सागर ि ै। उसी ने रावण के अशभमान का ववनाि ककया। म ैंउस सदाशिव शलंगं को प्रणाम करता ि ूँ।

सवसुध ग नन्धसुले वपतशलंगं बुद् धवववधनध कारणशलंगं म् ्।

शसद्धसुरासुरवनन्दतशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम् ्॥३॥

म ैंउस सदाशिव शलंगं को प्रणाम करता ि ूँ, जो सब प्रकार की सुगजन्धयों से ववलेवपत ि ै और जो बुद्श्रध की वृद्श्रध का कारण ि ै तथा जो शसद्धों, देवों और असुरों द्वारा पूजजत ि ै।

कनकमहामणणभूवषतशलंगंफणणपनतवेनटितोशभतशलं्गंम्।

दक्षसुयज्ञववनािनशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम्॥४॥

म ैंउस सदाशिवशलंगं को प्रणाम करता ि ूँ जजसने दक्ष के यज्ञ को ववध्वंस ककया, जो स्वण वतथा मिामखण से ववभूवषत ि ै और जो िेषनाग से वेजष्टत िो कर िोभायमान िो रिा ि ै।

कुंकुमचन्दनलेवपतशलंगंपंकजहारसुिोशभतशलंगंम्।्

संर्चतपापववनािनशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम्॥्॥ ५॥

म ैंउस सदाशिवशलंगं को प्रणाम करता ि ूँ जो कुकुम तथा चन्दन से लेवपत ि ै, जो कमल-पुष्पिार से सुिोशभत ि ै और वि समस्त संश्रचत पापों को नष्ट करने वाला ि ै।

देवगणार्चतधसेववतशलंगंभावैभनधक्तशभरेवचशलंगंम् ्।

हदनकरकोहिप्रभाकरशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम् ्॥६॥

म ैंउस सदाशिवशलंगं को नमस्कार करता ि ूँ जजसकी देवता और भूत गण पूजा व सेवा करते िैं, जो भावपूण वभजतत द्वारा प्रसन्न िोता ि ै और जजसका करोड़ों सूयो के समान प्रकाि ि ै।

अटिदलोपररवेनटितशलंगंसवसधमुद्भवकारणशलंगंम् ्।

अटिदररद्रववनाशितशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम् ्॥७॥

म ैंउस सदाशिवशलंगं को प्रणाम करता ि ूँ जो आठ प्रकार की दररिता को नष्ट करता ि ै, जो सबकी उत्पवत्त का कारण ि ै और अष्टदल कमल पर आसीन ि ै

सुरगुरुसुरवरपूनजतशलंगंसुरवनपुटपसदार्चतधशलंगंम्।

परात्परंपरमात्मकशलंगंतत्प्रणमाशमसदाशिवशलंगंम्॥८॥

म ैंउस सदाशिवशलंगं को नमस्कार करता ि ूँ जो परात्पर तथा परमात्मा ि ै, जो देवताओंके गुरु बृिस्पतत तथा श्रेष्ठ देवताओंद्वारा देववनों सेलाये गये पुष्पों द्वारा पूजजत व अश्रचतव ि ै।

शलंगांटिकशमदंपुण्यं य:पठेनछिवसनन्नधौ ।

शिवलोकमवाप्नोनत शिवेनसहमोदते॥९ ॥

जो भी शिवशलंगं के सममुख भजततभाव से इस शलंगांष्टकम् ्का पाठ करता ि ै, वि परमशिवधाम में कभी न समाप्त िोनेवाले परमानन्द व स्वग वसुख को प्राप्त िोता ि ै।

अधनवाररर-नटेश्वर-स्तोत्रम् ्

चांपेयगौराधिधरीरकायैकपूरधगौराधिधरीरकाय ।

धनम्मल्लकायै च जिाधराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥

जजनका आधिारीर चमकतिुए स्वणवसा चमपई वणवकादेदीप्यमानितथा आधा िरीर कपूरव गौरवण व का उद्भाशसत िै, उस अलंकृत किोंवाली गौरीको तथाउन जटाधारीभगवान्शिवको ि्म प्रणाम करते िैं।

कसतूररकाकुंकुमचर्चतधायै र्चतारजपुंजववचर्चतधाय ।

कृतसमरायै ववकृतसमराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥२॥

कस्तूरर कुकुमव चन्दनसेजजसका िरीर ववलेवपत िैउसकेतथा श्रचतातन भस्म से जजनका िरीर भजस्मत िै उनक, जो अपने सौन्दय वसेप्रेम प्रसाररत करती िै उसके, तथा जो काम के देवता को नष्ट करने वाले िैं—उस गौरी और उन भगवान्शिव्को िम नमस्कारकरतिें। ्

चलत्क्वणत्कंकणनूपुरायै ैशमलत्फणाभासवरनूपुराय ।

हेमांगदायै भुजगांगदाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥३॥

जो तवण-कणकीसुन्दरमधुरध्वतन।युततनूपुरोंसे सुिोशभतिै उसेतथा जजनके्चरणकमल सपों के नूपुरों से सुिोशभत िैं उनको। उसको जजसने स्वण वकंगन धारण ककये िैं तथा उनको जजन्िोंने सप वके कंगन धारण ककये िुए िैं—उस गौरीतथा उनभगवान्शिवको िमप्रणामकरतिें। ्

ववलोलनीलोत्पललोचनायै ववकाशसपंकेरुहलोचनाय ।

समेक्षणायै ववषमेक्षणाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥४ ॥

नीलकमल केसमान जजसके वविालनेत्र िैंपूणववववकशसतकमलकेसदृि जजनके ववस्तृत नेत्र िैं, समनेत्रों (दो नयन) वालीतथा ववषम तीननयन नेत्रोंवालेगौरीऔरभगवान्शिव कोिम नमस्कार करते िैं।

मन्दारमालाकुशलतालकायैकपालमालांककतकन्धराय ।

हदव्याम्बरायै च हदगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥५ ॥

जजसके कि मधुरसुगजन्ध युततहदव्य पुष्पों सेिोशभतिें तथाजजनकाकण्ठ मुण्डमाल से िोभायमान िैं, जो अत्युत्तम हदव्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत िैं तथा जजनकी अष्ट हदिाएं िीवस्त्र िैं, उस गौरी तथा उन भगवान् ् शिव को िम नमस्कार करतिे।

अम्भोधरश्यामलकुन्तलायै तडडत्प्रभाताम्रजिाधराय ।

गरीश्वरायै ननणखलेश्वराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ६ ॥

जजसके किजलपूणवश्यामघनकेसदृि िैं तथाजजनकीववद्युत्के समान्जटाएँ िैजो हिमालय की परम भगवती देवी पावतवी िैं तथा जो समस्त ववश्व के ईश्वर िैं, उन गौरी तथा भगवान् ्शिव को िमारा नमस्कार िै।

प्रपंचसृट्युन्मुखलासयकायै समसतसंहारकताण्डवाय ॥

जगज्जनन्यै जगदेकवपिेनमः शिवायै च नमः शिवाय ॥७ ॥

जजसके नृतूय सेसंसारकी रचनिोोतिी तथा जजनके नृतूय से समपूण वववश्वका पूणतवया संिार िो जाता ै, उसे ेजो जगन्माता ि तथाउर्न्जोववश्ववपता ि उन गौरी तथा शिव किोम नमस्कार करते िैं।

प्रदीप्तरत्नोज्ज्वलकुण्डलायै सफुरन्महापन्नगभूषणाय ।

शिवानन्वतायै च शिवानन्वताय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ८ ॥

जजसके रत्नजहटतकणकुवण्लि िैं तथा जो सपवआभूषणधारणककये िुएिैं उसेजो सदा भगवान् ्शिव से संयुतत िैं तथा उर्न्जो सामब सदाशिव िैं, उस गौरी और उन भगवान् ्शिव को िम बारमबार प्रणाम करते िैं।

शिवकवचम् ्

ऋषभ ऋवष ने युवराज सेकिा :

ॐ! उमापतत भगवान् ्नीलकण्ठ, त्रत्रनेत्रधारी, सिस्र भुजाधारी िमभू, जो अपने िजततिाली पराक्रम से त्रिुओं का ववनिा कर देते िैं, उनको मेरा नमस्कार िै।

अब म ैंतुमिारे हित के शलए समपूण वतप के उस भेद को प्रकट करता िूँ, जजसे पा कर तुम समस्त पाप-तापों से छूट कर सदा सफलता को प्राप्त करोगे े।
सवव्वयापक प्रभु शिव की उपासना के पश्चात् ्अब म ैंमानव मात्र के मंगल व कल्याण िेतु शिवकवच के गिन सत्य को प्रकट करता िूँ।

मनुष्य को एकान्त पववत्र स्थान पर िान्तावस्था में बैठै कर समस्त इजन्यिों का तनग्रि करके प्राणों को तनयजन्त्रत करके उन अववनािी शिव पर ध्यान लगाना चाहिए। तब उन सवव्वयापक इजन्यितीत को हृदय कमल पर ववराजमान करने के पश्चात् ्उन सूक्ष्म व अनन्त पर ध्यान लगाना चाहिए।

उसके तनरन्तर ध्यान के द्वारा स्वयं को कम वबन्धन से मुतत करके और हृदय को षिाक्षर 'ॐ नमिः शिवाय' में तनरन्तर लीन करते िुए परमानन्द में पूणतवया ववलीन िो कर स्वयं को शिवकवच द्वारा सुरक्षक्षत कर लेना चाहिए।

वि परम हदव्य िजतत मुझे संसार के अगाध अन्ध-कूप से उबार ले और उसका हदव्य नाम मेरे समस्त पापों को पूणतवया नष्ट कर दे।

वि घट-घट वासी, परमानन्द स्वरूप ब्रह्म, जो सूक्ष्माततसूक्ष्म और सविवजततमान् ्िैं, मुझे ेसवत्रव, समस्त भयों से मुजतत प्रदान करें।

ववश्व को धरती के रूप में धारण करने वाले शिव का अष्टगुणी रूप मेरी पाश्रथव रोगों से रक्षा करे तथा जल रूप में जीवन दान देने वाले ेभगवान् ्शिव मेरे जल से भय को दूरू करें।

कल्प के अन्त में संसार का संरि करके ताण्वि करने वाले कालरुि विवाजग्न और वायु से मेरी रक्षा करें।
वि चतुमुखवीत्रनेत्रधारी जो ववद्युत् ्और स्वण वसदृि देदीप्यमान िैं, मेरी पूव वमें रक्षा करें तथा जो वेद, कुठार, अंकुि, पाि, त्रिूल तथा माला धारण ककये िुए िैंतथा जल युतत मेघ सदृि चमकीलेश्याम वण ववाले िैं, वे दक्षक्षण हदिा में मेरी रक्षा करें।
म ैंउनकी उपासना करता िूँ जो कुन्द, चन्द्, िंख और स्फहटक के समान पववत्र और तनमलव िैं, जो पजश्चम में मेरी सुरक्षा के शलए अपनेिाथों में वरदान और अभय के प्रतीक पुस्तक और माला धारण ककये िुए िैं तथा जो उत्तर में ववकशसत कमल की भाताँत प्रकािमान िैं।

स्फहटक सदृि श्वेत वण ववाले पंचवतत्र ईश्वर जो िाथों में अंकुि, पाि, कुठार, मुण्ि, िमरू और त्रिूल तथा सुरक्षा के प्रतीक पुस्तक और माला धारण ककये िुए िैं—ऊपर से मेरी रक्षा करें।

भगवान चन्द्मौशल से प्राथनवा िै कक वे मेरे शसर की रक्षा करें, भालनेत्र मेरे भाल की रक्षा करें और कामारर मेरे नेत्रों की रक्षा करें।

म ैंश्रुतुतगीतकीतत वभगवान् ्ववश्वनाथ, िाथों में कपाल धारण ककये िुए कापाशल से प्राथनवा करता िूँ कक वे मेरे नाक, कणों और कपाल को सुरक्षक्षत करें।

वि पंचवतत्र भगवान् ्जजनकी वाणी िी वेदे िैं, मेरे मुख और जजह्वा की रक्षा करें।

धमबवािू मेरे कन्धों की और 'दक्ष यज्ञ-ववध्वंसी' मेरे वक्ष, भुजाओं की समस्त भय और दोषों से रक्षा करें।

धूजटव, कामदेव के नािक और श्रगरीन्धिन्वा मेरे कहटप्रदेि, मध्यप्रदेि और पेट की रक्षा करें।

कुबेरशमत्र, जगदीश्वर, पुंगवकेतुऔर परम दयालुमेरी दोनों जाघोँ, दोनों घुटनों, दोनों वपण्शिलयों और

दोनों पैरों की रक्षा करें।

हदन के प्रथम प्रिर में मिेश्वर, मध्य प्रिर में वामदेव, तीसरे प्रिर में त्र्यमबक और अजन्तम चौथे प्रिर में वृषकेतु मेरी रक्षा करें।

िशिशेखर रात्रत्र के आरमभ में, गंगाधर अधरवात्रत्र में और गौरीपतत रात्रत्र के अजन्तम प्रिर में तथा मृतूयुंजय सवकवाल में मेरी रक्षा करें।

किर घर के भीतर मेरी रक्षा करें, स्थाणु ुबिार रिने पर, पुिपतत बीच में और सदाशिव सब स्थानों पर मेरी रक्षा करें।

'वेदान्तवेद्य' बैठै रिने पर मेरी रक्षा करें। 'प्रमथनाथ' चलते ेसमय और 'भुवनैकनाथ' खड़े ेरिने पर मेरी रक्षा करें।

'नीलकण्ठ' त्रत्रपुरारी माग वके संकंट व भय से और दुगुमव पवतव शिखरों व घाहटयों में मेरी रक्षा करें।

'उदार िजतत' गिन वन-प्रवास में भयानक वन्य पुिओं से मेरी रक्षा करें।

जजनका प्रबल क्रोध कल्पान्त में यम सदृि भयानक िै तथा जजनके प्रचण्ि अट्टिास से जगत् ्कापाँता िै,

उन भगवान् ्वीरभि से म ैंप्राथनवा करता िूँ कक समुि के समान भयानक ित्रुसेना के मिान् ्भय से मेरी रक्षा करें! भगवान् ्'मृि' से प्राथनवा िै कक वे मुझ पर आततायी रूप से आक्रमण करने वाली चतुरंश्रगनी सेना के भीषण अस्त्रों से मेरी रक्षा करें।

भगवान् ्'त्रत्रपुरान्तक' अपने प्रलयाजग्न के समान ज्वालायुतत त्रत्रिूल व वपनाक धनुष से शर्सं ि, रीछ, भेडड़या आहद हिंस्र वन्य जन्तुओं को सन्त्रस्त करके मेरी रक्षा करें।

वेजगदीश्वर दुिःस्वप्नों, अपिगुनों, मानशसक दुभाुवनाओं व दुव्ुयसवनों, दुिःसि अपयि, उत्पातों, सन्तापों तथा अन्य वववववध प्रकार के कष्टों से मेरी रक्षा करें!

म ैंउन भगवान् ्सदाशिव को नमस्कार करता िूँ जो परम सत्य िैं, िास्त्रों का सत्य और सार िैं, ज्ञानातीत ैं। साक्षात् ्ब्रह्म और रुि िैं, सूय,व चन्िमा और अजग्न जजनके नेत्र िैं, पववत्र भस्म से जजनका िरीर सुिोशभत िै, जो रत्न मखण-जहटत मुकुट धारण ककये। िुए ववध्वंसक िैं, िैं, जो अखखल ववश्व के एकमात्र कता,व भतावऔर संिारक िैं, जो दक्षसुयज्ञ जो कालिारी, मूलाधारतनवासी और ज्ञानातीत िैं, जजनके सिर पर पावन गंगा का तनत्य तनवास िै, जो सबके अन्तवासवी, षड्गुण समपन्न, दिनव का सत्व और ववश्वनाथ िैं, जो कण्ठ में अष्ट नागेन्िों िार धारण ककये िुए िैं तथा ॐ जजनका वाचक िै।

म ैंउनकी उपासना करता िूँ जो चैतन्य स्वरूप िैं, आकाि और हदिाएं ाँजजनका स्वरूप िैं, नक्षत्र और शसतारे जजनके कण्ठाभूषण िैं, जो तनत्यिुद्ध और तनमलव िैं, जो समस्त संसार के एक िी साक्षी िैं, वेदों के गूढ़ तत्त्व िैं, समस्त िास्त्रों से परे िैं, सबको वर देनेवाले िैं तथा जो दीन-दुिःखखयों व अज्ञातनयों पर दयावृजष्ट करने वाले िैं।

म ैंउन दयालु, तनत्यिुद्ध, आनन्दघन, तनरामय, तनगुणव, तनष्काम, सवव्वयापक, अनाहद, अनन्त, पररपूण वतथा अद्ववतीय प्रभु की प्राथनवा करता िै जो काय-वकारण से अतीत िैं तथा जजनमें सुख, दुिःख, अशभमान, बल और दप,व भय और पीड़ा, पाप और ताप सभी लीन िो कर नष्ट िो जाते िैं।

म ैंउन प्रभु की आराधना करता िूँ जो साक्षात् ्ुिद्ध चैतन्य स्वरूप िैं, जजनमें आ कर समस्त काय व समाप्त िो जाते िैं और सन्दिे शमट जाते िैं, जो अववकारी, कालातीत, पररपूण,व तनत्य्ुिद्ध-बुद्ध, तनस्संग, सजच्चदानन्दघन िै। जो आधारिून्य, अपनेसनातन प्रकाि से स्व-प्रकाशित एकमात्र कल्याणकारी तनत्य-रूप, तनत्य-वैभव-समपत्र तथा अनुपम ऐश्वय वसे सुिोशभत िैं।

िेमेरे प्रभु, आपकी जय िो, जय िो! आप रुि, मिारौ और मिाभि रूप िैं! आप मिाभैरव, कालभैरव, कपालमालाधारी और कल्पान्तभैरव िैं! आप खट्वांग, खड्ग, चम,व अंकुि, िूल, िमरू, त्रत्रिूल, धनुष, बाण, गदा, जितत इत्याहद भयंकर अस्त्र धारण ककये िुए िैं। िे सिस्र मुखों वाले ! आप िंष्टा से कराल मुख वाले िैं। ववकराल िास्य से आप ववश्व को भयातुर करने वाले िैं! नागेन्ि वासुकक आपके कुण्िल, िार तथा कंकण िैं! िे त्रत्रनेत्रधारी भगवान्!् आप कालववजयी तथा त्रत्रपुरारर िैं!

आप सवव्वयापक, सबके अन्तवासवी, िाजन्त का सारतत्त्व और परम आनन्द स्वरूप िो! िे िमभो! आप वास्तव में वेदे और वेदान्त के ब्रह्म िी िो। आप सवत्रव जस्थत, अनाहद और अनन्त िो ! िे मेरे प्रभु, आप मेरी रक्षा कीजजए! मेरे मिामृतूयु तथा अल्पमृतूयु के भय का नाि कीजजए! अपने त्रत्रिूल और खड्ग द्वारा मेरे ित्रुओं का नाि कीजजए! अपनेधनुष और बाणों द्वारा कुष्माण्ि और बेताल भूतों को भय हदखा कर सन्त्रस्त कीजजए! नरक कुण्ि में श्रगरनेसे मुझे बचा लीजजए और मेरा उद्धार कीजजए! मुझे अभय दीजजए! अपने अस्त्रों द्वारा मेरी रक्षा कीजजए! म ैंदुिःखातुर दीन और तनराधार िूँ! आपके चरणों में म ैंसवस्वव समवपतव करता िूँ, आपकी िरण में िूँ! केवल आप िी मेरे रक्षक िै और आलमबन िै! िे सदाशिव! िे मृतूयुंजय! िे त्र्यमबक! आपको बारमबार नमस्कार िै!

ऋषभ जी ने किा: इस प्रकार यि वरदायक शिवकवच मनैं किा िै, यि समपूण वबाधाओं को िान्त करने वाला, समस्त इच्छाओंको पूण वकरने वाला तथा समस्त जीवधाररयों के शलए, परम गोपनीय रिस्य िै। जो मनुष्य इस उत्तम शिवकवच को धारण करता िै, उसे ेभगवान् ्शिव के अनुग्रि से कभी और किीं ंभी भय निीं। जजसकी आयु क्षीण िो चली िो, जो मरणासन्न िो, वि इसके प्रभाव से तत्काल सुखी िो कर दीघायुव व परमानन्द प्राप्त करता िै। यि (शिवकवच) मनुष्य के दोषों का उन्मूलन करके, उसे िाजन्त और समपन्नता के शिखर तक पिुँचा देता िै। वि मनुष्य इसके प्रभाव सेसमस्त पातकों व उपपातकों से छूट कर अन्त में शिव को पा लेता िै। अतिः वत्स, तुम भी मेरे द्वारा हदये िुए इस उत्तम शिवकवच को पूण वश्रद्धा और ववश्वास सहित धारण करो। इससे तुम िीघ्र िी अत्यन्त सुख प्राप्त करोगे।

सूत जी किते िैं—इस प्रकार किते िुए ऋषभ ऋवष ने राजकुमार को एक वविाल िंख व एक िजततिाली खड्ग दी जजसके द्वारा कक वि िीघ्र िी ित्रुओं पर ववजय प्राप्त कर सके।

तब उन्र्निेराजकुमार की दिे पर ववभूतत तछड़कतिुेए अपने हदव्य स्पि वद्वारा द्वादि सिस्र िजस्तबल से समपन्न कर हदया। इतना बल, िजतत व सिास प्राप्त करके राजकुमार िरद्कालीन सूय वके प्रकाि सदृश्य देदीप्यमान िो गया।

ऋवष ने कफर किा— मेरे द्वारा दी िुई यि तलवार पववत्र मन्त्रों द्वारा अशभमजन्त्रत की िुई िै; इसके दिनव मात्र से िी ित्रु तनजीव िो जायेगा। काल तक इससेभयभीत िो जायेगा। इस िंख का गजनव सुन कर ित्रु ु स्त्रि छोड़ कर बेसुध िो कर श्रगर पड़गें। यि दोनों ऐसे अस्त्र िैं जो ित्रुओं का नाि करने वाले और तुममें जिततवधनव करने वाले िैं।
शिवकवच को धारण करके इन हदव्य अस्त्रों द्वारा तुम ित्रु ुनाि कर सकोगे। तुम पैत्रत्रक राज्य प्राप्त करोगे ेऔर इस पृथ्ूवी के िासक िोओगे। इस प्रकार अपनेआिीवचवनों द्वारा उसे ेधीरज दे कर ऋवष चलेगये।

सवशवलंगं स्तवन

ॊ ओंकारेश्वर, उमामिेश्वर,
रामेश्वर, त्र्यमबकेश्वर,
मिाबलेश्वर, मिाकालेश्वर, मुततेश्वर,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ जिमबुकेश्वर, कालिाजस्तश्वर,
तारकेश्वर, परमेश्वर,
नमदेवश्वर, नागेश्वर, नान्जुनदेश्वर,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ अधनवारीश्वर, कापालीश्वर,
बृिदीश्वर, भुवनेश्वर, कुमभेश्वर,
वृद्ूधचलेश्वर, एकमबेश्वर,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ कैलासपते, पिुपते,
गौरीपते, पावतवीपते, े
उमापते, े शिवाकाशमपते,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ विविश्वे, त्यागिे, सविे,
सुन्दरिे, िमिे, जगदिी,
घुश्रुनिे, मातृभूतिे,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ कैलासनाथ, किीनाथ,
केदारनाथ, मुजततनाथ,
अमरनाथ, पुिपततनाथ,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ किीववश्वनाथ, कांचीनाथ,
सोमनाथ, बैजनाथ, वैद्यनाथ,
तुंगनाथ, त्रत्रलोकीनाथ,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ कालभैरव, त्रत्रपुरान्तक,
नीललोहित िरो िर,
शिव, िमभो, िंकर, सदाशिव,

• नमिः शिवाय।

ॊ मिादेव, मिाकाल,
नीलकण्ठ, नटराज, चन्द्रिखिर,
श्रचदमबरिे, पापववमोचक,

ॐ नमिः शिवाय।

ॊ िालस्य सुन्दरा, शमनाक्षीसुन्दर,
कल्याण सुन्दर, कदमबवन सुन्दर
श्री िैलवास, वीरभि,

ॐ नमिः शिवाय।

ि गौरी िंकर, गंगाधर,
दक्षक्षणामूते, मृतूयुंजय,
ॐ नमो भगवते रुाय,

ॐ नमिः शिवाय ।

ि वैकात्तपा, ततरुवोतनअप्पा,
श्रचदमबला, पोनमबला,
श्रचत्समेष, श्रचदमबरेि

ॐ नमिः शिवाय।

ि कामदिन, ब्रह्मशिरच्छेदा ,
कूम व- मत्स्य वारि स्वरूप,
वीरभैरव, वृषभारूि,

ॐ नमिः शिवाय।

ि कालान्तक, मजल्लकाजुनव,
अरुणाचल, नन्दीवािन,
शभक्षादान, भततरक्षक,

ॐ नमिः शिवाय।

ि भीमिंकर, भस्माधर,
पन्नगभूषण, वपनाकधारी ,
त्रत्रलोचन, त्रत्रिूलपाखण,

ॐ नमिः शिवाय।

ि िर आपकी महिमा का वणनव कौन कर सकता िै?
श्रुततया ाँभी नेतत नेतत किती िैं,
आप परम ब्रह्म िैं,
आप सद्गुणों सेपररपूण विं,

ॐ नमिः शिवाय।

ित्रिपुरान्तकारी,
आपको बारमबार प्रणाम,
आप ववनिाकारी रि िो,
आप अमरत्व प्रदाता िो,

ॐ नमिः शिवाय।

बैल आपकी सवारी िै,
व्याघ्रचम वै वस्त्र आपका,
त्रत्रूल, िमरू और कुठार िै िस्त्र आपके,

ॐ नमिः शिवाय।

सप वै आभूषण,
भस्मववलेवपत िैं आप,
गंगा िोती िै प्रवाहित आपके ििी से
चन्मिा िै आपका चूिामखण,

ॐ नमिः शिवाय।

सनक सनन्दन को,
श्रचन्मुिा और मीन द्वारा,
ब्रह्मज्ञान रिस्य में दीक्षक्षत करनेको,
दक्षक्षणामूतत वै आप

ॐ नमिः शिवाय।

आपका स्वरूप िै वैराग्यमय,
ज्ञान का साक्षात् ्स्वरूप िैं,
नृत्य-वविारद िैं आप,
अगड़बम िै गान आपका,

ॐ नमिः शिवाय।

आपनेअजग्नरूप धारण ककया,
ब्रह्मा-ववष्णु ुआपको,
मापने में पराजजत िुए,
आप अनन्त व असीम िैं,

ॐ नमः शिवाय।

माकवर्ण्यि और माखणतकवाचकर के रक्षक,
कण्णप्प, ततरुनावकेरसु के,
ततरुज्ञानसमबधर, सुन्दरि,
अप्पर और पट्हटनातडियार के वरदाता िैं,

ॐ नमः शिवाय।

आप िैं दया के सागर,
वरदाता िैं,
अजुनव और बाण को वर हदया,
ववषपान कर ववश्व की रक्षा की,

ॐ नमः शिवाय ।

कामदेव का नाि ककया,
गंगा और सुब्रह्मण्यम् ्के वपता िैं आप,
दक्ष का शिरच्छेदन कर गव वनष्ट करने वाले िैं,

ॐ नमः शिवाय।

त्रत्रपुर सुन्दरी, राजराजेश्वरी,
गौरी, चर्ण्ड़ी, चामुर्ण्ड़ी,
दुगुाव, अन्नपूणा विैं िजतत आपकी,

ॐ नमः शिवाय।

मुण्मिालाधारी िैं आप,
ैं गंगा जटाधारी,

श्मिानवासी िैं आप,
करालरूपधारी िैं—मिाकाल-काल के भी काल,

ॐ नमिः शिवाय।

ववष्णु ुके परम आराधक िैं आप,
ववष्णु ुचरणों सेतनकशसत गंगा को,
अपिनेी पर धारण करने वाले, े
कािी में राम तारक मन्त्र से मुजततप्रदाता िैं आप,

ॐ नमिः शिवाय।

रामेश्वरम् ्में आपकी आराधना की राम ने,
सदाशिव शिव के रूप में,
आत्मशलंगं से हृदयवासी िो,
वेदों के िो आप प्रणव,

ॐ नमिः शिवाय ।

िे िर ! िे प्रभु! िे शिव!
आपको बारमबार प्रणाम!
सदा करूँ आपका स्मरण,
सदा मुझ में करें आप तनवास,

ॐ नमिः शिवाय।

मुझे काम, भय और िोि से मुतत करें,
सदा करूँ आपके पंचाक्षर का जप,
सवत्रव करूँ दिनव आपके,
सदा आपमें करूँ तनवास,

ॐ नमिः शिवाय ।

जो करेगा इस सवशवलंगं स्तव का जप, गान या श्रवण,
प्रातिः सायं श्रद्धा-भजतत भाव सहित,
िो मुतत पाप-ताप सेसमस्त,

प्राप्त करेगा धन, सन्तान,

भजतत, भुजतत व मुजतत!

शिव-स्तुतत

अद्वैत, अखण्ि, अकता,व अभोतता,

असंग, असतत, तनगुणव, तनलेप,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। १

अव्यतत, अनन्त, अमृत्, आनन्द,

अचल, अमल, अक्षर, अव्यय,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। २

अिब्द, अस्पि,व अरूप, अगन्ध,

अप्राण, अमान, अततन्ीयि, अदृश्य,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। ३

सत्यम्, ् शिवम्, ् ि ु भम्, ् सुन्दरम्

्कान्तम्, ्

सत्-्श्रचत्-्आनन्द, समपूण,व सुख िान्तम्
्।

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। ४

चेतन, चैतन्य, श्रचद्धन, श्रचन्मय,

श्रचदाकाि, श्रचन्मात्र, सन्मात्र, तन्मय,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। ५

अमल, ववमल, तनमलव, अचल,

अवागमनोगोचर, अक्षर, तनश्चल,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। ६ तनत्य,

तनरुपाश्रधक, तनरततिय आनन्द,

तनराकार, िीकार, ओंकार, कुत्सथ,

श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽिं शिवोऽिं। ७

पूण,व परब्रह्म, प्रज्ञान, आनन्द,

साक्षी, िष्टा, तुरीय, ववज्ञान आनन्द,
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽशिवोऽ।८

सत्यं, ज्ञानं, अनन्तं ंआनन्दम्,्
सजच्चदानन्द, स्वयंज्योतत प्रकािम्,्
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽशिवोऽ।९

कैवल्य, केवल, कुत्स्थ, ब्रह्म,
ुद्धि, शसद्ध, बुद्ध, सत्-्श्रचत्-्आनन्द,
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽशिवोऽ।१०

तनदोष, तनमलव, ववमल, तनरंजन,
तनत्य, तनराकार, तनगुणव, तनववकवल्प,
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽशिवोऽ।११

आत्मन्,् ब्रह्मस्वरूप, चैतन्य-पुरुष,
तेजोमय, आनन्द, 'तत्-्त्वम् ्अशस' लक्ष्य,
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽ शिवोऽ। १२ 'सोिं',

'शिवोऽ', 'अिं ब्रह्माजस्म' मिावातय,
ुद्धि, सत्-्श्रचत्-्आनन्द, पूण वपरब्रह्म,
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽशिवोऽ।१३

हदव्य-दिनव

(१)

स्नैि, करुणा और परमानन्द के आराध्यदेव के,
हृदय में प्रकाशित परम ज्योतत के,
समबन्धर और अप्पर के, जीवन दाता प्रभु के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

उन मिान्,् श्रचरन्तन, योश्रगयों के लक्ष्य के
पुरी में बसने वाले परम पुरुष के,
वेदों में वखणतव आहद देव के,

मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

ब्रह्मा, ववष्णु को भ्रशमत करने वाले प्रकिा स्तमभ के,
माकवर्णेयि के रक्षक, दया के सागर के,
पर्णोद्विारा पीडड़त मदुरै के प्रभु के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

चारों के ज्ञान दाता, आहद गुरु के,
परम, व्यिू, ववभाव, अचाव और अन्तयामी-
पाचँों को धारण करने वाले आहद देव के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

प्रभु, जो समस्त ववश्व में,
सूत्रात्मा के रूप में व्याप्त िैं,
जो श्रुततयों के सार, परमात्मा िैं,
के मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

तीनों सेऊपर जो दीजप्त िै,
प्रलय के बाद भी जो जस्थत िै,
उस कर्णप्प और सुन्दरर के रक्षक के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर !

ववषपान करके ववश्व की रक्षा करने वाले,
श्रचदमबरम् ्के नतकव,
ज्योततशलगिं रूप से प्रकाशित िोने वाले के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर !

पार्णियि को घोड़ेदेने वाले के,
समबन्धर को मोततयों के पालकी देनेवाले के,
पंचाक्षर के सारतत्त्व के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर !

जजनका तनवास िै वेदों में,
बनारस, रामेश्वर, अरुणाचलम् ्व कांची में,
समस्त जीवधाररयों में बसने वाले के,

मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

दारुशम के शलए अशभवतता बनने वाले के,
उमा सहित कैलास तनवासी के,
सुन्दरर को नेत्रज्योतत प्रदाता के,
मनैंदिनव ककये ऋवषयों के आवास पर!

(२)

नेत्रीन अप्पर को छड़ी देने वाले ेप्रभु को,
सुन्दरर के शलए शभक्षा मागाँने वाले कृपालु को,
अप्पय दीक्षक्षतार को माग वदिानेववाले माग-वबन्धु ुको,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

परबैको सन्दिै देने वाले दयालुको,
दारुशम के शलए कववता शलखने ेवाले वप्रयतम को,
नककरार को जलाने वाले अतन रूप को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

मदुरै में कुली बनने वाले प्रभु को,
थोड़ी-सी शमठाई के शलए
बाढ़ रोकने के शलए शमट्टी ढोने वाले को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

अपनेभततों के शलए तालाब और
बगीचे बनाने वाले प्रभु को,
भततों के दास को,
समबन्धर के शलए मोततयों की पालकी भेजने वाले को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

अजुनव से युद्ध करने वालेशिकारी को,
किर से वववाद करने वाले िि ू को,
पाण्ड्या के पास घोड़ेले जाने वाले ेदूलिू को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

जजनके वामांग में उमा िैं,
जो क्षीर सागर के नारायण िैं,
वट पत्र पर ियन करने वाले ेबाल रूप को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

परम पावन आहद देव प्रभु को,
ज्योततयों के भीतर की ज्योतत को,
देवों और ऋवषयों द्वारा पूजजत प्रभु को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

जो श्रचदमबरम् ्में अमबलम िैं,
जो अरुणाचलम् ्में प्रकिा िैं,
ववशभन्न आकारों में तछपे िुए चोर को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

श्रचदाकिा में प्रकट सद्गुरु को,
बन्धन-त्रय का भेदन करने वाले ेको,
साधकों को मोक्षधरा तक लेजाने वाले को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

सिस्रार में तनवास करने वाले प्रभु को,
जो पथ भी िैं, लक्ष्य भी और केन्[भी,
मिावातय के उस परम सत्य को,
मनैंदेखा ऋवषयों के आवास पर!

नटराज-गान

शिवाय नमिः ॐ शिवाय नमिः,
शिवाय नमिः ॐ नमिः शिवाय
ोनिटराज िे श्रचदमबरम्, ्
ोनिृत्यराज श्रथलै ैअमबलम्, ्
वप्रयतम शिवकामी सुन्दरी के,
भुवनेश्वरी राजराजेश्वरी के,

पापववनािक वरदाता,

दुि:खववनािक अमरत्वप्रदाता,

शिवाय नमि: ॐ शिवाय नमि:,

शिवाय नमि: ॐ नमि: शिवाय ।

ि त्रत्रिूलधारी, ववषपानक!

ि योगीश्वर, सुरेश्वर!

ि कैलासवासी, नन्दीश्वर,

ि किन्दपारवर, शसद्धेश्वर,

ि त्रत्रनेत्रधारी-पंचवतत्रम्,्

ि नीलकण्ठ, देवदेवेश्वर,

शिवाय नमि: ॐ, शिवाय नमि:,

शिवाय नमि: ॐ नमि: शिवाय।

मात्र आप मेरे गुरु, मेरे आश्रय िो,

दया के सागर प्रभु प्रणाम िै आपको,

मुझे अपनी कृपा का प्रसाद दो,

म ैंआपके दयालु रूप का दिनव करूाँ,

शिव मन्त्र तथा स्तोत्र

सदा आपमें िी तनवास करूाँ।

ि ैयिी मेरी िाहदवक प्राथनवा,

शिवाय नमि: ॐ, शिवाय नमि:,

शिवाय नमि: ॐ नमि: शिवाय।

भगवान शिव की महिमा

ॐ । म ैंउन भगवान शिव को करबद्ध नतमस्तक प्रणाम करता िूाँ जो जगत्-्पतत िैं, जगद् गुरु िैं, त्रत्रपुरारर (काम, क्रोध और अिं रूपी तीन पुररयों का नाि करनेवाले) िैं; (उमा, गौरी, गंगापतत) उमा िंकर, गौरी िंकर, गंगा िंकर िैं, जो ज्योततमयव (प्रकाि से पररपूण)व िैं, श्रचदानन्दमय (ज्ञान और आनन्द से पूण)व िैं, जो योगीश्वर (योश्रगयों के स्वामी) िैं, जो ज्ञान के भण्डार िैं और जो मिादेव, िंकर, िर, िम्भु, सदाशिव, रुि,

ूलिपाखण, भैरव, उमामिेश्वर, नीलकण्ठ, त्रत्रलोचन, त्र्यमबक, ववश्वनाथ, चन्द्रिेखिर, अधनवारीश्वर, मिेश्वर, नीललोहित, परमशिव, हदगमबर तथा दक्षक्षणामूतत वइत्याहद ववशभन्न नामों से जानेजातेिैं।

वेककतने कृपालु िैं! ककतने दयालु और करुणामय िैं! अपनेभततों की तो मुण्डमाला को वे अपने कण्ठ में धारण ककये रिते िैं। वे वैराग्य, करुणा स्निे और ज्ञान की साकार मूतत विैं। उनको ववनािकारी किना भूल िै। भगवान् ्शिव तो वास्तव में पुनजनवक िै। जब भी ककसी का भौततक िरीर ककसी रोग, वृद्धावस्था अथवा ककसी अन्य कारणवि इस जन्म में और ववकास के अयोग्य िो जाता िै, वे तत्काल इस जीण-िीण वभौततक आवरण को टिा कर पुनिः ववकास के शलए नयी स्वस्थ, िजततिाली दिे प्रदान कर देते िैं। वे अपने बच्चों को िीघ्र अपने चरणकमलों में बुलाना चािते िैं। वे उन्िें अपना परम शिव-पद प्रदान करना चािते िैं। िरर की अपेक्षा शिव को प्रसन्न करना सरल िै। थोड़ा-सा प्रेम और भजतत, थोड़ा-सा उनके पंचाक्षर का जप िी शिव को प्रसन्नता से भर देने के शलए बिुत िै। वे अपने भततों को बिुत िीघ्र वरदान दे देते िैं। उनका हृदय ककतना वविाल िै! अजुनव को थोड़ी-सी तपस्या करने पर िी उन्िोंने सरलता से पािुपतास्त्र प्रदान कर हदया। भस्मासुर को उन्िोंनेअनमोल वरदान हदया। ततरुपतत के तनकट कालिजस्त में भतत कण्णप्प नयनार जो कक शिकारी था और जजसने मूतत वके अश्रुपूण व नेत्रों के स्थान पर लगाने के शलए अपनेनेत्र तनकाल हदयेथे, को उन्िोंनेदिनव हदये। श्रचदमबर में तो अछूत पाररिओ सन्त नन्दन को भी भगवान् ्शिव के दिनव प्राप्त िुए। माकवण्डेयि को यमराज के पंजे िेसे छुड़ा कर अमरत्व प्रदान करने के शलए वे अत्यन्त तीव्र गतत से भागे। लकापतत रावण ने उन्िें सामगायन से प्रसन्न कर शलया। चारों ब्रह्मचारी बालकों-सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार को उन्िोंनेदक्षक्षणामूतत वके रूप में ज्ञान के रिस्योद्घाटन करते िुए दीक्षक्षत ककया। दक्षक्षण भारत में मदुरै में सुन्दरेश्वर (भगवान् ्शिव) ने अपनी एक

भतत स्त्री के शलए एक बालक बन कर एक पुढ (एक प्रकार की शमठाई) मजदूरी पाने के शलए वैगयैनिर तनमाणव -स्थल पर शमट्टी की टोकरी शसर पर उठायी। अपनेभततों के शलए उनकी असीम दया दिनवीय िै। जब ब्रह्मा और ववष्णु भगवान् ्शिव के आहद व अन्त को खोजनेतनकले तो उन्िोंनेअनन्त वविाल ज्योततमयव स्वरूप धारण कर शलया। ये दोनों अपने प्रयत्न में असफल िो गये। वे ककतने वविाल हृदय और स्वयंप्रकाि िैं! दक्षक्षण भारत में पवत्तनातु स्वामी के घर वषों तक उनके दत्तक पुत्र के रूप में रिे और अन्त में यि संक्षक्षप्त सूचना छोड़ कर चलेगये कक "एक टूटी सुई भी मृतूयु के पश्चात् ्तुमिारे साथ निींजायेगी।" यिी सूचनापत्र पवत्तनातु स्वामी के ज्ञान-प्राजप्त का प्रथम त्रबन्दु ुबना। आप भी इसी क्षण सेप्रभु (भगवान् ्शिव की) प्राजप्त के शलए सच्चाई से प्रयत्निील तयों निींिो जाते?े

ठियोगी मूलाधार चक्र में प्रसुप्त कुण्डशलनी िजतत को आसन, प्राणायाम कुमभक, मुिा और बन्ध द्वारा जागृत् करते िैं। उसे ेववशभन्न चक्रों (आध्याजत्मक िजतत स्रोतों) स्वाश्रधष्ठान, मखणपूर, अनाित, वविुद्ध और आज्ञा में से िोते िुए िीषस्वथान में सिस्र दलों वाले कमल सिस्रार में ले जा कर भगवान से शमला देते िैं। विााँवे अमृत् (शिवज्ञान अमृत्) पान करते िैं। इसे ेअमृतास्रव किते िैं। जब िजतत का शिव से शमलन िोता िै तो योगी को पूण वप्रकाि प्राप्त िो जाता िै।

भगवान शिव ब्रह्म के ववनिाकारी स्वरूप का पररचायक ि।ैं ब्रह्म का वि अंि जो तमोगुण प्रधान माया द्वारा आच्छाहदत िै, विी सवव्वयापक कैलासवासी भगवान् ्शिव िै। वे ज्ञान का भण्िार िैं। पावतवी, काली या दुगा वसे रहित शिव िुिद्ध तनगुणव ब्रह्म िैं। माया (पावतवी) के सहित वे अपनेभततों की पावन भजतत के शलए सगुण ब्रह्म िी जाते िैं। राम-भततों को भगवान शिव की भजतत अवश्य करनी चाहिए। स्वयं राम ने भी प्रशसद्ध रामेश्वरम् ् स्थल पर भगवान शिव की आराधना की थी। भगवान शिव तपजस्वयों और योश्रगयों के हदगमबर वि में इष्ट िैं।

उनका दक्षक्षण िस्तधारी त्रत्रिूल सत्त्व रजस् ्और तमस् ्तीनों गुणों का प्रतीक िै। यि उनकी प्रभुसत्ता का प्रतीक िै। वे इन तीन गुण द्वारा संसार पर िासन करते िैं। वाम िस्त में धारण ककया िुआ िमरू 'िब्द ब्रह्म' का पररचायक िै। यि ॐ जजसमें से समस्त भाषाओं का उद्भव िुआ िै—का प्रतीक िै। उन्िोंने िी िमरू की ध्वतन से संस्कृत भाषा की रचना की िै।

मस्तक पर अधचवन्ि धारण कर वे स्पष्ट करते िैं कक उन्िोंनेमन को पूणतवया जीत शलया िै। बिती िुई गंगा अमृतत्व की प्रतीक िै। गजराज अिंकार वृवृत्त का प्रतीक माना गया िै। गजचम वधारण करने का आिय िै कक उन्िोंनेअिं पर ववजय पा ली िै। िेर काम का प्रतीक िै। व्याघ्रचम वपर बैठैनेका अथ वि कक उन्िोंनेकाम को जीता िुआ िै। एक िाथ में मृग को पकड़ने का अथ वि कक उन्िोंने मन की चंचलता को दूरू कर हदया िै। मृग िीघ्रता से एक स्थान से दूसूरे स्थान पर उछल-कूद करता रिता िै, इसी प्रकार मन भी एक ववषय से दूसूरे ववषय पर नाचता रिता िै। कण्ठ में धारण ककये िुए सप वबुद्श्रध और अमरत्व के पररचायक िैं। सापँ बिुत दीघजवीवी िोते िैं। वे त्रत्रनेत्रधारी त्रत्रलोचन िैं, बीच का तीसरा नेत्र प्रज्ञा का नेत्र िै। नन्दी, शिवशलंगं के सममुख जस्थत बैल प्रणव का प्रतीक िै। शलंगं अद्वैत का प्रतीक िै। यि 'एकमेव अद्ववतीयम्'् को प्रकट करता िै ठीक उसी प्रकार जैसे ेमनुष्य अपना दाहिना िाथ, शसर से ऊपर उठा कर उसकी तजनवी द्वारा संकेत कर रिा िो।

कैलास पवतव ततब्बत में वविाल पवतव श्रेणी िै जिाँसुन्दर प्राकृततक रूप से ढक कर सजायी िुई चाद़ी-सी चमकीली हिमाच्छाहदत चोटी िै जो सागर तल से २२, २८० फुट की ऊँचाई पर िै, कोई-कोई २२,०२८ फुट भी किते िैं। यि वविेष चोटी प्राकृततक रूप में िी वविाल शिवशलंगं के आकार की िै। इसकी दूरू से िी शिवशलंगं के रूप में पूजा की जाती िै। यिा ाँन कोई मजन्दर िै, न पुजारी—न िी प्रततहदन की कोई पूजा िोती िै। भगवान् ्शिव की कृपा से मुझे २२ जुलाई १९३१ को कैलास के दिनव का सौभाग्य प्राप्त िुआ। म ैंफूले िुए श्वास से कैलास के मूल - जिा ाँसे शसन्धु ुतनकलती िै—तक चढ़ गया था। यि अत्यन्त नयनाशभराम और ममस्वपिी दृश्य िै कैलास की पररक्रमा के प्रथम ववश्राम स्थल हदहदफा गुिा से चढ़ाई करनी पड़ती िै। कैलास की चोटी के वपछलेभाग से हिम के ढेरों में से शसन्धु ु छोटी-सी नदी के रूप में बिुत वेगपूवकव फूट कर तनकलती िै। यद्यवप श्रचत्रों में भगवान् ्शिव की जटाओंसे गंगा तनकलती हदखायी जाती िै; ककन्तु वास्तव में वि शसन्धु िै जो भगवान् ्शिव के िीि (कैलास) में से तनकल कर आती िै। कैलास की पररक्रमा ३० मील की िै। इसे ेपूण वकरने में ३ हदन लगते िैं। माग वमें गौरीकुण्ि आता िै जिा ाँसदा हिम रिती िै, यहद आपको स्नान करना िो तो हिम को तोड़ना पड़ता िै।

भगवान शिव का नाम ककसी भी तरि जपा जाये, ◌ुिद्ध अथवा अिुद्ध, जान-बूझ कर अथवा अनजाने में, ध्यान से अथवा असावधानी से, वि अवश्य ◌िी इजच्छत फल प्रदान करता ◌िै। भगवान् ◌्शिव के नाम की महिमा को बुद्श्रध और वववेक द्वारा प्रमाखणत निंींककया जा सकता; ककन्तु श्रद्धा, ववश्वास और भाव सहित नाम स्मरण और संकीतनव सेअवश्य ◌िी अनुभव ककया जा सकता ◌िै। प्रत्येक नाम असंख्य ◌िजततयों से समपन्न ◌िै। नाम की ◌िजतत अतनवचवनीय ◌िै। इसकी महिमा अवणनवीय ◌िै। भगवान शिव के नाम की सामथ्य वऔर उसमें अन्ततनहवित ◌िजतत अथाि ◌िै।

भगवान् ◌्शिव के स्तोत्र के पाठ और उनके नाम के तनरन्तर स्मरण से मन पववत्र ◌िोता ◌िै। स्तोत्र ◌ुिभ और ◌ुद्धि भावों से ओत-प्रोत ◌िैं। शिव स्तोत्र के पाठ द्वारा अच्छे संस्कार सुदृढ़ ◌िोते ◌िैं। "मनुष्य जैसा सोचता ◌िै वैसा ◌िी बनता ◌िै।" यि मनोवैज्ञातनक तनयम ◌िै। जो मनुष्य स्वयं को ◌ुिभ पववत्र ववचार करना शसखाता ◌िै, वि अच्छे ववचार ववकशसत करता ◌िै। तनरन्तर अच्छे ववचारों द्वारा गहठत ◌िोनेसे उसके चररत्र का स्वरूप बदल जाता ◌िै। प्रभु के स्तोत्र-गान करते ◌िुए जब मन उनकी छवव का ध्यान करता ◌िै, तब मन वास्तव में प्रभु की छवव का ◌िी रूप धारण कर लेता ◌िै। ववचार की छाप मन पर रि जाती ◌िै। यि संस्कार किलाती ◌िै। यि कक्रया जब बार-बार दोिरायी जाती ◌िै, तो इस आवृवृत्त से संस्कार और भी दृढ़ ◌िो जाते ◌िैं जो मन का स्वभाव बन जातिैं। जो दैवी ववचार रखता ◌िै, वि तनरन्तर ववचार द्वारा वास्तव में स्वयं ईश्वरत्व में रूपान्तररत ◌िो जाता ◌िै। उसके भाव ◌ुिद्ध और ईश्वरीय ◌िो जाते ◌िैं। जब कोई भगवान् ◌्शिव के स्तोत्र और भजन गाता ◌िै, तो वि प्रभु के तदनुरूप जाता ◌िै। व्यजततगत-मन, ब्रह्म-मन में लीन ◌िो जाता ◌िै। जो स्तोत्र-गान करता ◌िै, वि भगवान् ◌्शिव के साथ एक ◌िो जाता ◌िै।

जजस प्रकार अजग्न में ज्वलनिंील पदाथों को जलानेका स्वाभाववक गुण ◌िै, उसी प्रकार भगवान् ◌्शिव के नाम में उन लोगों—जो उनका नाम जपतिैं—के पाप-संस्ंकारों व वासनाओंको जला देने तथा ◌िाश्वत परमानन्द और अनन्त ◌िाजन्त प्रदान करनेकी ◌िजतत ◌िै।

जैसे ◌ेअजग्न में जलाने का गुण स्वाभाववक और अन्तभूतव ◌िै, वैसिी भगवान् ◌्के नाम में भी पापों को मूल रूप से नष्ट करने और जजज्ञासु साधक को भाव समाश्रध द्वारा प्रभु आनन्दमय शमलन कराने की सिज स्वाभाववक ◌िजतत ◌िै।

◌े शिमत्र! शिव-नाम की ◌िरण में जायें! उनके भजन गायें! नामी और नाम परस्पर अववभाज्य ◌िैं। भगवान् ◌् शिव का कीतनव तनरन्तर करें। प्रत्येक श्वास-प्रश्वास के साथ प्रभु का नाम-स्मरण करें। कशलयुग में ईश्वर-साक्षात्कार, अमरत्व और परमानन्द-प्राजप्त का सरलतम, ◌िीघ्रतम, सुरक्षक्षत और सुतनजश्चत माग वि नाम स्मरण और संकीतनव । भगवान् ◌्शिव की जय ◌िो! उनके नाम की जय ◌िो!

रावण ने शिव स्तोत्र द्वारा भगवान् ◌्शिव को प्रसन्न कर शलया। पुष्पदन्त ने भगवान् ◌्शिव को ववख्यात शिवमहिमनस्तोत्र द्वारा प्रसन्न ककया। इस स्तोत्र को समस्त भारत में आज भी शिव-भतत गाते ◌िैं और समपूण व ऐश्वय,व शसद्श्रधया ◌ाँऔर मोक्ष प्राप्त करते ◌िैं। शिव स्तोत्रों की महिमा अवणनवीय ◌िै। आप भी अज्ञात भववष्य पर न

छोड़ते िुए इसी क्षण से भगवान शिव का नाम संकीतनव करें और उनकी कृपा और मोक्ष के अश्रधकारी बनें! भगवान शिव को आप सिज िी प्रसन्न कर सकते िैं। शिवरात्रत्र का उपवास करें। यहद ऐसा न कर सकें, तो उस हदन दूधू और फल ले लें। रात भर पूण वजागरण करें और उनके स्तोत्र और ॐ नमिः शिवाय का जप करते ेरिं। भगवान् ्शिव की कृपा आप पर िो!

ॐ िाजन्तः । ॐ िाजन्तः !! ॐ िाजन्तः !!!

अध्याय २

शिव- -तत्त्व

मुझ में सृजृष्ट आरमभ िोती िै,
मुझ में जस्थत रिती िै;
मुझ में िी यि लय िो जाती िै— शिव,
वि कालातीत, स्वयं म ैंिी िूँ,

शिवोऽिं! शिवोऽिं! शिवोऽिं!

भगवान शिव को नमस्कार िै! कामदेव का संिार करने वाले, अमरत्व और परमानन्द की वषा वकरने वाले, समस्त जीवों के रक्षक, पापववनािक, देवों के देव, बाघमबरधारी, सवश्रेवष्ठ आराधनीय, गंगाजटाधारी भगवान शिव को प्रणाम िै! भगवान शिव तनत्य, िुद्ध, तनगुणव, सवव्वयापक, अनुभवातीत चैतन्य िैं। वे तनजष्क्रय परम पुरुष िैं। प्रकृतत उनके वक्षस्थल पर नृतृय करती िुई सृजृष्ट, पालन और संिार काय वकरती िै।

जब न प्रकाि िोता िै न िी अन्धकार, न रूप, न िी िजतत, न िब्द न िी तत्त्व, जब दृश्य-प्रपंच के अजस्तत्व का भी प्रकटीकरण निीं िोता, तब केवल शिव स्वयं अपनेमें िी ववद्यमान िोते िैं। वे कालातीत, स्थानिीन, जन्म व मरण से रहित िैं। वे द्वन्द्वातीत िैं। वे तनगुणव तनराकार ब्रह्म िैं। वे सुख और उन्िें आखोंं से देखा निीं जा सकता; ककन्तु भजतत और ध्यान के द्वारा हृदय में उनका साक्षात्कार ककया जा सकता िै। दुिःख से, अच्छे और बुरे से अप्रभाववत िैं।

शिव जब िजतत के सहित िोते िैं, तो वे परम इष्टदेव िैं। तब वे सविवजततमान्, ्सवज्ञ, सकक्रय प्रभु िैं। वे परम आनन्द में नृतृय करते िैं और नृतृय की लय में सजष्ट जस्थतत और संिार करते िैं।

वेअपनेभततों के समस्त बन्धन, तनयन्त्रण और दुिःखों को नष्ट कर देते िैं। वे मुजततदाता और उद्धारक िैं। वे सवव्वयापक िैं। वे समस्त जीवों के सत्य स्वरूप िैं। वे मृतृकों (जो संसार के शलए मृतृक समान िैं) के तनवास स्थान श्मिान में तनवास करने वाले श्मिानवासी िैं।

जीव और जगत् ्का उद्गम उनसे िै, जस्थतत उनमें िै। उनमें िी उनका पालन और संिार िै और अन्त में उन्िीं में समा जाते िैं। वे समस्त जगत् ्के रक्षक, उद्गम और आधार िैं। वे सत्यम्, ् सुन्दरम्, ् शिवम् ्और आनन्द की प्रततमूतत विैं। वे िी सत्यम्, ् शिवम्, ् िुभम्, ् सुन्दरम् ्और कान्तम् ्िैं।

वेदेवों के देव मिादेव िैं। वे प्रजापतत िैं। वे ववस्मयकारी, भयानक मूतत,व त्रिशूलधारी रुद्र िैं। वे अत्यन्त िीघ्र प्रसन्न िोनेवाले आिुतोष िैं। वे सव वसुलभ िैं। िूद्र, चाण्डाल और अज्ञ अपररष्कृत भी उनको पा सकते िैं।

वेसमपूण वज्ञान और वववेक के स्रोत िैं। वे एक आदि वयोगी और मुतन िैं। वे एक ऐसे आदि वपररवार के आदि वपतत िैं जजसमें उमा उनकी समवपतवा पत्नी िैं, भगवान् ्सुब्रह्मण्यम् ्िजतत, सािस और वीरता के नायक िैं और भगवान् ्गणेि ववघ्नववनायक िैं।

सदाशिव

प्रलय के अन्त में परमात्मा ववश्व की पुनरवचना करने की सोचतेिैं। तब उन्िें सदाशिव के नाम से जाना जाता िै। वे िी सृजृष्ट का मूल कारण िैं। सदाशिव से सृजृन आरमभ िोता िै। मनुस्मृतृत में उन्िें स्वयंभू किा गया िै। सदाशिव अव्यतत िैं, वे प्रलय के कारण से उत्पन्न तमस् ्का नाि करते िैं और स्वयं पंचमिाभूतों इत्याहद को अजस्तत्व में लाते िुए स्वदेदीप्यमान- प्रकाि के समान चमकतेिैं।

शिवपुराण के अनुसार, शिव पुरुष और प्रकृतत दोनों से परे िैं। वे मिेश्वर िैं। वे समस्त जीवों के िष्टा, भतावऔर पोषक िैं। गीता का कथन िै- **"उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भता धभोक्ता महेश्वरः ।"** मिेश्वर अपनेसंकल्प और इच्छा से सृजृष्ट की संरचना का काय वकरते िैं। श्रुतत किती िै- **"मयं तु प्रकृनतं ंववद्र्ध मनयनांतु महेश्वरम् ्।"** प्रकृतत को माया जानो, मिेश्वर को माया अथवा प्रकृतत का तनयन्ता। शिव की िजतत दो ववशभन्न प्रकार से काय व करती िै-मूल प्रकृतत तथा दैवी प्रकृतत। मूल प्रकृतत अपरा प्रकृतत िै जजसमें से पंचं तत्त्व तथा अन्य दृश्य पदाथ व और अन्तिःकरण उत्पन्न िोते िैं। परा प्रकृतत चैतन्य िजतत िै जो अपरा प्रकृतत को पररवततततव करके उसे ेनाम-रूप देती िै। अपरा प्रकृतत अववद्या िै और परा प्रकृतत ववद्या िै। इन दोनों प्रकृततयों के तनयन्ता और स्रष्टा भगवान् ् शिव िैं ।

शिव ब्रह्मा, ववष्णु और रुि से शभन्न िैं। भगवान् ्शिव असंख्य करोड़ ब्रह्माण्डोंिं अथवा जगत् ्के स्वामी िैं। भगवान शिव की आज्ञा से माया से संयुतत िोकर ईश्वर रजस्, ् सत्त्व और तमोगुण से क्रमििः ब्रह्मा, ववष्णु ु और रुि की सृजृष्ट करता िै। ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर रुि जगत् ्के त्रत्रयक देव िैं।

त्रत्रयक ब्रह्मा, ववष्णु और रुि में कोई अन्तर निीं िै। मिेश्वर की आज्ञा से ये तीनों संसार की संरचना, पालन और संिार का काय वकरतेिैं। इन तीनों का समस्त काय वसंयुतत रूप से िोता िै। इस नाम-रूप वाले दृश्य जगत् ्के सृजृष्ट, पालन और संिार काय वमें इन तीनों का एक िी उद्देश्य और एक िी तनजश्चत कारण िोता िै। जो इन तीनों को शभन्न-शभन्न मान कर इनमें भेदे-दृजष्ट रखता िै, शिवपुराण के कथनानुसार, "वि तनस्सन्देि नरवपिाच 'अथवा पापात्मा िै।'

तीनों गुणों से परे जो भगवान मिेश्वर िैं, उनके चार रूप िैं—ब्रह्मा, काल, रुि और ववष्णु ु। शिव इन चारों के आधार िैं। वे िजतत के भी आधार-तत्त्व िैं, शिव त्रत्रयक के रुि से भी शभन्न िैं। रुि वास्तव में एक िी िैं, यद्यवप ववशभन्न कायों के अनुसार शभन्न शभन्न एकादि रुि माने जाते िैं।

शिव का प्रथम मुख क्रीड़ा करता िै, द्ववतीय तप साधना करता िै, तृतीय जगत् ्का संिार अथवा लय करता िै, चतुथ वजीवों की रक्षा करता िै और पाचाँवा ाँज्ञान रूप िोनेके कारण समस्त ववश्व को अपनी िजतत से पूणतवया आच्छाहदत करता िै। वि ईिान िै तथा स्वयं िी समस्त जीवों का स्रष्टा और प्रवधकव िै।

प्रभुशिव की जो प्रथम ईिान नामक मूतत वि, वि प्रकृतत के साक्षात् ्भोतता क्षेत्रज्ञ को व्याप्त करके जस्थत िै। इनकी दूसूरी जो तत्पुरुष नामक मूतत वि, वि सत्त्व गुणों के आश्रय रूप भोग्य अव्यतत प्रकृतत में अश्रधजष्ठत िै। तीसरी अघोर नामक मूतत वधम वआहद आठ अंगों से युतत बुद्श्रध-तत्त्व को अपना अश्रधष्ठान बनाती

ि तथा चौथी वामदेव ि, जो अिकार में जस्थत ि तथा पाचाँवीं सद्योजात मन को अपना अश्रधष्ठान बनाती ि। शिव की आठ मूततयवा ाँ ि—व,व भव, रुि, उग्र, भीम, पिुपतत, ईिान और मिादेव। ये क्रमिः पृथ्वी, जल, अजग्न, वायु, आकाि, क्षेत्रज्ञ, सूय वऔर चन्द्रमा में अश्रधजष्ठत ि।

अधनवारीश्वर

ब्रह्मा अपनी मानशसक सृजष्ट द्वारा जब सृजष्ट रचना की वृद्धश्रध करने में सफल निींिुए, तब उन्िोंने परमेश्वर से प्रजा वृद्धश्रध के ढंग को जाननेके शलए तपस्या की। उनकी तपस्या के फल स्वरूप आद्य िजतत उनके हृदय में उत्पन्न िुई। उसी आद्य िजतत की सिायता से ब्रह्मा जी त्र्यमबकेश्वर भगवान् का हृदय में श्रचन्तन करते िुए तप करने लगे। ब्रह्मा के तीव्र तप से सन्तुष्ट िो अपने अतनवचवनीय अंि से ककसी अद्भुत मूतत वमें आववष्ठ िो भगवान् मिादेव आधे िरीर से नारी और आधे िरीर से ईश्वर िो कर अधनवारीश्वर के रूप में प्रकट िुए। ब्रह्मा ने अधनवारीश्वर की स्तुतत की, तब प्रभु शिव ने अपनेिरीर के बाम भाग से पराजतत भगवती को प्रकट ककया। ब्रह्मा ने देवी भगवती से किा- "मेरे द्वारा मानशसक संकल्प से रची गयी सृजष्ट में प्राणी बढ़ निींरिे ि। यद्यवप मनैं देवताओंकी रचना की, ककन्तु वे भी बढ़ निींसके। अतः अब म ैंमैथुनी सृजष्ट करके िी अपनी प्रजा को बढ़ाना चािता िूाँ। आपके प्रकट िोनेसे पूव वअब तक नारी कुल का प्रादुभाव निींिुआ था, तयोंकक नारी कुल की सृजष्ट करने की िजतत मुझमें निींि। अतः ि देवी! इस जगत् की वृद्धश्रध के शलए आप कृपा करके अपने एक अंि से मेरे पुत्र दक्ष की पुत्री िो कर जन्म लें।"

जगद्-गुरु

भगवान् शिव का मानव जातत के शलए ककया गया सवाश्रवधक मिान् और उपयोगी काय वि—ववश्व को योग, भजतत और ज्ञान इत्याहद की ववद्या प्रदान करना। वे उन पर कृपा करते ि जो अश्रधकारी िऔर जो उनकी कृपा के त्रबना संसार सेछूट निींपाते। वे केवल जगद् गुरु िी निीं, अवपतु जीवन्मुतत व संन्यासशसयों के आदि वभी ि। वेअपने दैतनक जीवन के कायकवलापों के द्वारा िी शिक्षा देते ि।

पिुपत योग

इजन्द्रयों को संयशमत करके आत्मा को शिव-तत्त्व से संयुतत करना िी वास्तववक भस्म धारण करना ि, तयोंकक भगवान् शिव ने अपने तीसरे ज्ञान चक्षुद्वारा काम को भस्म कर हदया था। प्रणव का ध्यान जप सहित करना चाहिए। तनरन्तर अभ्यास द्वारा वास्तववक ज्ञान, योग और भजतत को प्राप्त करना चाहिए। हृदय-स्थान में दि दलों वाला कमल जस्थत ि। इसमें दि नाडड़या ाँ ि। यिींजीवात्मा तनवास करता ि। यि जीवात्मा सूक्ष्म रूप

से मन में रिता ि और यिी श्रचत्त अथवा पुरुष ि। मनुष्य को गुरु के तनदेिानुसार, दिाजग्न नाड़ी को भेद कर, योग के तनरन्तर अभ्यास द्वारा तथा वैराग्य, सदाचार और समता के अभ्यास द्वारा चन्मिा तक पिुाँचना चाहिए।
तब चन्मिा साधक के योग में तनयशमत िोनेसे व नाड़ी िोधन से प्रसन्न िो कर धीरे-धीरे पूणतवा को प्राप्त कराता ि। इस अवस्था में साधक जागृतृ और सुषुप्तावस्था को ववजय कर लेता ि और ध्यान द्वारा जागृतृावस्था में िी स्वयं को ध्येय में लीन कर देता ि।

अध्याय ३

िैविशसद्धान्तदिनव

शिव और शिव तत्त्व

सत्यंशिवंुभ्सिुन्दरंकान्तम्। ्

िैव-शसद्धान्त प्रणाली वेदान्त का िुद्ध सत्त्व ि। दक्षक्षण भारत में यि ईसाई-काल से भी पूव वसे प्रचशलत ि। तितरुनेलवेली और मदुरै िैवशसद्धान्तवाद के केन्ि ि। ११ वीं िताब्दी ई.पू. में िैवमतानुयातययों ने िैव-शसद्धान्त नाम से एक शभन्न दिनव की व्याख्या की। िैवमत दक्षक्षण भारत में अत्यश्रधक लोकवप्रय मत ि। यि वैष्णवमत का प्रततद्वन्द्वी ि।

ततरुमुलर ववरश्रचत ततरुमन्त्रम् ्आधार ि जजस पर परवती िैव-शसद्धान्त दिनव की रूपरेखा बनायी गयी। अट्ठाईस िैवागम, िैव-सन्तों के भजन- स्तोत्र दक्षक्षणी िैवमत के मुख्य आधार ि।

जजन ग्रन्थों में िैवमत का तनरूपण िुआ िै, उनमें चार समप्रदायों— नकुशलस-पिुपत, िैव, प्रत्यशभज्ञ और रसेश्वर का वणनव शमलता िै।

भगवान शिव परम सत्य िैं। वे िाश्वत, तनराकार, स्वतन्त्र, सवव्वयापक, अद्ववतीय, अनाहद, कारण रहित, तनदोष, स्वयं ववद्यमान, सदामुतत और सदिुद्ध ि।ैं वे काल द्वारा बद्ध निीं िैं। वे अनन्त आनन्द और अनन्त ज्ञान िैं।

भगवान शिव अपनी िजतत के रूप में समस्त ववश्व में व्याप्त िैं। वे िजतत से काय वकरते िैं। िजतत उनकी चैतन्य िजतत िै। वि भगवान् ्शिव का साकार रूप िै। कुमभ का प्रमुख कारण कुमभकार िै। िण्िा और चाक उसके तनशमत्त कारण िैं। शमट्टी उसका उपादान कारण िै। इसी प्रकार भगवान् ्शिव जगत् ्के प्रथम कारण िैं, िजतत तनशमत्त कारण िै और माया उपादान कारण िै।

भगवान शिव प्रेम के प्रभु िैं। उनकी कृपा असीम िै। वे रक्षक िैं और गुरु जीवात्माओं को ववषयों की दासता से मुतत करने में तनरत िैं। मानव-जातत के प्रतत गिन भी। वे प्रेम के कारण िी वे गुरु-रूप धारण करते िैं। वे चािते िैं कक सभी उनको जानें और परम शिव-पद को प्राप्त करें। वे प्रत्येक जीव के कमों पर स्निेमयी दृजष्ट रखते िैं और उनकी ऊध्ववगवामी यात्रा में सिायता करते िैं।

िैव-शसद्धान्त के अनुसार कुल ३६ तत्त्व िैं जजनमें २४ आत्म-तत्त्व किे गये िैं, ७ ववद्या- तत्त्व और िेष ५ शिव-तत्त्व २४ आत्म-तत्त्व िैं—पाचाँ मिाभूत आकाि, वायु, अजग्न, जल और पृथूवी; पाचाँ तन्मात्राए ाँ- िब्द, स्पि,व रूप, रस और गन्ध, पाचाँ ज्ञानेजन्ियााँ — कण,व त्वचा, चक्षु, जजह्वा और नाशसका; पाचाँ कमेजन्िया ाँ- वाणी, िाथ, पैर, गुदा और जननेजन्िय; तथा अिंकार, बुद्श्रध और गुण। ७ ववद्या- तत्व िैं— पुरुष, राग (प्रेम), ववद्या (ज्ञान), कला, तनयतत, काल तथा अिुद्ध माया । पाचाँ शिव-तत्त्व िैं- िुद्ध ववद्या, ईश्वर, सदाशिव, िजतत और शिव ।

माया पिले ेसूक्ष्म शसद्धान्तों में ववकशसत िो कर कफर स्थूलू में िोती िै। जीवात्मा ववद्या से िी सुख-दु:ुख अनुभव करता िै। शिव-तत्त्व समपूण वचेतना और कम वका आधार िै। यि तनष्कल िुद्ध िै। शिव की िजतत माया अपना काय वकरती िै, तब शिव भोतता िो जाते िैं। तब वे सदाशिव िो कर सदख्या के नाम से भी जानेजाते े िैं—जो कक शिव से वास्तव में शभन्न निीं िैं। जब िुद्ध माया कक्रयाजन्वत िो जाती िै, तब भोतता शिव िासक िो जाते िैं। तब वे ईश्वर िैं जो वास्तव में सदाशिव से शभन्न निीं िैं। िुद्ध ववद्या िुद्ध ज्ञान की कारण िै। भगवान् ् के पंच- कृत्य िैं—सृजष्ट, जस्थतत, संिार, ततरोभाव और अनुग्रि । इनको अलग-अलग करके क्रमिः ब्रह्मा, ववष्णु, रुि, मिेश्वर और सदाशिव के काय वकिा जाता िै।

पंचाक्षरी मन्त्र **'नम: शिवाय'** में 'न' भगवान् ्की रक्षक िजतत िै जजससे ेजीवात्मा जगत् ्में भ्रमण करता िै। 'म' वि बन्धन िै जो उसे ेसंसार के जन्म-मरण के बन्धन में बाधाँता िै। 'शि' भगवान् ्शिव का प्रतीक िै। 'वा'

उनके अनुग्रि का प्रतीक ि ै। 'य' आत्मा का प्रतीक ि ै। यहद जीवात्मा 'न' और 'म' की ओर उन्मुख िोगा, तो संसार में िूब जायेगा। यहद वि स्वयं को 'वा' से संयुतत कर लेगा, तो वि 'शि' भगवान् ्शिव की ओर बढ़ जायेगा।

भगवान शिव की लीलाओंऔर पंचाक्षर के मित्व को सुनना 'श्रवण' ि ै। पंचाक्षर के अथ वपर ववचार करना 'मनन' अथवा 'श्रचन्तन' ि ै। भगवान् ्शिव के प्रतत प्रेमे और भजतत ववकशसत करना और उन पर ध्यान लगाना 'शिव-ध्यान' ि ै। 'शिव-आनन्द' में िूब जाना 'तनष्ठा' अथवा 'समाश्रध' ि ै। जो इस अवस्था को प्राप्त कर लेता ि ै, वि 'जीवन्मुतत' किलाता ि ै ।

पतत पिु पिा

भगवान् ्शिव 'पतत' िैं। समस्त वेदों और आगमों में भगवान् ्(पतत), बद्ध जीव (पिु), जजसका वास्तववक अथ वपिु िी ि ै और बन्धन (पिा) की धारणा की व्याख्या की गयी ि ै। भगवान् ्शिव असीम, िाश्वत, अद्ववतीय ि ै। वे अववकारी तथा अववभाज्य ि ै। वे साक्षात् ्ज्ञान और आनन्दस्वरूप िैं। वे समस्त जीवात्माओं को जितत और बुद्श्रध देते िैं। वे मन-वाणी सेपरे िैं। वे समस्त जीवात्माओं के परम लक्ष्य ि ै वे सूक्ष्मतम से भी अतत सूक्ष्म तथा मिानतम से भी अश्रधक मिान् ्िैं। वे स्वयं प्रकाशित, स्वयं ववद्यमान तथा स्वयं आनन्दस्वरूप िैं।

'पिु' वि सब जीवात्माएँ ि ै जो संसार के दलदल में फंसी िुई ि ।ै वे अपनेिुभ और अिुभ कमों को भोगने के शलए िरीर धारण करते िैं और कफर अपने कमों के अनुसार िी उच्च या तनमन योतनयााँ प्राप्त करते िैं। वे अपने कमों के अनन्त फलों को भोगतेिुए अन्य िुभ और अिुभ कम वकरते ेरिते िैं, जजसके फलस्वरूप अनन्त जन्मों और मरणों को प्राप्त िोते िैं। अन्ततिः भगवान् ्शिव की कृपा प्राप्त करके िुभ कमों के द्वारा उनका अज्ञान नष्ट िो जाता ि ै। ये मोक्ष प्राप्त कर भगवान् ्शिव से एकाकार िो जाते िैं।

'पिा' बन्धन ि ै। बन्धनों के जाल के अववद्या अथवा अनवमल, कम वऔर माया प्रभेद ककये गये िैं।
अनवमल अिन्ता ि ै। यि अिन्ता आत्मा की ससीमता की भ्रामक धारणा की ववकृतत के कारण ि ै आत्मा ने स्वयं को ससीम कजल्पत करके दि े से तथा उसके सीशमत ज्ञान और सीशमत ि जतत से जोड़ शलया ि ै। इसनेस्वयं का मिान् ्िरीर से तादात्मय स्थावपत कर शलया ि ै। भ्रम से िरीर को िी अपना वास्तववक रूप मान शलया ि ै। और
अपना वास्तववक स्वरूप भुला हदया ि ै।
'कम'व िरीरों का, ववशभन्न िारीररक भोगों का तथा जन्मों और मृतूयुओंका कारण िैं। यि अनन्त िैं। चेतन आत्मा के, अचेतन दि े से संयोजन के यिी कारण ि ै। यि अववद्या के सिायक िैं। यि मन, वाणी और कायों द्वारा िोते िैं। यि पुण्य और पाप का रूप ले लेते ि ै, कफर सुख और दिुःख का कारण बनते िैं। यि सूक्ष्म व अदृष्ट िैं। यि सृजृष्ट के समय में िोते िैं और प्रलय के समय में माया के आधार-तत्त्व में लीन िो जाते िैं। ये नष्ट निीं ्िोते। इनका फल भोगना िी पड़ता ि ै।

'माया' जगत् ्का तनशमत्त कारण ि ै। यि अचेतन अथवा अववद्या, सवव्वयापक और अववनिी ि ै। यि जगत् ्का बीज ि ै। दि सेआरमभ ि ोनेवाले तनु, कारण, भुवन और भोग, चारों वग वमाया से ि ी उत्पन्न ि ोते ि ैं। यि अपने समस्त पररवधनव को व्याप्त कर देती ि ै। तथा काशमकव आत्माओं में ववकृतत का कारण बनती ि ै। प्रलय के समय यि समस्त आत्माओं का मूल आश्रय स्थल ि ोती ि ै। यि स्वयं ि ी आत्माओं के बन्धन का कारण ि ोती ि ै। इसमें यि सब प्रक्रम भगवान् ्शिव की ि जतत के संचार के प्रभाव के कारण ि ै। जजस प्रकार तना, पत्ेते और फल बीज में से ववकशसत ि ोते ि ैं, ठीक उसी प्रकार काल से पृथ्वी तक समस्त सृजृष्ट माया में से प्रस्फुहटत ि ोती ि ै।

ध्वतन का मूल वास्तववक नाद भगवान् ्शिव की इच्छा से ि ुद्ध माया से उत्पन्न ि ोता ि ै। नाद से वास्तववकत्रबन्दु ुप्रस्फुहटत ि ोता ि ै। इससे वास्तववक सदाशिव का प्रकटीकरण ि ोता ि ै जो ईश्वर को जन्म देते ि ैं। यि ववश्वत्रबन्दु ुमें से प्रस्फुहटत ि ो कर ववशभन्न रूपाकारों में ववकशसत ि ोता ि ै।

साधना

व्यजतत यहद अिभाव से मुतत ि ो जाये, तो उसकी भगवान् ्शिव के प्रतत प्रेम व भजतत ववकशसत ि ोती ि ै। चये, कक्रयै, ै योग और ज्ञान भगवान् ्शिव की प्राजप्त तथा अिभाव को नष्ट करने के शलए चार साधनाए ाँअथवा सोपान ि ैं। मजन्दर बनवाना, उनकी सफ़ाई करना, फूलों के ि ार बनाना, प्रभु के गुणगान करना, मजन्दरों में दीप जलाना, फुलवाररया ाँलगाना 'चयै' ै ि ै। पूजा-अचनवा करना 'कक्रये' ि ै। इजन्द्र्यों का संयम करके आन्तररक ज्योतत पर ध्यान लगाना 'योग' ि ै तथा पतत, पुिव पि के वास्तववक मित्त्व को समझ कर अिता, कम वव माया— तीनों के मलों को दूरू करके शिव पर तनरन्तर ध्यान केजन्द्रित करके उनसे ेएक ि ो जाना ि ी 'ज्ञान' ि ै ।
सवव्वयापक अनन्त परब्रह्म परमात्मा की बाह्य उपकरणों द्वारा उपासना 'चये' किलाती ि ै। इसके शलए अपेक्षक्षत उपक्रम 'सामय दीक्षा' किलाती ि ै। ववश्व के ि ाश्वत तनयन्ता परब्रह्म परमात्मा के साकार रूप की बाह्य और आन्तररक उपासना 'कक्रयै' किलाती ि ै। तनराकार रूप में उसकी आन्तररक उपासना 'योग' किलाती ि ै। 'कक्रयै' ै व 'योग' के शलए अपेक्षक्षत दीक्षा को 'वविेष दीक्षा' किते ि ैं। ज्ञान-गुरु के द्वारा भगवान् ्शिव की प्रत्यक्ष अनुभूतत ि ी 'ज्ञान' किलाती ि ै। इस ओर लेजानेवाली दीक्षा 'तनवाणव-दीक्षा' किलाती ि ै।

जजज्ञासु को अनव, कम वऔर माया— तीनों प्रकार के मलों से स्वयं को मुतत कर लेना चाहिए। केवल तभी वि भगवान् ्शिव से एकरूप ि ो कर 'शिवानन्दम् ्' प्राप्त कर सकता ि ै। उसे ेअपने अि ं को पूणतवया नष्ट कर लेना चाहिए, स्वयं को कमों के बन्धन सेमुतत कर लेना चाहिए और समस्त अिुद्श्रधयों की मूल-माया का नाि कर देना चाहिए।

परम मोक्ष की प्राजप्त के शलए गुरु अथवा आध्याजत्मक शिक्षक अत्यन्त आवश्यक िै। शिव पूण वकृपालु िैं। वे भततों की सियता करतेिैं। जो श्रद्धा और ववश्वास के साथ उनकी उपासना करते िैं और उनमें बालसुलभ सरलता से पूण वववश्वास रखते िैं, उन पर वे अपनी कृपा की वषा वकरते िैं। शिव स्वयं िी गुरु िैं। शिव की कृपा िी मोक्ष का माग विै। शिव गुरु में तनवास करते िैंऔर गुरु की आखोंाँ से सच्चे ्साधक की ओर अत्यन्त गिन प्रेम से देखते िैं। यहद आप मानव मात्र से प्रेम करते िो, तभी भगवान् ्से प्रेम कर सकते िो।

यहद साधक स्वयं अपनेऔर भगवान् ्शिव के बीच समबन्ध स्थावपत कर लेता िै, तो वि भजतत में बिुत िीघ्र उन्नतत करता िै। वि दास्य भाव (सेवक और स्वामी का भाव) जैसे ्ततरुनाबुकरसर का था; अथवा वात्सल्य भाव (जजसमें भगवान् ्शिव वपता और भतत भगवान् ्का बालक िो) जैसे ्ततरुज्ञान समबन्धर का था; अथवा सख्य भाव (जजसमें भगवान् ्शिव सेशमत्र का सा भाव रखे) जैसै ्सुन्दरर का था; अथवा सन्माग वका भाव (जजसमें भगवान् ्शिव भतत के शलए उसका जीवन िी िो) जैसे ्माखणतकवाचकर का था या जो वैष्णवों का आत्मतनवेदन या माधुय वभाव िोता िै, इनमें से वि कोई भी भाव रख सकता िै।

जब तीनों मलों का नाि िो जाता िै, तो भतत भगवान् ्शिव के साथ जल में नमक की भातााँत, दूधू में दूधू की भातााँत एक िो जाता िै; ककन्तु वि सृजृष्ट रचना इत्याहद पाचााँ काय वनिींकर सकता —यि पंचकृत्य तो भगवान् ्िी कर सकते िैं।

मुतत आत्मा जीवन्मुतत किलाता िै। यद्यवप वि िरीर में िी रिता िै, तथावप वि परमात्मा से भावात्मक रूप सेएक िोता िै। वि कफर से दिे धारण करने (पुनजन्वम) का कारण बनने वाले कम वनिींकरता; तयोंकक वि अिंभाव सेमुतत िोता िै, इसशलए कम वउसे ्बाधााँ निींसकते। वि लोक-संग्रि के शलए पुण्य कम वकरता िै। जब तक वि अपने प्रारब्ध कम वतनिःिेष निींकर लेता, तब तक वि अपनी दिे में रिता िै। भगवान् ्की कृपा से उसके समस्त कक्रयमाण कम वसमाप्त िो जाते िैं। जीवन्मुतत समस्त काय वअपने अन्तर में जस्थत भगवान् ्की प्रेरणा से करता िै। भगवान् ्शिव और उनकी िजतत धन्य िै !

अष्टमूतत व

शिव के आठ रूपों को अष्टमूतत वकिा गया िै। शिव की यि अष्टमूततयव िै— पंचं तत्त्व, सूय,व चन्द्र और यज्ञकता व याजक।

क्षीरसागर मन्थन के पश्चात् ्ववष्णु मोहिनी रूप में प्रकट िुए। शिव ने उनके उस रूप का आशलंगंन ककया। िास्ता शिव और मोहिनी सेउत्पन्न िुआ। िास्ता को िरर िर पुत्र के नाम से भी पुकारा जाता िै।

अप्पर चिाते थेकक समस्त िैव भतत ववष्णु ुको शिव का िी दूसूरा रूप समझे। अप्पर के अनुसार शिव के तीन रूप िैं- (१) तनमन शिव जो सृजृष्ट का संिार करते ्तथा जीवों को बन्धन मुतत करते िैं। (२) उच्चतर परापर

शिव। इसमें शिव और िजतत अधनवारीश्वर रूप में प्रकट िोते िैं। इनका नाम परम-ज्योतत ि। ब्रह्मा और ववष्णु ु भी इस ज्योतत को जान निीं ंपाये थे। (३) इन दोनों से परे परम रूप ि, जजनमें से ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर रुि प्रकट िोते े िैं। यि शिव का िुद्धतम रूप ि। यि तनराकार ि यि िैव शसद्धान्त का शिवम् ्ि। यि उपतनषदों और वेदाजन्तयों का परब्रह्म रूप ि।

ववष्णुपुराण के मिाववष्णु, िैव-शसद्धाजन्तयों के परम के सदृि ि। नारायण अथवा उच्चतर ववष्णु िैवों के परम ज्योतत के सदृश्य ि। तनमन ववष्णु ुपालन का काय वकरतेिैं। वे तनमन शिव से मेल खातेिैं।

िैव के ववष्णु द्वारा शिवोपासना के तथा वैष्णवों के शिव द्वारा ववष्णु की उपासना के जो समस्त संकेत शमलते िैं, उनका भीतरी अथ वतया ि ? तनमन शिव को नारायण परापर, अथवा परम ज्योतत को अपनेसे श्ऱेष्ठ मानना चाहिए। तनमन ववष्णु को परम ज्योतत अथवा परापर को स्वयं से श्ऱेष्ठ मानना चाहिए। उच्चतर ववष्णु ु तथा उच्चतर शिव एक समान िैं। वे परम सेतनमन िैं।

शिव मोक्ष नामक उच्चतम जस्थतत में कोई द्वैत निींिै। विााँकोई कुछ निीं देख सकता। व्यजतत स्वयं को शिवम् ्अथवा परम में लीन कर देता ि। यहद आप देखना चािते िैं, तो आपको एकदम उच्चतम से नीचे के स्तर पर आना पड़ेगा।

शिवमूतत वअथवा प्रकटीकरण वास्तववक शिवम् ्जो कक तनराकार िैं, से तनमन ि :

िैव-शसद्धान्त दिनव के अनुसार कुल तत्व ९६ ि, वे इस प्रकार ि—२४ आत्म-तत्त्व, १० नाडड़यााँ, ५ अवस्थाए,ाँ ३ मल, ३ गुण (सत्त्व, रज, तम), ३ मण्लि (सूय,व अजग्न, चन्ि), ३ मनोदिाए ाँ(वात, वपत्त, श्लेष्मा), ८ ववकार (काम, क्रोध, लोभ, मोि, मद, मात्सय,व दमभ, असूया), ६ आधार, ७ धातुए,ाँ १० वायु, ५ कोष तथा ९ द्वार । २४ तत्व ि—५ भूत ५ तन्मात्राएाँ(िब्द इत्याहद), ५ ज्ञानेजन्ियााँ, ५ कमेजन्ियााँऔर ४ कारण (मन, बुद्श्रध, श्रचत्त व अिंकार)। यि समस्त ९६ तत्त्व िरीर से समबजन्धत िैं। इन ९६ के अततररतत ५ कंचुक ि। ये िैं-तनयतत, काल, कला, राग और ववद्या। यि पंच दिे के भीतर तक जा कर भीतर के इन तत्त्वों को तलान्त करके िरीर पर प्रभाव िालतेिैं।

िुद्धिैव

िुद्धि िैव केवल 'कक्रया' ('कक्रयै') के द्वारा अजन्तम मुजतत प्राप्त निीं ंकरते। वि केवल सालोतय प्राप्त करते िैं। कक्रया का ज्ञान सालोतय (शिव के स्थान) की प्राजप्त करवाता ि। चया वके ज्ञान (चयै)ै से सामीप्य (शिव की तनकटता) की उपलजब्ध िोती ि। 'योग' के ज्ञान से सारूप्य (शिव के स्वरूप) की प्राजप्त िोती ि। 'नाम' के ज्ञान से सायुज्य (लीन िो जाने) की प्राजप्त िोती ि।

'अमबलम्' ् का अथ विै— हृदय का खुला क्षेत्र या श्रचदाकाि अथवा श्रचदमबरम् ्। और शलंगम् ्ि ववश्व-रूप ।

जो ववश्व का संिार करते िैं, वि िैं शिव अथवा रुि। यिी कारण िै कक उन्िें ब्रह्मा और ववष्णु ्से श्रेष्ठ माना गया िै।

'शसद्धान्ती' जीव और पिु को तीन भागों में ववभतत करते िैं—ववज्ञान कलर, प्रलय कलर और सकलर।
ववज्ञान कलर में केवल अनव मल (अिंता) िै। प्रलय कलर में अनव और माया िै। सकलर में समस्त मल, अनव, कम वऔर माया िैं। मलों का प्रभाव केवल जीवों पर िोता िै, शिव पर निीं। जो मलों से मुतत िो गये िैं, वे शिव के समरूप िो जाते िैं। वे शसद्ध िोते िैं।

अध्याय ४

प्रतीक दिनव

प्रतीक दिनव

भगवान् ्शिव ब्रह्म के संिारकारी रूप को द्योततत करतेिैं। ब्रह्म का वि अंि, जो तमोगुण प्रधान माया द्वारा आच्छाहदत िै, वि भगवान् ्शिव िैं—वे भगवान् ्शिव जो सवव्वयापक ईश्वर िैं, जो कैलास पवतव पर रिते िैं।
वे ज्ञान के भण्डार िैं। पावतवी, काली अथवा दुगा् वसे रहित जो शिव िैं, वि स्वयं िी तनगुणव ब्रह्म िैं। माया-पावतवी के सहित वे अपनेभततों की पावन भजतत के शलए सगुण ब्रह्म बन जाते िैं। राम के भततों को राम की भजतत से पूव व
तीन से छि मास तक भगवान् ्शिव की उपासना अवश्य करनी चाहिए। स्वयं राम ने प्रशसद्ध रामेश्वर में भगवान् ्शिव की पूजा की थी। भगवान् ्शिव हिमालय में तपजस्वयों के भगवान् ्िैं, योगियों के भगवान् ्िैं।
उनके दक्षक्षण िस्त में धारण ककया िुआ त्रिशूल तीन गुणों—सत्त्व, रजस ्और तमस ्का प्रतीक िै। यि प्रभुत्व को सूश्रचत करता िै। वे इन तीनों गुणों के द्वारा जगत् ्का तनयन्त्रण करते िैं। उनके वाम िस्त में धारण ककया िुआ िमरू 'िब्द ब्रह्म' का प्रतीक िै। यि उस ॐ का प्रतीक िै, जजसमें से समस्त भाषाएँबनी िैं। उन्िोंनेिी अपनेिमरू में सेसंस्कृत भाषा की रचना की िै।

अध-वचन्द्र यि सूश्रचत करता िै कक उन्िोंनेमन पर पूणतवया तनयन्त्रण कर शलया िै। गंगा का प्रवाि अनश्वरता के अमृत् का द्योतक िै। गज अशभमान का प्रतीकात्मक प्रकटन िोता िै। गज-चम वधारण करने का अथ विै कक उन्िोंनेअशभमान को तनयजन्त्रत कर शलया िै। शसंि काम का सूचक माना गया िै। उनका बाघमबर पर

बैठना यि प्रकट करता ि◌ै कक उन्िोंने काम-लालसा को जीत शलया ि◌ै। एक ि◌ाथ में मृग को पकड़े ि◌ुए ि◌ोना इस बात को सूश्रचत करता ि◌ै कक उन्िोंने मन की चंचलता को दूर कर हदया ि◌ै। मृग बिुत ि◌ीघ्रता से एक स्थान से दूसूरे स्थान पर कूदता रिता ि◌ै। उनका सपों को धारण करना ज्ञान और ि◌ाश्वतता का प्रतीक ि◌ै। सप वदीघजवीवी ि◌ोते िैं।

वे त्रत्रलोचन—तीन नेत्रधारी ि◌ैं। मस्तक के मध्य में तृतीय नेत्र ज्ञान चक्षु ि◌ै।
भगवान् ◌्शिव का बीज अक्षर ॐ ि◌ै।

वेशिवम्,◌् सुन्दरम्,◌् कान्तम् ◌्ि◌।◌ै "ि◌ान्तं ◌ंशिवं ◌ंअद्वैतम्"◌् (माण्डूतिय उपतनषद्) । म ◌ैंउन भगवान् ◌्शिव के चरणारववन्दों में करबद्ध नतमस्तक ि◌ो कोहट-कोहट प्रणाम करता ि◌ूँ, जो अद्वय ि◌ैं, जो अश्रधष्ठान ि◌ैं, समस्त जगत् ◌्और समस्त हृदयों के जो सत्–श्रचत्–आनन्द ि◌ैं, जो सवतवनयन्ता, अन्तयामवी, सबके साक्षी ि◌ैं, जो स्वयंप्रकाि, स्वयंजस्थत और पररपूण वि◌ै; जो आहदकालीन अववद्या को दूर करने वाले ि◌ैं और जो आहद गुरु अथवा परम गुरु अथवा जगद् गुरु ि◌ैं।

अपनेसार रूप में म ◌ैंवि◌ी ि◌ूँ! शिवोऽिं शिवोऽिं शिवोऽस्मि ◌्!

भगवान् ◌्शिव का सप वधारण

सप वजीवात्मा ि◌ै, जजसेशिव परमात्मा धारण ककये ि◌ुए ि◌ैं। सप वके पंच-मुखों का अथ वपंच-तत्त्व-पृथ्वी, जल, अजग्न, वायु और आकाि अथवा पाचाँ इजन्द्रयों से ि◌ै। वि पाचाँ प्राणों का भी प्रतीक ि◌ै जो सप वकी फुंकार की भाताँत ि◌रीर में प्रवाहित ि◌ोते।◌ै श्वास-प्रश्वास की ध्वतन सप वकी फुंकार की भाताँत ि◌ोती ि◌ै। पाचाँ तन्मात्राए,◌ाँ पाचाँ
ज्ञानेजन्द्रया,◌ाँ पाचाँ कमेजन्द्रया ◌ाँतथा अन्य पाचाँ-पाचाँ के समूि शिव स्वयं ि◌ी ि◌ैं। जीवात्मा इन्िीं ि◌ं तत्त्वों के माध्यम से संसार के ववषयों को भोगता ि◌ै। जब व्यजतत इजन्द्रयों को तनयजन्त्रत करके ज्ञान प्राप्त कर लेता ि◌ै, तब उसे ◌े
सालोतय (भगवान् ◌्शिव के लोक में स्थायी तनवास) की प्राजप्त ि◌ोती ि◌ै। भगवान् ◌्शिव के सप वधारण करने का वि
भगवान् ◌्शिव पूणतवया तनभयव ि◌ैं। श्रुततयों का कथन ि◌ै- "यि ब्रह्म अभयम् ◌्ि◌ै, अमृतम् ◌्ि◌ै।" सांसाररक मनुष्य सपाँ को देख कर ि◌ी भयभीत ि◌ो जाते ि◌ैं, परन्तु भगवान् ◌्शिव सपों को आभूषण की भाताँत ि◌रीर पर धारण ककये ि◌ुए ि◌ैं। यि स्पष्ट करता ि◌ै कक भगवान् ◌्शिव पूणतवया तनभयव और ि◌ाश्वत ि◌ैं।
मुख्य अथ वि।

प्रायिः सप वदीघजवीवी ि◌ोते ि◌ैं। भगवान् ◌्शिव का सप वधारण करना उनके ि◌ाश्वत ि◌ोने। को सूश्रचत करता ि◌ै।

'नमः शिवाय' भगवान् ◌्शिव का मन्त्र ि◌ै। 'न' पृथ्वी और ब्रह्म का प्रतीक ि◌ै। 'म' जल और ववष्णु ◌ुका, 'शि' अजग्न और रुद्र का, वा वायु और मिेश्वर का तथा आकाि तथा सदाशिव और जीव का भी प्रतीक ि◌ै।

भगवान् ◌्शिव गौर वण विैं। गौर वण वका तया मित्त्व ि◌ै? वे मौन रूप से यि शिक्षा देते ि◌ैं कक ि◌में हृदय ि◌ुद्ध रखना चाहिए और ववचार भी ि◌ुद्ध रखने ◌ेचाहिए तथा कुहटलता, चतुराई, धूततवा, ईष्या वव घृणा इत्याहद से दूरू रिना चाहिए।

वेअपने मस्तक पर ववभूतत की तीन रेखाए ◌ाँधारण ककये रिते ि◌ैं। इसका तया मित्त्व ि◌ै ? वे मौन रूप से यि शिक्षा देते ि◌ैं कक लोगों को तीनों अिुद्श्रधयों (अिंता, सकाम कम वऔर माया), तीनों एषणाओं(धन, धरा और नारी की एषणा), तथा तीनों वासनाओं(लोक वासना, दिे वासना और ि◌ास्त्र वासना) को नष्ट कर देना चाहिए और कफर ि◌ुद्ध ि◌ुए हृदय के द्वारा उर्न्िें(भगवान् ◌्को) प्राप्त कर लेना चाहिए।

भगवान् ◌्शिव के परम पावन मजन्दर-गभगृवि के समक्ष का बशलपीठ ककसका द्योतक ि◌ै ? इसका अथ वयि िैकक ि◌में ईश्वर-प्राजप्त सेपूव वअपनी अिंता और ममता को नष्ट कर देना चाहिए।

शिवशलंगं के समक्ष नन्दी तया दितवा ि◌ै ? नन्दी शिव का द्वारपाल अथवा सेवक ि◌ै। वि भगवान् ◌्शिव का विान ि◌ै। वि सत्संग का प्रतीक ि◌ै। यहद आप सन्तों का संग करेंगे,◌े तो आपको भगवत्–प्राजप्त अवश्य ि◌ोगी। सन्त आपको उन तक पिुाँचने का पथ दियवगें। वे आपके माग वमें पड़े ि◌ुए पत्थरों या उलझनों को दूरू कर देंगे ◌ेऔर आपके हृदय में वैराग्य, वववेक तथा ज्ञान भर देंगे। तनभयवता और अमरत्व के दूसूरे तट पर पिुाँचने के शलए सत्संग से अश्रधक सुरक्षक्षत नाव और कोई निीं। सांसाररक बुद्श्रध वाले व्यजततयों और जजज्ञासुओं के शलए एक क्षण का भी सत्संग अथवा सन्तों का साथ एक मिान् ◌्वरदान ि◌ै। सत्संग के द्वारा उर्न्िें परमात्मा के अजस्तत्व में दृढ़ ववश्वास उत्पन्न ि◌ोता ि◌ै। सन्त सांसाररक संस्ंकारों को दूरू करते ि◌ैं। सन्तों का साजन्नध्य व्यजतत की माया के आकषणव से रक्षा करने के शलए एक दुजेय दुग ु वि।ै

भगवान् ◌्शिव परमात्मा के संिरकारी पक्ष का प्रततततनश्रधत्व करते ि◌ैं। वे कैलास पवतव पर समाश्रधस्थ हदखायी देते ि◌ैं। वे पववत्रता, संसार के प्रतत त्याग तथा ववरजतत के भाव की प्रततमूतत विैं। उनके मस्तक के मध्य का तीसरा नेत्र वववध्वंसक ि◌जतत का प्रतीक ि◌ै जो जब भी खुलता ि◌ै—संसार का वविना कर देता ि◌ै। नन्दी उनका वविेष प्रेमपात्र ि◌ै। वि द्वारपाल ि◌ै। वि समस्त प्रकृतत को मौन करवाता ि◌ुआ प्रतीत ि◌ोता ि◌ै जजससे ◌ेकक भगवान् ◌् की समाश्रध में बाधा न ि◌ो । भगवान् ◌्के पाचाँ मुख, दस ि◌ाथ, दस नेत्र और दो चरण ि◌ैं।

वृषभ अथवा बैल धम वदेवता का प्रतीक ि◌ै। भगवान् ◌्शिव बैलै की सवारी करते ि◌ैं। वृषभ उनका विान ि◌ै। यि सूश्रचत करता ि◌ै कक भगवान् ◌्शिव धम वके रक्षक ि◌ैं; धम वऔर धमपवरायणता की प्रततमूतत विैं ।

'मृग' वेदों का प्रतीक ि◌ै। इसकी चार टागेंाँ चारों वेदों की प्रतीक ि◌ै। भगवान् ◌्शिव ने अपनेिाथ से मृग को पकड़ा ि◌ुआ ि◌ै। यि प्रकट करता ि◌ै कक वे वेदों के प्रदाता ईश्वर ि◌ैं।

उनके एक ि◌ाथ में खड्ग ि◌ै। यि प्रकट करता ि◌ै कक वे जन्म-मरण का वविना करते ि◌ैं। उनके एक ि◌ाथ में धारण की ि◌ुई अजग्न यि दितवी ि◌ै कक वे जीवों के पापों को जला कर उनकी रक्षा करते ि◌ैं।

अशभषेक का दिनव

वरदाता भगवान् ्नाथ को प्रणाम िै! शिव को प्रणाम िै! उमापतत को, पिुपतत को, समस्त जीवों के नाथ को प्रणाम िै ।

"अलंकारवप्रय ववष्णु, अशभषेके वप्रय शिव-भगवान् ्ववष्णु ुको अलंकार (सुन्दर वस्त्र, आभूषण इत्याहद) अतत वप्रय िैं। भगवान् ्शिव को अशभषेक वप्रय िै।" भगवान् ्शिव के मजन्दरों में एक ताँबे अथवा पीतल का घड़ा-जजसके मध्य में िै— शिवमूतत वया शिवशलंगं के ऊपर लटकाया रिता िै, जजसमें जल भरा िोता िै और यि सुराख ीिता जल सुराख में सेमूतत वके ऊपर रात्रत्र हदवस तनरन्तर टपकता रिता िै। शिवशलंगं के ऊपर जल, दूध, घृत, मधु, ु नाररयल पानी और पंचामृत इत्याहद चढ़ाना अशभषेक किलाता िै। अशभषेके भगवान् ्शिव के शलए िोता िै। अशभषेक के साथ-साथ रुिी का पाठ िोता िै। भगवान् ्शिव अशभषेक से अत्यन्त सन्तुष्ट िोते िैं।

भगवान् ्शिव ने समिु से तनकलनेवाले िलािल का पान ककया था और अपने मजस्तष्क को िीतल रखने के शलए गंगा और चन्िमा को शिर पर धारण कर शलया था। उनका तृतीय नेत्र अजग्न-नेत्र िै। तनरन्तर अशभषेक से यि तीसरा नेत्र िान्त रिता िै।

उच्चतम और मिानतम अशभषेक तो हृदय में जस्थत आत्मशलंगं पर िुद्ध प्रेम रूपी जल चढ़ाना िै। ववशभन्न िव्यों द्वारा बाह्य अशभषेक से भगवान् ्के प्रतत श्रद्धा और भजतत ववकशसत िोती िै और यि अन्ततः िुद्धि प्रेम-प्रवाि से िोनेवाले आन्तररक अशभषेक की ओर अग्रसर िोती िै।

अशभषेक शिवोपासना का एक अंग िै। अशभषेके के त्रबना शिवोपासना अधूरी िै। अशभषेक के समय रुिी, पुरुषसूतत, चमकम्, ् मिामृत्युंजय जप इत्याहद का एक वविेष लय और वविेष ढंग से पाठ िोता िै। सोमवार और प्रदोष (त्रयोदिी) भगवान् ्शिव के वविेष और पववत्र हदन िोते िैं। इन हदनों में शिव भतत उनकी वविेष पूजा, एकादि रुिी से अशभषेके, अचनवा, प्रसाद ववतरण और दीप प्रज्वलन करते िैं।

एकादि रुि अशभषेक में, अशभषेक के शलए प्रत्येक रुि के साथ शभन्न-शभन्न िव्य से अशभषेक िोता िै। गंगा जल, दूध, घृत, मधु, ु गुलाब जल, नाररयल जल, चन्दन, पंचामृत, सुगजन्धत तेल, िकवरा रस व नीबू का रस इत्याहद िव्य अशभषेक में प्रयुतत िोते िैं। प्रत्येक अशभषेक के पश्चात् ्भगवान् ्के िीिी पर िुद्ध जल चढ़ाया जाता िै। जब रुि पाठ िोता िै, तो रुि के पद्य के बाद ववशभन्न िव्य एक-एक करके अवपतव ककये जाते िैं।

अशभषेक-जल अथवा अशभषेक में प्रयुतत अन्य िव्य अत्यन्त पववत्र माने जाते िैंऔर जो भतत इसे ्प्रसाद रूप में ग्रिण करते िैं, उनके शलए यि अत्यन्त वरदायक िोते िैं। यि हृदय को िुद्ध करके असंख्य पापों को नष्ट करते िैं। इन्िें बुित भजतत व भाव सहित ग्रिण करना चाहिए।

जब आप भाव और भजतत से अशभषेक करते िैं, तो आपका मन एकाग्र िो जाता िै। आपका हृदय प्रभु की छवव से और हदव्य ववचारों से भर जाता िै। आप अपनी दिे को, इसके समबन्धों को तथा बाह्य वातावरण को भूल जाते िैं। धीरे-धीरे अिं भाव नष्ट िो जाता िै। जब यि ववस्मृतत िो जाती िै, तब आपको भगवान् ्शिव की िाश्वत कृपा के आनन्द की अनुभूतत आरमभ िोती िै। रुि का पाठ अथवा ॐ नमिः शिवाय का जप आपके मन को िुद्ध करके सत्त्व से पररपूण वकर देता िै।

यहद आप ककसी रोग से पीडड़त व्यजतत के शलए रुि पाठ सहित अशभषेक करें, तो वि िीघ्र िी उस रोग से मुतत िो जायेगा। अशभषेक द्वारा असाध्य रोग भी दूरू िो जाते िैं। अशभषेक स्वास्थ्य, धन-समपदा, सन्तान इत्याहद प्रदान करता िै। सोमवार को अशभषेक करना अत्यन्त िुभ िोता िै।

भगवान् ्को दूध, मधु, पंचामृत इत्याहद अवपतव करने से दिेाध्यास समाप्त िोता िै। स्वाथ वभाव धीरे-धीरे नष्ट िो जाता िै। आपको अत्यश्रधक आनन्द की प्राजप्त िोती िै। आप भगवान् ्को और अश्रधक अपणव करना आरमभ कर देते िैं। इस प्रकार आत्म-त्याग और आत्म-समपणव सिज रूप से ववकशसत िोनेलगता िै। आपके हृदय में ऐसे उद्गार - 'म ैंआपका िूँ प्रभु मेरा सवस्वव आपका िै।' प्रस्फुहटत िोनेलगते िैं।
कण्णप्प नयनार, जो कक एक शिकारी था ककन्तु मिान् ्शिव भतत था, ने दक्षक्षण भारत में कालिजस्त में शिवशलंगं पर अशभषेक के शलए अपने मुख में जल भर कर अवपतव ककया और भगवान् ्शिव को प्रसन्न कर शलया। भगवान् ्शिव िुद्ध भजतत भाव से सन्तुष्ट िोते िैं। मानशसक भाव का िी मित्त्व िै, बाह्य प्रदिनव का निीं। भगवान् ्शिव ने मजन्दर के पुजारी से किा – "मेरे भतत कण्णप्प के मुख द्वारा अवपतव यि जल गंगा-जल से भी अश्रधक पववत्र िै।"

भतत को भगवान् ्का अशभषेके तनयशमत रूप से करना चाहिए। उसे रुि और चमक कण्ठस्थ िोने चाहिए। एकादि रुि अश्रधक प्रभाविाली िै। उत्तर भारत में प्रत्येक स्त्री और पुरुष एक लोटा जल शिवशलंगं पर चढ़ाते िैं। यि भी लाभदायक िै और कामनाओं की पूतत वकरने वाला िै। शिवरात्रत्र को अशभषेके करने का अत्यश्रधक मित्त्व िै।

आप सब रुि पाठ करें, जजसमें भगवान् ्शिव की महिमा का वणनव िै ! प्रत्येक जीव में, जड़-चेतन में उन्िीं के प्रकटीकरण की महिमा का वणनव िै ! आप सब तनत्य-प्रतत अशभषेके करके भगवान् ्शिव के कृपापात्र बनें! भगवान् ्ववश्वनाथ आप पर प्रसन्न िों !

शिव मजन्दर में अशभषेक और रुि जप का मित्त्व

चमक के ग्यारि ववभाग ककये गये िैं। कफर उनमें से प्रत्येक को नमक (रुि) के साथ शमला कर जप ककया जाता िै। यि रुि किलाता िै। ऐसेग्यारि रुि को शमला कर एक लघु रुि बनता िै। ग्यारि लघु रुि शमल कर एक मिारुि बनता िै। ग्यारि मिारुि शमल कर एक अततरुि बनता िै।

आरमभ में संकल्प, पूजा, न्यास, अंगन्यास, पंचामृत स्नान और ध्यान के पश्चात् ्रुि पाठ आरमभ ककया जाता ी। रुि जप के फल तनमनांककत िैं:

जप-संख्या	**जप-फल**
१ रुि ३ रुि	बाल-ग्रि से मुजतत (बच्चों के रोगों का ववनाि)
५ रुि	आसन्न कहठनाइयों से मुजतत ।
७ रुि	अतनष्टकारी ग्रिों के प्रभाव से मुजतत
९ रुि	भयंकर भय से मुजतत ।
११ रुि	वाजपेय बशल की फल प्राजप्त तथा मानशसक िाजन्त की प्राजप्त ।
३३ रुि	राज्य कृपा और अपार धन प्राजप्त ।
७७ रुि	ववषयासजतत और ित्रु ुका नाि ।
९९ रुि	मिान् ्सुख प्राजप्त ।
१ मिारुि	पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, धम,व अथ,व काम और मोक्ष प्राजप्त तथा मृतूयु पर ववजय
३ मिारुि	राज्य कृपा तथा अपार समपवत्त का स्वाशमत्व ।
५ मिारुि	असमभव कायों की पूतत व।
७ मिारुि	अपार भूशम की प्राजप्त ।
९ मिारुि	सप्त लोकों की प्राजप्त।
१ अततरुि	जन्म-मृतूयु सेमुजतत ।
	परमात्म-तत्त्व प्राजप्त ।

अशभषेक के शलए िव्य - िुद्ध जल, दूधू, िकवरारस, घृतृ, मधु, पववत्र नहदयों का जल, सागर का जल ।

वृजृष्ट के शलए िुद्ध जल सेअशभषेक करना चाहिए। रोग मुजतत और पुत्र प्राजप्त के शलए दूधू से अशभषेके करना चाहिए। यहद दूधू से अशभषेक ककया जाये, तो वन्ध्या भी सन्तान प्राप्त कर सकती िै तथा गौधन की भी प्राजप्त िोती िै।

यहद कुि-जल से अशभषेक ककया जाये, तो समस्त रोगों की तनवृवृत्त िोती िै। जो धन की इच्छा करता िो, उसे ेघृतृ, मधु, ु िकवरा से अशभषेके करना चाहिए। जो मोक्ष चिाता िो, उसे ेपववत्र जल से अशभषेक करना चाहिए।

अध्याय ५

शिवताण्विदिनव

(१)

पादसयाववभवधन्तीमवननतमवने रक्षतः सवैरपातैः

संकोचेनैव दोटणां ंमुहुरशभनयतः सवलधोकानतगानाम् ्।

दृनर्टि लक्ष्येवुनोग्रज्वलनकणमुचंबध्नतो दाहभीते॒–

ररत्याधारानुरोधात् ्त्रिपुरववजनयनः पातु वो दुःखनृत्तम् ्॥

भगवान् ्शिव का ताण्वि अथवा हदव्य नृत्य तनतान्त रोमांचंक व मिोक ि यि मिुाओं तथा लय में उत्कृष्टतम, उत्तम व लाशलत्यपूण वऔर प्रभावपूण वि।

नृत्य अथवा ताण्वि िरीर के ववशभन्न अंगों की, आन्तररक भावों के साथ अववयोज्य पववत्र मिुाए ाँि। नृत्य एक हदव्य ववज्ञान ि। इस हदव्य नृत्य के आहद गुरु भगवान् ्शिव, कृष्ण और माँकाली थे। नृत्य में सृजृष्ट, संिरि, ववद्या, अववद्या, गतत और अगतत — इन षड्भावों का प्रदिनव िोता ि।

भगवान् ्शिव का नृत्य जगत् ्के कल्याण के शलए ि। उनके नृत्य का उद्देश्य जीवात्माओं को माया के पिा से मुतत करना; अनव, कम वऔर माया— तीनों के बन्धनों से मुतत करना ि। वे संिरिक निीं, पुनस्रष्टा ि। वे मंगलदाता तथा आनन्ददाता ि। वे भगवान् ्िरर से अश्रधक सुगमता से प्रसन्न िोते ि। वे थोड़ा-सा तप करने से अथवा थोड़ा-सा पंचाक्षर जप करने से िीघ्र िी वरदान दे देते ि।

'अगड़बम' उनके नृत्य का गान ि। जब शिव नृत्य करना आरमभ करते ि तो ब्रह्मा, ववष्णु, शिव के गण तथा िाथ में खप्पर शलये िुए काली भी उनके इस नृत्य में सजममशलत िो जाती ि। तया आपने प्रदोष नृत्य का श्रचत्र निींदेखा ? इससे आपको शिव नृत्य का अनुमान िो जायेगा।

काली को अपनी नृत्य-यो यता का दप वथा। शिव ने उसके अशभमान को कुचलने के शलए नृत्य करना आरमभ ककया। उन्िोंनेअत्यन्त सुन्दरता और अत्यन्त कलात्मकता से नृत्य ककया। काली को लज्जा से शसर झुकाना पड़ा।

भगवान् ्शिव ऊपर के वाम िस्त में मृग धारण ककये रिते िैं। उनके नीचे ेके दक्षक्षण िस्त में त्रत्रिूल रिता िै। उनके पास अजग्न, िमरू और मालु नामक एक अस्त्र भी िोता िै। उन्िोंनेपाचाँ सप वआभूषण के रूप में धारण ककये िोते िैं। वे नर-मुण्िों की माला पिनते िैं। वे िाथ में नाग पकड़े िुए मुयलक नामक वामन-असुर को अपने पग-तल में दबाये रिते िैं। उनका मुख दक्षक्षण की ओर िै। पंचाक्षरी स्वयं उनकी दिे िै। भगवान् ्शिव किते िैं- "सपों की तरि फुफकारती िुई पाचौं इजन्ियों को तनयन्त्रण में रखो। मन मृग की भातााँत चंचल िै। मन को तनयजन्त्रत करो। इसे ेध्यान की अजग्न से जला कर नष्ट कर दो। वववेक के त्रत्रिूल से इसेसमाप्त कर दो। तब तुम मुझे पा सकते िो।" यि भगवान् ्शिव के रूप का दाितवनक मिहिमा मजण्ित श्रचत्र िै।

आप समिु की उठती िुई तरंगों में भगवान् ्शिव का नृतूय देख सकते िैं। मन के दोलन में, इजन्ियों तथा प्राणों की गतत में, नक्षत्रों और तारा मण्िलों के आवतनव में, दैवी प्रलय में, भयंकर बाढ़ में, ज्वालामुखी ववस्फोटन में, भूकमप में, भूस्खलन में, ववद्युत् ्की चमक और बादलों की गजनवा में, भयंकर अजग्नकाण्िों और चक्रवातों में आप उनके नृतूय के दिनव कर सकते िैं।

भगवान् ्की इच्छा सेजैसे िी गुणसामयावस्था में ववघ्न पड़ता िै, त्यों िी गुणों का प्रकटीकरण िोता िै और तत्त्वों का पंचगुणत्व िोने लगता िै। िब्द ब्रह्म अथवा ओंकार की तरंगें उठती िैं। आहद िजतत का प्राकट्य िोता िै। यि भगवान् ्शिव का नृतूय िै।

समस्त ब्रह्माण्िीय लीला अथवा काय-वकलाप उनका नतनव िै। वे प्रकृतत की ओर दृजष्टपात करके उसमें िजतत संचार करते िैं। मन प्राण और तत्त्व — सभी नृतूय करने लगतेिैं। जब भगवान् ्नृतूय करने लगतेिैं, तो िजतत-तत्त्व का प्रकटीकरण िोता िै। िजतत से नाद का आरमभ िोता िै और नाद से त्रबन्दु ुका उद्भव िोता िै। तब नाम और रूपों का संसार प्रकट िोता िै। तब अव्यतत तत्त्व, िजतत और नाद व्यतत िो जाते िैं।

श्मिान भूशम भगवान् ्का तनवास स्थान िै। रुि भगवान् ्शिव का संिारकारी रूप िै। भगवान् ्शिव अपने दिभुजी रूप में काली के साथ श्मिान भूशम में नृतूय करते िैं। शिव गण भी इस नृतूय में उनके साथ सजममशलत िोते िैं।

श्रचदमबरम् ्नटराज नृतूय-प्रवीण िैं। वेचतुभुजव िैं। वे अपनी जटाओं ंमें गंगा और अध वचन्िमा को धारण ककये िुए िैं। उनके दाहिने िाथ में िमरू िै। अपने बायेंिाथ को ऊपर उठा कर वे अपने भततों को अभय मुिा हदखाते िैं। इसकी मिहिमा िै, "िे भतत जन ! भयभीत मत िोओ ! म ैंतुम सबकी रक्षा करूाँगा।" उन्िोंनेएक बाये िाथ में अजग्न धारण की िुई िै। दूसूरा दाहिना िाथ नीचे नागधारी असुर मुबलक की ओर संकेत करता िै, उन्िोंने अपना बाया ाँचरण अत्यन्त सुन्दरता से ऊपर उठाया िुआ िै।

िमरू का िब्द जीवात्मा को उनके चरणों की ओर आकवषतव करता िै। यि ओंकार का प्रततततनश्रधत्व करता िै। संस्कृत भाषा की िब्दावली िमरू की ध्वतन से तनकली िै। सृजष्ट की उत्पवत्त िमरू से िुई िै। अभय मुिा दिानेव े

वाला ाथ तनभयवता प्रदान करता ै। अजग्न से संारि कक्रया आरमभ ोती ै। ऊपर उठा ुआ चरण माया का पररचायक ै। नीचे की ओर संकेंत करता ुआ ाथ यि दितवा ै कक उनके चरण ी जीवात्माओं के शलए एकमात्र रिण स्थान ै। ततरुआक्षी प्रणव का पररचायक ै।

श्रचदमबरम् ् दक्षक्षण भारत का तीथस्वथान ै। सभी तशमल सन्तों ने नटराज का स्तुतत गान ककया ै। यिााँ आकिा शलंगं ै जो इसका पररचायक ै कक भगवान् ् शिव तनराकार और तनगुणव ैं। एक प्रशसद्ध कथन ै- "मुख और हृदय में राम नाम धारण ककये ुए जजसकी मृतूयु किी में ोती ै, उसे ेतनवाणव प्राजप्त ोती ै जो अरुणाचलम् ् अथवा ततरुवनमले का स्मरण करता ै, उसे ेमुजतत शमलती ै और जो नटराज के दिनव करता ै, उसे ेपरम मोक्ष प्राप्त ोता ै।" वास्तववक श्रचदमबरम् ् तो हृदय के भीतर ै। जजन्ोंनेअिंता, काम, घृणाृ, अशभमान और ईष्या वको जला हदया ै, उन भततों के हृदयों में नटराज नृतूय करते ैं।

वेअत्यन्त सौमयता सेनृतूय करते ैं। यहद वे तीव्रता से नृतूय करें, तो सारी धरती एकदम नीचे ेधसाँ जाये। वे अपनेनेत्र बन्द करके नृतूय करते ैं, अन्यथा उनकी आखाँों से तनकलने वालेस्फुशलंगं समस्त ववश्व को नष्ट कर दें। भगवान् ् शिव की सृजृष्ट, जस्थतत, संारि, ततरोभाव और अनुग्रि नामक पंचंकक्रयाएाँउनके नृतूय ी ैं।

आप सब भगवान् ् शिव के नृतूय के वास्तववक मित्व को समझें! आप सब भगवान् ् शिव के नृतूय के साथ आनन्दाततरेक में नतनव करें और उनमें ी लीन ो कर जीवन के परम आनन्द- शिवानन्द को भोगें।

(२)

भगवान् ् शिव साक्षात् ् प्रज्ञा ै। वे ज्योततयों की ज्योतत ैं। वे परम ज्योतत ै। भगवान् ् शिव का नृतूय ववश्वात्मा की लय और गतत का पररचायक ै। उनके नृतूय अतनष्टकर िजततयााँतथा अन्धकार कााँप कर ववलुप्त ो जाते ैं।

ब्रह्मा की रात्रत्र अथवा प्रलय के समय में प्रकृतत जड़ तनश्चल रिती ै। तब गुण-सामयावस्था ोती ै, जजसमें गुण-त्रय एक सम अवस्था में रिते ैं। जब तक भगवान की इच्छा न ीं ोती, तब तक वि (प्रकृतत) नृतूय न ीं कर सकती। भगवान् ् शिव अपनेगिन मौन से उठते ैं और नृतूय करने लगते ैं। तब अव्यतत नाद उनके मिरू की गतत से उठनेवाली तरंगों के द्वारा व्यतत ो जाता ै। िब्द ब्रह्म का प्रकटीकरण ोता ै। अव्यतत जितत भी अलग व्यतत ो जाती ै, गुणों की समता भंग ो जाती ै। सत्त्व, रजस् ् और तमस् ् प्रकट ोते ैं। समस्त ग्रि, अणु ु और ववद्युदणु भी लय और क्रम में नृतूय करने लगते ैं। अणु परमाणुओं में, और परमाणु ु समस्त वस्तुओं में नृतूय करने लगते ैं। शसतारे हदतकाल में नृतूय करने लगते ैं। प्रकृतत भी उनकी ववभूतत के रूप में उनके चारों ओर नृतूय करने लगती ै। प्राण आकिा में संचालन करने लगते ैं। ववशभन्न आकार प्रकट ोने लगते ैं। हिरण्यगभ वका भी प्रकटीकरण ो जाता ै।

जब समय आता िै, तो भगवान् ्शिव नृतूय में िी अजग्न के द्वारा समस्त नाम-रूपों का संिार कर देते िैं। पुनिः तनश्चलता व्याप्त िो जाती िै।

नटराज के रूप से समबद्ध यिी प्रतीकात्मकता िै। शिव के िाथ का मृग् अिुद्ध माया का पररचायक िै। कुठार अज्ञान को नष्ट करने वाले ज्ञान का प्रतीक िै। िमरू, अजग्न को धारण करने वाला िाथ, गंगा और मुयलक असुर के ऊाँपर रखा िुआ पग- —ये पाचाौँ तनराकार सूक्ष्म पंचाक्षर िैं ।

मिरू में सृजृष्ट िै, अभय िस्त में जस्थतत िै, कुठारधारी िस्त में संिार िै, नीचे दबाये िुए पग में ततरोभाव िै और ऊपर उठे िुए पग में अनुग्रि िै।

शिव के नृतूय ववशभन्न प्रकार के िैं। संिार नृतूय िै, पंच नृतूय िैं, षि नृतूय िैं, अष्ट नृतूय िैं, कििुकोहट नृतूय, पण्मि् ्नृतूय और कििु नृतूय िै। प्रत्येक वस्तु के संिार के पश्चात् ्का नृतूय कििु कोहट नृतूय िै। पण्मि् ्नृतूय त्रत्रपुरों के संिार के पश्चात् ्उन पुररयों की भस्म को धारण करके ककया गया नृतूय िै। कििु अथवा कपालम् ्ब्रह्मा के िीि को धारण करके ककया गया नृतूय िै। संिार प्रलय के समय का नृतूय िै।

सृजृष्ट, जस्थत, संिार, ततरोभाव और अनुग्रि तथा मुतन ताण्वि, अनवरत ताण्वि और आनन्द ताण्वि शमल कर अष्ट ताण्वि नृतूय िोते िैं। शिवानन्द नृतूय, सुन्दर नृतूय, स्वखणमव नगर नृतूय, स्वखणमव श्रचदमबरम् ्नृतूय तथा अद्भुत नृतूय यि पंच नृतूय िैं। यिी पाचाँ नृतूय तथा एक आनन्द नृतूय शमल कर षि नृतूय िैं।

भगवान् ्शिव िी एकमात्र नतकव िैं। वे नृतूय प्रवीण िैं। वे नृतूय-सम्राट् िैं। उन्िोंने काली का दप वचूण व ककया। भगवान् ्शिव का केवल संिार िी एकमात्र काय विनीं िं, अवपतु, एक काय वश्रृंखला िै। प्रत्येक अवस्था के शभन्न-शभन्न नृतूय िैं।

मिान् ्नतकव भगवान् ्नटराज आपको परम आनन्द, शिवानन्द प्राजप्त में सिायक िों!

भगवान् नटराज — मिान्नतकव

'नमः शिवाय' का 'य' अक्षर जीवात्मा का पररचायक िै। पंचाक्षर 'नमिः शिवाय' भगवान् ्शिव की काया िै। अजग्न धारण ककया िुआ िाथ 'न' िै। मुयलक असुर को दबाने वाला चरण 'म' िै। िमरू धारण ककया िुआ िाथ 'शि' िै। गततिील दाहिना और बाया ाँ िाथ 'वा' िैं। अभय िस्त 'य' िै।

एक बार कुछ ऋवषयों ने वास्तववक भगवान् ्पर ववश्वास खो कर कृत्रत्रम देवी-देवताओं की उपासना आरमभ कर दी। भगवान् ्शिव की उन्िें शिक्षा देने की इच्छा िुई। उन्िोंने ववश्रचत्र भावों से उन्िें उत्तेजजत कर हदया। ऋवष अत्यन्त उन्मत्त िो गये। उन्िोंने अपने तप-बल से बिुत-सी अतनष्टकारी िजततया ाँरच कर भगवान् ्पर

छोड़ना आरमभ कर हदया। भगवान् ्शिव ने सबको पराजजत कर हदया और हदव्य नृतूय द्वारा अन्ततिः उनके द्वारा रश्रचत मिाकाली को भी पराजजत कर हदया ।

श्री नटराज के नृतूय के समय पतंजशल ऋवष और व्याघ्रपाद भी दिकव ो कर आनन्द पा रि थे। वे भगवान् ्के दोनों ओर खड़ेथे। नटराज मूतत वके श्रचत्रों में भी आप एक और पतंजशल और दूसूरी ओर व्याघ्रपाद को देख सकते ैं व्याघ्रपाद के िरीर का अधोभाग शसंि से तथा पतंजशल का सप वसे शमलता ै।

नटराज का सबसे अद्भुत नृतूय 'ऊध्वतवाण्वि ै'। इस नृतूय में बायीं ंटागाँ ऊपर को उठी ुई तथा चरण का अग्रभाग आकिा की ओर इंश्रगत करता ै। यि नृतूय की कहठनतम मुिा ै। नटराज ने काली को नृतूय में इसी मुिा से पराजजत ककया था। काली ने नटराज के समक्ष नृतूय की अन्य सभी मुिाओं को सफलतापूवकव तनभाया। नृतूय करते ुए नटराज भगवान् ्का कण-वआभूषण श्रगर गया। वे इस नृतूय मुिा द्वारा पग-अग्रभाग से दिकवों के त्रबना जानेकणाभूवषण उठा कर अपने स्थान पर पुिँचा देनेमें सफल ुए।

नटराज ने अपनी दाहिनी टागाँ ऊपर की ओर उठाये ुए भी नृतूय ककया। यि नृतूय की गजिस्त मुिा ै। एक बार भी टागाँ को बदले ेत्रबना वे तनरन्तर नृतूय करतेरिे।

भगवान् ्शिव के नृतूय की एक अन्य मुिा ाथी के शसर के ऊपर भी ै। इस मुिा में भगवान् ्शिव को 'गजासनमूतत'व नाम से जाना जाता ै। भगवान् ्शिव असुर-गज का ंिा ै। भगवान् ्शिव के अष्ट स्त ैं। तीन दक्षक्षण ाथों में वि त्रत्रिूल, िमरू और पिा धारण ककये ुए ैं। दो वाम स्तों में ढाल और मुण्ि ैं। तीसरे वाम स्ति में ववस्मय मुिा धारण की ुई ै।

वाराणसी में ववश्वनाथ शलंगं के चारों ओर ध्यान में लीन बैठे ुए ब्राह्मणों का वध करनेके शलए एक असुर नेिाथी का रूप धारण कर शलया। भगवान् ्शिव ने तत्क्षण शलंगं से • प्रकट ो कर उस असुर ाथी का वध कर हदयाऔर उसके गजचम वको अपनेवस्त्र के रूप में धारण कर शलया।

शिव-नृतूय

उन्नीस सौ चौबीस में ऋवषकेि में

भयंकर बाढ़ आयी,

जो अनेक मिात्माओं और साधुओं को बिा ले गयी;

यि ै शिव नृतूय !

प्रचण्ि चिन्भिागा ने,
१९४३ में अपना माग वबदल शलया;
लोग कहठनाई से ाथी की सियता से
इसे ेपार कर पाते थे;
यि ै शिव नृतूय !

११ जनवरी १९४५ की प्रातिः
तनकटवती हिमालय पर हिमपात ुआ,
भयंकर ीत पड़ा,
यि ै शिव नृतूय !

जिा ाँएक समय वन था,
विााँतनवास ै अब भगवान् ्ववश्वनाथ का,
- वे समस्त ववश्व को आनन्द देते ैं,
स्वास्थ्य और दीघायुव देते ैं,
यि ै शिव नृतूय !

वन बन जाते ैं आश्रम,
द्वीप ो जाते ेसागर,
सागर बनता द्वीप,
नगर ो जाते ेमरुस्थल,
यि ै शिव नृतूय !

शिव देखते ैं िजतत की ओर,
तब ोता परमाणवी नृतूय,
यि नृतूय ै प्रकृतत का,
भगवान् ्शिव ोतेमात्र िष्टा,
यि ै शिव नृतूय ! -

तब ोते ेप्राण प्रदोशलत, मन चलायमान,
इजन्यिााँकायरवत, बुद्श्रध कमिवील,
हृदय धड़कता, फुफ्फुस ोते ेप्रश्वशसत,

उदर पचाता, आर्तों करती उत्सजजतव,
यि िै शिव-नृतूय !

यि जगत् ्िै पररवतनर्वील,
पररवतनव िै निावान्, ्
अनश्वर को जानो
जो िै अपररवतनर्वील और तब बनो अनश्वर !

अध्याय ६

जिततयोगदिनव

(१)

सवव्वयापी परमात्मा का कक्रयात्मक रूप िजतत ि◌ै। िजतत साकार बल अथवा क्षमता ि◌ै। यि ववशाल सृजृष्ट की रक्षक ि◌ैं। ववश्व को धारण करने वाली पररजतत ि◌।ै वि जगन्माता ि◌ैं। विी दुगाव, काली, चण्डी, चामुण्डी, त्रत्रपुरसुन्दरी, राजेश्वरी ि◌ैं। ईश्वर और उनकी िजतत में उसी प्रकार कोई शभन्नता निीं ि◌ै जैसे ◌ेअजग्न और उसकी ज्वलनशील िजतत में कोई शभन्नता निीं।

जो िजतत अथावत ◌्परमात्मा की मा ◌ाँके रूप में, उनको स्रष्टा, धारक और संिारक पररजतत मान कर उपासना करता ि◌ै, उसे िातत कित◌े ि◌ैं। समस्त नाररया ◌ाँउस पररजतत हदव्य मा ◌ाँका ि◌ी स्वरूप ि◌ैं।

शिव अपररवतनवीय चैतन्य ि◌ैं। िजतत उनका पररवतनविील रूप ि◌ै जो मन और तत्त्व के रूप में प्रकट ि◌ोता ि◌ै। िजततवाद अथवा िातत दिनव अद्वैतवाद का ि◌ी रूप ि◌ै।

िातत साधना के द्वारा िजततया ◌ाँजागृतृ करनेसे दे◌ि के भीतर ि◌ी शिव और िजतत का संयोग ि◌ोता ि◌ै। जब वि षड्चक्र भेदन करके कुण्डशलनी जागृतृ कर लेता ि◌ै, तब वि शसद्ध ि◌ो जाता ि◌ै। यि सब ककसी 'पूण-व ज्ञान प्राप्त गुरु' के तनदेि◌न में ववश्रधवत् ◌्ढंग सेकरना चाहिए। िजतत को ध्यान के द्वारा, भाव के द्वारा, जप के द्वारा और मन्त्र िजतत के द्वारा ि◌ी जागृतृ करना चाहिए। पचास अक्षरों की साकार रूप — िजतत मा,◌ाँ ववशभन्न अक्षरों में शभन्न-शभन्न चक्रों में ववद्यमान ि◌ैं। जब वाद्य यन्त्र की तारों को लय में स्पि◌ंित वककया जाता ि◌ै, तो सुमधुर संगीत उत्पन्न ि◌ोता ि◌ै। इसी प्रकार जब अक्षरों की तारों को उनके क्रम से स्पि◌ंित वककया जाता ि◌ै, तो षड्चक्रों में ववचरने वाली मा,◌ाँ जो स्वयं अक्षर रूप ि◌ी ि◌ैं, स्वयं जागृतृ ि◌ो जाती ि◌ै। यि किना कहठन ि◌ै कक वि ककस साधक को कब और कैसे ◌ेदिनव दें। साधना का अथ विै–जतत को जागृतृ करना। साधना की पद्धतत साधक की प्रववृत्त्तयों तथा क्षमताओंपर तनभरव करती ि◌ै।

जजसके द्वारा ि◌म इस ववश्व में जीववत रिते ि◌ैं, उसके आधार पर िजतत का नाम रखा जा सकता ि◌ै। इस संसार में एक बालक की समस्त आवश्यकताए ◌ाँमाता के द्वारा पूण विोती ि◌ैं। बालक का पालन-पोषण, ववकास, उसका आिार इत्याहद सब मााँिी दैखती ि◌ै। इसी प्रकार इस जगत् ◌्में जीवन की समस्त आवश्यकताएाँऔर कक्रयाकलाप तथा उन सबके शलए आवश्यक सामथ्य वजगन्माता िजतत मा ◌ाँपर ि◌ी तनभरव ि◌ैं।

मा ◌ाँकी कृपा के त्रबना कोई भी व्यजतत स्वयं को मन और ववषयों की दासता से मुतत निीं ◌ंकर सकता। माया के बन्धन इतनेदृढ़ ि◌ैं कक तोड़ेनिींजा सकते। यहद आप उनकी देवी मा ◌ाँके रूप में उपासना करें, तो उनके कृपापूण वअनुग्रि और वरदान सेबिुत सुगमता से प्रकृतत से परे जा सकते ि◌ैं। वे आपके माग वकी समस्त बाधाओं को दूरू कर देंगी और आपको तनजश्चत रूप से परम आनन्द के असीम क्षेत्र में ले जा कर मुतत कर देगी। जब वे प्रसन्न ि◌ो कर आपके ऊपर अपनी कृपा-वृजृष्ट करेंगी, केवल तभी आप इस दुजेुय संसार के बन्धन से स्वयं को मुतत कर पायगें।

कोई भी शिशुअथवा चौपाए जीव का बच्चा जो प्रथम अक्षर उच्चाररत करता ि, वि उसकी वप्रय मा ाँका नाम ि। तया कोई भी ऐसा बालक िोगा जो अपनी माता के प्यार और स्नेि का ऋणी न िो। यि मा ाँिी ि जो आपकी रक्षा करती आपको सान्त्वना देती ि , आपको उत्साहित करती और आपका पालन करती ि । वि समस्त जीवन में आपकी शमत्र, आपकी श्रचन्तक, रक्षक तथा तनदेिक ि। मानवीय माता जगन्माता का िी प्रत्यक्ष रूप ि।

परमात्मा का प्रकट स्वरूप शिव िैं तथा उनकी िजतत की पररचायक उनकी पत्नी के रूप में िजतत, दुगा व अथवा काली िैं। जजस प्रकार पतत-पत्नी अपनेपररवार के कुिल-क्षेम को देखते िैं, ठीक उसी प्रकार भगवान् ्शिव तथा उनकी िजतत ववश्व के कल्याण में लगेिुए िैं।

राधा, दुगा,व लक्ष्मी, सरस्वती तथा साववत्री —ये प्रकृतत अथवा देवी के पाचाँ मूल रूप िैं। दुगावने ववष्णु के द्वारा मधु ुऔर कैटभ का ववनाि ककया। मिालक्ष्मी के रूप में उसने महिषासुर का वध ककया तथा सरस्वती के रूप में उसनेिुमभ व उनके साथी धूम्रलोचन, चण्ि-मुण्िऔर रततबीज का संिार ककया।

जब ववष्णु ुऔर मिादेव ने ववशभन्न असुरों का संिार ककया, तो उनके पीछे देवी की िजतत थी। देवी ने ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर रुद्र को सृजष्ट, जस्थतत और संिार काय वके शलए आवश्यक िजतत प्रदान की। वे ववश्व के केन्द्र में जस्थत ि। िमारे िरीर में वि मूलाधार चक्र में ि। वि सुषुमना के द्वारा िरीर को प्राण–जतत प्रदान करती ि। वि मेरु पवतव के शिखर से ववश्व में प्राण संचाररत करती िैं।

जितत दिनव की इस पद्धतत में शिव सवव्वयापक, तनराकार तथा तनजष्क्रय िैं। वे िुद्ध चैतन्य िैं। िजतत सकक्रय ि। शिव और िजतत का समबन्ध प्रकाि और ववमि वका ि। िजतत अथवा ववमि वक्षमता ि जो िुद्ध चैतन्य में अव्यतत ि। ववमि वशभन्नताओं के जगत् ्को उत्पन्न करता ि। शिव श्रचत् ्िैं, िजतत श्रचरूवपणी ि। ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर शिमि अपने सृजष्ट, पालन और संिार के काय विजतत की आज्ञा से समपन्न करते िैं। िजतत इच्छा, ज्ञान व कक्रया सेसमपन्न ि। शिव और िजतत एक ि।ैं शिव-तत्त्व तथा िजतत-तत्त्व परस्पर अववभाज्य िैं। शिव सदैव िजतत के साथ िैं। िातत दिनव में ३६ तत्त्व िैं। िजतत िजतत-तत्त्व में िैं, नाद सादतय तत्त्व में ि, त्रबन्दु ु ईश्वर-तत्त्व में ि। परम शिव का सृजष्ट-तत्त्व शिव-तत्त्व किलाता ि। शिव-तत्त्व प्रथम सृजष्ट चेष्टा ि। िजतत-तत्त्व शिव की इच्छा ि। यि समस्त जगत् ्का बीज और योतन ि ।

प्रथम प्रकटीकरण सादतय अथवा सदाशिव किा गया ि। इस तत्त्व में ववचारों की उत्पवत्त आरमभ िोती ि । इस तत्त्व में नाद–जतत ि। कफर ईश्वर-तत्त्व ि। इसे ेत्रबन्दु ुकिते िैं। चौथा तत्त्व ववद्या अथवा िुद्ध ववद्या ि। तब प्रकृतत मन, इजन्द्रयों और ववषयों के तत्त्वों में रूपान्तररत िो कर जगत् ्की संरचना करती ि।

नाद, त्रबन्दु ुआहद सभी िजतत के ववशभन्न रूपों के नाम िैं। नाद िी वास्तववक शिव–जतत ि।ैं शिव के दो पक्ष िैं। एक रूप में वे परम अपररवतनवील सजच्चदानन्द िैं। ये परा संववत (परब्रह्म) िैं। दूसूरे रूप में वे जगत् ्के साथ-साथ पररवततेतव िोते िैं। पररवतनव का कारण शिव-तत्त्व ि। यि शिव-तत्त्व और िजतत-तत्त्व परस्पर अववभाज्य िैं। िजतत-तत्त्व ब्रह्म का प्रथम सकक्रय रूप ि।

तनष्कल शिव, तनगुणव शिव िैं। उनका सकक्रय िजतत से कोई समबन्ध निीीं। माया अथवा प्रकृतत िजतत की योतन में िी िैं। माया संसार का गभिावय िै। ववलयन की अवस्था में माया िजतत समपन्न िै। वि सृजृष्ट रचना में सकक्रय िीं। िजतत के तनदेिन में माया अनेक ववषय-वस्तुओंतथा अन्य समस्त चेतेन जीवों के भौततक िरीरों की उत्पवत्त करती िै। िजतत दिनव में छत्तीस तत्त्व िैं। िातत दिनव में ब्रह्म, िजतत, नाद, त्रबन्दु ुऔर िुद्ध माया िै। िैव-शसद्धान्त दिनव में शिव, िजतत, सादतय और िुद्ध माया िैं। िजतत दिनव की िेष मूल कक्रया िैव शसद्धान्त दिनव की िी भ्राजन्त िै ।

ध ंनैव जायतेके ंदेवी मोक्षप्राप्त िोती िै। "ि**नत्तज्ञानं ंववना देवव ननवाणं**
ज्ञान के त्रबना मुजतत की प्राजप्त निीीं सकती" (ईश्वर देवी से किते िैं)। जीवात्मा जब माया के प्रभाव में िोता िै, तो वि स्वयं को कता वऔर भोतता समझ लेता िै और स्वयं को दिे मान लेता िै। िजतत की अनुकमपा से तथा साधना अथवा आत्म-सुसंस्कृतत सेजीवात्मा स्वयं को समस्त बन्धनों से मुतत कर लेता िै। वि आध्याजत्मक अन्तदृजवष्ट प्राप्त करके परम तत्त्व में लीन िो जाता िै।

वास्तव में एक ब्रह्म के अततररतत अन्य कुछ भी निीीं। भोग्य-पदाथ वअन्य कुछ न िो कर भोतता िी िीं। माया अथवा मन के दपणव के द्वारा जगत् ्के रूप में ब्रह्म िी प्रकट िोता िै। पदाथ वअन्य कुछ निीं, माया के द्वारा अनात्मा भाशसत िोने वाला आत्मा िी िै। तनववकवार समाश्रध में ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय ववलुप्त िो जाते िैं, केवल परम शिव अथवा ब्रह्म िी ववद्यमान रिता िै।

केनोपतनषद् में आता िै कक असुरों पर ववजय प्राप्त कर लेनेपर देवता फूल गये। वे इस ववजय को अपना पराक्रम और वीरता का पररणाम समझनेकी भूल कर बैठै। भगवान् ्ने उन्िें पाठ शसखाना चािा। वे उनके समक्ष एक ऐसेववशाल यक्ष के रूप में प्रकट िुए, जजसका आहद-अन्त किीं ंदृजष्टगोचर निीींिोता था। देवताओंने इसका भेद जानने के शलए अजग्नदेव को भेजा। यक्ष ने अजग्न से पूछा - " तुमिारा नाम तथा तुमिारी िजतत तया िै?" अजग्न ने उत्तर हदया- "म ैंअजग्न (जातवेद) िूाँ। म ैंक्षण-भर में समस्त ववश्व को जला सकता िूाँ।" यक्ष ने उसके समक्ष एक सूखे घास का ततनका रख कर उसे ेजलाने के शलए किा। अजग्नदेव उसे ेजला न सका। वि यक्ष से लजज्जत िो कर चला गया। तब देवताओंने वायुदेव को यक्ष के ववषय में जाननेके शलए भेजा। वायुदेव यक्ष के तनकट पिुाँचा । यक्ष ने वायु से किा- "तुम कौन िो ? तुमिारी क्षमता तया िै?" वायु ने किा—“म ैंवायुदेव िूाँ, म ैं समस्त जगत् ्को पल-भर में उड़ा सकता िूाँ।" तब यक्ष नेउसके समक्ष सूखे ेघास का ततनका रख कर उसे ेउड़ा देने के शलए किा। वायु उसे ेअपने स्थान से रत्ती भर भी हिला न सका। लजज्जत िो कर वि भी चला गया। अन्ततिः इन्द्िदेव स्वयं आये, तो उन्िोंने देखा कक यक्ष अन्तधानव िो चुके थे।

तब इन्द्ि के समक्ष उमा प्रकट िुई और उन्िोंने यक्ष का वास्तववक पररचय हदया। उन्िोंनेकिा -
"देवताओंको ववजय का मुकुट पिनाने वाली िजतत देवताओं की निीं, भगवती मा ाँकी थी। समस्त देवताओंकी जितत का जो स्रोत िै, वि उमा िै अथवा कृष्ण की बिन िैमावती िै।" ज्ञान का मिान् ्गुरु िजतत िै। वि अपने भततों पर ज्ञानवषावकरती िै।

(२)

जितत श्रचूिवूपणी िै। वि ि़ुद्ध आनन्दपूण वचेतना िै। वि प्रकृतत की माता िै। वि स्वयं िी प्रकृतत िै। वि शिव अथवा ब्रह्म की िजतत िै। इस प्रपंच जगत् ्को वी चलाती िै। भगवान् ्की लीला का संचालन वी करती िै। वि जगज्जननी, महिषासुरमहदवनी भ्राजन्त-ववनाशिनी और दाररियनाशिनी िै।

देवी भगवान् ्शिव की िजतत िै। वि जड़–जतत और श्रचत्–्िजतत िै। वि इच्छा–जतत, कक्रया–जतत और ज्ञान िजतत िै। वि माया िजतत िै। िजतत िी प्रकृतत, माया, मिामाया और श्रीववद्या िै। िजतत िी ब्रह्म िै। वि लशलता, कुण्शिलनी, राजेश्वरी, त्रत्रपुरसुन्दरी, सती और पावतवी िै। सती भगवान् ्शिव के साथ दस रूपों में, दस मिाववद्याओं के रूप में इन नामों से प्रकट िुई—काली, बगलामुखी, तछन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, मातंगी, िोषी, धूमावती, त्रत्रपुरसुन्दरी, तारा और भैरवी ।

जितत उपासना अथवा िातत मत ववश्व के प्राचीनतम तथा ववश्वव्यापी धमों में से एक िै। इस संसार में प्रत्येक व्यजतत िजतत चािता िै तथा िजतत-प्राजप्त को प्रेम करता िै। वि िजतत के द्वारा दूसूरों के ऊपर आश्रधपत्य चािता िै। युद्ध, लोभ और िजतत का िी पररणाम िै। वैजै्ञातनक िातत मत के िी अनुयायी िैं। जो भी इच्छा–जतत और सुन्दर व्यजततत्व ववकशसत करना चािता िै, वि िातत मत का अनुयायी िै। वास्तव में तो इस संसार में प्रत्येक व्यजतत िातत मत का अनुयायी िी िै।

अब वैज्ञातनकों का कथन िै कक प्रत्येक वस्तु मात्र िजतत िै और िजतत िी समस्त रूपों और पदाथों का भौततक अन्त िै। िातत दिनव मतावलजमबयों ने बिुत पिलेयिी बात कि दी थी। वे आगे किते िैं कक यि िजतत उस मिािजतत की अनन्त परम िजतत का केवल सीशमत प्रकटीकरण िी िै।

जितत सदैव शिव के संगं िै। वे दोनों अजग्न और उसकी उष्णता के सदृश्य परस्पर अववभाज्य िैं। िजतत से नाद की उत्पवत्त िै और नाद से त्रबन्दु ुकी। यि जगत् ्िजतत का िी प्रकटीकरण िै। ि़ुद्ध माया श्रचत्–्िजतत िै। प्रकृतत जड़–जतत िै। नाद, त्रबन्दु ुतथा िेष सब िजतत के िी शभन्न-शभन्न रूपों के नाम िैं।

असंख्य ववश्व उस मा ाँभगवती के पावन चरणों की धूशूल मात्र िैं। उनकी महिमा अतनवचवनीय िै। उनका वैभव अवणनवीय िै। उनकी मिानता अथाि िै। वे अपनेसच्चे भततों पर कृपा वृजृष्ट करती िैं। वे जीवात्मा को एक चक्र से दूसूरे चक्र और एक स्तर सेदूसूरे स्तर तक ले जाती िुई सिस्रार में शिव से संयोग करवा देती िैं।

यि िरीर िजतत िै। िरीर की आवश्यकताएाँजितत की आवश्यकताएाँिैं। जब व्यजतत आनन्द लेता िै, तो यि िजतत िी िै जो उसके िरीर द्वारा आनन्द भोगती िै। उसके नेत्र, कण,व िाथ, पैर सब उनके िैं। वि उसके नेत्रों से देखती, उसके कानों से सुनती िै। िरीर, मन, प्राण, अिंता, बुद्श्रध, अंग-प्रत्यंग तथा अन्य सब कक्रयाकलाप उन्िींका प्रकटीकरण िै।

तित-मत परमात्मा के साकार और तनराकार समबन्ध में बताता ि। ब्रह्म तनष्कल (प्रकृतत रहित) और सकल (प्रकृतत सहित) ि। वेदान्ती तनरुपाश्रधक ब्रह्म (माया रहित िुद्ध-तनगुणव ब्रह्म) तथा सोपाश्रधक (उपाश्रध अथवा माया सहित) अथवा सगुण ब्रह्म की बात किते िैं। यि सब एक िी ि, केवल नामों का िी भेद ि। यि मात्र ब्दि- जाल ि। लोग केवल िब्दों के शलए िी लड़ते ेरिते िैं, वाग्युद्ध करते ेरिते िैं, बाल की खाल तनकालने, तकव-ववतकव करने और बौद्श्रधक व्यायाम में लगेरिते िैं; वास्तव में सार तत्व तो एक िी ि। सत्य तो शमट्टी ि। सब रूपान्तरण जैसे ेघट इत्याहद केवल नाम-भेद िी ि। तनगुणव ब्रह्म में िजतत गुप्त ि, जब कक सगुण ब्रह्म में यि सकक्रय ि।

तित-मत का आधार वेदे ि।ैं ितत मत में ब्रह्म की प्रकृतत इत्याहद जैसे ेआध्याजत्मक ववषयों से समबजन्धत स्तोत्र और प्रमाण मात्र वेद को मानते िैं। ितत मत वेदान्त ि। िततो की आध्याजत्मक अनुभूतत वेदाजन्तयों जैसी िी ि।

ऋग्वेद का देवी सूतत, श्री सूतत, दुगा-वसूतत, भू-सूतत और तनला सूतत, तथा ववशिष्ट ितत उपतनषद् जैसे ेकक त्रत्रपुरतावपनी उपतनषद्, शसतोपतनषद्, देवी उपतनषद् सौभाग्योपतनषद्, सरस्वती उपतनषद्, भगनोपतनषद्, भावररचोपतनषद् इत्याहद ईश्वर के मातृ–ृपक्ष को जोर दे कर घोवषत करतिैं। केनोपतनषद् में भी उमा (िमावती) के ववषय में किा गया ि कक जो इन्ितथा देवताओंको आत्मज्ञान प्रदान करती ि।

देवी मा ाँप्रत्येक स्थान पर त्रत्रगुणी िैं। वि सत्त्व, रजस् ्और तमस् ्— त्रत्रगुणधाररणी िैं। इच्छाि–जतत, कक्रयाि–जतत और ज्ञानि–जतत में प्रकटीकरण ि। वि ब्रह्मा के संयोग से ब्रह्मि–जतत (सरस्वती); भगवान् ्ववष्णु ु के साथ संयुतत िो कर ववष्णुि–जतत (लक्ष्मी) तथा भगवान् ्शिव से संयुतत िोनेपर शिवि–जतत (गौरी) किलाती ैं। इसीशलए वे त्रत्रपुरसुन्दरी किलाती िैं।

भगवती मा,ाँ त्रत्रपुरसुन्दरी के तनवास स्थल को नगर किा गया ि। यि भव्य नगर पच्चीस परकोटों, जो पच्चीस तत्त्वों के द्योतक िैं, सेतघरा िुआ ि। देदीप्यमान श्रचन्तामखण का भवन मध्य में जस्थत ि। उस अद्भुत भवन के श्रीचक्र के त्रबन्दु–ुपील में देवी मा ाँसुिोशभत िैं। मा ाँके शलए इसी प्रकार का तनवास-स्थान मानव िरीर में भी ि। समत ववश्व उसकी दिे ि। पवतव उसकी अजस्थया ाँिैं। नहदयााँउसकी नाडड़या ाँिैं। सागर मूत्रिाय ि। सूय व चन्मिा नेत्र ि। वायु श्वास ि। अजग्न उसका मुख ि।

जितत भुजतत (संसार के सुख) और मुजतत (समस्त जगत् ्से छुटकारा) भोगती ि। शिव साक्षात् ्आनन्द और ज्ञान िैं। शिव स्वयं िी सुख और दुि:ख से शमश्रश्रत जीवन सहित मानव के रूप में अवतररत िोते िैं। यहद इस तत्त्व को आप सदैव स्मरण रखें, तो समस्त द्वैत भाव, समपूण वघृणा, ईष्या,व अशभमान नष्ट िो जायेगा। प्रत्येक मानवीय कम वको सदा पूजा या धाशमकव कम वसमझें। तनत्य-कम वकरना, खाना, चलना, देखना, सुनना —सब ईश्वर - आराधना बन जाता ि, यहद आप ठीक दृजष्टकोण रखें। मानव के भीतर तथा मानव के द्वारा जो कम व

करता ि◌ै, वि शिव ि◌ी ि◌ैं। अब कफर अिभाव किा ◌ाँि◌ेष रि जाता ि◌ै ? सभी मानवीय काय वदैवी काय विैं। एक िी वैश्व आत्मा समस्त हृदयों में धड़कता ि◌ै, समस्त नेत्रों से देखता ि◌ै, सभी ि◌ाथों से काय वकरता ि◌ै और समस्त कानों से

सुनता ि◌ै। यहद मानव अपने इस तुच्छ अिभाव को नष्ट करके अनुभव कर सके, तो यि कैसी भव्य अनुभूतत ि◌ै । आपके पुरानेसंस्ंकार, पुरानी वासनाएं ◌ंऔर सोचने ◌ेका पुराना ढंग ऐसी अखण्ि् अनुभूतत कर पाने में बाधक बन जाता ि◌ै।

साधक सोचता ि◌ै कक संसार और मा ◌ाँभगवती एक रूप ि◌ी ि◌ैं। वि स्वयं को हदव्य मा ◌ाँसे अशभन्न मान कर चलता ि◌ै। सब ओर एक ि◌ी रूप देखता ि◌ै। वि हदव्य मा ◌ाँको परब्रह्म से भी अशभन्न मानता ि◌ै।

उन्नत साधक अनुभव करता ि◌ै — "म ◌ैंि◌ी देवी ि◌ूँ और देवी मुझ में ि◌ी ि◌ैं।" वि स्वयं की ि◌ी देवी के रूप में उपासना करता ि◌ै। वि किता ि◌ै: "सोऽमि् ◌्" म ◌ैंवि ि◌ूँ।

िति मत मात्र शसद्धान्त अथवा दिनव निीिं। यि साधक के स्वभाव तथा ववकास करनेकी क्षमता और उसकी अवस्था के अनुसार उसके शलए क्रमबद्ध योग साधना और तनयशमत प्रशिक्षण तनधारवरत करता ि◌ै। यि जजज्ञासु को कुण्ि्शिलनी जाग्रत करने तथा भगवान् ◌्शिव से संयोग कराने और परम आनन्द तथा तनववकवल्प समाश्रध प्राप्त करने में सियता करता ि◌ै। जब कुण्ि्शिलनी सुप्त ि◌ोती ि◌ै, तो व्यजतत जगत् ◌्की ओर जाग्रत रिता ि। उसे ◌ेववषय-चेतना रिती ि◌ै। जब वि जागृत् ि◌ोती ि◌ै, तो वि सो जाता ि◌ै, उसकी संसार के प्रतत समस्त चेतना समाप्त ि◌ो जाती ि◌ै, वि भगवान् ◌्के साथ एक ि◌ो जाता ि◌ै। समाश्रध में शिव और ि◌जतत के सिस्रार में संयोग से प्रवाहित ि◌ोनेवाले अमृत् से ि◌रीर समपोवषत ि◌ोता ि◌ै।

जितत-योग-साधना के शलए गुरु अतनवाय विै। वि साधक को दीक्षक्षत करके हदव्य ि◌जतत संचाररत करता िै।

नारी से दैहिक समबन्ध स्थूल समभोग ि◌ै। यि पिु भाव के कारण ि◌ोता ि◌ै। मा ◌ाँकुण्ि्शिलनी ि◌जतत का सिस्रार में, तनववकवल्प समाश्रध की अवस्था में भगवान् ◌्शिव से संयोग ि◌ोता ि◌ै। यि वास्तववक आनन्दपूण वशमलन ि◌ै। यि हदव्य भाव के कारण ि◌ोता ि◌ै। आपको पिु भाव से हदव्य भाव की औरे-सत्संग, गुरु-सेवा, त्याग, वैराग्य, वववेक, जप और ध्यान के द्वारा उठना ि◌ै।

देवी मा ◌ाँकी तीव्र तनष्ठा और पूण वश्रद्धा सहित उपासना तथा आत्म-समपणव, आपको उसकी कृपा प्राजप्त में सियक ि◌ोंगे। मात्र उसकी कृपा सेिी आए उस अनश्वर का ज्ञान प्राप्त कर सकते ि◌ैं।

त्रत्रपुरसुन्दरी — जो राजराजेश्वरी और लशलतादेवी भी ि◌ै—की जय ि◌ो ! उनकी कृपा आप सब पर ि◌ो! ि◌

शिव और िजतत

जितत तत्व वास्तव में शिव-तत्व का नकारात्मकतत्वि्है। यद्यवपदोनों को अलग-अलग कि‍ा गया िै, तथावप वास्तव में वे दोनों एक िैं। िजतत-तत्त्व शिव की इच्छा–जितत िै।

अमबाल, अजमबका, गौरी, ज्ञानाजमबका, दुगा्,व काली, राजेश्वर त्रत्रपुरसुन्द इत्याहद िजतत के अन्य नाम िैं। िजतत स्वयं िुद्ध आनन्दपूण वचैतन्य िै और उसक ववचार से प्रकृतत िी सकक्रय िो कर प्रकट िुई िै। यि जितत-समप्रदाय भगवान को ववश्व मां ्के रूप में मानता िै।

जितत को मााँइसशलए कि‍ा गया िै, तयोंकक यि वि सवोच्च पक्ष िै जजसमेवि ववश्व की जननी और पालक मानी जाती िै। ककन्तु भगवान् ्न तो पुरुष िैं न िी स्त्री िैं; वे जजस रूप में अवतररत िोते िैं, उसी नाम से जानेजाते िैं।

ववश्व में एकमात्र हिन्दू ्धम विी िै जजसमें ईश्वर के मातृ ्रूप पर इतना बल हदया गया िै। ऋग्वेद के दिम मण्लि में देवी सूतत आता िै। यि मिवष वअमब्रीन की पुत्री बक द्वारा उद्घाहटत ककया गया था। यि ऋग्वेदीय स्तोत्र देवी मा ्ाँको समबोश्रधत करके बक उस परमात्मा को, जो समस्त संसार में व्याप्त िै-मातृ ्रूप में अनुभव करके किती िै। बंगाल में मातृ–् उपासना अत्यश्रधक प्रचशलत िै। प्रत्येक बंगाली के अधरों पर सदा 'मा'ाँ िै।

शिव और िजतत दोनों तत्त्वत: एक िैं। कालीदास के 'रघुवंमि्'् के प्रथम पद्य में िी कि‍ा गया िै कक शिव और िजतत का परस्पर समबन्ध उसी प्रकार से िै जैसे िब्द का उसके अथ वसे िै। जजस प्रकार अजग्न और उष्मा परस्पर अववभाज्य िै, ठीक उसी प्रकार िजतत और शिव परस्पर अववभाज्य िैं। भगवान् ्शिव िजतत के त्रबना कुछ निींकर सकते। यि श्री िंकराचाय वने 'सौन्दयलविरी' के प्रथम पद में बल दे कर कि‍ा िै।

जितत गततिील सप वकी भातााँत िै। शिव गततिीन सप वकी भातााँत िैं। लिरवविीन सागर • शिव िैं। लिर सहित सागर िजतत िै। शिव अनुभवातीत परम तत्त्व िैं। उस परम तत्त्व का सवव्वयापी साकार स्वरूप िजतत िै। शिव तनगुणव िैं, वे तनष्कल िैं। िजतत सगुण िै। वि रचतयता िै। िजतत ततरंगेधागे ्से बनी रज्जु की भातााँत िै ।

मा ्ाँकाली शिव के वक्षस्थल पर नृतृ्य करती िै। उसका रूप ववकराल िै; ककन्तु वास्तव में वि ववकराल निीं। वि अत्यन्त दयालु और कोमल िैं। वि नरमुण्ों की माला पिनेरिती िैं। इसका अथ वतया िै? वि अपने भततों के िीिी कण्ठ में धारण ककये रिती िैं। अपनेभततों के प्रतत वि ककतने प्रेम और स्निे से पररपूण विं!

काली देवी मा ्ाँिै। वि भगवान् ्शिव की िजतत िै। वि शिव का सकक्रय पक्ष िै। शिव तनजष्क्रय तत्त्व िैं। भगवान् ्शिव मृतृ िरीर की भातााँत िैं। यि तया दितवा िै? वे पूणतवया िान्त, गततिीन, श्वासिीन समाश्रध अवस्था में नेत्र बन्द ककये िुए िैं। वे कक्रयािीन अपररवतनवीय िैं। उनके वक्ष पर तनरन्तर िोने वाली लीला से वे पूणतवया अस्पशितव िैं।

जगत् ्के शलए वे पूणतवया मृत् ि। वे तीनों गुणों से परे ि। उनके शलए न द्वैत ि, न अनेकत्व, न सापेक्षता, न कता वऔर कम वमें भेदत्व ि, न पृथृकत्व न वैशिष्ट्य, न त्रत्रपुहटन िी द्वन्द्व ि; न राग-द्वेष, न िी अच्छा और बुरा ि। वे तनत्यिुद्ध, तनशलप्वत ि और कफर भी इस संसार के स्रोत, आधार, आश्रय और मूल कारण ि। वे मात्र देखते ि। िजतत जीवन का संचार करती ि। वि काय वऔर सृजृष्ट करती ि। उनकी उपजस्थतत मात्र में िजतत इस संसार की लीला संचाशलत रखती ि। समस्त जगत् ्उनके भीतर िोनेवाला स्पन्दन मात्र ि। वे परम चैतन्य ि और उनमें िी ब्रह्माण्डीय चेतना ि। वे समस्त नाम-रूपों को बनाने वाले ि, तथावप वे नाम-रूपों से परे ि। यि एक बड़ा चमत्कार और परम रिस्य ि जो सीशमत बुद्धि की समझ में निींआ सकता।

शिव से रहित िजतत का कोई अजस्तत्व निीं और िजतत से रहित शिव का कोई प्राकट्य निीं। यि जितत िी ि जजसके द्वारा अव्यतत परमात्मा शिव अथवा तनगुणव ब्रह्म सगुण ब्रह्म िो जाते ि। शिव दुगावअथवा काली की आत्मा ि। दुगा वया काली शिव के सम रूप ि। शिव सजच्चदानन्द ि। दुगा वअथवा काली सजच्चदानन्दमयी ि। शिव और िजतत एक िी ि। कोई एक दूसूरे से बड़ा निीं ि। िजतत श्चत्, श्चद् रूवपणी, श्चन्मात्रारूवपणी ि।

शिव पावतव ी

ि देवी! सविुभे, जय-समपदा दात्री, तुमिें नमस्कार ि! इस धरा पर सिौदव-वृजृष्ट करें और अपनी दया-दृजष्ट से मिारी सदैव रक्षा करें!

पवतवराज हिमवान् ्की पुत्री पावतवी ि। वे भगवान् ्शिव की िजतत अथवा पत्नी ि। वे जगज्जननी ि। वे ब्रह्म को प्रकट करने वाली ि। वे केवल लोकमाता अथवा जगन्माता िी निीं, ब्रह्मववद्या भी ि। उनके नामों में से एक नाम शिवज्ञानप्रदातयनी ि। वे शिवदूतूी, शिवाराध्या, शिवमूतत वऔर शिवंकरी भी किलाती ि।

भगवद्-साक्षात्कार प्राजप्त के शलए देवी की अनुकमपा एक अतनवाय वतत्त्व ि। पावतवी अथवा िजतत सवेसवा वि। आपको योग के द्वारा िजतत जाग्रत करनी पड़ेगी। तब िजतत की कृपा आपको भगवद्-साक्षात्कार की ओर, परम मोक्ष प्राजप्त तथा अनन्त िाश्वत परम आनन्द प्राजप्त की ओर ले जायेगी।

स्कन्दपुराण के मिेश्वरकाण्ड में पावतवी की महिमा की कथा का ववस्तृत वणनव शमलता ि। ब्रह्मा के पुत्र दक्षप्रजापतत की कन्या सती का वववाि भगवान् ्शिव से िुआ। दक्ष अपने जामाता को उसकी ववश्चत्र विेभूषा, ववलक्षण ढंग और अनोखे स्वभाव के कारण पसन्द निीं करता था। दक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन ककया। उसने अपनी पुत्री और दामाद को आमजन्त्रत निींककया। सती ने इसे अपना अपमान समझा और विााँ जा कर अपने वपता से इसका कारण जानना चािा, जजसका उसनेअसन्तोषजनक उत्तर हदया। सती इस पर कुवपत िो गयी।

उसनेस्वयं को उसकी पुत्री किलाया जाना अच्छा न समझा और अपनी दिे को अजग्न की भेंट करके पावतवी के नाम से पुनजन्वम ले कर शिव से वववाि कर लेना अश्रधक ठीक समझा। उसनेअपनी योगा–जतत से अजग्न प्रज्वशलत की और उस योगाजग्न में स्वयं को समाप्त कर शलया।

भगवान् ्शिव ने वीरभि को भेजो। उसने यज्ञ वव्ध्वंस कर हदया और विााँपर एकत्रत्रत िुए सभी देवताओं को भगा हदया। दक्ष का शसर काट कर अजग्न में श्रगरा हदया। गया। भगवान् ्शिव ने ब्रह्मा की प्राथनवा पर एक बकरे का शसर काट कर दक्ष के धड़ पर लगा हदया।

भगवान् ्शिव तप करने के शलए हिमालय पर चले गये। तारकासुर को ब्रह्मा वरदान प्राप्त था कक उसका केवल शिव और पावतवी के पुत्र द्वारा िी वध िो सकता था। से अतिः देवताओंने हिमवान् ्से सती को अपनी पुत्री रूप में जन्म देने की प्राथनवा की। . हिमवान् ्मान गया। सती ने हिमवान् ्की पुत्री पावतवी बन कर जन्म शलया। भगवान् ्शिव के तप के समय पावतवी ने उनकी सेवा और उपासना की। भगवान् ्शिव ने पावतवी से वववाि ककया।

एक बार नारद कैलास पवतव पर गये और वाि ााँशिव और पावतवी के अधनवारीश्वर रूप में दिनव ककये। उन्िोंनेउन दोनों को पासााँ खेलेतेदेखने ेकी इच्छा व्यतत की। भगवान् ्शिव ने कािा कक उनकी ववजय िुई िै, पावतवी ने कािा कक वे ववजयी िुई िैं। उनमें झगड़ा िो गया। शिव पावतवी को त्याग कर तप करने चले ेगये। पावतवी व्याश्रधन का वेष धारण कर शिव सेशमली। शिव को व्याश्रधन से प्रेम िो गया। वे उसके संगं उसके वपता के पास वववाि की अनुमतत लेने के शलए गये। नारद ने उन्िें बताया कक वि व्याश्रधन अन्य कोई निींपावतवी िै। नारद ने पावतवी को शिव से क्षमा मागााँने के शलए कािा। उनका पुनशमलवन िो गया।

शिव, शलंगं के रूप में अरुणाचल पवतव बन कर प्रकट िुए। इस प्रकार उन्िोंनेब्रह्मा और ववष्णु,ु जो स्वयं को दूसूरे से मिान् ्किते िुए परस्पर वववाद कर रिे थे, के अशभमान को नष्ट कर हदया। अरुणाचल तेजोशलंगं िै। पावतवी ने शिव के अरुणाचलेश्वर रूप में दिनव ककये। शिव ने पुनिः अपना वामांग स्थान दे कर पावतवी को अधनवारी बनाया।

तारकासुर देवताओं का कड़ा ववरोधी बन गया। महि-सागर-संगम-क्षेत्र उसकी राजधानी थी। पावतवी के दूसूरे पुत्र सुब्रह्मण्यम् ्जब सात िी हदन के थे, तो उन्िोंने इस असुर का वध कर हदया।

पावतवी ने अपनी इच्छा सेिस्तीवदन पुत्र की रचना की। वे भगवान् ्गणेि थे। सबकी ववघ्न-बाधाओं को रिनेके शलए उन्िें गणपतत बनाया गया। एक हदन भगवान् ्शिव ने एक फल हदखाते िुए कािा कक यि फल इन दोनों बालकों में से उसे ेहदया जायेगा जो ववश्व का भ्रमण करके पिले ेलौट आयेगा। भगवान् ्सुब्रह्मण्यम् ्ववश्व-भ्रमण के शलए चल पड़े। गणपतत भगवान् ्अपनेवपता शिव, समस्त जगत् ्को ढक लेने वाले मिाशलंगं के चारों ओर घूम गये और फल प्राप्त कर शलया।

पावतवी श्याम वण वकी थीं। एक हदन भगवान् ्शिव ने ववनोद से उर्न्हें कोली कि हदया। पावतवी उनके इस िास्य-व्यंग्य से दुिःखी िो गमी और हिमालय पर तप करने के शलए चली गयो । उनका अत्यन्त सुन्दर गौर वण विो गया और इस प्रकार वे गौरी किलाने लगीं। ब्रह्मा की अनुकमपा से गौरी शिव के साथ संयुतत िो कर अधनवारीश्वर किलायीं।

एक बार पावतवी ने भगवान् ्शिव के पीछे खड़े िो कर उनकी आखाँों को मूदाँ शलया। समस्त ववश्व तनजीव और अन्धकारपूण विो गया। शिव ने पावतवी को अपनी भूल सुधारने के शलए तप करने को किा। पावतवी कांची (कांजीवरम्) ् चली गयी और गिन तपस्या आरमभ कर दी। भगवान् ्ने बाड़ उत्पन्न कर दो 'पावतवी द्वारा तनशमतव शलंगं बिने वाला िो गया। उसनेशलंगं का दृढ़ता से आशलंगंन कर शलया। शलंगं विींपर एकमबरेश्वर के नाम से जस्थत िो गया। पावतवी विााँ लोक-कल्याण के शलए कामाकिी में जस्थत िुईं।

पावतवी सदैव शिव के साथ उनकी िजतत के रूप में रिती िैं। वे अपनेभततों पर ज्ञान और कृपा की वृजृष्ट करती िैं तथा उर्न्हें अपने प्रभुसे शमला देती िैं। समस्त जीवों के वास्तववक माता-वपता शिव और पावतवी को प्रणाम िै!

मााँ भगवती

बालकों की अपने वपता की अपेक्षा मा ाँसे अश्रधक घतनष्ठता िोती िै। मा ाँस्नेि, कोमलता और प्रेम का साकार रूप िोती िै। वि बालकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखती िै। जब भी बच्चे को ककसी भी वस्तु की इच्छा िोती िै, तो वि वपता की अपेक्षा मा ाँसे िी किता िै। आध्याजत्मक ववषयों में भी साधक वपता शिव की अपेक्षा मा ाँकाली से अश्रधक समबन्ध रखते िैं। शिव बाह्य जगत् ्से तनशलप्वत िैं। वे मिो रहित िै और नेत्र बन्द ककये िुए अपनी समाश्रध में लीन िैं। यि मात्र िजतत अथवा देवी मा ाँिी िैं जो वास्तव में जगत् ्के कायकवलापों को देखती िै। जब वि अपनेभतत की लगन से प्रसन्न िो जाती िै, तो उसे ेपरम मोक्ष प्राजप्त के शलए अपने प्रभु से शमलवाती िै।

शिव और िजतत परस्पर अववभाज्य िैं। यि अधनवारीश्वर - शिव-पावतवी (आधे पुरुष और आधी नारी का एक िी िरीर में िोना) से सुस्पष्ट िै। पावतवी भगवान् ्शिव की अधवामांगी िै।

शिवज्ञान, आत्मज्ञान की ओर ले जाता िै और िमारे ऊपर परम आनन्द की वषा वकरता िै तथा िमें जन्म-मरण से मुतत करता िै। यि िमें जीवन ज्योतत प्रदान करता िै। यि अन्तिः प्रज्ञा चक्षुिै। यि भगवान् ्शिव का तृतीय नेत्र िै। यि तृतीय नेत्र समस्त भ्राजन्तयों और मनोववकारों का नाि करता िै!

जितत की ववशभन्न रूपों में उद्भावना की गयी िै। सरस्वती ववद्या की देवी िै। लक्ष्मी धन की देवी िै। पावतवी अथवा उमा आनन्द-वृजृष्ट की देवी िै.

माकवर्णेयिपुराण में सात सौ श्लोक ि ैं जो सप्तिती अथवा चर्णिी या देवी मिात्मय के नाम से जाने जाते े ैं। यि हिन्दुओं के सवाश्रवधक प्रशसद्ध धाशमकव ग्रन्थों में से ि ै। इसे ेलगभग गीता जजतनी प्रततष्ठा प्राप्त ि ै। इसमें अन्योजततपरक ि ैली में बताया गया ि ै कक मोक्ष के पथ में आनेवाली मुख्य बाधाएँमिारी अपनी ि ी इच्छाए,ँ क्रोध, लोभ और अज्ञान ि ै। तथा ि म यहद देवी की तनष्ठापूवकव भजतत करें, तो उनकी कृपा के द्वारा इन सब पर ववजय पा सकते ि ैं।

इस पुस्तक में देवी मा ँके तीन पक्षों—मिाकाली, मिालक्ष्मी और मिासरस्वती का अत्यन्त सुन्दर ढंग से उनके तामशसक, राजशसक और साजत्त्वक रूप में वणनव ककया गया ि ै। असुर देवताओं से ववरोध करने लगे। देवताओंने देवी मा ँका आिीवादव लेनेके शलए प्राथनवा की। वि ऊपर वखणतव तीनों रूपों में प्रकट ि ुई और असुरों का संिार करके देवताओंकी रक्षा की। देवी मा ँने मानव और देवताओंको पतका और अमोघ वचन हदया कक जब भी वे भय अथवा कष्ट में स्मरण करेंगे, े तो वि आ कर उनकी रक्षा करेंगी।

त्रत्रमूतत वकी बलप्रदाता ि जतत

िे प्रभुशिव ! ि म आपकी मौन स्तुतत करते ि ैं। आप ि म सबके एकमात्र ि रणदाता, एकमात्र उपास्य, ववश्वतनयन्ता, स्वयंप्रकाि प्रभु ि ैं। आप जगत् ् के स्रष्टा, पालक और संिारक ि ैं। आप सवोच्च, अचल और तनरपेक्ष ि ैं।

िजतत-बल अथवा जीवन-संचाररणी ि ै जो प्रत्येक काय वको समभव बनाती ि ै। मनुष्य जब कोई काय व करता ि ै, तो वि केवल अपनी ि जतत के कारण ि ी कर पाता ि ै। यहद उससेकाय वनिीं ि ोता, तो यिी किता ि ै कक उसमें अमुक काय वकरने की ि जतत निीं ि ै। अतिः वि ि जतत ि ी ि ै जो व्यजतत को कम वकरने योग्य बनाती ि ै। िजतत देवी ि ै। ि जतत हदव्य माता ि ै। मन ि जतत ि ै। प्राण ि जतत ि ै। इच्छा ि जतत ि ै।

देवीभागवत में प्रकृतत के रूपों का वणनव ि ै। देवी त्रत्रमूतत व(ब्रह्मा, ववष्णु ु और शिव) को अपनेतनवास-स्थान मखणद्वीप में ले गयी और उनकी पजत्नया ँसरस्वती, लक्ष्मी और पावतवी उन्िें दे कर नये कल्प में संसार में जीवन-संचालन के शलए भेजो।

भगवान् ्नारायण ने अपनी नाशभ में से ब्रह्मा की उत्पवत्त की। ब्रह्मा को ज्ञात निीं ंथा कक उन्िें तया करना ि ै। ववष्णु ुऔर शिव भी निींजानते ेथेकक प्रलय के पश्चात् ्नये कल्प में पुनिः नव सृजृष्ट का आरमभ कैसे े िो। उनको ववमान द्वारा उठा शलया गया और वे ि ीघ्र ि ी एक अद्भुत क्षेत्र में पिुँचे जिा ँउन्िें नारी रूप में पररवततवत कर हदया गया। वे देवी द्वारा ि ाशसत एक नारी-जगत् ्में थे। यि सुधा-सागर में मखणद्वीप था। ये नव-तनशमतव नाररया ँसौ वष वतक विाँ रिीं। उन्िें ज्ञात निींथा कक वे कौन ि ैं, विाँपर तयों ि ैं और उन्िें तया करना ि ै।

तब उन्िें पुरुषों के साथ रखा गया और वे स्वयंभी पुरुष बन गयीं। तब ब्रह्मा व सरस्वती, ववष्णु व लक्ष्मी तथा शिव और पावतवी दमपतत बन गये। उन्िोंनेतत्क्षण िी स्वयं को अपने-अपने स्थानों पर पाया और वे

यि भी जान गये कक उन्िोंने तया-तया काय वकरना िै। देवी के संयोग से त्रत्रमूतत वको िजतत प्राप्त िुई।

पावतवी लोगों को ज्ञान और मोक्ष देने वाले भगवान् ्शिव की िजतत िै। लक्ष्मी लोगों को धन-समपदा देने वाले भगवान् ्ववष्णु की िजतत िै। सरस्वती जगत् ्की सृजृष्ट करने वाले ब्रह्मा की िजतत िै। राधा, भजतत के द्वारा जीवों को मुजतत प्रदान करने वाले भगवान् ्कृष्ण की िजतत िै।

जितत आपको िजतत का वरदान दें!

गंगा माँ

गंगा भारत की सबसे अश्रधक पववत्र नदी िै। गीता में भगवान् ्कृष्ण ने किा िै—“म ैंनहदयों में गंगा िूँ।” गंगा के जल में कोई कीटाणु पल निींसकता। यि रोगाणु-रोधक खतनजों से सन्तृपूत िै। पजश्चमी दिेों के िातटर त्वचा रोगों के शलए गंगा जल से माशलि करने को किते िैं। गंगा केवल नदी िी निीं िै। यि पावन तीथ वभी िै। इसमें ऐसी अद्भुत िजततयाँ ववद्यमान िैं जो संसार की अन्य ककसी नदी में निींिैं। वैज्ञातनकों तक ने गंगा-जल की क्षमता को मान्यता दी िै।

मैकश्रगल ववश्वववद्यालय, कैनिा के िा. एफ. सी. िैररसन शलखते िैं- "एक ववेष तथ्य जजसेकभी भी सन्तोषजनक ढंग से स्पष्ट निींककया गया, यि िै कक गंगा के पानी में िैजेके रोगाणु अतत िीघ्र (तीन या पाचाँ घण्टों में) मर जाते िैं। यहद कोई िैजेइत्याहद से मृतृ असंख्य लािों से तथा िजारों की संख्ं्या में स्नान करने से गन्दे िुए पानी को देखें, तो यि बड़ी अद्भुत-सी बात लगती िै कक हिन्दुओं का यि ववश्वास िै कक इस नदी का पानी िुद्ध िै और यि गन्दा निींिो सकता तथा इसको पीना और इसमें स्नान करना सुरक्षक्षत िै, इसको आधुतनक जीवाणु वैजै्ञातनक-संधिन द्वारा मान्यता दे दी जानी चाहिए।" एक जाने-मानेफ्ांसीसी िातटर िी. िेरिली ने ऐसी िी शमलती-जुलती गंगा की रिस्यात्मकता की खोज की। उन्िोंनेपेश्रचि और िैजेसे मृतृ िरीरों को बिते िुए देखा और उनके आश्चय वका हठकाना न था, जब उन्िोंनेपाया कक मृतृ िरीरों के मात्र कुछ िी नीचे बिने वाले जल में, जजसमें कोई भी सोवेगा कक िैजेऔर पेश्रचि के िजारों रोगाणु िोंगे,े एक भी ऐसा कीटाणु ुनिींथा। तब उसनेऐसी बीमारी वाले रोश्रगयों के कीटाणु ुले कर उन्िें गंगा-जल में िाल हदया। कुछ समय बाद जब शमश्रण को देखा, तो उसके आश्चय वका अन्त न था कक उसमें सारे कीटाणुनष्ट िो चुकेु थे।

एक अगाँरेज िातटर सी. ई. नेलसन, एफ. आर. सी. एस. एक और आश्चयजवनक तथ्य बतलातेिैं। वे किते िैं- "कोलकाता से इंग्लैण्ि जाने वाले ेजलपोत गन्दे जल वालेगंगा के एक मुिाने िुगली नदी से जल लेतेिैं और यि गंगा का पानी इंग्लैण्ि तक िुद्ध रिता िै। दूसूरी ओर इंग्लैण्ि से भारत की ओर जाने वाले ेजलपोत देखते ेकक

लन्दन से शलया िुआ जल भारत की सबसे तनकट की बन्दरगिा मुमबई, जो कोलकाता से एक सप्तिा पिले िी आती िै, पिुँचने तक ठीक निीं िरिता और उन्िें लाल सागर में सईद या सुएज या इिन में पुन: जल लेना पड़ता। अतिः इसमें आश्चय वनिीं, यहद भारत के लोग किें कक 'गंगा अत्यन्त पववत्र िै और इसके जल में अद्भुत िजततया िाँ िैं।'

एक हिन्दू केशलए 'गंगा' िब्द से एक तनजी पावन समबन्ध िै। प्रत्येक हिन्दू गंगा में गोता लगाने के शलए तथा अजन्तम समय में गंगां जल की एक बूदँ मुिँ में िालनेके एक शलए लालातयत रिता िै। मुमुक्षु और शभक्षु साधना और तपस्या के शलए गंगा के तट पर कुहटयाए िँबनाते िैं। िरिैया पर लेटे िुए भीष्मवपतामि ने पाण्िवों को अजन्तम उपदेि देते िुए गंगा की महिमा के ववषय में बिुत उच्च भाव व्यतत ककये िैं।

एक धमपवरायण हिन्दू जब भी स्नान के शलए जाता िै, तो सवप्रवथम गंगा का आह्वान करता िै, नदी में िुबकी लगाने से पूव ववींिं गंगा की उपजस्थतत की भावना करता िै और यहद वि गंगां से दूरस्थ स्थल पर रिता िो, तो अत्यन्त उत्कण्ठा से कभी-न-कभी स्नान कर पाने की कामना करता िै। वि बरतन में गंगा-जल ले जा कर घर में अत्यन्त सावधानी सेसभाँाल कर रखता िै जजससे िेकक उसे िुद्धधकरण के शलए उपयोग में ला सके।

हिन्दुओं का ववश्वास िै कक यहद वे पावन गंगा जल में िुबकी लगा लें, तो उनके समस्त पाप धुल जाते िैं।

सतयुग में सभी स्थल पववत्र थे। त्रेतायुग में पुष्कर जी सवाश्रवधक पववत्र स्थान माना जाता था । द्वापर में कुरुक्षेत्र सबसे अश्रधक पववत्र स्थान माना जाता था। कशलयुग में वि गौरव गंगा को प्राप्त िै। देवीभागवत में आता िै : "जो सौ मील दूर से भी गंगां का नाम ले लेता िै, वि पाप से मुतत िो कर भगवान् िरर के धाम को प्राप्त कर लेता िै। '

गंगा का उद्गम परमात्मा से िुआ िै। वि भगवान् िरर के चरणों को स्पि वकरती िै और वैकुण्ठ में चली जाती िै। वि गोलोक से तनकल कर ववष्णु, ब्रह्मा, शिव, ध्रुव, चन्ि, सूय,व तपिः, जनः, मिः लोकों में बिती िुई इन्िलोक में पिुँच कर मन्दाककनी नाम सेप्रवाहित िोती िै।

भागीरथ की प्राथनवा पर (जजसनेकवपल ऋवष के श्राप से भस्म िुए सगर के सिस्र पुत्र, जो कक इनके पूवजव थे, के मोक्ष के शलए गंगा को पाताल में ले जानेके शलए कहठन तप ककया था) गंगा भगवान् शिव की जटाओं में समा गयी।

तब वि भगवान् शिव की जटाओंसे तनकल कर बिनेलगी। उसके जल ने ज ऋवष की यज्ञिाला को आप्लाववत कर हदया, तो ऋवष उसे पी गये। तब वि पुनिः उसके कान से तनकल कर बिनेलगी और जाह्नवी किलायी। वि भागीरथ की पुत्री िोने से भागीरथी भी किलाती िै। पाताल में वि भागीरथी नाम से बिती िै। राजा भागीरथ के पूवजव गंगा-जल का पावन स्पि वपा कर स्वग वको चलेगये।

ब्रह्मा के समक्ष व्यविार में िुई अपनी िी भूल के पररणामस्वरूप गंगा को मानव-जन्म लेना पड़ा। वि
ान्तिनु की पत्नी बनी। िान्तनु भी राजा मिाशभि नामक हदव्य पुरुष थेऔर उन्िें भी ब्रह्मा के समक्ष अशभमान
युतत अनुश्रचत व्यविार के कारण मृत्युलोक में जन्म लेना पड़ा था। गंगां ने मिान् ्वीर और सन्त भीष्म को जन्म
हदया।

गंगा ने अजग्न द्वारा प्रदत्त भगवान् ्शिव का बीजाणुधारण करना स्वीकार ककया और देवताओंके वीर सेनापतत तथा तारकासुर का ववनिा करने वाले सुब्रह्मण्यम् ्को जन्म हदया।

गंगा ववष्णु रूप िै। उसका दिनव आत्मोद्दीपक व भावों को उन्नत करने वाला िै। वि घाहटयों में
प्रवाहित िोती िै और हिमवान् ्की पुत्री पावतवी के तनकट वास करती िै। ऋवषकेि की वादी (घाटी) में बिती िुई वि
ककतनी भव्य प्रतीत िोती िै। उसका सागर के समान नील वण विै। जल अत्यश्रधक स्वच्छ और मधुर िै। मैदानों के
धनी लोग ऋवषकेि से गंगा-जल लेतिैं, वे इसे ेभारत के दूरूस्थ स्थानों में पीतल के बड़े-बड़ेबरतनों में ले जाते िैं।

ऋवषकेि में गंगा-दिनव आत्मोत्थापक िै। कुछ क्षणों के शलए गंगा तट पर पड़ेपत्थर पर बैठना एक
वरदान िै। कुछ मास तक के शलए गंगा तट पर रि कर अनुष्ठान या पुरश्चरण करना एक बड़ा तप िै जो साधक
को वैकुण्ठ ले जानेवाला िै। सदा के शलए गंगा-तट पर रि कर ध्यान में जीवन यापन कर देना शिव आनन्दम िै।

मा ाँगंगा का आप सबको आिीवादव प्राप्त िो! वि आप सबको अपनेतट पर रि कर योग-साधना करने में सिायक िो!

त्रत्रपुर- रिस्य

तीन पुर अथवा नगर िै— आणव मल (अिम्) ्, कम व(कमों के बन्धन) और माया (भगवान् ्शिव की
जीवात्मा को भ्रम के आवरण में ढके रखने ेवाली िजतत) आणव मल की प्रथम नगरी को नष्ट करने के शलए
भगवान् ्शिव के प्रतत आत्म-समपणव करके भगवान् ्का अनुग्रि प्राप्त करना चाहिए। द्ववतीय अिुद्श्रध कम-व
बन्धन को ववनष्ट करने के शलए कमों के फल को भगवद्-अपणव करना, 'म ैंकता िूाँ' के भाव को समाप्त करना
तथा तनशमत्त भाव बनाये रखना; ऐसा भाव कक भगवान् ्शिव िी आपके अंगों द्वारा सभी काय वकर रिे िैं और आप
मात्र उनके िाथ का खखलौना िैं। (चररयाई और कक्रयाई) ऐसे भाव को ववकशसत करना चाहिए। तब आप कमों के
बन्धन में निींबधेंगे। आपको हृदय की िुद्धता की प्राजप्त िोगी और हृदय की िुद्धता से शिवानन्दम् ्अथवा
परमानन्दम् ्की प्राजप्त िोगी। तृतीय अिुद्श्रध जो माया िै, को पंचाक्षर के जप से, गुरु की पूजा से, भगवान् ्के
ववशभन्न नामों के श्रवण व उनकी लीलाओंके श्रवण सेऔर कीतनव से तथा उनके सजच्चदानन्द रूप पर ध्यान
करने से नष्ट ककया जा सकता िै।

यि त्रत्रपुर अथवा तीनों नगरों का ववनिा िै। यिी त्रत्रपुर-रिस्य िै।

काम, क्रोध, लोभ, घृणा, ईर्ष्यावइत्याहद अिुभ वासनाओं को जप, ध्यान, स्वाध्याय, भजन-कीतनव इत्याहद िुभ वासनाओंके द्वारा नष्ट करें। आपको िाश्वत शिवानन्द की प्राजप्त िोगी।

यि त्रत्रपुर- ववनाि िै। यिी त्रत्रपुर-रिस्य िै।

गुरु की सेवा करें। श्रद्धा और ववश्वास के साथ उनकी सेवा करके अपनेहृदय को िुद्ध करें। कुण्शिलनी को जाग्रत करने वाली योग-कक्रयाओंको उनसे ेसीख कर उसका अभ्यास करें। उनके तनदेिन में योगिास्त्र का अध्ययन करें। ब्रह्मचय वका पालन करें। षडिपुओंका ववनाि करें। अन्तदृजवष्ट रखें। सुषुमना नाड़ी में से कुण्शिलनी को ले जायेंऔर चक्रों द्वारा ग्रजन्थ-भेदन करें तथा उसका अपने प्रभु सदाशिव से सिस्रार चक्र में संयोग करवा कर भगवान् ्शिव के परम आनन्द का भोग करवाय।ें

यि तीनों नगरों अथवा मिलों का ववध्वंस िै। यिी त्रत्रपुर-रिस्य िै।

तीनों िरीरों का ववनाि करें, अथात्व ्तीनों िरीरों—स्थूल भौततक िरीर, सूक्ष्म िरीर और कारण िरीर— से अतीत चलेजाय।ें भगवान् ्शिव पर ध्यान के द्वारा पाचाँों कोष (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, ववज्ञानमय और आनन्दमय) से अतीत चले जाय ेंऔर शिव- सायुज्य प्राप्त करें।

यि तीन नगरों अथवा पुरों का ववनाि िै। यिी त्रत्रपुर- रिस्य िै।

तीनों अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न और सुषुजप्त) के साक्षी बनें। िष्टा बन कर रिें। ववषय-चेतना से स्वयं को अलग िटा लें। अपनेअन्तर में जस्थत िो जायें। तुरीय अवस्था अथवा शिव-पद को प्राप्त करें।

यिी त्रत्रपुर-नाि अथवा त्रत्रपुर-रिस्य िै।

भौततक चेतना, अवचेतन और मनश्चेतना सेअतीत चलेजाय ेंतथा परम चेतन अवस्था अथवा तनववकवल्प या असमप्रज्ञात समाश्रध की प्राजप्त करें।

यि तीन पुररयों का ववनाि िै। यिी त्रत्रपुर-रिस्य िै।।

सिज बुद्श्रध, तकव बुद्श्रध और ववववेक — तीनों से ऊपर उठें और अन्तप्रज्ञवा का तृतीय नेत्र खुलने दें। भगवान् ्शिव का तीसरा नेत्र - हदव्य चक्षु ुखोलें और स्वयंको भगवान् ्शिव की परम ज्योतत में लीन कर दें। ववचार, इच्छा और भावना - तीनों से ऊपर उठ जायेंऔर शिव-तनवाणव की— परम मौन, ववचारिून्यता की अवस्था में प्रवेि कर जाय।ें

यि तीन नगरों या पुररयों का नाि िै, यिी त्रत्रपुर-रिस्य िै।

त्रत्रपुरसुन्दरी भगवान् ्शिव की िजतत िै। वि और शिव एक िैं। वि पर सुन्दरी िै। वि अपनेवरदायी स्वरूप की ओर भततों को आकवषतव करके ज्ञान भजतत और हदव्य ज्योतत की वषा वकरती िै । अत: वि त्रत्रपुरसुन्दरी िै। वि ऊपर वखणतव तीनों पुरों अथवा नगरों का ववध्वंस करने में साधक की सिायता करती िै।

समस्त जगत् ्उनके तनयन्त्रण में िै। समस्त संसार उनके तीनों गुणों के प्रभाव में िै। कमों के समपूण व बन्धन काटे जा सकते िैं। केवल उनकी उपासना के द्वारा कृपा प्राप्त करके िी जन्म और मृतूयु के चक्र को काट कर तोड़ा जा सकता िै। केवल उनके नाम-स्मरण और कीतनव से िी समस्त पापों का नाि करके भगवान् ्शिव के परम आनन्द की प्राजप्त की जा सकती िै।

विी त्रत्रपुर—तीन नगर किलाती िै। स्त्री अथवा पुरुष का िरीर भी उसी के रूपों में से एक रूप िै। समस्त जगत् ्उसकी दिे िै। समस्त देवता उसी के रूप िैं। िास्त्र-ग्रन्थों के सभी त्रत्रयक उसी में िैं यथा—तीनों गुण, चेतना की तीनों अवस्थाए,ाँ तीन अशभया,ाँ तीन िरीर, तीन जगत्,् तीन िजततयााँ(इच्छा–जतत, कक्रया–जतत, ज्ञान-जितत), तीन स्वर (उदात्त, अनुदात्त, स्वररत), त्रत्रवखणकवा, तीनों कम व(संश्रचत, आगामी, प्रारब्ध), त्रत्रमूतत,व तीन अक्षर—अ, उ, म; तीनों प्रमाता, प्रमाण और प्रमेय; ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय, िष्टा, दृश्य और िष्टव्य; ; ये सभी त्रत्रयक त्रत्रपुरसुन्दरी में िैं।

सभी देवताओंका इस िरीर में वास िै। वे ववशभन्न अंगों का प्रतततनश्रधत्व करने वाली मूततयवा ाँिैं। भगवान् ् त्र्यमबक, मूलाधार में रिर्तें; जमबूकेश्वर स्वाश्रधष्ठान में, अरुणाचलेश्वर मखणपूर में, नटराज अनाित में, कालिास्तीश्वर ववुद्धि में, ववश्वेश्वर आज्ञा में और श्रीकण्ठेश्वर का सिस्रार में तनवास िै।

समस्त तीथ वस्थल िरीर में िी िैं —केदार मस्तक में, अमरावती नाक के अग्रभ में, कुरुक्षेत्र् वक्षस्थल में और प्रयाग हृदय में जस्थत िै।

सभी नवग्रिों के भी िरीर में ववविष स्थल िै—सूय वनाद चक्र में िै, चन्मिा त्रबन्दु ुचक्र में िै, मंगल नेत्रों में, बुध हृदय में, बिृस्पतत मखणपूर में, िुक्र स्वाश्रधष्ठान में, ितन नाशभ में, रािु चिेरे में और केतु वक्ष में जस्थत िै।

असंख्य नहदया ाँऔर पवतव भी इस दिे में ववद्यमान िैं। जो कुछ भी बाह्य जगत् ्में दृजष्टगोचर िोता िै, वि सब-कुछ इस दिे के भीतर भी िै। यि िरीर लघु ब्रह्माण्ि् िै। यि वपण्ण्ि् िै।
यि त्रत्रपुर-रिस्य िै।

आप सब पर त्रत्रपुरसुन्दरी की कृपा िो! आपको त्रत्रपुर-रिस्य का ज्ञान िो और भगवान् ्शिव का शिव आनन्द अथवा परम आनन्द प्राप्त िो !

कामाक्षी और मूक कवव

'मूक' िब्द का अथ वि गूँगा। कोई एक भतत कामाक्षी देवी के मजन्दर में उसका आिीवादव प्राप्त करने के शलए कहठन तप कर रिा था। कामाक्षी देवी उसे ेआिीवादव देनेके शलए एक सुन्दर कन्या के रूप में प्रकट िुई। भतत ने उसे ेसाधारण मानवीय कन्या समझा और कुछ श्रद्धा व्यतत निीं ंकी। वि उसे ेछोड़ कर जाने लगी, तो मजन्दर के एक दूसूरे कोने में एक व्यजतत सोया िुआ शमला। वि जन्म से िी गूँगा था। देवी ने उसे ेजगाया। उसने जब देवी को देखा, तो उसके आनन्द की सीमा न रिी। देवी ने उसकी जजह्वा पर बीजाक्षर शलखा और वाक्–जतत का आिीवादव हदया। वि प्रख्यात मूक कवव बना। उसने पाचाँ सौ श्लोक शलखे जो पंचंिती किलाये, जजसमें (१) देवी की महिमा का, (२) उसके चरण-कमलों का, (३) उसकी कृपा, (४) उसकी कृपा-दृजष्ट, और (५) उसकी स्नेिपूण व मातृ ृमुस्कान का वणनव था। इन पाचाँों में प्रत्येक पर सौ-सौ श्लोक शलखे। अतिः उसकी कृतत 'मूक पंचंिती' किलायी।

कवव कुमभकोणम् ्के कामकोहटपीठ का आचाय वबना और उनतालीस वष वतक गद्दी पर रिा। दक्षक्षण भारत में 'मूक पंचंिती' का नवरात्र उत्सवों में सभी भततों द्वारा अत्यश्रधक भजततभाव से पाठ िोता िै।

काशलदास अनपढ़ चरवािा था। वि भी काली मा ाँकी कृपा से भारत का मिान कवव बना। काशलदास ने अपनी प्रशसद्ध रचना 'श्यामलदण्किा' में देवी की महिमा का बिुत सुन्दर वणनव ककया िै।

मूक को वाणी देनेवाली माँ की जयिो !

माँ से क्षमा-याचना का स्तोत्र

वपता की अपेक्षा बालक को मा ाँअश्रधक वप्रय िोती िै। मा ाँनम्र, कोमल, मधुर, संवेदनिील तथा स्नेिमयी िोती िै। वपता दुनुमवय, कठोर, कटु, उग्र तथा तनष्ठुर िोता िै। शमठाई, फल तथा अन्य उपिार लेनेके शलए बच्चा मा ाँकी ओर िी भागता िै। बालक वपता की अपेक्ेषा मा ाँके समक्ष िी अपना हृदय सरलता से खोल सकता िै।

इसी प्रकार कवव और सन्त भी परम वपता की अपेक्ेषा हदव्य मा ाँसे िी अश्रधक घुले-शमले ेरिते िैं। वे अपना हृदय मा ाँके समक्ष अश्रधक सिजता से खोल देते िैं। वपता रूप में प्रभु की प्रततमा को पुकारने की अपेक्ेषा जब वे मा ाँ के रूप में उसे ेपुकारते िैं, तो हृदय की आवाज अश्रधक अपनत्व से तनकलती प्रतीत िोती िै। तनमनशलखखत किराचाय वकी मा ाँकी स्तुतत पढ़ने ेसेआपको इस कथन की सत्यता का आभास िो जायेगा :
सबका उद्धार करने वाली िे कल्याणमयी माता!
तुमिारी पूजा-ववश्रध न जानने के कारण,

धन के अभाव में, आलस्य से और
उन ववश्रधयों को अच्छी तरि न कर सकने के कारण,
तुमिारे चरणों की सेवा करने में जो भूल िुई िो,
उसे ेक्षमा करो; तयोंकक पूत तो कुपूत िो जाता िै,
पर माता कुमाता निींिोती !!

िे मा!ाँ भू-मण्लि में तुमिारे सरल पुत्र अनेक िैं,
पर उनमें म ैंिी एक बड़ा िी चंचंल िूाँ,
तो भी िे शिवे!े मुझे ेत्याग देना तुमिें उश्रचत निीं,
तयोंकक पूत तो कुपूत िो जाता िै,
पर माता कुमाता निींिोती !!

तुमिारे चरणों की िे मात! मनैं
सेवा निीं ंकी अथवा तुमिारे शलए प्रचुर धन
भी समवपतव निींककया, तो भी
मेरे ऊपर यहद तुम ऐसा अनुपम स्निे
रखती िो, तो यि सच िी िै कक
पूत तो कुपूत िो जाता िै,
पर माता कुमाता निींिोती !!

अध्याय ७
वीर िैववादऔरकाश्मीरिैववाद

वीरिैव वाद

वीर ि व दिनव केवल ि जतत ववशिष्टाद्वैत दिनव िी ि। यि आगमन्त का भाग ि। श्री बसवन्न तथा उनके समकालीनों के िाथों इसमें अत्यन्त पररवतनव आये। बासव तनजाम ररयासतों के गुलबग व(कनाटवक प्रान्त में) से साठ मील दूरू कल्यान के िासक, त्रबज्जाला (११५७-११६७) का प्रधानमन्त्री था।

बसवन्न का व्यजततत्व अत्यन्त आकषकव था। लोगों के ऊपर उनका अत्यन्त आश्चयजवनक प्रभाव था। उन्िोंनेएक आध्याजत्मक सममेलन ककया। तीन सौ वीर िैके सन्त एकत्रत्रत िुए। साठ महिला सन्त भी थीं। उस भव्य समारोि में सुववख्यात महिला सन्त अतका मिादेवी उपजस्थतत थीं। बसवन्न के िाथों में वीर िैववाद शलंगांयतवाद बन गया। कनाटवक के वीर िैवावलजमबयों का शलंगांयत मत एक ववशिष्ट मत ि। इसके सन्त रिनन िैं।

वीरिैववाद अथवा शलंगांयतवाद लक्ष्य अथवा भगवान् ्शिव की प्राजप्त का माग वदिातवा ि। भगवान् ्शिव, भगवान् ्सुब्रह्मण्यम्, ् ऋषभराज, सन्त शलंगंर, कुमार देवी, शिव प्रकाि - सभी ने इस दिनव शसद्धान्त की प्रांजल व्याख्या की ि। इस दिनव शसद्धान्त का मुख्य स्रोत वीरागम ि। इस मत को मानने वालों की संख्या कनाटवक में बिुत ि।

साधारण िैवमतावलमबी शिवशलंगं को डिब्बी में रखते िैं तथा पूजा के समय इसकी उपासना करते िैं। शलगायत एक छोटा-सा शिवशलंगं चादोंी अथवा सोनेकी डिब्बी में िाल कर, उसे ेचेन में वपरो कर गले में िाले ेरिते े ैं। शलंगं को दिे में धारण करनेसेभगवान् ्का ध्यान आता रिेगा और तनरन्तर स्मरण बनाये रखने ेमें सिायक िोगा।

वीर िैववाद में िजतत और शिव एक-समान िैं। िजतत सकक्रय ि। शिव मौन िष्टा ि। शिव अनन्त, स्वयं प्रकाि, िाश्वत, सवव्वयापक िैं। वे िाजन्त का सागर िैं। वे अत्यन्त वविाल मौन ि। शिव प्रत्येक वस्तु को प्रकाशित करते िैं। वे सव वसमपूण वऔर स्वतिः समपूण विैं। वे तनत्य-मुतत और पररिुद्ध िैं। समस्त ववश्व उस हदव्य इच्छा की िी अशभव्यजतत ि। वीर िैववाद दिनव में संसार की धारणा भ्रम न िो कर एक समपूण वलीला ि।

काश्मीर िैववाद

यि प्रततशभज्ञा पद्धतत के नाम से जाना जाता ि। काश्मीर िैव मत का आधार आगम िैं। प्रत्याशभज्ञान दिनव नाम से जाने जाने वाले आगमन्त काश्मीर में बिुत प्रशसद्ध िुए। सबके शलए इसके अथ वसुबोध करवाने के उद्देश्य से संस्कृत में चौबीस आगम काश्मीर की घाटी में िी शलखे गये थे। उत्तरी भारत में यि आगमन्त जैन धम व का प्रचार िोनेसे पूव विी उहदत िो गया था। कफर यि पजश्चम और पूव वमें फैल गया। पजश्चमी भारत में यि वीर मिेश्वर दिनव नाम से जाना गया तथा दक्षक्षण भारत में िुद्ध िैव दिनव किलाया।

ववश्व का एकमात्र सत्य शिव िैं। शिव अनन्त चैतन्य िै। वे स्वतन्त्र, िाश्वत, तनराकार, अद्ववतीय, सवव्वयापक िैं। शिव कता वभी िैं और कम वभी; वे भोग्य भी िैं और भोतता भी। चैतन्य में िी ववश्व ववद्यमान िै।

भगवान् ्अपनी इच्छा मात्र से िी सृजृष्ट रचना करते िैं। कम,व तनशमत्त कारण जैसे ेकक प्रकृतत, रूप व भ्रम इत्याहद उत्पन्न करने वाली माया की इस पद्धतत में मान्यता निीीं। ईश्वर स्वयं अपने को िी इस प्रकार प्रकट करता िै जैसे ेदपणव में पदाथ वप्रकट िोते िैं। वि अपनेरचे िुए पदाथों से उसी प्रकार प्रभाववत निीींिोता जैसे ेदपणव अपनेमें प्रततत्रबजमबत पदाथों की छाया सेप्रभाववत निीं िोता। वि अपनी िी आश्चयजवनक िजतत के द्वारा जीवात्माओं के रूप में प्रकट िोता िै। ईश्वर इस जगत् ्का आधार िै। उसकी सकक्रयता (स्पन्दन) समस्त भेद उत्पन्न करती िै।

शिव अपररवतनिील सत्य िैं। वे समस्त ववश्व का अन्ततनहवित मूल आधार िैं। उनकी िजतत के अनन्त रूप िैं। श्रचत्,् आनन्द, इच्छा, ज्ञान और कक्रया इसके मुख्य रूप िैं।

जितत श्रचत् ्रूप में काय वकरती िै, तब वि पूण विुद्ध अनुभव बन जाती िै जो शिव-तत्त्व रूप में जानी जाती िै। िजतत का आनन्द रूप काय वकरता िै, तो जीवन की उत्पवत्त िोती िै। यि िजतत-तत्त्व की दूसूरी अवस्था ै। तीसरी अवस्था आत्म-अशभव्यजतत की इच्छा िै। तब चौथी अवस्था आती िै। ईश्वर-तत्त्व अपनी िजतत तथा इच्छा से जगत् ्की सृजृष्ट करता िै। यि अपनी सत्ता के ज्ञान की चेतना की अवस्था िै। पाचाँवींअवस्था में ज्ञाता िै और ज्ञान का ववषय भी िै। अब कक्रया आरमभ िोती िै। यि िुद्ध ववद्या की अवस्था िै। इस पद्धतत में छत्तीस मुख्य तत्त्व िैं।

बन्धन का कारण अज्ञान िै। आत्मा समझता िै— म ैंसान्त (निावान्)् िाँ', 'म ैंदिे िाूँ।' यि भूल जाता िै कक यि शिव के समान िै और यि कक ये संसार पूणतवया असत्य और शिव से शभन्न िै।

प्रत्याशभज्ञान अथवा सत्य का बोध वास्तव में परम पद की प्राजप्त के शलए आवश्यक िै। जब आत्मा को यि बोध िो जाता िै कक वि परमात्मा िी िै, तब वि परमात्मा के साथ एकत्व के िाश्वत आनन्द में जस्थत िो जाता िै। जब द्वैत की भावना समाप्त िो जाती िै, तो मुतत आत्मा शिव में इस प्रकार लीन िो जाता िै जैसे ेजल में जल अथवा दूधू में दूधू।

वसुगुप्त (आठवींतिाब्दी ए. िी.) ने शिवसूत्र शलखा और उसे ेकालत्ता को पढ़ाया। सोमनाथ कृत 'शिवदृजष्ट' को ततरुमूलर की ततरुमजन्दरम् ्के समान माना जा सकता िै। वसु गुप्त की स्पन्द काररका, सोमनाथ की शिवदृजष्ट (९३० ए. िी.); अशभनव गुप्त की परमाथ वसार और प्रत्यशभज्ञान ववमशिनवी, ककमाराजा की शिवसूत्र ववमशिनवी इस समप्रदाय की कुछ प्रमुख कृततया ाँिैं।

वेशिव आगमों को तथा शसद्धान्त कृततयों को मूल आधार मानते ि ैं। वे िंकर के अद्वैत के आधार पर उनका नवीनीकरण करते ि ैं। सोमनाथ की शिवदृजष्ट, उत्पल की प्रत्यशभज्ञान सूत्र और अशभनव गुप्त की कृततया ॉँ अद्वैत को मान्यता देती ि ै।

अध्याय ८
भगवानशिवऔरउनकीलीलाए ॉँ

कैलास पवतव के अश्रधपतत िोनेसे भगवान् ्शिव का नाम 'श्रगरर' ि ै।
शिव 'त्र्यमबक' किलातेि ैं, तयोंकक उनके मस्तक पर तीसरा नेत्र ि ै, जो ज्ञान चक्षु ि ु।

'िर' िब्द 'हृ' धातु में 'अतत' प्रत्यय लगा कर (िरतत) बना ि ै; तयोंकक वे समस्त पापों को िर लेतेि ैं। 'िर' से अथ वि ै-वे, जो प्रलय के समय जगत् ्को स्वयं अपनेमें समा लेतेि ैं।

शिव अपने िाथों में परिुऔर मृगृ धारण ककये रिते ि ैं। अन्य दो िाथों के द्वारा वे वरद और अभय मुिा धारण ककये िोते ि ैं। यिाँमृगृ ब्रह्मा ि ैं। शिव अत्यन्त िजततवान् ्ि ैं। स्वयं ब्रह्मा भी उनके तनयन्त्रण में ि ैं।

त्रत्रपुरारी

भगवान् ्ने त्रत्रपुर असुरों का संिरि ककया। उन्र्िोंनेअसुरों केमाया द्वारा तनशमतव सोने, चादीँ व लिो के तीनों पुरों अथवा नगरों को ववध्वंस कर हदया। तीनों पुरों द्वारा सुरक्षक्षत असुरों ने ईश्वर में ववश्वास रखने ेवाले समस्त लोगों को भयभीत करना आरमभ कर हदया था। भगवान् ्शिव त्रत्रपुरारी किलाते िैं; तयोंकक उन्र्िोंनेअसुरों को तथा त्रत्रपुर नगरों को नष्ट कर हदया।

शिव-ज्योतत

एक हदन ब्रह्मा और ववष्णु ुमें परस्पर वववादिोगयाककिम दोनों में से बड़ा कौन िै। इन दोनों के दप वको चूणू व करने के शलए भगवान् ्शिव प्रकाि स्तमभ जैसे ेज्योततशलगिं के रूप में प्रकट िो गये। ब्रह्मा और ववष्णु ुने ज्योतत के आहद और अन्त को ढूाँढ़ने का अत्यन्त प्रयत्नककयाककन्तुवे सफल न िो सके।

;

नीलकण्ठ

जब समुि मन्थन ककया गया, तो उसमें सेएक तीव्र िलािल तनकला। उससे संसार को बचानेके शलए भगवान शिव ने उसका पान ककया। इससे उनका कण्ठ नील वण वका िो गया। अतः उनको नीलकण्ठ नाम से पुकारा जाता िै।

रावण और शिव

रावण भगवान शिव का बिुत भततथा। वि शिवआराधना केशलए प्रततहदन कैलास पवतव पर जाता था। यि उसे ेबिुत कष्टप्रद प्रतीत िोता था। अपनी इस प्रततहदन की कैलाि पवतव की यात्रा से बचनेके शलए उसने अपनेमन में कैलास पवतव को िी अपने तनवास स्थान पर ले जानेका सोचा। उसनेकैलास को ज्यों िी धकेलना आरमभ ककया, तो पवतव कााँपकााँपाया। शिव पत्नी पावतवी इससे भयभीत िो कर शिव से शलपट गयी। शिव ने अपने पावाँ के अंगुष्ठ सेरावण को थोड़ा-सा धकेला और उसे ेपाताल लोक में पिुाँचा हदया।

िरर और शिव

िरर प्रततहदन एक सिस्र कमल-पुष्पों सेशिव की अचनवा ककया करते ेथे। एक हदन एक पुष्प कम िो गया। उन्र्िोंने सिस्र की संख्या पूण वकरने के शलए स्वयं अपना कमल-नेत्र िी चढ़ा हदया। उनकी इस अगाध भजतत से प्रसन्न िो कर भगवान् ्शिव ने उर्न्िें सुदिनव चक्र हदया। यि विी सुदिनव चक्र िै जजसेववष्णु सदैव धारण ककये रिते िैं। यि चक्र भजतत का प्रतीक िै।

ब्रह्मा का वरदान

एक असुर ने ब्रह्मा की उपासना की और उनसेसमस्तववश्व को नष्ट कर सकने की िजतत प्राप्त करने का वरदान मागाँा । ब्रह्मा उसे यि वरदान देनेके शलए कुछ अतनच्छुक थे। वे थोड़ा-थोड़ा मान तो गये; ककन्तु उसे ेकुछ प्रतीक्षा करने के शलए किा। देवताओंने जब यि सुना , तो वे अत्यन्त भयभीत िो गये और शिव के पास जा कर सब-कुछ बताया। शिव ने सुना, नृतृय आरमभ कर हदया जजससे ेकक ब्रह्मा का ध्यान बटाँ जाये और वरदान देने में ववलमब िो जाये। इस प्रकार उन्िोंनेसंसारकी रक्षा की।

सुब्रह्मण्य का जन्म

तारकासुर ने समस्त देवताओं को स्वग वसे तनकाल हदया। देवता ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा ने किा –

"असुर को मेरे वरदान से िी यि िजतत प्राप्त िुई िै; अतिः म ैंइसका वध निींकर सकता। म ैंतुमिें उपाय बता देता

िूँ। भगवान् ्शिव के पास जाओ, वे योग समाश्रध में िैं। उन्िें यहद पावतवी से शमलने के शलए प्रेररत कर सको, तो उनसे ेएक अत्यन्त िजततिाली पुत्र उत्पन्न िोगा। विी इस असुर का संिार करेगा।"

तब इन्द्र ने कामदेव को उसकी पत्नी रतत और उसके सियोगी वसन्त के साथ भगवान् ्शिव के लोक कैलास पवतव पर जानेको किा। वे तीनों तत्काल कैलास पवतव की ओर चले। विााँवसन्त ऋतु आ गयी। यि देख कर सभी ऋवष आश्चयचवककत िो गये।. कामदेव ने वृकूष की ओट में तछप कर शिव पर बाण चलाया। इस समय पावतवी शिव की उपासना करते िुए उनके िाथों में पुष्प अवपतव कर रिी थी। उनके िाथ से शिव के िाथ का स्पिव िो गया। शिव को अचानक भावाततरेक के रोमांचं की अनुभूतत िुई और उनसे ेबीज स्खशलत िुआ। शिव आश्चयचवककत थेकक उनके योग-भंग िोनेका कारण तया िै। उन्िोंनेइधर-उधर दृजष्ट घुमायी, तो वृकूष की ओट में कामदेव को देखा। उन्िोंने अपना तृतीय नेत्र खोला। तभी अजग्न प्रज्वशलत िुई और उससे कामदेव जल कर भस्म िो गये।

शिव का स्खशलत बीज अजग्न में श्रगर गया, ककन्तु अजग्नदेव उसे ेसिन न कर सके। उन्िोंनेउसे ेगंगा में श्रगरा हदया। गंगा ने इसे ेसरकण्डों के वन में श्रगरा हदया जिााँसुब्रह्मण्य (िरजन्म, िरवण भव) का जन्म िुआ। सुब्रह्मण्य देवताओंके सेनापतत बने और उन्िोंनेब्रह्माके वचनानुसार तारकासुर का वध ककया।

भगवान शिव और दक्ष

दक्ष ववश्व के पूवजव ऋवषयों केयज्ञ में जातेिैंऔर विााँरुि जोउनसे ेपिले िी विा ाँउपजस्थत थे, के द्वारा सममातनत न िोने के कारण उनकी भत्सनवा करके विााँसे वापस आ जाते िैं। इसके प्रत्युत्तर में नन्दीश्वर दक्ष को तथा अन्य ब्राह्मणों को दुतुकारते िैं। और तब रुि उस यज्ञ भूशम को त्याग कर वापस चले जाते िैं।

दक्ष की पुत्री सती, जजसका नाम दक्षायनी भी िै, अपने वपता दक्ष के 'बृिस्पतत' यज्ञ में जानेके शलए शिव से अनुमतत मागाँती िैं। शिव उसे बताते िैं कक यि अत्यन्त अनुश्रचत िै।

अपनेप्रभु के समझाने पर भी सती दक्ष के यज्ञ में चली जाती िै। अपनेवपता द्वारा उपेक्षक्षत िोनेपर और यज्ञ में रुि का भाग न देख कर क्रोश्रधत िो वि अपनेपतत की मिानता का गुणगान तथा दक्ष की तनन्दा करती िै तथा योगाजग्न द्वारा स्वयं अपने िरीर को भस्म कर देती िै।

सती द्वारा िरीर त्याग के ववषय में सुन कर िंकर क्रोध में भर कर अपनी जटाओं से वीरभि को उत्पन्न कर दक्ष के ववनाि का कारण बनते िैं।

देवताओंसे दक्ष के ववनाि के ववषय में सुन कर ब्रह्मा रुि को िान्त करते िैंतथा इस प्रकार दक्ष व अन्य सबकी रक्षा करते िैं।

ब्रह्मा द्वारा की गयी स्तुतत से प्रसन्न िो कर शिव अन्य देवताओंसहित यज्ञ स्थल पर जाते िैं। दक्ष तथा अन्य सब पुनजीववत िोते िैं। यज्ञाजग्न से ववष्णु के प्रकट िोने पर दक्ष तथा अन्य सब उनकी स्तुतत करते िैं, प्रक्षालन समारोि की समाजप्त के पश्चात् ्समस्त देवता अपने-अपनेलोक में चले ेजातेिैं। मैत्रेय इस कथा के, पाववती के रूप में सती के जन्म की और स्कन्द की कथा सुननेके फल का वणवन करते िैं।

दक्षक्षणामूततव

कैलास पववत के रत्न जहटत भव्य भवन में वामांग में देवी मा ाँसहित भगवान शिव बैठै थे। उस समय देवी ने उनकी स्तुतत करते िुए प्राथवना की कक उनका दक्ष की पुत्री िोनेसे िुआ दक्षायनी नाम बदल दें। यि दक्ष शिव का अनादर करने के कारण तथा अपनेिी दप वके कारण शिव द्वारा मृत्यु को प्राप्त िुआ था। यि सुन कर शिव ने किा कक देवव, पववतराज जो कक पुत्री प्राजप्त के शलए कहठन तप कर रिा था, की पुत्री बन कर जन्म लें। उन्िोंनेयि भी किा कक वे स्वयं आ कर उनसे ेवववाि करेंगे। यि आदेि पा कर पाववती ने पववतराज की कन्या के रूप में जन्म शलया और पाचाँ वष वकी आयु से िी भगवान शिव की पत्नी िोनेके शलए कहठन तपस्या आरमभ कर दी।

देवी की अनुपजस्थतत में, जब भगवान् ्शिव एकाकी थे, तो ब्रह्मा के पुत्रों-सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार ने भगवान् ्शिव के दिनवाथ वआ कर उन्िेंप्रणाम ककया तथा अववद्या को दूरू करने तथा मोक्ष-प्राजप्त के माग वपर चलने की शिक्षा देनेके शलए भगवान् ्से प्राथवना की। उन्िोंनेबताया कक िास्त्रों का ववस्तृत अध्ययन कर लेने पर भी उनको अन्तिः िाजन्त की प्राजप्त निींिुई िै तथा उन्िेंमोक्ष-प्राजप्त के शलए अन्तिः रिस्य के ज्ञान की आवश्यकता िै।

ऋवषयों की इस प्राथवना को सुन कर भगवान् ्शिव ने परम गुरु दक्षक्षणामूतत वके रूप में मौन रि कर श्रचन्मय मुिा दिातेव िुए उन्िेंअन्तज्ञावन का उपदेि देना आरमभ ककया। ऋवषयों ने उनके दिायेव िुए माग वपर चल

कर ध्यान-समाश्रध द्वारा अवणनवीय असीम आनन्द की उच्च अवस्थाओं को प्राप्त कर शलया। इस प्रकार भगवान् ् शिव दक्षक्षणामूतत वके नाम सेजानेगये। भगवान् ्दक्षक्षणामूतत वका आिीवादव िम सब पर िो ! उनकी कृपा से आप सब िाश्वत िाजन्त और परम आनन्द की गिराइयों तक जाय ेंऔर परम आनन्द का उपभोग करें!

त्रत्रपुरसंिार

-

इसका वणनव मिाभारत के कण वपव वमें आता िै। प्राचीन काल में देव और दानवों के मध्य युद्ध िुआ। असुर इस युद्ध में पराजजत िुए। तारकासुर के तीनों पुत्रों ने देवताओं से बदला लेना चािा। उन्िोंने उग्र तप करके सृजृष्टकता व ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर शलया। इस वरदान के पररणामस्वरूप अब उन्िें केवल विी पराजजत कर सकता था जो एक िी बाण से उनके तीनों नगरों का ववध्वंस कर सकता िो।

उन्िोंनेतीन नगरों अथवा पुरों का तनमाणव ककया। एक स्वण वका स्वग वमें, दूसूरा चादीं का वायु में और तीसरा लोिे का पृथ्वी पर अब उन्िोंने देवताओं तथा ऋवषयों को त्रास देना आरमभ कर हदया। तब समस्त देवताओंने ब्रह्मा सेजा कर करुण पुकार की। तब ब्रह्मा ने उत्तर हदया कक केवल मिादेव िी, जजन्िोंने ववशिष्ट तप से योग व सांख्य का ज्ञान प्राप्त ककया िुआ िै, इन असुरों का संिार कर सकते िैं। सब देवता मिादेव के पास पिुँचे और उन्िें सवलवोकमय हदव्य रथ समवपतव ककया तथा उन्िें ऐसा धनुष-बाण भी हदया जजसके मितेजस्वी ववष्णु ुबाण तथा अजग्न उसकी नोक बने। उन्िोंनेतीनों पुरों की ओर बाण छोड़ने की प्राथनवा की। ब्रह्मा उस हदव्य रथ के सारश्रथ बने। मिादेव ने तीनों पुरों की ओर सन्धान करके बाण छोड़ा। पलक झपकते िी तीनों नगर नष्ट िो गये। तब समस्त देवताओं ने मिादेव का स्तवन ककया और स्वगलवोक को प्रस्थान ककया।

मिादेव ने देवताओं से किा था कक वे स्वयंअसुरों का संिार न कर सकेंगे; तयोंकक असुर बिुत जिततिाली िैं, ककन्तु वे अपना आधा बल देवताओं को दे देंगे ेतो देवता शमल कर उन्िें परास्त कर देंगे। ककन्तु देवताओंने किा कक वे मिादेव का आधा बल सिन न कर सकेंगे;े अतिः वे अपना आधा बल उन्िें दे देंगे,े स्वयं भगवान् ्शिव िी उन असुरो का वध करें। मिादेव इसे ेमान गये। वे समस्त देवताओंसे अश्रधक िजततिाली िुए; अतिः वे मिादेव किलाये।

भगवान् शिव द्वारा नाककरार को दण्ड और क्षमा

्

एक बार मदुरई के एक पाण्ड्य राजा को ऐसा आभास िुआ कक उसकी रानी के केिों में से एक स्वाभाववक प्रकार की सुगन्ध आती िै। उसके हृदय में एक िंका उत्पन्न िुई कक तया मानव के केिों में प्राकृततक सुगन्ध िो सकती िै अथवा इत्र और फूलों से िी सुगन्ध आती िै। अगले ेहदन वि संघम् ्(तशमल संस्था) गये, विााँएक सिस्र स्वण-वमुिाओं की थैली दी और किा कक जो भी कवव उसकी िंका का समाधान कर देगा, उसे ेस्वण-वमुिाओं का पाररतोवषक शमलेगा। अनेक कववयों ने कववताए ाँशलखीं; ककन्तु कोई भी राजा को सन्तुष्ट न कर सका।

मजन्दर में दारुमी नाम का एक अत्यन्त तनधनव ब्राह्मण था। उसनेभगवान शिव से मेरा एकमात्र प्राथनवा की—'"ि दयातनधान, म ैंबुित तनधनव िूाँ। म ैंअब वववाि करना चािता िूाँ। मुझे तनधनवता से मुतत कीजजए। दया करके यि स्वण वमुिाए ाँमुझे हदला दीजजए। सिारा आप िी िैं !" भगवान् ्शिव ने उसे ेएक कववता दी और किा - "इस कववता को संघम ले जाओ। तुम्िें स्वण वमुिाए ाँशमल जायगेी।'

राजा उस कववता को देखते िी प्रसन्न िो गया; तयोंकक उसकी समस्त िंकाओं का समाधान िो गया, ककन्तु संघम् ्कववयों ने उसेस्वीकार न ककया। उनमें से एक नाककरार नामक कवव ने किा कक इस कववता में एक त्रुहट िै। वि तनधनव पुजारी हृदय में अत्यन्त दुिःखी िुआ। वि वापस मजन्दर में लौट आया और भगवान् ्के समक्ष खड़ा िो कर किने लगा- "ि प्रभु! आपनेमुझेत्रुहटपूण वकववता तयों दी? आपको कोई भी भगवान् ्निींमानेगा, मुझे े इसी बात का अत्यश्रधक दुिःख िै।" कववता का अथ वइस प्रकार था - ' "ि सुन्दर पंखधाररणी मक्षक्षका, तुम पुष्प-पराग संग्रि करने में इतना समय लगाती िो! स्नेिवि निीं,ं प्रत्युत सत्य किो कक तया तुम ककसी ऐसे पुष्प को जानती िो जो सुन्दर दन्तावली वाली मयूररंगी सुन्दर बालों वाली वप्रयतमा राजकुमारी के बालों की सुगन्धयुतत िो?" सुगन्ध सेअश्रधक सुगंधयुतत िो।"

अब भगवान् ्शिव ने कवव का रूप धारण ककया और संघम् ्जा कर पूछने लगे—"ककस कवव को इस कववता में दोष प्रतीत िुआ िै?" नाककरार ने किा- "मनैंकिा िै कक इसमें दोष िै?" भगवान् ्ने पूछा- "तया दोष िै?" नाककरार ने किा—"िब्द-रचना में दोष निींिै, अथ वमें त्रुहट िै।" भगवान् ्ने किा—"मुझे ेबताओ, अथ वमें तया त्रुहट िै?"

नाककरार ने उत्तर हदया- "रानी के बालों में अपनी तनजी सुगन्ध निीं ंिै, फूलों के साथ िोनेसे िी उनसे े सुगन्ध आती िै।" भगवान् ्शिव ने किा- "तया पद्शमनी के केिों में भी फूलों के कारण िी सुगन्ध आती िै?" नाककरार ने किा—"िा।ाँ" भगवान् ्ने पूछा—"तया स्वश्रगकव अप्सराओं के केि से भी सुगन्ध पुष्पों के कारण से िै?" नाककरार ने उत्तर हदया- "िााँ, उनके केिों की सुगन्ध मन्दार पुष्पों के कारण िै।" भगवान् ्ने पूछा – "तया भगवान् ् शिव की वामांगी भगवती उमा के केिों की सुगन्ध भी फूलों के कारण िै?" नाककनार ने किा- "िााँ, त्रबलकुल ऐसा िी िै।"

भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र जरा-सा खोला। नाककरार ने किा- "म ैंइस तीसरे नेत्र से निींडरता। चािे तुम भगवान् ्शिव िी तयों न िोओ, चािे तुम अपने सारे िरीर में से िी आखेँ तयों न हदखानेलगो, कफर भी इस कववता में त्रुहट िै।" भगवान् ्शिव के तीसरे नेत्र की अजग्न नाककरार पर पड़ी—वि उसकी तीव्रता को झेल न सका। अतिः स्वयं को िान्त करनेके शलए तत्काल िी साथ के कमल-ताल में कूद गया।

तब समस्त कवव भगवान शिव के तनकट जा कर प्राथनवा करनेलगे— "ि प्रभु! नाककरार को क्षमा-दान दे दीजजए !" उनकी कृपा से उसके िरीर की अजग्न िान्त िुई। अपनी भूल के शलए पश्चात्ताप करते िुए वि क्षमा-याचना करने लगा – "मनैं भगवती उमा के केिों में भी दोष तनकाला, मुझे भगवान् ्के अततररतत अन्य कोई भी क्षमा निीं ं

कर सकता।" अत्यन्त प्रेम-ववह्वल िो कर वि स्तुतत करनेलगा। भगवान् ्शिव तालाब में जा कर उसे ेबािर तनकाल लाये।

तब नाककनार तथा अन्य कववयों ने स्वण वकी थैली दारुमी को दे दी।

गुरुकोपिचानें

भजतत का उदय उसी व्यजतत के हृदय में िोता िै जजसनेअपने पूव वजन्मों में फल की इच्छा से रहित िो कर, कतृत्वव के अशभमान और अिंता को त्याग कर िुभ कम वककये िों। भजतत से आत्मज्ञान का ववकास िोता िै और आत्मज्ञान से मोक्ष की प्राजप्त िोती िै !

प्राचीन काल में कशलंगं दिे में वीरशसन्धु ुनामक राजा राज्य करता था। उसने अपने पूव-वजन्म में कहठन तप और ध्यान तथा योग ककया था; ककन्तु उसे ेमोक्ष की प्राजप्त निींिुई थी। वि योग-भ्रष्ट बना; तयोंकक उसने अपनेराजा के इस अजन्तम जन्म में अवशिष्ट कमों के फल को भोगना था। अत: उसने राजा का पुत्र िो कर जन्म शलया और समय आनेपर कशलंगं का राजा बना। दस वष वतक उसनेिासन ककया ।

पूव वजन्म के धाशमकव संस्कारों तथा ईश्वर की कृपा के फलस्वरूप उसके हृदय में वववेक और वैराग्य उदय िुआ। वि मन में ववचार करने लगा — "म ैंअभी खाने-पीनेऔर सोनेके काम में लगा िुआ िूँ। इस दिे पर िासन करने वाले मेरे असंख्य पूवजव शमट्टी में शमल चुके िैं। इतना धन और राज्य के िोते िुए भी मेरे मन में िाजन्त निीं ंिै। मुझे ेगुरु धारण कर के, आत्म ज्ञान प्राप्त करके अमरत्व तथा परम आनन्द की जस्थतत तक पिुँचना चाहिए।"

वीरशसन्धु ुराजा ने समस्त पजण्तिों, संन्याशसयों, साधुओंऔर मिात्माओं को तनमन्त्रण भेजे। उसने तनमन्त्रण-पत्र में इस प्रकार शलखा- "म ैंउस परम गुरु को आधा राज्य दूँगा जो मुझे ेउश्रचत दीक्षा दे कर आत्मज्ञान करवा दे। यहद वि ऐसा कर सकने में असफल रिा, तो उसेकारागार में िलवा हदया जायेगा।'

अनेक पजण्ति और साधुराजा के पास आये। एक ने तारक मन्त्र हदया, अन्य ने पंचांक्षर हदया, तीसरे ने अष्टाक्षर हदया; ककन्तु कोई भी राजा का समाधान करने में सफल न िो सका। अतिः उसने सबको कारागार में िाल हदया। वि अपनेपूव-वजन्म में िी इन सब मन्त्रों से दीक्षक्षत िो चुका था।

गुरु की प्राजप्त न िोने के कारण राजा वीरशसन्धुअत्यन्त व्याकुल िो गया। भगवान् ्शिव ने एक साधारण कुली का रूप धारण ककया। वि अत्यन्त काले ेवण वके थेऔर उन्िोंनेजीण-िीण ववस्त्र पिनेिुए थे। वि राजा के समक्ष प्रकट िुए। राजा उनका स्वागत करने के शलए आगे ेबढ़ कर आया। भगवान की कृपा से वि जान गया कक यि कुली अन्य कोई निीं, स्वयं भगवान िी िैं। कुली ने राजा की ओर िाथ उठा कर रुकने ेका संकेत करते ेिुए किा—"रुको।" और स्वयं लोप िो गये। राजा समझ गया कक गुरु ने उसे ेमन और उसकी गतत को रोकने का आदिे हदया िै। राजा ने खड़े-खड़े िी आखेँ बन्द कीं ंऔर मन को ववषयों का श्रचन्तन करने से रोक हदया। उसनेमन

की समस्त वृवृत्तयों को तनयजन्त्रत कर शलया। यि सब उसके शलए सरल था; तयोंकक उसने पूव वजन्म में योग और ध्यान का अभ्यास ककया िुआ था। वि तनववकवल्प समाश्रध में चला गया और मूततवत् ्िो गया। उसनेआखोँ निीं ं खोलीं।

दरबार में मन्त्री घण्टों तक प्रतीक्षा करते ेरि; ककन्तुराजा वीरशसन्धु ुने आखोँ न खोलीं। तब मजन्त्रयों ने सोचा--"राजा समाश्रध में चला गया िै, न जाने अब कब वापस लौटे। राज- काय वअब स्वयंमिें िी देखने िोंगे।" उन्िोंनेराजा के िाथ सेमुहिका तनकाली। और राज-कायों में उसका प्रयोग आरमभ कर हदया।

राजा ने छि वष वके पश्चात् ्आखोँ खोलीं ंऔर मजन्त्रयों से पूछा—“मेरे गुरु किा ाँिैं ?" मजन्त्रयों ने उत्तर हदया—“िे माननीय मिराज ! गुरु ने श्रीमन्त को एक िब्द किा और तत्काल अन्तधानव िो गये। आप गत छि वषों से यिींपर मूततवत् ्खड़े िैं। िम आपकी अगूाँठी की सियता से राज-काय वचला रिे िैं। समस्त पत्रों में आपकी अंगूठी की िी मिोर िै।

राजा आश्चयचवककत रि गया। उसनेमन में सोचा - "छि वष वएक क्षण की भाताँत बीत गये! मुझे परम आनन्द की अनुभूतत िुई। इस परम आनन्द की अनुभूतत िोनेके पश्चात् ्मुझे अब िासन करने में कोई रुश्रच निीं रि गयी िै।" उसनेराजमिल को त्याग हदया और वन में जा कर समाश्रध में बैठै गया।

राजा के पूव वजन्म के योगाभ्यास सेउत्पन्न यौश्रगक संस्ंकारों ने उसे ेइस जन्म में परमानन्द की प्राजप्त में सियता की। जजन्िें इस जन्म में पयाप्वत भजतत और धाशमकव रुश्रच निीं िै, उन्िें जप, कीतनव, ध्यान और स्वाध्याय करना चाहिए। उन्िें सन्तों का संग करना चाहिए। इस प्रकार उनमें धाशमकव संस्कार ववकशसत िोंगे।े यि उनके अगले ेजन्म के शलए मूल्यवान् ्समपवत्त िोगी। अगले ेजन्म में वे अल्पायु में िी योगाभ्यास आरमभ कर देंगे।

यि किना कहठन िै कक गुरु अथवा भगवान् ्आपको दीक्षक्षत करने के शलए ककस रूप म ैंप्रकट िोंगे। वे कुष्ठरोगी के रूप में आ सकते िैं जैसे ेश्री िनुमान् ्जी नेककया, अथवा अछूत के रूप में आ सकते िैं जैसे ेभगवान् ् कृष्ण ने ककया, अथवा साइस के रूप में आ सकते िैं जैसेभगवान् ्शिव ने ककया। साधक को अत्यन्त ध्यान से और जागरूकता से पिचानना िोगा कक भगवान् ्कौन-कौन से ववशभन्न रूप धारण कर सकते िैं।

भगवान शिव का ववषपान करना

एक बार देवताओं और असुरों में अत्यन्त दीघकवाल तक भयानक युद्ध चला। असंख्य देवता और असुर इस युद्ध में मारे गये। देवताओं ने सोचा कक उन्िें अमृत पान करके अपना जीवन और अश्रधक दीघ वकरके कफर युद्ध और आगे ेचलाना चाहिए। इस इच्छा को ले कर वे ब्रह्मा के पास पिुाँचे। ब्रह्मा ने किा—“यि काय वम ैंनिीं ं

कर सकूाँगा। यि तो केवल ववष्णु भगवान िी कर सकतेिैं। तब ब्रमिा तथा अन्य सब देवता क्षीर सागर में नारायण भगवान् ्के पास पिुंचे।

भगवान् ्श्री िरर ने देवों और दानवों को मन्दराचल की मथानी तथा वासुकी नाग की िोरी की सिायता से समुि-मन्थन करने को किा। जब समुि मन्थन आरमभ िुआ, सवप्रवथम समुि में से िलािल ववष तनकला। उस भयानक ववष ने लोगों को जलाकर भस्म करना आरमभ कर हदया। देवताओं, दानवों और ऋवषयों में भगदड़ मच गयी। ववष्णु ुभगवान भी उस भयानक ववष को नष्ट न कर सके। उनका िरीर भी काला पड़ गया। वे देवताओंऔर ब्रह्मा सहित कैलास पवतव की ओर भागे। उन्िोंनेभगवान शिव को सारी घटना बतायी। तब भगवान् ्शिव ने सारे िलािल को एक बूदाँ में एकत्रत्रत करके िथेली पर रख कर तनगल शलया। तब ब्रह्मा और ववष्णु ुने उनसे ेप्राथनवा की कक इस ववष को वे उनके रक्षक के प्रतीक के रूप में अपने कण्ठ में धारण करके रखें। भगवान् ्शिव ने ऐसा िी ककया। उस ववष के प्रभाव से उनका कण्ठ नील वण वका िो गया और तभी से वे 'नीलकण्ठ' या 'कालकण्ठ मूतत'व किलाते िैं। तब भगवान् ्शिव ने किा- यहद अब तुम समुि मन्थन करोगे, े तो अमृत तथा अन्य अनेक वस्तुओं की प्राजप्त िोगी।" सभी देवताओं ने अमृत पान ककया और आनन्दमग्न िो गये। T

भगवान् ्शिव का वृषभ को वािन बनाना

चतुयुगव का दो सिस्र गुणा ब्रह्मा का एक हदन िोता िै। ऐसेतीस हदनों का उनका एक मास िोता िै। ऐसे द्वादि मिीनों का उनका एक वष वऔर ऐसेिैत वषों की ब्रह्मा की पूण वआयु िोती िै। ब्रह्मा की पूण वआयु काल के बराबर ववष्णु भगवान् ्का एक हदन िोता िै और ऐसेहदनों के ित वषों के पश्चात् ्ववष्णु भगवान् ्भी परब्रह्म में लीन िो जायगें। समस्त अण्िज नष्ट िो जायगें। प्रचण्ि वायु के मिावेग से सप्त सागर मिाप्रलय का रूप धारण कर समस्त जगत् ्को ढक लेंगे। तब केवल भगवान् ्शिव रिेंगे। तब वे अपने तृतीय नेत्र की अजग्न से सब कुछ भस्म कर देंगे ेऔर कफर नृतूय करेंगे े।

एक बार धम वदेवता ने मन में सोचा - "मुझे ेमोक्ष कैसे ेप्राप्त िो सकता िै? यहद भगवान् ्शिव के पास जाऊाँ, तभी मुझे मोक्ष प्राप्त िो सकता िै।" उसनेबैल का रूप धारण ककया और भगवान् ्शिव के पास जा कर बोला- "िे प्रभु! कृपया मुझे अपने वािन के शलए स्वीकार करें और मेरी रक्षा करें।"

भगवान शिव ने धमरवाज की ववनम्र प्राथनवा को स्वीकार करते िुए किा—"कृतयुग में चार चरणों से, त्रेता में तीन चरणों से, द्वापर में दो चरणों से तथा कशलयुग में एक से धम वका पालन करो। मेरे आिीवादव से तुम समपूण ववैभव तथा िजततयों से तुम सदैव मेरा वािन रिोगे। तुम मेरे साथ एक िो कर रिोगे।"

जब भगवान् ्शिव ने त्रत्रपुर-संिार ककया, तब ववष्णुभगवान ने वृषभ रूप में उनकी सिायता की ।

भगवान् ्शिव द्वारा िि पर गंगा को धारण करना

एक बार कैलास पवतव पर पावतवी ने अपने िाथों से भगवान शिव के नेत्रों को बन्द कर हदया। उसी क्षण सूय,व चन्मिा और अजग्न का प्रकिा लुप्त िो गया। समस्त जगत् ्में भयंकर ववध्वंस िोनेलगा। दीघ वकाल तक सब अन्धकार में िूब गये। भगवान् ्शिव ने ज्योंिी तीसरा नेत्र जरा-सा खोला कक सूय,व चन्मिा तथा अजग्न ने पुन: चमकना आरमभ " कर हदया और अन्धकार समाप्त िो गया।

पावतवी भयभीत िो गयी। उसनेअपनेिाथ िटाये और उँगशलयों से पसीना टपकने लगा। यि पसीना असंख्य िाखाओंवाली दस गंगाओं के रूप में बिनेलगा। इन नहदयों से ववश्व में और भी कुिराम मचने लगा। तब ब्रह्मा, ववष्णु और इन्ि भगवान शिव के पास आये और इस मिाववपवत्त को रोकने की प्राथनवा की।

भगवान् ्शिव दयािव िो गये और उन्िोंनेसमपूण वजल को अपनी जटाओं ्के एक बाल में समाहित कर शलया। तब ब्रह्मा, ववष्णु और इन्िने उस जल में से थोड़ा-सा जल अपनी सृजष्ट के शलए मागाँ। भगवान् ्शिव ने उन्िें जल हदया। वि जल वैकुण्ठ में ववरजा नदी, सत्यलोक में मनसा तीथ वऔर इन्िलोक में देवगंगा बनी। भागीरथ राजा सगर के साठ सिस्र पुत्रों कीरक्षाथवब्रह्मलोकसे उसी गंगा को पृथ्वीपर लाये।

भगवान शिव की शभक्षा मागाँने ्की लीला

दारुका वन के ऋवषयों ने सोचा कक भगवानशिव कीभजतत औरपूजाकरने का कोई लाभ निीं और वे यज्ञों के द्वारा िी मोक्ष प्राप्त कर सकते िैं। अतिः उन्िोंने भगवान की उपासना छोड़ कर बड़ेउत्सािा से यज्ञाहद करना आरमभ कर हदया।

तब भगवान शिव ने ववष्णुभगवान से किा- "तुम मोहिनी रूप धारण करके ऋवषयों के तनवास स्थान दारुका वन में चलेजाओ। उनके मन में अब मेरे प्रतत कोई श्रद्धा निीं। वे अनुश्रचत माग वपर जा रिे िैं। िमें उनको शिक्षा देनी चाहिए। उनको उते्तेजजत करके मोहित कर दो, उनके व्रत को भंग कर दो।" उन्िोंनेस्वयं भी शभक्षुक का रूप धारण कर शलया।

ववष्णु ुभगवान् ्ने मोहिनी रूप में दारुका वन में प्रविे ककया। समस्त ऋवष बुद्श्रध और वववेकिीजतत खो बैठे और कामोते्तेजजत िो कर मोहिनी का अनुसरण करनेलगे।

भगवान् ्शिव ऋवष-पजत्नयों की पणकुवहटयों में प्रविे करके अतत सुन्दर श्रुततयाँ और स्तोत्र गाते िुए शभक्षुक के रूप में घूमने लगे। ऋवष पजत्नया ाँकामातुर िो उनका अनुसरण करने लगीं। वे उन्िें वववशभन्न ढंगों से प्रसन्न करने का प्रयत्न करने लगीं। भगवान् ्शिव असंख्य रूप धारण करके प्रत्येक स्त्री के मन में बस गये। समस्त ऋवष-पजत्नयों ने मानशसक समभोग ककया। प्रातिःकाल वे अठारि सिस्र जटा कमण्िलु-धारी ऋवषयों

सहित उपजस्थत िुईं। उन सभी ने भगवान् ्शिव की स्तुतत की। भगवान् ्शिव ने उन्िें आिीवादव दे कर वन में तप करने को किा। ऋवषयों ने ऐसा िी ककया।

ऋवषयों ने अपनी पजत्नयों की यि दिा देखी और किा- "िम मायावी मोहिनी द्वारा मुग्ध िो गये। उस शभक्षुक ने िमारी पजत्नयों के सतीत्व को भंग कर हदया। िे प्रभु! काम-वासना ककतनी िजततिाली िै? माया बड़ी ववश्रचत्र िै !"

भगवानशिवकात्रत्रिूलऔरमृगृइत्याहदधारणकरना

दारुका वन के ऋवषयों ने भगवान शिव को नष्ट करने के शलए यज्ञ ककया। यज्ञाजग्न में से एक भयानक शसंि तनकला। उन्िोंने शसंि को भगवान शिव को मारने की आज्ञा दी। भगवान ने शसंि को मार हदया और उसके चम वको कमर में लपेट शलया। तब उन्िोंने भगवान शिव को मारने के शलए त्रत्रिूल बनाया। भगवान ने उसे ेअपने अस्त्र के रूप में धारण कर शलया। कफर उन्िोंनेभगवान शिव को मारने के उद्देश्य से तीखे सींगों वाले ेमृगृ को बनाया। भगवान ने उसे ेअपने बाय ेंिाथ में धारण कर शलया।

उसके पश्चात् ्उन्िोंने असंख्य ववषैलेकाले ेसप वबनाये जजनसे ेभगवान शिव को समाप्त कर सकें। भगवान ने उन्िें आभूषण की भातााँत धारण कर शलया। कफर उन्िोंनेअसंख्य भूत गणों का भगवान शिव को मारने के उद्देश्य से तनमाणव ककया। भगवान ने उन्िें अपनी सेना के रूप में रख शलया। तब उन्िोंने भगवान् ्को मारने के शलए िमरू बनाया। भगवान् ्ने उसे ेभी अपनेिाथ में ले शलया। कफर उन्िोंनेमुयलक असुर बनाया। असुर मुयलक यज्ञातन ले कर भगवान् ्को मारनेके शलए चल पड़ा। भगवान् ्शिव ने अजग्न को मलु नाम से िाथ में शलया और मुयलकासुर को पैर के नीचे दबा शलया।

भगवान् शि़व़् की वामांग ़ी उमा

संिार काय वसमाप्त िो जानेके पश्चात् ्भगवान् ्शिव की कृपा से प्रकट िुए ब्रह्मा जी ने सृजृष्ट की पुनरवचना करने की सोची। उन्िोंनेसनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार संरचना की । ककन्तु उन्िोंनेगृिस्थ धम वमें प्रवेि निींककया, वे ज्ञानी िो कर योगी िो गये।

ब्रह्मा जी वैकुण्ठ में जा कर ववष्णु ुभगवान् ्से किने लगे– "िे प्रभो। म ैंसृजृष्ट की रचना को आगे ेबढ़ाने में सफल निीं ंिुआ। सनक, सनन्दन आहद योगी िो गये। वेगृिस्थ बनना निींचािते। ववष्णु भगवान् ्ने किा- "यि मेरी िजतत में निीं। आओ, िम कैलासवासी भगवान् ्शिव के पास चलें। "

ब्रह्मा और ववष्णु ुभगवान् ्शिव के दिनव करके बोले— "िे देवों के देव मिादेव! चारों कुमारों के योगी िो जानेके कारण ब्रह्मा की सृजृष्ट का क्रम बन्द िो गया िै। कृपया उन्िें पुनिः सृजृष्ट-संरचना का आिीवादव दें।" भगवान् ्शिव ने अपनेवक्ष के वाम भाग की ओर दृजष्टपात ककया। भगवान् ्के वाम भाग से उमा का उद्भव िो

गया। भगवान् ्शिव ने उन दोनों से कि—“सृजृष्ट-रचना में अब कुछ कहठनाई निीं ि, अब यि तनबाधव चलती रिगी।" तब ब्रह्मा और ववष्णु ुअपने-अपनेतनवास स्थान को चले ेगये। तब भगवान् ्शिव की कृपा से ब्रह्मा जी सृजृष्ट चलाने लगे। पुरुष और जस्त्रया ाँपरस्पर सुख-भोग करते िुए सन्तान उत्पन्न करके सृजृष्ट बढ़ाने लगे। यि समपूण वप्रकट जगत् ्िजततमय ि। भगवान् ्शिव प्रकृतत के कक्रयाकलाप के मूक दिकव िैं।

भगवान् ्शिव का गज- - चम वधारण करना

प्राचीन काल में एक बार गजासुर ने अत्यन्त कहठन तप ककया। ब्रह्मा उसके समक्ष प्रकट िुए और बोले— “ि गजासुर! म ैंतुमिारे तप सेअत्यन्त प्रसन्न िूाँ। तुमिें जो अभीष्ट िो, मागाँ लो!

गजासुर ने कि- “ि प्रभो! मुझे ेकभी न समाप्त िोनेवाला धन और बल दीजजए।'

ब्रह्मा ने कि-' "मनैं तुमिें सब कुछ दे हदया ि; ककन्तु यहद तुम भगवान् ्शिव से वैर-भाव करके युद्ध करोगे,े तो तुमिारा वरदान समाप्त िो जायेगा।" इतना कि कर ब्रह्मा जी अन्तधानव िो गये।

तब गजासुर ने हदजग्वजय की और देवताओंतथा इन्िको भी पराजजत कर हदया। वि ऋवषयों और मुतनयों को भी पीडड़त करने लगा। वे वाराणसी में किी ववश्वनाथ के चरणों में श्रगर कर प्राथनवा करने लगे—“गजासुर िमें मारने की चेष्टा कर रि ि । िमारी रक्षा करें। ि प्रभो! आपके शसवा िमारा कोई सिारा निीं।' गजासुर ने भगवान् ्ववश्वनाथ पर भी आक्रमण कर हदया। भगवान् ्ने गजासुर का वध कर हदया। उसके चम वको उधेड़ हदया और उसे ेवस्त्र रूप में धारण कर शलया। तब देवता और ऋवषयों ने प्रसन्न िो कर भगवान् ्की स्तुतत की।

भगवान् शिव लकड़िारे के रूप में

्

पाण्ड्या राज्य का राजा वरगुना पाजण्यिान था। उसकी राजधानी मदुरै थी। वि इन्िसदृि था। वीणावादक यमानाथन उत्तरी भारत सेउसके दरबार में आया। उसनेवीणा पर रोमांचक राग बजाये। राजा ने उसके संगीत की अत्यन्त प्रिंसा की, उसे ेबिुमूल्य उपिार हदये और उसे ेसुन्दर एकान्त भवन में ठिराया। यमानाथन अपनेसंगीत की ववद्वत्ता के अशभमान में फूल गया।

राजा वरगुना पाजण्यिान समझ गया कक यमानाथन को अपनी संगीत-ववद्या का अशभमान िो गया ि। उसनेअपने दरबारी संगीतकार भानभि को बुलाया और कि- “तया तुम नये संगीतकार यमानाथन को पराजजत कर सकोगे े?" भानभि ने उत्तर हदया—“आपकी कृपा और मदुरै के भगवान् ्सोमसुन्दर के आिीवादव से अवश्य िी म ैंउसे ेपराजजत कर सकता िूाँ।” राजा ने कि- "ठीक ि, कल आ कर अपना संगीत का ज्ञान प्रदशितव करो।"

यमानाथन के शिष्य मदुरै की सभी वीश्रथयों में वीणा बजाते िुए तथा अत्यन्त उत्सिा से अपनेसंगीत-ववद्या के ज्ञान का प्रचार करते िुए घूमनेलगे। भानभि इन सबको सुन कर मनिी-मन सोचने ेलगा- "यि शिष्य संगीत और वीणा वादन में अत्यन्त तनपुण िैं। यहद शिष्य िी इतनेववद्वान् ्िैं, तो इनका गुरु ककतना गौरविाली और मिान् ्िोगा ! म ैंइस संगीताचाय वसेकैसे ेववजयी िो सकता िूँ?" तब वि भगवान् ्शिव से प्राथनवा करने लगा- “दया करके यमानाथन को पराजजत करने में आप मेरी सिायता करें। मुझे आपका कृपापूण वआिीवादव चाहिए।"

तब भगवान् ्ने एक लकड़िारे का रूप धारण ककया जो िरीर पर चीथड़ेऔर फटे जूते पिनेिुए था। उसके एक िाथ में वीणा और शसर पर ईंधन का गट्ठर था। जिाँयमानाथन ठिरा िुआ था, वि विाँपिुँचा और बरामदे में बैठ गया। उसने वीणा तनकाल कर अत्यश्रधक सुन्दर ढंग से बजाना और उसके साथ-साथ मधुर ढंग से गाना आरमभ कर हदया।

ऐसा अद्भुत संगीत सुन कर यमानाथन आश्चयचवककत रि गया। उसनेबािर आ कर लकड़ी बेचनेवाले से किा—“लकड़ी बेचनेवाले, तुम कौन िो?" उसनेउत्तर हदया—"म ैंवरगुना पाण्ड्या के दरबारी कवव भानभि का सेवक और उनके शिष्यों में सेएक िूँ। उनके बिुत से शिष्य िैं। उन्िोंनेकिा िै कक बूढ़ा िोनेके कारण म ैंअब गाने के योग्य निींरिा िूँ।"

यमानाथन ने उसेपुनिः गाने के शलए प्राथनवा की। उसनेपुनिः सतारी राग गा कर सुनाया जजससे े यमानाथन का हृदय िववत िो गया। लकड़िारे का रूप धरने वाले भगवान् ्शिव अपने लकडड़यों के गट्ठर सहित अन्तधानव िो गये।

यमानाथन मनिी-मन सोचने लगा- "यि सतारी राग मनैं तो आज तक सुना भी निीं। यि अवश्य िी देव राग िै। जब यि बूढ़ा गायक इस राग को इतनेसुन्दर ढंग से गा सकता िै, तो इसका गुरु ककतना मिान् ्िोगा। अवश्य िी उसे ेस्वयं भगवान् ्ने िी यि राग शसखाया िोगा। म ैंभानभि के सममुख खड़ा भी निींिो सकता। मुझे यिाँसे तत्काल िी चले ेजाना चाहिए।" यमानाथन का हृदय भय और लज्जा से भर गया। वि अपना सारा सामान छोड़ कर अधरवात्रत्र में िी अपने शिष्यों को ले कर चला गया।

भगवान् ्सोमसुन्दर ने भानभि को स्वप्न में दिनव हदये और किा - "भयभीत मत िोओ। मनैंलकड़िारे का रूप बनाया और जिा ाँयमानाथन रिता था, विाँबैठ कर वीणा बजायी। वि आश्चयचवककत िो गया और आधी रात को िी भाग गया। अब तुम तनजश्चन्त िो जाओ।"

भानभि ने प्रातिः उठ कर मदुरै मजन्दर में जा कर भगवान् ्सोमसुन्दर की उपासना की। कफर वि वरगुना पाजण्ड्यन के दरबार में गया। राजा ने यमानाथन को बुलानेके शलए सेवक भेजे। सेवक ने सब जगि ढूाँढ़ा, ककन्तु नया संगीतज्ञ किीं ंन शमला। यमानाथन के पड़ोशसयों ने किा- "एक लकड़िारा आया और उसनेगाना सुनाया। नया संगीतज्ञ आधी रात को यि स्थान छोड़ कर चला गया। िमें तो इतना िी पता िै।"

सेवक ने सारी बात राजा को बतायी। राजा ने भानभि से कि- "बताओ, तुमने यिााँमेरे पास से जा कर तया ककया?" भानभि ने कि- "ि मिाराज! मनैंघर जा कर भगवान् ्सोमसुन्दर से आिीवादव देनेके शलए प्राथनवा की। उन्िोंनेमुझे ेस्वप्न में दिनव दे कर कि कक 'मनैं लकड़िारे का रूप धर कर यमानाथन के समक्ष सतारी राग गाया और उसे ेभगा हदया।' म ैंएक दम जग गया। यि सारी घटना उस हदन घटी।"

वरगुना पाजण्यिान समझ गया कक यि सब भगवान् ्शिव की लीला थी। उसनेभि से कि- "वे भगवान् ्जजनके ब्रह्मा तथा अन्य देवता सेवक िैं, वे तुमिारे सेवेक बने और तुमिारी सिायता की। िम सब तुमिारे सेवक समान िैं। म ैंतुमिारा दास िूाँ। भववष्य में सदैव भगवान् ्सोमसुन्दर के भजन गाना।"

भानभि अत्यन्त आनजन्दत िुआ। वि सदा के शलए भगवान् ्सोमसुन्दर का भतत िो गया।

भगवान् शि़व़् की पच्चीस लीलाएाँ

भगवान् ्शिव की तनमनांककत पच्चीस लीलाए,ाँ जजनके शलए वे प्रकट िुए, इस प्रकार िैं:

१. मस्तक पर चन्ि धारण करना, २. उमा देवी के संग रिना, ३. वृषभ की सवारी करना, ४. काली के संगं ताण्डव नृतृय करना, ५. पावतवी के साथ वववाि, ६. शभक्षुकु बनना, ७. मन्मथ (कामदेव) दिन, ८. यमराज पर ववजय, ९. त्रत्रपुर-संिार, १०. जलन्धर असुर का वध, ११. गजासुर वध, १२. वीरभि अवतरण, १३. िररिर, १४. अधनवारीश्वर, १५. ककरात-रूप धारण, १६. कंकाल रूप धारण, १७. चन्दीश्वर को वरदान, १८. ववष पान करना, १९. ववष्णु ु भगवान् ्को चक्र प्रदान, २०. बाधा िरण, २१. उमा को पुत्रों की प्राजप्त, २२. एकपादरुिावतरण, २३. सुखासन में ववराजना २४. दक्षक्षणामूतत वअवतरण, और २५. शलंगावतरण ।

अध्याय ९
शिवयोगसाधना

पंचाक्षरकारिस्य

पंचाक्षर मिामन्त्र ि जो पाचाँ अक्षरोंनमिः शिवायसे शमलकर बना िै। मन्त्र वि िोता िै, जो उसके जपने और उस पर श्रचन्तन-मनन करनेवाले की बाधाओं और उसके कष्टों को दूरू करता ि तथा उस पर परमानन्द और अमरत्व की वृजृष्ट करता िै। सात करोड़ मन्त्रों में से पंचाक्षर सवोपरर मन्त्र िै। यजुवेद में सात स्कन्ध िै। इसके मध्य के स्कन्ध के त्रबलकुल बीच में रुिाध्यायी िै। इस रुिाध्यायी में एक सिस्र रुि मन्त्र िै। इन एक सिस्र रुि मन्त्रों के मध्य में नमिः शिवाय अथवा पंचाक्षर मन्त्र दीजप्तमान िो रिा िै।

यजुवेद वेदे पुरुष परमेश्वर का िीष िै। इसके मध्य में जस्थत रुिम् ्इसका मुख ि, पंचाक्षर इनकी आखाँ ि, शिव जो कक नमिः शिवाय के मध्य में ि, आखाँ की पुतली िैं । जो भी इस पंचाक्षर का जप करता ि, वि जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाता ि और िाश्वत आनन्द प्राप्त करता िै। यि वेदों की उद्घोषणा िै। यि पंचाक्षर भगवान् ्की दि िै। यि भगवान् ्शिव का तनवास स्थान िै। यहद आप 'नमिः शिवाय' के साथ प्रारमभ में ॐ भी लगा देते िैं, तो यि षिाक्षर मन्त्र बन जाता िै। 'ॐ नमो मिादेवाय' अष्टाक्षर मन्त्र िै।

पंचाक्षर छि प्रकार का ि- (१) स्थूल पंचाक्षर (नमिः शिवाय), (२) सूक्ष्म पंचाक्षर (शिवाय नमिः), (३) कारण पंचाक्षर (शिवाय शिव), (४) मिाकारण पंचाक्षर (शिवाय), (५) मिामनु अथवा मुजतत पंचाक्षर (शि)।

'नमिः' का अथ वै – साष्टांग प्रखणपात 'शिवाय नमिः' का अथ वै- भगवान् ्शिव को साष्टांग प्रणाम । दि-दृजष्ट से जीव भगवान् ्शिव का दास िै। 'नमिः' जीवात्मा का पररचायक िै। 'शिव' परमात्मा का द्योतक िै। 'आय' जीवात्मा के परमात्मा के साथ एकत्व का द्योतक िै। अतिः 'शिवाय नमिः' उसी प्रकार मिावातय ि जैसे े'तत् ्त्वम् ्अशस ि जो जीवात्मा और परमात्मा की एकता का द्योतक िै।

भगवान् ्रूपी धान का ॐ बाह्य रूप (तछलका) ि और पंचाक्षर भीतरी भाग (चावल) िै। प्रणव और पंचाक्षर एक िी िैं। पाचाँ अक्षर भगवान् ्के पाचाँ कृत्यों—सृजृष्ट, जस्थतत, संिार, ततरोधान और अनुग्रि के पररचायक िैं। यि 'पाचाँ मिाभूतों' और उनके शमश्रण सेरश्रचत समस्त सृजृष्ट के भी द्योतक िैं। 'न' ततरोधान का सूचक ि; 'मिः' मल अथवा अिुद्श्रध का, 'शि' भगवान् ्'शिव' का, 'वा' िजतत का और 'य' जीवात्मा का द्योतक िै।

स्नान करें, अथवा अपना मुँह, हाथ और पैर धो लें। भस्म और रुद्राक्ष माला धारण कर लें। उत्तर अथवा पूर्व दिशा की ओर मुख करके, शान्त एकान्त स्थान में पद्मासन अथवा सुखासन में बैठ जायें। मौन रहते हुए पंचाक्षर जप करें और भगवान् शिव पर ध्यान केन्द्रित करें। भगवान् के स्वरूप को हृदय में अथवा त्रिकुटी के बीच स्थित करें।

यदि आप नियमित रूप से ध्यान का अभ्यास करेंगे, तो आपका हृदय शुद्ध हो जायेगा। समस्त पाप और संस्कार पूर्णतया भस्मीभूत हो जायगें। आप शिव-योग-निष्ठा अथवा निर्विकल्प समाधि प्राप्त करेंगे। आपको महिमामय शिव-पद अथवा महिमामयी शिव-गति की प्राप्ति होगी और आप भगवान् शिव के साथ एक हो जायगें। आप शिवानन्द का शाश्वत आनन्द भोगेंगे तथा अमरत्व प्राप्त करेंगे। भगवान् शिव आप सब पर कृपा करें!

भगवान् शिव पर ध्यान

सगुण ध्यान: सगुण ध्यान साकार रूप पर किया जाता है। धनुर्धर प्रारम्भ में किसी बड़ी स्थूल वस्तु पर लक्ष्य साधता है। फिर वह मध्यम आकार की वस्तु को लेता है। अन्ततः वह अत्यन्त छोटी और सूक्ष्म वस्तुओं को लक्ष्य बनाता है। इसी प्रकार, • व्यक्ति को प्रारम्भ में सगुण साकार पर ध्यान करना चाहिए और जब मन भली प्रकार अभ्यस्त हो कर सध जाये, तो वह निर्गुण निराकार का ध्यान कर सकता है। सगुण ध्यान, स्थूल वस्तु पर किया जाता है। सगुण ध्यान भक्त साधक को विशेषतया रुचिकर लगता है, वह अपने इष्टदेव के विशेष रूप को निरन्तर देखते रहने में आनन्द प्राप्त करता है। सगुण उपासना विक्षेप को दूर करती है। तीन से छह मास तक तक भगवान् शिव के चित्र पर त्राटक का अभ्यास करें।

अपनेइष्ट की मूर्ति के मानसिक चित्र पर आधे घण्टे से दो घण्टे तक त्रिकुटी (भ्रूमध्य स्थान, माथेपर) में ध्यान करें। देखें और अनुभव करें कि विश्व की प्रत्येक वस्तु में भगवान् विद्यमान हैं। ध्यान के साथ-साथ अपने इष्ट मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय का मानसिक जप करते रहें; इष्टदेव के गुणों——यथा उनकी सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता का चिन्तन करें। अनुभव करें कि आपके प्रभु की ओर से सात्त्विक गुण आपकी ओर प्रवाहित हो रहे हैं। अनुभूति करें कि आपमें भी ये सात्त्विक गुण आ गये हैं। यह सात्त्विक शुद्ध भावना है। एक या दो वर्षों में आपको अपनेइष्ट के दर्शन प्राप्त होंगे, यदि आप अपनी साधना गम्भीरता से करेंगे तो ! इस पद्धति का अनुसरण करें। यह एकाग्रता की वृद्धि में सहायक होगी। भगवान् शिव की मूर्ति अथवा चित्र के अंग-प्रत्यंगों पर अपने मन को घुमायें और ध्यान लगायें। अपनेसामान्य आसन में बैठें। उनका जप करें और उनके चित्र की ओर एकटक निहारते हुए उनके गुणों यथा आनन्द, प्रकाश, प्रेम इत्यादि का चिन्तन करें। फिर उन्हें अपनेहृदय कमल पर अथवा दोनों भौंहों के मध्य (भृकुटी) स्थान में प्रदीप्त प्रकाश के मध्य में स्थित कर लें। अब मानसिक दृष्टि से उनके चरण कमलों को निहारते हुए अत्यन्त श्रद्धापूर्वक प्रणाम करें। मन में उनकी गजचर्मधारी देह को देखें, फिर उनके वक्ष को सुशोभित करती हुई रुद्राक्ष की माला, नील वर्ण-कण्ठ, शान्त मुख-मण्डल, गहन ध्यान-समाधि से बना हुआ भव्य प्रभा मण्डल, अर्धमुंदी ध्यान-मग्न आखेँ और मस्तक के मध्य में अद्भुत तृतीय नेत्र

पर अपने मन को ले जाय।ें इसके पश्चात् ्मन में उनकी जटाओंका, अध वचन्मिा का और जटाओं ंमें से तनकलती वेगवती पावन गंगा का ध्यान करें। पुनिः मन को क्रमिः उनके एक ाथ के त्रत्रिूल, दूसूरे के िमरू पर घुमाते िुए रीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग पर तब तक घुमाते जायें, जब तक समस्त रूप-आकार को भली-भाताँत न देख लें। तब अपनेमन को उनके मुख मण्लि अथवा चरणों में एकाग्र करके जस्थर कर दें। इस सारी प्रकक्रया का बारमबार पुनरावतनव करते ेजाय।ें इस प्रकार तनरन्तर अभ्यास करते ेरिने से आप अन्ततिः ध्यान में जस्थत ो जायगें ेऔर भगवान् ्शिव के साथ समपकव स्थावपत कर लेंगे।

ननगुणध ध्यान : यि तनगुणव ध्यान भगवान् ्शिव का परब्रह्म स्वरूप में, उनके सवव्वयापक अव्यतत रूप पर ध्यान ि। इस प्रकार के ध्यान में भगवान् ्शिव को परम ब्रह्म के रूप में देखते िुए उनके तनराकार, तनगुणव, सजच्चदानन्द, व्यापक आत्मन्,् तनत्यिुद्ध, शसद्ध, बुद्ध, मुतत, सदामुतत ब्रह्म स्वरूप का ध्यान करें, उनके ुद्धि चैतन्य के असीम सागर के स्वरूप का ध्यान करें। कफर स्वयं का शिव के इस सवातवीत स्वरूप के साथ एकत्व स्थावपत करें। अनुभव करें कक आप चैतन्य, अखण्,ि पररपूण वएकरस, ान्त और अपररवतनवील सत्ता ि। आपका प्रत्येक अणु, प्रत्येक परमाणु,ु प्रत्येक स्नायु, प्रत्येक शिरा इन्िविचारों में िजतताली रूप में स्पजन्दत िना चाहिए। केवल मुख सी 'शिवोऽमि्'् का उच्चारण करते ेजानेसे इतना प्रभाव निीगा। यि तो हृदय, मजस्तष्क और आत्मा में से ोना चाहिए। यि श्रचन्तन तनरन्तर बनाये रखना चाहिए। सोऽमि्'् का मानशसक जप करते ेसमय दि-बोध को नकारते जाना चाहिए। जब आप 'शिवोऽमि्'् का जप करें, तो यि अनुभव करें कक:

म ैंअनन्तता िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपररपूण वज्योतत िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपूण वप्रसन्नता िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपरम जय िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपूण विजतत िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपररपूण वज्ञान िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्
म ैंपररपूण वआनन्द िूँ	शिवोऽमि् ्शिवोऽमि् ्

उतत ववचारों पर सतत श्रचन्तन करें। उत्सा और लगन से तनरन्तर अभ्यास करना अतनवाय वि। ऐसा करते ेरिने से आपको आत्मानुभूतत प्राप्त ोगी।

शिव-आराधना

भगवान् ्शिव की सगुण साकार रूप में आराधना शिवशलंगं की पूजा ोती ै। शिव-भतत सामान्यतया 'पंचायतन पूजा' करते ैं। इस पूजा में भगवान् ्शिव, गणेि, पावतवी, सूयनवारायण और ालग्राम की भी साथ ी पूजा की जाती ै।

ुभि हदन में पंचायतन मूततयवा ाँलेआय। ें अपनेघर में अत्यन्त श्रद्धापूवकव उनकी स्थापना करें। बड़ेस्तर पर वविेष प्राथनवाए, ाँ अचनवा, पूजा, अशभषेके और ब्रह्मभोज (भण्डािा) करें। अलग कक्ष में मूतत वस्थापना करें। पूण व श्रद्धा और ववश्वास सहित तनत्य तनयशमत रूप से मूततयवों का पूजन-अचनव करें। आपको पयाप्वत धन, मानशसक ाजिन्त, धम,व अथ,व काम और मोक्ष — सब-कुछ प्राप्त ोगा। आप धन-धान्य-समपन्न जीवन सुख भोगते ुिए अन्ततिः शिव-सायुज्य और अमरत्व प्राप्त करेंगे।

भगवान शिव की आराधना के शलए पयाप्वत मात्रा में त्रबल्वपत्र एकत्रत्रत करें। भगवान् ्को समवपतव करने के शलए धूप, दीप, कपूरव, अगरबत्ती, ुिद्ध जल, बिुत सेपुष्प, नैवेद्य, बैठने ेके शलए आसन, घण्टी, ंिख तथा अन्य पूजा के शलए उपयोगी सामग्री पूजा से यथासमय पूव विी तैयार रखें। प्रातिः सूयोदय से पिले ेउठ जाय। ें मुिँ धो लें, स्नान कर लें। पूजा के शलए अलग से रखे ेगये रेिमी वस्त्र धारण करें। पूजा-कक्ष को सुन्दर ढंग से सुसजज्जत करें। पूजा-कक्ष में भगवन्नाम उच्चारण करते ुिए, उनका महिमा-गान करते ुिए प्रवेि करें, प्रवेि करने से पूव वअपने पावाँ भी अच्छी प्रकार धो लें। प्रवेिोपरान्त दण्डवित साष्टांग प्रणाम करें, कफर सुखासन में बैठ कर पूजन प्रारंभ करें। सवप्रवथम ववश्रधवत संकल्प करें। तदनन्तर कलि, ंिख, आत्मा और पीठ (भगवान का आसन) का पूजन उनके क्रमानुसार करें। इसके पश्चात भगवान की षोिोपचार पूजा करने के पश्चात मिामृतूयुंजय मन्त्र का जप, रुिपाठ, पुरुष सूतत और गायत्री पाठ करें और साथ-साथ ुिद्ध जल, दूधू, िकवरा, घृत इत्याहद पूजन सामग्री (अपनी सामथ्य वके अनुसार) अथवा मात्र ुिद्ध जल से अशभषेक करते ेरिे। रुिाशभषेक अत्यंत लाभप्रद ै। यहद आप रुि जप और अशभषेके करते ैं, तो आपके समस्त दुिःख-तलेि अदृश्य ो जायगें े और आप भगवान ववश्वनाथ की कृपा से मानव जन्म का सवोच्च आनन्द, परमानन्द प्राप्त करेंगे। रुि सवोच्च दुिश्रधकता वेि। रुि और पुरुषसूतत अदृष्ट गुप्त िजततयााँ ैं। रुि के उच्चारण से अद्भुत प्रेरणा प्राप्त ोती ै। शिव पूजन प्रारमभ करें तथा इसकी महिमा और गौरव को स्वयं ी अनुभव करें।

अशभषेक के पश्चात् ्भगवान् ्का चन्दन और पुष्पों से सुन्दर श्रृंगार करें। तत्पश्चात् ्'भगवान की 'ॐ शिवाय नमिः', 'ॐ मिेश्वराय नमिः' इत्याहद नामों से अचनवा करें। तनत्य १०८ अथवा समभव ो तो १००८ अचनवा करें। अचनवा के पश्चात् ्ववशभन्न प्रकार के दीपकों से—यथा एक दीप आरती, तीन दीप आरती, पंच आरती और कपूरव आरती करें। घण्टनाद, करताल, ंिखंनाद इत्याहद आरती के साथ-साथ करें। भगवान् ्को पावन प्रसाद अथवा नैवेद्य समवपतव करें।

आरती समपूण विोनेके पश्चात् ्भगवान् ्की महिमा वणनव करते ुिए भजन- स्तोत्र इत्याहद जैसे े शिवमहिमन स्तोत्र का गायन करें। चमर ुिलाते समय शिवपंचांक्षरस्तोत्र इत्याहद का गायन करें। अन्त में 'कायेन वाचा', 'आत्मा त्वम् ्श्रगररजा मततिः' और 'कर-चरण कृतम्' ् इत्याहद प्राथनवा करते ुिए भगवान् ्को सवस्वव समपणव

करें। समझें कक आप भगवान् ्के ाथों में उपकरण मात्र ैं। सब-कुछ केवल इि-कृपा प्राजप्त का उद्देश्य रख कर ी करें। तनशमत्तभाव ववकशसत करें। भततों की सेवा करें। अपनेभततों की सेवा ोते ेदेख कर भगवान् ्अश्रधक प्रसन्न ोते ैं । अन्त में भतत समुदाय में प्रसाद ववतरण करें। श्रद्धापूवकव स्वयं प्रसाद ग्रिण करें। भगवान् ्के प्रसाद की महिमा वणनवातीत ैं। ववभूतत को भी प्रसाद रूप में ले कर मस्तक पर धारण करना चाहिए।

जब बाह्य पदाथों द्वारा पूजा करने के पश्चात् ्सगुण उपासना में आप पयाप्वत उन्नतत कर लें, तो मानस पूजा आरमभ कर सकते ैं। आपको भगवान् ्के दिनव ोंगे ेऔर परम मोक्ष पद की प्राजप्त ोगी।

सोमवार और प्रदोष (प्रत्येक पक्ष की त्रयोदिी) के हदन वविेष पूजा करें। यि प्रदोष, सोमवार के हदन तथा शिवरात्रत्र भगवान् ्शिव की उपासना के शलए वविेषतया पावन मानेजाते ैं। शिवरात्रत्र को वविेष धूमधाम से मनाय।ें सारा हदन उपवास करें।। त्रत्रकाल-पूजा, जप, वविेष अशभषेक, एकादि रुि पूजा जप, सिस्राचनवा, रात्रत्र जागरण, भगवान् ्शिव के भजन, स्तोत्र, शिवपुराण पाठ तथा शिव लीलाओंका श्रवण करें। | पूजा के पश्चात् ् आगामी प्रातिः अशभषेक-जल से उपवास खोलें। शिव-तनमाल्वय तथा प्रसाद ग्रिण करें। आपको अत्यश्रधक मानशसक ाजन्त तथा आध्याजत्मक प्रगतत का लाभ प्राप्त ोगा। कभी भी ऐसेसुअवसर को न खोय।ें तनत्य पूजन समस्त रोगों का सुतनजश्चत उपाय ै। आपको कभी भी तनधनवता का सामना निींकरना पड़ेगा। मेरे कथन का ववश्वास करें और आज से ी पूजा प्रारमभ कर दें।

शिव मानस पूज ा

मानस अथवा मानशसक पूजा चन्दन, पुष्पों इत्याहद से की गयी बाह्य पूजा से किीं ंअश्रधक ितततिाली और प्रभावोत्पादक ै। मानस पूजा करने में आपकी एकाग्रता अश्रधक ोगी।

भगवान् ्को अपने मनस्पटल के रत्न जहटत शसंिासन पर ववराजमान करें। उन्िेंअघ्य,व मधुपकव, भाताँत-भाताँत के पुष्प, सुन्दर वस्त्राभूषण अवपतव करें। उनके मस्तक तथा हदव्य दिे पर चन्दन का ववलेपन करें। धूप और अगरबत्ती जलाय।ें मनिः दीप जलाय,ें कपूरव नीराजन करें। ववशभन्न प्रकार के फल, शमठाइयााँ, पायस, नाररयल और मिानैवेद्य समवपतव करें। मन-मजन्दर में अपनेप्रभु की षोिोपगार पूजा करें।

पंचाक्षरशलखखतमन्त्रजप

तनत्य आधा घण्टा अथवा अश्रधक समय तक सुन्दर कापी में 'ॐ नमिः शिवाय' शलखें। यि साधना-पद्धवत्त अपनानेसे आपकी एकाग्रता में अश्रधक वृद्श्रध ोगी। मन्त्र-लेखेन सुस्पष्टतया स्यािी से करें। मन्त्र-लेखन के समय मौन रिें। आप ककसी भी भाषा में मन्त्र शलख सकते ैं। इधर-उधर ध्यान देना छोड़ दें। मन्त्र शलखते ेसमय मानशसक जप भी करते ेजाय।ें पूरा मन्त्र एक ी बार में शलखें। जब मन्त्र-लेखेन की कापी पूरी भर जाये, तब उसे ेडिब्बे ेमें ाल कर पूजा-कक्ष में रख लें। अपनी साधना तनयशमत रूप से करें।

अपनी जेब में भी एक छोटी कापी रखे। जब भी कायालवय में खाली समय शमले, तो मन्त्र - लेखन करें। सदैव तीन वस्तुए ाँअपनेसाथ ि◌ी रखें मन्त्र-लेखन की छोटी कापी, गीता और जप माला। आपको अत्यन्त लाभ ाीगाि।

शिवज्ञानम् ◌्

मुतत भगवान् ◌्शिव के पावन नाम के जप, स्मरण और ध्यान के द्वारा आप समस्त पाप से ि◌ो जायगें ◌े और शिवज्ञानम् ◌्अथवा परम आनन्द और मोक्ष-पद को प्राप्त करेंगे। शिव-नाम समस्त मन्त्रों का आत्मा ि◌ै।

भगवान शिव इस ववश्व में ६० ववशभन्न नामों से प्रकट ि◌ुए ि◌ैं। वृषृभारूढ़, ि◌ररि–र, नटराज, भैरव, दक्षक्षणामूतत,व अधनवारीश्वर, शभक्षाटन, सोमिैखरमूतत,व ऊध्वनवतना, कालसंिारि, जालन्धर, सुरसंिारि, शलंगीद्भव उनके ि◌ी रूप ि◌ैं।

शिव का अथ वसवदवा प्रसन्न, ि◌ुभ अथवा कल्याणकारी, परम मंगल से ि◌ै। ॐ और शिव एक ि◌ी ि◌ैं। माण्ूतियोपतनषद् में आता ि◌ै- "ि◌ान्तं ◌ंशिवं ◌ंअद्वैतम्।◌्" एक िि◌ू भी भगवान् ◌्शिव के नाम पर ध्यान कर सकता ाै।

गायत्री मन्त्र, अजग्न और सूय वमें भी शिव प्रकट ि◌ोते ि◌ैं। जब आप गायत्री जप करतिैं और जब आप अजग्न और सूयोपासना करते ि◌ैं, तब आपको भगवान् ◌्शिव का ध्यान करना चाहिए।

पंचाक्षर का जप और भगवान् ◌्शिव का ध्यान वविेष रूप से प्रदोष काल में अथवा सूयास्वत से ककंश्रचत् ◌्पूव व करना चाहिए। कृष्ण पक्ष का प्रदोष मिाप्रदोष माना जाता ि◌ै। इस समय में देवता शिव मजन्दर में पूजनाथ वआते ◌े ाैं। यहद उस हदन आप शिव मजन्दर जायें, तो देव-पूजन भी साथ ि◌ी ि◌ो जाता ि◌ै। शिव-भतत मिाप्रदोष हदन में पूण व उपवास करते ि◌ैं।

शिव भततों को अपनेमस्तक तथा ि◌रीर पर ववभूतत (भस्म) लगानी चाहिए। उसे ◌ेरुाक्ष माला धारण करनी चाहिए। उसे ◌ेववल्व-पत्रों से शिवशलंगं पूजन करना चाहिए। उसे ◌ेपंचांक्षर मन्त्र **'ॐ नमः शिवाय'** जप और ध्यान करना चाहिए। इन सब कक्रयाओं द्वारा भगवान् ◌्शिव सन्तुष्ट ि◌ोते ि◌ैं। ववभूतत अत्यन्त पववत्र ि◌ोती ि◌ै। भगवान् ◌् स्वयं इसे ◌ेधारण ककये रिते ि◌ैं। रुाक्ष का मनका (दाना) भगवान् ◌्शिव के तीसरे नेत्र का प्रतीक ि◌ै। त्रबल्व पत्र को मिालक्ष्मी के पाचाँ तनवास स्थानों में से एक माना जाता ि◌ै।

भगवान् ◌्शिव ि◌ी जीव के बन्धन और मोक्ष के कारण ि◌ै। शिव ि◌ी ि◌ैंजो जीव को उसके वास्तववक हदव्य स्वरूप का बोध करवाते ि◌ैं। शिव ने माया के द्वारा दि, इजन्यिों और जगत् ◌्की रचना की और जीव को माया में धकेल हदया। उन्िोंनिे जीवों में अि बोध उत्पन्न ककया। उन्िोंनेजीवों को कम-वपा में आबद्ध करके अपने-अपनेकमों के अनुसार सुख-दुि◌ःख भोगने में लगा हदया। यिी जीवों की कम-वपा की अवस्था ि◌ै।

जीव जब अणव, कम वऔर माया रूपी तीन अिुद्श्रधयों के अधीन िोते िैं, तब उन्िेंकोई स्वतन्त्रता निीं िोती। वि अल्पज्ञान से ग्रशसत िोते िैं।

भगवान् ्शिव की कृपा प्राप्त करने के शलए जीव को सवप्रवथम अपनेवास्तववक तनज स्वरूप का, और भगवान् ्के साथ अपने समबन्ध का ज्ञान िोना अत्यावश्यक िै। जीवनी–जतत अथवा प्राण िरीर में िै। भगवान् ्प्राणों के भीतर िैं। वि प्राणों के भी प्राण िैं, तथावप वि प्राण और िरीर दोनों से शभन्न िैं। यहद दिे में प्राण न िों तो यि िव िो जाती िै, तब यि कोई भी काय वनिींकर सकती। भगवान् ्शिव इस दिे, प्राण और जीव तीनों के आधार िैं। शिव के त्रबना जीव कुछ भी कर सकने में असमथ विै। शिव िी बुद्श्रध को प्रकाशित करनेवाले िैं। जजस प्रकार देखने ेकी िजतत प्राप्त िोने पर भी सूय वके प्रकाि के अभाव में आखँा देख निींसकती, इसी प्रकार शिव प्रकाि के त्रबना बुद्श्रध भी अक्षम िै।

चया,व कक्रया, योग और ज्ञान ये चारों साधनाए ाँमोक्ष प्राजप्त के चार पग िैं। ये ठीक इसी प्रकार िैं जैसे े कशलका, पुष्प, कच्चा फल और पका िुआ फल।

भगवान् ्शिव धीरे-धीरे जीवात्मा को अि, कम वऔर कफर माया से मुतत करते ेजाते िैं। जीव ऐजन्यि-सुखों से धीरे-धीरे ववरतत िोनेलगतेिैं। उनके शलए सुख-दुिःख समान िोनेलगता िै। भगवान की कृपा से वे समझने लगतेिैं कक सुख-दुिःख के कारण अपनेकम विी िैं। वि भगवदथ वकम वकरने लग जाते िैं, भगवान् ्के भततों की सेवा के द्वारा मन की िुद्श्रध प्राप्त करने लगतेिैं। वि समझ जाते िैं कक आत्मा अथात्व ्शिव दिे से शभन्न िै, मन और इजन्ियों से अतीत िै तथा मन-वाणी की सीमा से परे िै। उनमें 'ॐ नमिः शिवाय' के मित्त्व का सूत्रपात िो जाता िै। पंचाक्षर और शिव-ध्यान के मित्त्व का उन्िेंबोध िो जाता िै।

वि शिव योग साधना करने लगतेिैं। उनके हृदय िववत िो जाते िैं। िष्टा, िष्टव्य और दृश्य लुप्त िो जाते िैं। इजन्ियों, मन और बुद्श्रध की समस्त कक्रयाएाँसमाप्त िो जाती िैं। अपनेहृदय में उत्पन्न िोनेवाले प्रेम के जल से वि भगवान् ्का अशभषेके करते िैं और अपनेहृदय पुष्प को प्रभु के चरणों में समवपतव कर देते िैं।

वि अपनेहृदय में 'श्रचलमबोसाई' की ध्वतन सुनतेिैं और ध्वतन-पथ का अनुसरण करते िुए श्रचदाकाि में नटराज के दिनव करते–करते ेशिवानन्द के सागर में लीन िो जाते िैं। जैसे ेअजग्न में कपूरव घुल जाता िै ऐसे िी वि भगवान् ्के साथ एक िो जातेिैं।

शिवशलंगंउपासना

यि लोक प्रचशलत धारणा िै कक शिवशलंगं, शलंगं अथवा पुरुष की जननेजन्यि अथवा प्रजनन िजतत का द्योतक िै। यि एक गमभीर ववकट गलती िी निीं, प्रत्युत अत्यन्त घोर भद्दी भूल िै। वैहदकोत्तर काल में शलंगं भगवान् ्शिव की जनन–जतत का प्रतीक बन गया। शलंगं एक 'ववशिष्टीकारक' श्रचह्न िै। तनजश्चत रूप से यि यौन-श्रचह्न

निीीं। शलंगंपुराण में आता ि **“प्रधानंप्रकृनतयदधाहुशलगिंमुत्तमम्;**् **गन्धवणरधसैहीनं** ि**ब्द-सपिाहधद-वनजतधम्**” ्अथात्**्** ्प्रथम सवोत्तम शलंगं गन्ध, रंग, स्वाद, श्रवण, स्पि वइत्याहद सबसे ववीीन प्रकृतत को किा गया ि।

संस्कृत में शलंगं का अथ व'श्रचह्न' ि। यि ववभेदीकरण का प्रतीक ि। आप जब नदी में बाढ़ की जस्थतत देखते ि, तो अनुमान करते ि कक गत हदवस भारी वषा वुिई िोगी। जब आप धुआाँदेखते ि, तो अनुमान करते ि कक विााँअजग्न िोगी। असंख्य नाम-रूपों वाला यि ववस्तृतृ जगत् ्सविवजततमान् ्परमात्मा का शलंगं ि। शिवशलंगं भगवान् ्शिव का श्रचह्न ि। जब आप शलंगं को देखते ि, तो उसी क्षण आपका मन उन्नत िो जाता ि और भगवान् ्शिव का श्रचन्तन करने लगता ि।

भगवान् ्शिव वास्तव में तनराकार ि। उनका अपना कोई आकार निीीं। तो भी सभी आकार उनके िी आकार ि। सभी आकारों में शिव व्याप्त ि। प्रत्येक आकार शिव का िी आकार अथवा शलंगं ि।

शिवशलंगं में मन को एकाग्र करनेकी अद्भुत िजतत ि, जैसे मन स्फहटक तनिारने (crystal-gazing) की प्रकक्रया में सरलता सेएकाग्र िो जाता ि, इसी प्रकार जब व्यजतत शलंगं को देखता ि, तो उसका मन सिज िी एकाग्र िो जाता ि। इसीशलए िमारे प्राचीन ऋवषयों और िष्टाओंने शिव मजन्दरों में शलंगं स्थावपत करने को किा ीं।

शिवशलंगं मौन रूप से आपसेकिता ि—“म अद्ववतीय िूाँ, तनराकार िूाँ।” केवल पववत्र–ुद्ध आत्मा िी इस मौन भाषा को सुन-समझ सकता ि। एक कुतूिली, कामुक, अिुद्ध, मन्दबुद्श्रध ववदिी तो व्यंग्यपूवकव यिी किता ि-"अरे, हिन्दू ूतो पुरुष की कामेजेन्यि की पूजा करते ि। वि अज्ञानी ि, उनका दिनव व्यथ वि।" जब कोई ववदिी तशमल अथवा अन्य कोई भारतीय भाषा सीखने का प्रयत्न करता ि, तो वि सवप्रवथम कुछेक अश्लील िब्द सीख लेता ि। यि उसके कुतूिली स्वभाव के कारण ि। इसी प्रकार तनराकार सत्ता का बाह्य प्रतीक (सूचक) ि। उन भगवान् ्शिव का प्रतीक ि जो अववभाज्य कुतूिली स्वभाव वाले ववदिी प्रतीक-पूजन में दोष ढूाँढ़नेका प्रयास करते ि। शलंगं उस तनराकार सत्ता का बाह्य प्रतीक (सूचक) ि। उन भगवान् ्शिव का प्रतीक ि जो अववभाज्य ि ; सवव्वयापक, िाश्वत, मंगलमय, तनत्य–ुद्ध और इस वविद ववश्व का िाश्वत सत्त्व ि; जो आपके हृदय-मजन्दर में प्रततजष्ठत अमर आत्मा ि; जो आपके अन्तरवासी, अन्तरतम में जस्थत आत्मा ि और साथ िी जो परब्रह्म स्वरूप ि।

शिवशलंगं के तीन भाग ि —तनमनतम ब्रह्म-पीठ, मध्यभाग ववष्णु–ुपीठ और सवोपरर भाग शिव-पीठ। कुछ स्वयंभूशलंगं ि और कुछ नमदेवश्वर ि। भारत में द्वादि ज्योततशलगिं ि और पाचाँ पंचभूत शलंगं ि। द्वादि ज्योततशलगिं ि—केदारनाथ, किीववश्वनाथ, सोमनाथ, बैजनाथ, रामेश्वर, घुरुश्नेश्वर, भीमिांकर, मिाकाल, मजल्लकाजुनव, अमलेश्वर, नागेश्वर और त्र्यमबकेश्वर । पाचाँ पंचभूत शलंगं ि— कालिास्तीश्वर,

जमबूकेश्वर, अरुणाचलेश्वर, एकमबरेश्वर (कांजीवरम्) ् और नटराज (श्रचदमबरम्) ् । ततरुववदेमारुदर के मिाशलंगं भगवान् ्जो मध्याजुनव नाम से भी जानेजाते िैं, दक्षक्षण भारत के प्रशसद्ध शिव मजन्दर मानेजाते िैं।

स्फहटकशलंगं भी भगवान् ्शिव के प्रतीक िैं। इनके द्वारा भी भगवान् ्शिव की आराधना की जाती िै। यि स्फहटकमखण का बनता िै जजसका अपना कोई रंग निीं िोता; जजसके भी समपकव में आये, उसी का रंग इसमें से झलकनेलगता िै। यि तनगुणव ब्रह्म अथवा तनराकार तनगुणव शिव का द्योतक िै।

सच्चे भतत के शलए, शलंगं पत्थर का टुकड़ा निीं िै। यि देदीप्यमान तेजस् ्अथवा चैतन्य िै। शलंगं उनसे े बातें करता िै, वि अश्रुपात करवा देता िै, हृदय िववत कर देता िै, दिेाध्यास से ऊपर उठा देता िै और भगवान् ्से एक िोने में, तनववकवल्प समाश्रध की प्राजप्त में सियक िोता िै। भगवान् ्राम ने रामेश्वरम् ्में शिवशलंगं की आराधना की। ववद्वान् ्रावण ने स्वणशवलंगं की उपासना की। शलंगं में ककतनी अद्भुत िजतत िोगी!
आपको भगवान् ्शिव के प्रतीक शिवशलंगं की आराधना द्वारा तनराकार शिव की प्राजप्त िो! यि मन की एकाग्रता में नये साधकों को अत्यश्रधक सियता प्रदान करने वाले िों!

शिवशलंगंश्रचन्मयिै

सदाशिव में से प्रकटीकृत प्रकािमय चेतना िी वास्तव में शिवशलंगं िै। समस्त जड़-चेतन सृजष्ट का उद्भव उन्िीं में से िोता िै। प्रत्येक वस्तु का शलंगं अथवा कारण विी िैं। अन्त में समस्त जगत् ्उन्िीं में लय िो जाता िै। शिवपुराण में किा िै- "**पीठं अम्बमयं सव िंशिवशलंगंश्च चन्मयम् ्।"** सबका पीठ अथवा आधार प्रकृतत अथवा पावतवी िै तथा शलंगं श्रचन्मय पुरुष, स्वयं-प्रकाि देदीप्यमान प्रकाि िै। प्रकृतत अथवा पावतवी तथा पुरुष अथवा शिवशलंगं का संयोजन िी जगत् ्का कारण िै। शिवपुराण की 'सनत्कुमार संहिता' में भगवान् ्शिव किते े िैं- "िे पवतवराजकुमारी पावतवी! जो व्यजतत यि जानता िुआ कक शलंगं प्रत्येक वस्तु का मूलभूत कारण िै और यि समपूण वजगत् ्शलंगं माया अथवा चैतन्य माया िै, मेरी पूजा शलंगं में करता िै, उससे बढ़ कर अश्रधक वप्रय मुझे े अन्य कोई निीं।"

शलंगं अण्िाकार िै। यि ब्रह्माण्ि का प्रतीक िै। जो कुछ ब्रह्माण्ि में अन्तववष्वट िै, विी सब कुछ शलंगं में िै। समस्त जगत् ्भगवान् ्शिव का आकार िै। संसार एक शलंगं िै। शलंगं भगवान् ्शिव का रूप िै।

शलंगं यि सूश्रचत करता िै कक सृजष्ट की रचना प्रकृतत और पुरुष के संयोजन से िुई िै। इसका अथ वलय, ज्ञान, व्याप्य, प्रकाि, अथप्रवकाि, सामथ्य वतथा उपयुतवत अथ वको अशभव्यतत करने वाले प्रतीक िैं। शलंगं का अथ व िै जगत् ्और उसके समस्त प्राखणयों का लय-स्थान । यि सत्य, ज्ञान और अनन्त का भी द्योतक िै। यि प्रकट करता िै कक भगवान् ्शिव सवव्यापक और स्वयंप्रकाि िै। शलंगं वास्तव में एक ऐसा प्रतीक िै जो उपयुतवत समस्त अथों को प्रततपाहदत करता िै।

कुल छि शलंगं ि ैं, यथा अण्शिलंगं, वपण्शिलंगं, सदाशिवशलंगं, आत्मशलंगं, ज्ञानशलंगं और शिवशलंगं। यि शलंगं अण्,ि वपण्,ि सदाशिव इत्याहद के गुणों को अशभव्यतत करते ि ैं।

शलंगं का योतन के साथ संयोजन, परम सत्ता के जड़ और चेतन पक्षों के ि ाश्वत संयोजन का प्रतीक ि ै।
यि व्याविाररक जगत् ्की समस्त ववववधताओं के परम वपता और मातृ–ृजतत के ि ाश्वत आध्याजत्मक संयोजन के शसद्धान्त को अशभव्यतत करता ि ै। यि अपररवतनविील परमब्रह्म और सकक्रय परिाजतत का ि ाश्वत शमलन ि ै, जजससे ि ेसभी पररवतनविील प्रकट ि ोते ि ैं। इस उदात्त भावना को रखने ि ेसे साधक में तनमन काम-प्रवृवृत्तया ाँनष्ट
ि ोजाती ि ैं। शलंगं और योतन का अध्यात्मीकरण करने और ईश्वरत्व भावना करने से साधकों को कामुक ववचारों से मुजतत प्राप्त ि ोती ि ै। इस उदात्त भावना द्वारा समस्त क्षुि ववचार लुप्त ि ो जाते ि ैं। भगवान् ्शिव का अपनी जितत के साथ ि ाश्वत आत्मानन्द और ि ाश्वत आत्म-वृद्ूश्रध के शलए परम सृजृष्ट के इस शसद्धान्त की यि भावना के ि ी ववश्व के समस्त यौन समबन्ध प्रकटीकरण ि ैं।
शलंगं और योतन का संयोजन भगवान् ्शिव का अपनी आहद ि जतत के संयोग से सृजृष्ट रचना का प्रतीक ि ै।

आजकल के पढ़े-शलखे कि लानेवाले समाज में दाितवनक और आध्याजत्मक अन्तदृजवष्ट का अभाव ि ै।
अतिः वि शलंगं और योतन के संयोग को अनैततक और अश्लील समझते ि ैं; तयोंकक वववेके, गिन ववचार और सत्संग के अभाव के कारण उनमें अत्यश्रधक अज्ञानता ि ै। सचमुच ि ी यि अत्यश्रधक ि ोकजनक अवस्था ि ै।
भगवान् ्इन अज्ञानी अल्पमतत लोगों को ज्ञान प्रदान करें!

भगवान् शि्व् को प्राप्त करने के उपाय

ततरुमूलर का 'ततरुमन्त्रम्'् एक काव्य ग्रन्थ ि ै, जजसको पूण वकरने में तीन सिस्र वष वलगे ि ेथे, ऐसा कि ा जाता ि ै। यि ि ैव धम वऔर दिनव के सैद्ैधाजन्तक और व्याविाररक पक्षों का प्रततपादन करता ि ै। पतत, पिु और पाि का तनरूपण इस पुस्तक में प्राचीन पद्धतत के अनुसार ककया गया ि ै। 'ततरुमन्त्रम्'् में ततरुमूलर की व्याख्या इस प्रकार ि ै :
केवल भगवान् ्ि ी गुरु ि ैं। वि ी शिव अथवा सत्य का दिनव करातेि ैं। सत्–्गुरु अमबलम् ्अथवा श्रचदाकाि शिव ि ैं।
आपको गुरु की खोज अपने हृदय में ि ी करनी पड़ेगी। गुरु की कृपा से ज्ञान, भजतत, ि ुद्धता और शसद्श्रधयों की प्राजप्त ि ोती ि ैं। जो सौभाग्यिाली साधक ि ुद्धता और वैराग्य से समपन्न ि ैं, उन पर गुरु कृपा अवतररत ि ोती ि ै।

वपपासु साधक को 'गुरु परम' से सिायता लेनी चाहिए। 'गुरु परम' साधक को आध्याजत्मक तनदिेन प्रदान करते ि ैं। तब 'ि ुद्ध गुरु' उस पर हदव्य कृपा करते ि ैं। जब साधक हदव्य कृपा प्राप्त कर लेता ि ै, तब उसे ि ेअनेक जिततयों, ि ुद्श्रध, मन्त्र जानने की ि जतत, उच्चतर शसद्श्रधयों इत्याहद की प्राजप्त ि ोती ि ै। तब उसके समक्ष

श्रचदाकिा में सत्–गुरु प्रकट िोते िैं और उसके अणव (अि), कम वऔर माया तीनों प्रकार के बन्धन तोड़ देते िै तथा उसकी मोक्ष के असीम साम्राज्य में, अथवा परमानन्द के परम पद में प्रविे पाने में सिायता करते िैं। उसके पश्चात् ्शिव गुरु स्वयं प्रकट िोते िैं और सत्,् असत् ्तथा सदसद को प्रकट करते िैं। जब जीव को इस परम ज्ञान की प्राजप्त िोती िै, तब वि स्वयं शिव बन जाता िै। गुरु, जो स्वयं को प्रथम और बाद की अवस्था में व्यतत करते े िैं, स्वयं शिव िी िैं।

भतत जब अपनी हृदय-गुिा में, त्रत्रकुटी में अथवा िीिी में भगवान् ्का ध्यान करता , तब उनकी कृपा प्राप्त कर लेता िै। भगवान् ्के पावन चरणों का अत्यश्रधक गुण-गान ककया गया िै। ततरुमूलर किते िैं—"मेरे प्रभु के पावन चरण मन्त्र िैं, सौन्दय विैं और सत्य िैं।"

जो ज्ञेय, अथात्व ्जानने योग्य िै वि शिव आनन्द िै, जो कक शिव और उनकी कृपा, िजतत से उद्भूत िै। ज्ञाता, जीव अथवा जीवात्मा िै। शिव आनन्द में तनवास करनेसे वि शिव को जान जाता िै और शिव ज्ञान प्राप्त कर लेता िै।

शिव आनन्द को प्राप्त करना िी मोक्ष िै। जो मोक्ष प्राप्त करता िै, उसे ेशिव का परम ज्ञान प्राप्त िो जायेगा। जो शिव आनन्द में जस्थत िो जाता िै, वि ज्ञान और मोक्ष (परम पद) प्राप्त कर लेगा। जो जीव शिव आनन्द को जान लेता िै, वि सदा के शलए उसमें तनवास करता िै। उसे ेशिव आनन्द में शिव और िजतत की प्राजप्त िोती िै। वि वास्तववक ज्ञान से समपन्न िो जाता िै, जो कक वास्तव में शिव और िजतत का संयोग िी िै। जो साधक वैराग्य, अनासजतत, त्याग से समपन्न िै, जो सदा भगवान् ्का गुणगान करता और तनयशमत रूप से उपासना करता िै, उसे ेभगवान् ्शिव मोक्ष का माग वदिा वदेते िैं।

भगवान् ्शिव का भतत अपने तप और त्याग के द्वारा इस संसार और इन्रलोक के भी आकषणवों का प्रततरोध करने की िजतत प्राप्त कर लेता िै। वि इन्र द्वारा प्रदत्त देवलोक के सुखों को भी कुछ निीं ्समझता। भगवान् ्शिव के संयोग से प्राप्त परम आनन्द में वि अत्यश्रधक सन्तुष्ट रिता िै।

जब साधक कठोर तप करता िै और ध्यान का अभ्यास करता िै, तब उसे ेअनेक शसद्श्रधया ाँप्राप्त िोने लगती िैं। इन्र तथा अन्य देवता अत्यश्रधक भयभीत िोने लगतेिैं कक उनका पद चला न जाये। अतिः वि अनेकों बाधाए ाँखड़ी कर देते िैं और ववशभन्न रूपों में उसे ेप्रलोभन देनेलगतेिैं; हदव्य रथ, अप्सराएाँतथा अन्य ववशभन्न दैवी सुखों को उसके माग वमें प्रस्तुत करते िैं। ककन्तु सच्चे साधक अपनेपथ पर अडिग रिते िैं । वि प्रलोभनों के समक्ष झुकते निींऔर लक्ष्य की ओर, शिव पद अथवा परमानन्द के परम पद की ओर बढ़ते ेजाते िैं। जो झुक जाता िै, वि भटक जाता िै। ववश्वाशमत्र भटक गये।

सन्त ततरुमूलर किते िैं—“ज्ञान का अशभमान त्यागो। आत्म-ववश्लेषण करो। अपनेअन्तर में देखो। आप शिव में दृढ़ता से जस्थत िो जायगें। कोई आपको हिला निींसकेगा। आप जन्म-मरण के बन्धन से मुतत िो जायगें।"

वैंशसद्धान्त भी केवल अद्वैतै िी िै। यि शिव अद्वैत िै।

प्रसाद की महिमा

प्रसाद वि िै, जो मन को िाजन्त प्रदान करता िै। कीतनव, आराधना, पूजा, िवन और आरती के समय भगवान् को बादाम, ककिशमि, दूधू, शमठाई और फल का भोग लगाया जाता िै। बेल पत्र, पुष्प, तुलसी दल और ववभूतत से पूजन ककया जाता िै, और यि सब भगवान् के प्रसाद के रूप में बाटाँ जाता िै। पूजा और िवन के समय जो मन्त्रोच्चारण ककया जाता िै, उससेयि समस्त सामग्री गुह्य िजततयों से भर जाती िै।

प्रसाद अत्यश्रधक िुद्श्रधकारक िै। प्रसाद सव वरोग िर (रामबाण) िै। प्रसाद हदवव्य अमृत िै। प्रसाद भगवान् की साकार कृपा िै। प्रसाद िजतत का साक्षात् रूप िै। प्रसाद हदवव्यत्व का प्रकटीकृत रूप िै। अनेक सच्चे साधकों को प्रसाद से िी ववशभन्न अद्भुत अनुभूततया ाँप्राप्त िुई िैं। उनके अनेक असाध्य रोग दूरू िो गये िैं। प्रसाद जितत-दाता, प्राण-दाता, पुजष्ट-दाता और भजतत-दाता िै। इसे श्रद्धापूवकव ग्रिण करना चाहिए।

एक सप्ताि के शलए वृनूदावन, पण्ढरपुर अथवा वाराणसी में रिें। आपको प्रसाद के रिस्यमय प्रभाव और उसकी महिमा ज्ञात िो जायेगी। प्रसाद सभी को उत्तम स्वास्थ्य, दीघ वआयु, िाजन्त और समपन्नता प्रदान करता िै। िाजन्त और आनन्द प्रदाता प्रसाद की जय िो! प्रसाद प्रदाता प्रभु की जय िो! अमरत्व और िाश्वत सुख प्रदाता प्रभु की जय िो!

ववभूनत : भगवान् शिव का प्रसाद िै जो मस्तक पर धारण ककया जाता िै, लघु अंमुिख में भी िाल सकते िैं।

कुमकुम : देवी अथवा िजतत का प्रसाद िै जजसेमस्तक पर आज्ञा अथवा भूरूमध्य स्थान पर धारण ककया जाता िै।

तुलसी : भगवान् ववष्णु, राम और कृष्ण का प्रसाद िै। इसे खाना निींचाहिए। बादाम, ककिशमि, शमठाई आहद का प्रसाद खाने के शलए िै।

यि सभी प्रसाद मित्त्वपूण वधाशमकव उत्सवों में ववतररत ककये जाते िैं।

तीथाटवनकेलाभ

आप यहद 'औरटेल' की हृदय रोगों की श्रचककत्सा-समबन्धी पुस्तकें देखें, तो उनमें रोगी को धीमी गतत से पवतव पर चढ़ने के शलए किा गया िै। अतिः कैलास-यात्रा आध्याजत्मक लाभ के साथ-साथ अनेक प्रकार के हृदय-समबन्धी रोगों के शलए भी अत्यन्त लाभदायक िै। हृदय पुष्ट और िजतत-समपन्न िो जाता िै। समस्त हृदयी संवाहितनया,ाँ स्नायु, फुफ्फुसीय, अन्ननालीय और त्वचीय इत्याहद सभी तन्त्र पूरी तरि से ठीक और िुद्ध िो

जाते िैं। तब वाष्प-स्नान की भी कोई आवश्यकता निींरिती। चलते ेसमय आपको खूब पसीना आ जाता िै। पूरा रीर िुद्ध और ऑतसीजन युतत रतत से भर जाता िै। ऊँचे-ऊँचे देवदार के वृकूषों से छू कर आनेवाली ीतल मन्द समीर से क्षयरोगी भी वापस लौटनेपर स्वयं को तनरोग अनुभव करता िै। मोटापा भी कम िो जाता िै। कैलास यात्रा मोटापा दूरू करनेका तो सवोत्तम उपाय िै। अनेक प्रकार के आमिाय के रोग, मूत्रामल रोग तथा अन्य बुित से त्वचा समबन्धी रोग भी ठीक िो जाते िैं। बारि वषों तक आपको कोई भी रोग निींिोगा; तयोंकक आप नवीन इलेतेट्रॉन, नूतन अणुओं, नये रतत-कोषाणुओं, नये परमाणु ुओर पररष्कृत प्रोटोप्लाज्म द्वारा परिुिद्ध िुए नवीन न्यूतली िो जाते िैं। यि कोई अथवाद अथवा अततियोजतत निीं ंिै। आपके एक पन्थ से दो काज िो जाते िैं। कैलास-यात्रा आपको प्रभु कृपा और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करती िै। भगवान् ्िमभू की जय िो! अपनी िजतत पावतवी सहित कैलास में तनवास करने वाले, अपनेभततों को मुजतत प्रदान करने वाले और िर, सदाशिव, मिादेव, नटराज, िंकर इत्याहद ववशभन्न नामों से जानेजानेवाले भगवान् ्की जय िो!

जीवन का लक्ष्य ईश्वर - साक्षात्कार िै जो िमें संसार के दुिःखों से, जन्म-मरण के चक्र से मुतत करता िै। मि तनत्य नैशमवत्तक कमों और यात्राओं ंइत्याहद को तनिःस्वाथ वभाव से करते ेजायें, तो इनके द्वारा िुभ गुणों की वृद्श्रध िोती िै। ऐसा िोनेसेपाप नष्ट िोते िैं जजसके पररणाम स्वरूप मन की िुद्श्रध िोती िै। मन की िुद्श्रध के द्वारा संसार के वास्तववक स्वरूप का, इसकी असत्यता और शमथ्यात्व का ज्ञान िोता िै। इससे वैराग्य उत्पन्न िोता िै, जो कक मुजतत की इच्छा — मुमुक्षुत्व उत्पन्न करता िै। मुमुक्षुत्व उत्पन्न िोने से इसकी प्राजप्त के साधनों की खोज प्रारमभ िोती िै। तब कफर कमों के त्याग की भावना आती िै। तब योग का अभ्यास प्रारमभ िोता िै, जो कक मन के स्वभाव को पररवततत्व करके आत्मा अथवा ब्रह्म में जस्थतत की ओर ले जाता िै। इसके द्वारा श्रुततयों के गिन अथ,व यथा 'तत् ्त्वम् ्अशस' का ज्ञान िोनेलगता िै, जो अववद्या का अन्त करता िै, जजससे ेतनज स्वरूप में जस्थतत िो जाती िै। इस प्रकार आपनेदेखा कक तीथ-वयात्रा जैसे ेकैलास-यात्रा इत्याहद एक परमपरा साधना िै, जो क्रमिः ईश्वर-साक्षात्कार की ओर लेजाती िै, तयोंकक इससेश्रचत्त–ुद्श्रध और तनहदध्यासन िोता िै। ध्यान प्रत्यक्ष साधना िै। ववशभन्न सांसाररक कायों और श्रचन्ताओं में तघरे िुए गृिस्थों को इन तीथ-वयात्राओंद्वारा अत्यश्रधक सुख और आराम शमलता िै। ऐसी यात्रा सेउनके मन ताजगी और स्फूतत वप्राप्त करते िैं और यात्राओं ंके समय उनको साधु–ुसन्तों के दिनवों का लाभ िोता िै। उनको अच्छे सत्संग की प्राजप्त का लाभ भी िो सकता िै। वि अपने संियों का तनवारण कर सकते िैं। अपनी आध्याजत्मक साधना में वि उनसे ेववशभन्न प्रकार िी सिायता प्राप्त कर सकते िैं। यिी यात्रा का मुख्य उद्देश्य िै। वप्रय पाठक जन! अन्त में पुनिः एक बार आपको वेदों और उपतनषदों का अजन्तम िब्द स्मरण करवाना चािूँगा - तत् ्त्वम् ्अशस । ॐ तत् ्सत्, ् ॐ िाजन्तिः; आप सबको िाजन्त प्राप्त िो !

पररक्रमा के लाभ

ककसी पववत्र स्थान के चारों ओर प्रदक्षक्षणा करनेको पररक्रमा किते िैं। यि कोई पवतव शिखर िो सकता ि, पावन तीथ,व अथवा कोई पववत्र माना जाने वाला स्थान- वविेष िो सकता िै। यि चतकर लगाना सामान्यतया

कभी भी ि◌ो सकता ि◌ै, और ववि◌ेष रूप में वष वमें ककसी तनयत ववि◌ेष अवसर पर सामूहिक रूप से भी ककया जाता ि◌ै।

जब यि छोटे पैमाने पर ककया जाता ि◌ै, जैसे ◌ेमजन्दर में मूतत वके चि◌ुँ ओर, पावन तुलसी अथवा पीपल वृक्ष के चतुहदवक् ककया जाये, तो इसे ◌ेप्रदक्षक्षणा कि◌ा जाता ि◌ै। तनिःसन्दिे पररक्रमा में भी प्रदक्षक्षणा ि◌ी की जाती ि◌ै; ककन्तु परमपरानुसार यि ववस्तृत पैमानेपर ि◌ोती ि◌ै।

अश्रधक कहठन प्रकार की पररक्रमाओं का भी अत्यश्रधक प्रचलन ि◌ै, उसमें अश्रधक ि◌ारीररक कष्ट अथवा पररश्रम को सजममशलत कर शलया जाता ि◌ै। कुछ लोग धरती पर सीधे-लमबे ◌ेलेटे जाते ि◌ैं और पूरे माग वको लोट-लोट (करवट लेति◌ुए) कर पूण वकरते ि◌ैं। कुछ अन्य लोग दण्वित् ◌्प्रणाम करते ि◌ुए धीरे-धीरे पररक्रमा करते ि◌ैं। कुछ अन्य लोग एक पग के अत्यन्त साथ सटा कर दूसूरा पग रखति◌ुए समस्त माग वतय करति◌ैं। कुछ लोग अपना ि◌ी चक्र काटति◌ुए, आत्म-प्रदक्षक्षणा करते ि◌ुए समपूण वपररक्रमा करते ि◌ैं। यि सभी ढंग भतत लोग तपस्या के रूप में अथवा कोई-न-कोई मागी◌ी ि◌ुई मनौती को पूण वकरने के शलए अथवा कोई नयी कामना मन में रख कर करते ि◌ैं। आपकी मानशसक अवस्था, आपके लक्ष्य और आपकी भावना के अनुसार परम आध्याजत्मक लाभ की प्राजप्त ि◌ोती ि◌ै।।

हिमाच्छाहदत हिमालय में तनभीक यात्री कैलास पवतव की और उससेभी बढ़ कर मानसरोवर झील को भी साथ सजममशलत करते ि◌ुए और भी ववकट तथा दीघ वपररक्रमा करते ि◌ैं। अन्य यात्री समस्त उत्तराखण्ि की—केदार-बदरी यात्रा एक ओर से जा कर दूसूरी ओर से लौटते ि◌ुए (केदार, बदरी, गंगोत्री और यमुनोत्री) चारों धाम की पररक्रमा करते ि◌ैं।

सुदूरू दक्षक्षण में पावन भतत जन पववत्र अरुणाचल की ततरुवन्नामलाई में पररक्रमा करते ि◌ैं। राम भतत और कृष्ण प्रेमी जन श्रचत्रकूट पवतव, अयोध्या, ब्रज, वृनूदावन, गोवधनव और बदरीनाथ की पररक्रमा करते ि◌ैं।

पररक्रमा की गिन मित्ता इस तथ्य में तनहित ि◌ै कक भतत उस स्थान, पवतव अथवा तीथ वके स्थूल भौततक पक्ष को ि◌ी मित्त्व न दे कर जजस आध्याजत्मक ि◌जतत का वि प्रतीक ि◌ै, जजस हदव्य उपजस्थतत को वि अशभव्यतत करता ि◌ै, उसकी अनुभूतत करें। श्रीमद्भगवद्गीता के दिम अध्याय में भगवान् ◌्श्री कृष्ण द्वारा की गयी अशभव्यजतत सेआप जान सकते ि◌ैं कक स्थान-ववि◌ेष ककस प्रकार हदव्य उपजस्थतत से पररपूररत ि◌ैं। श्रद्धा और ववश्वास की दृढ़ भावना द्वारा आप इन पववत्र स्थानों में प्रवाहित ि◌ोनेवाले आध्याजत्मक • सभी को ि◌ुद्ध' स्पन्दनों के प्रवाि को पूणतवया ग्रिण करने में सक्षम बनें। ये ि◌जततिाली आध्याजत्मक तरंगें व्यजतत के भीतर प्रवि◌े करके उसके समस्त कि◌ों— स्थूल और सूक्ष्म, पववत्र करती ि◌ुईं समस्त कुवासनाओं और कुसंस्कारों को समाप्त कर देती ि◌ैं। तमस् ◌्और रजस् ◌्क्षीण ि◌ो जाते ि◌ैं। सत्त्व का सघन प्रभाव सुप्त आध्याजत्मक प्रववृत्तयों को जाग्रत कर देता ि◌ै। पररक्रमा के द्वारा भतत उस पावन स्थान को ओत-प्रोत करनेवाले हदव्य वातावरण का पान करता ि◌ै और साजत्त्वक तरंगों से भरपूर ि◌ो कर आता ि◌ै। पररक्रमा करने की यिी आन्तररक कायाजवन्वतत और मित्ता ि◌ै।

अत्यन्त िुद्श्रधकारक िोनेके कारण सभी भतत तपश्चया वके रूप में इसका आनन्द प्राप्त करते िैं। यि मिान् ्आध्याजत्मक लाभ िै और धाशमकव पुण्य काय वभी िै। भतत स्नान करता िै, िुद्ध वस्त्र धारण करता िै, मस्तक पर ततलक अथवा ववभूतत लगाता िै, तुलसी या रुिाक्ष की माला पिनता िै और भगवन्नाम स्मरण करता िुआ पररक्रमा आरमभ करता िै। पररक्रमा के माग वमें वर्िंरिने वाले साधु–संन्यासशयों का बिुमूल्य सत्संग उपलब्ध िो जाता िै। पावन नहदयों, तालों (तालाबों) अथवा कुओंमें (बड़ी पररक्रमाओं के समय) स्नान करने से आपके पाप नष्ट िो जाते िैं। पररक्रमा माग वमें जस्थत पववत्र मजन्दरों के दिनवों द्वारा आपका मन उन्नत िो जाता िै और आप धन्य िो जातिैं। गरमी, िीत, वषा,व धूप और असुववधाओं को सिन करने से आपमें धैय वऔर सिन-िीलता का ववकास िोता िै। कहठन पररक्रमाएं ँकरने से आप बिुत-सी ऐसी वस्तुओं का भी त्याग कर देते िैं जजनके साथ आपके मन को राग िै। आपका मन अन्य सभी प्रकार के ववचारों से मुतत िो कर केवल एक हदव्य उपजस्थतत को अनुभव करने में एकाग्र िो जाता िै। अत्यन्त श्रद्धापूवकव की गयी पररक्रमा के द्वारा एक िी काय वसे िरीर, मन और आत्मा — तीनों को उन्नत करने वाली त्रत्रववध साधना िो जाती िै। तीथ-वस्थानों और मजन्दरों की आध्याजत्मक तरंगें आपकी तुच्छ आसुरी वृवृत्तयों को िुद्ध करके आपको सत्त्व और िुद्धता से पररपूररत कर देती िैं। आपको सत्संग खोजने की आवश्यकता निींरिती। मिापुरुष स्वयमेव आपके पास स्वेच्छा से चलेआते िैं, वि सदैव सच्चे गमभीर साधकों की खोज में रिते िैं। इसीशलए वि बदरी, केदार, कैलास, िररद्वार, वृन्दावन, मथुरा इत्याहद जैसे ेपावन स्थलों में तनवास करते िैं।

धन्य िी िैं वे लोग, जो पररक्रमा में सजममशलत िोते िैं; तयोंकक वि िीघ्र िी िाजन्त, आनन्द और मोक्ष प्राप्त कर लेंगे!े अयोध्या के भगवान् ्श्री राम की जय िो! घट-घट वासी श्री कृष्ण की जय िो, जजनका वविेष तनवास-स्थान वृन्दावन िै! भततों की जय िो! आप सबको उनके आिीवादव प्राप्त िों!

वास्तववकपुष्पऔरआरती

मजन्दर का गुमबद ब्रह्मरन्ध्र का प्रतीक िै। बशलपीठ नाशभ अथवा मखणपूर चक्र का सूचक िै। नन्दी आज्ञा चक्र को अशभव्यतत करता िै। ध्वज स्तमभ मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक जाने वाली सुषुमना नाड़ी का प्रतीक िै।

हदग्देवता का तनवास कानों में िै। वायु त्वचा में, सूय वनेत्रों में, वरुण जजह्वा में, अजश्वन नाशसका में, ववष्णु ु चरणों में, इन्द्र िाथों में, अजग्न वाणी में, प्रजापतत जननेजन्द्रय में, यम गुदा में, सूत्रात्मा प्राण में, हिरण्यगभ व अन्तिःकरण में, चन्द्र मन में, ब्रह्मा बुद्श्रध में, रुि अिंकार में, शिव श्रचत्त में, सरस्वती जजह्वाग्र में, पावतवी अनाित चक्र में, लक्ष्मी मखणपूर चक्र में, गणेि मूलाधार में और सजच्चदानन्द ब्रह्म का तनवास शसर के िीष वस्थान ब्रह्मरन्ध्र में िै।

सत्य, अहिंसा, तपस्,् दया, प्रेम, आत्म-संयम, सन्तोष, क्षमा, ज्ञान, समदृजष्ट और िाजन्त पूजा के वास्तववक फूल ैं। समस्त नाद अशभषेके के जल िैं। िुभ कम वधूप-दिनव िै। वेदोन्त पीतामबर िै। ज्ञान और योग कुण्लि िैं। तपस् ्और ध्यान दीपक िैं। जप चाँवर िै। अनिात संगीत िै। कीतनव छत्र िै। प्राणायाम पंखा िै।

तत्त्व भगवान् ्के सेवक िैं। ज्ञानि–जतत देवी िै। आगम सेनापतत िै। अष्ट शसद्श्रधया ाँभगवान् ्की द्वारपाल िैं। तुरीय भस्म िै। वेद नन्दी बैल िै। गुण त्रत्रिूल के सूचक पंचांक्षर यज्ञोपवीत िै। िुद्ध जीव आभूषण ैं। वृवृत्तया ाँपूजोपकरण िै। पंचभूत और पंचंतन्मात्राए ाँभगवान् ्की रुिाक्षमालाए ाँिै। अिकार बाघछाल का सूचक ैं। िैं।

कक्रया–जतत और िुभ कम वभगवान् ्को समवपतव धूप-अगरु िैं। ज्ञान की उत्पादक श्रचत्–िजतत भी धूप ैं। अिभाव और मन को भगवान के चरण-कमलों में समवपतव करना िी सच्चा नैवेद्य िै। जजस प्रकार कपूरव अजग्न में घुल कर उसी में शमल जाता िै, ठीक इसी प्रकार सन्त का मन भी िववत िो जाता िै और जीवात्मा परमात्मा में लीन िो कर एक िो जाता िै। यिी वास्तववक कपूरव आरती िै।

अध्याय १०

वैविउपतनषद्

उपतनषदों के रुि

कुछ अज्ञानी लोग सोचते िैं कक रुि अपकारी देव िैंऔरववनाि करने वाले िैं। उनका ववश्वास िै कक रुि दण्ड् देनेवाले भगवान् िैं। ऐसा निींिै। रुि ऐसे देवता िै जो समृद्धि प्रदान करते िैं, कष्टों का तनवारण करते िैं। वि उपकारक देव िैं जो मंगल, सन्तान तथा पिु धन के प्रदाता िैं। वि वैभव प्रदाता िैं।

शिव अथवा रुि का अथ विै-वि जो दिुःख-ताप का िता विै। भव, िव,व पिुपतत, उग्र, मिादेव, ईिान रुि के िी नाम िैं। पिुपतत का अथ विै— पिुओं का रक्षक।

वेदों में आपको इस प्रकार की प्राथनवाए ँशमलेंगी जैसे— "िे रुि ! िमारी सन्तान वृद्धि िो!" "िे रुि! आप सवोपरर िैं, आप सबसे बढ़ कर िजततिाली िैं, िे वज्रधारी आप िमारी रक्षा करें, िमें कष्टों से पार उतारें, िमारी ववपदाओं को दूरू करें!" "िमारे द्वारा िुए पापों से िमें मुतत करें!" अतिः रुि भयकारी भगवान् निींिैं, प्रत्युत मंगल और समृद्धि दाता िैं। समस्त ववश्व के विी एकमात्र ईश्वर िैं।

रुि रमते साधुओं के आदि विैं; तयोंकक धमग्रवन्थों में सभी देवी-देवताओंमें से केवल एक रुि को िी शभक्षुक-देवता किा गया िै। ऋग्वेद की स्तुततयों में आपको कमण्डिु को धारण करने वाला किा गया िै।

श्वेताश्वतर उपतनषद् के तृतीय अध्याय में आता िै- "केवल एक रुि अपनी िजततयों द्वारा समस्त लोकों पर िासन करते िैं। वि एकमेव अद्ववतीय िैं, उनके अततररतत अन्य कोई िै िी निीं। वि समस्त प्राणी मात्र के हृदयों में जस्थत िैं। वि समस्त लोकों का सृजन करते िैं, उनका पालन करते िैं और अन्ततिः अपनेमें िी लय कर लेतिैं।"
रुि यिा ँपरब्रह्म, अनन्त, पररपूण वपरम सत्ता के प्रतीक िैं।

* एको हि रुिो न द्ववतीयाय तस्थिुः (श्वेता. ३/२)

रुि समस्त वस्तु-पदाथों की रचना करने के पश्चात् ्अन्त में अथात्   व ्मिाप्रलय के समय सबको अपने में लिय कर लेतेिैं।

रुि भगवान् ्शिव का संिारकारी पक्ष िै। ब्रह्माण्डीय क्रम-परमपरा में एकादि रुि िैं। गूढाथों में प्राण (अथवा दि इजन्द्रयाँ) और मन िी एकादि रुिों के सूचक िैं। श्री िनुमान् ्भी रुि के िी अवतार िैं।

शिवपुराण में रुि शिव का िी अन्य नाम िै। रुि वि िै जो पापों का ववनाि करके अपनेभततों के कष्टों को दूरू करते िेतथा उन पर ज्ञान और आनन्द की वृजृष्ट करते िैं। रुि समस्त प्राणी मात्र के अन्तयामवी िैं। वि मूक ष्टा िो कर मानव के कायों और ववचारों को देखते रिते िैंऔर उनके कमों के अनुसार फल देते िैं।

"वि भगवान् ्जजनके सवत्रव िी नेत्र िैं, सब ओर मुख, िाथ और पैर िैं, वि अपनेिाथों और पंखों से धरती और स्वग व की रचना करते िैं।"

िे रुि, देवों के स्रष्टा और पालक, मिान् ्िष्टा, देवाश्रधदेव, हिरण्यगभ वके भी रश्रचयता िैं! िमें िुभ ववचार (िुद्ध-बुद्श्रध) प्रदान करें! "िे रुि! आपका स्वरूप जो कक मंगलमय िै, भयंकर निीं िै, आप अपनेउसी कल्याणकारी आनन्दप्रद स्वरूप से िमें दिनव दें! िे पवतवों के तनवासी प्रभु, िमें अपनेमंगलमय दिनव दें!"

रुिाक्ष जाबाल उपतनषद्

रिर ॐ! श्री रुिाक्ष जाबाल उपतनषद् द्वारा जाना जानेवाले श्री मिारुि के परम प्रकािमय परम िान्त स्वरूप को प्रणाम िै!

भुिुण्ड नेश्री भगवान् ्कालाजग्नरुि से प्रश्न ककया कक रुिाक्ष के दानों की उत्पवत्त कैसे िुई? उन्िें िरीर पर धारण करने से तया फल िोता िै?

भगवान् ्कालाजग्नरुि ने इस प्रकार उत्तर हदया- "त्रत्रपुर असुर के संिार िेतु मनैं नेत्र बन्द कर शलये। इस प्रकार मेरे नेत्र बन्द िोनेपर जल की बूदेँ पृथ्वी पर श्रगरीं। इस अश्रु-जल-कणो से रुिाक्ष की उत्पवत्त िुई।'

'रुिाक्ष' िब्द मुख से उच्चररत करने से दि गायो के दान करने के समान पुण्य-लाभ प्राप्त िोता िै। इसको देखनेऔर स्पि वकरने मात्र से इससे द्ववगुखणत फल की प्राजप्त िोती िै। इसकी महिमा का म ैंवणनव निीं ं कर सकता। म ैंमन को संयम में रख कर िजारों हदव्य वषों तक घोर तपस्या में लगा रिा। मेरे नेत्र बन्द थे। तब मेरी आखाँों के कुछ जल-त्रबन्दु ुश्रगरे और भततों पर अनुग्रि करने के शलए वे अश्रु-त्रबन्दु ुस्थावर भाव को प्राप्त िो गये।

यि रुिाक्ष पिनने से हदन अथवा रात में ककये गये समस्त पाप-समूिों का नाि िो जाता िै।

रुाक्ष के दिनव मात्र से मान लें कक एक लाख गुणा लाभ िोगा। ककन्तु इसे ेधारण करने से यि लाभ एक करोड़ गुणा िो जायेगा। करोड़ िी तयों, यि ित करोड़ गुणा िो जायेगा।

ककन्तु जब व्यजतत रुाक्ष को िर समय धारण ककये रिे और रुाक्ष की माला से जप करे, तो वि जप सिस्र लाख करोड़ तथा सौ लाख करोड़ गुणा अश्रधक िजततिाली तथा फलदायी िो जायेगा।
रुाक्षों में, जो आवाँलेके फल के बराबर िो, वि श्रेष्ठ माना जाता िै। जो बेर के फल के बराबर िो, वि मध्यम श्रेणी का कि गया िै। जो चने ेके बराबर िो, उसकी गणना तनमन कोहट में की गयी िै।

वणाश्रवम में चार प्रकार के जो ब्राह्मण, क्षत्रत्रय, वैश्व और ििू जातत के िो कर उत्पन्न िुए िैं, वे तो व्यथ व िी धिरती पर भार स्वरूप िी िैं। वास्तववक ब्राह्मण तो श्वेत वण वके रुाक्ष िैं। रतत वण वका रुाक्ष क्षत्रत्रय, पीत वण वका वैश्य और श्याम वण वका ििू िै ।

अतिः ब्राह्मण जातत वाले श्वेत रुाक्ष, क्षत्रत्रय लाल रुाक्ष, वैश्ैय पीत तथा ििू को श्याम वण वका रुाक्ष धारण करना चाहिए।

समान आकार वाले, श्रचकने, मजबूत, स्थूल, कण्टक युतत (उभरे िुए छोटे-छोटे दानों वाले)े और सुन्दर रुाक्ष िी प्रयोग में लानेचाहिए। जजसेकीड़ों ने दूवूषत कर हदया िो, जो टूटा-फूटा िो, जो त्रबना कण्टक िो, जो व्रण युतत िो तथा जो पूरा गोल न िो, उसको त्याग देना चाहिए।

जजस रुाक्ष में अपने आप िी िोरा वपरोनेयोग्य तछि िो गया िो, वि उत्तम माना जाता िै। जजसमें मनुष्य ने प्रयत्नपूवकव तछि बनाया िो, वि तनमन श्रेणी का िै। उत्तम श्रेणी के रुाक्ष श्वेत धागे में वपरो लेनेचाहिए। शिव भतत को अपनेसमस्त िरीर में रुाक्ष धारण करने चाहिए। वि एक रुाक्ष चोटी में धारण करे, तीन सौ रुाक्ष शिर के चारों और माला बना कर लपेटे। छत्तीस गले में, सोलि प्रत्येक बाजू ूमें, बारि वक्ष पर और पाचाँ सौ कमर के इदव-श्रगदव लपेट लेनेचाहिए। एक सौ आठ दानों का यज्ञोपवीत बना कर उसे ेपिनना चाहिए। ग्रीवा में दो, तीन, पाचाँ अथवा सात रुाक्ष मालाए ाँधारण करनी चाहिए।

शिव भतत को शसर के चारों ओर, कानों में, ग्रीवा में, बािों में, पेट के चारों ओर, प्रत्येक समय, भले िी वि सो रिा िो या खा रिा िो, रुाक्ष धारण ककये रिना चाहिए।

यहद भतत तीन सौ रुाक्ष धारण करता िै तो वि न्यूनतम फलदायी िै, यहद पाचाँ सौ पिनता िै तो मध्यम श्रेणी का िै; ककन्तु यहद एक सिस्र धारण करता िै, तो वि सवश्रेवष्ठ फलदायी िै।

जब भतत शसर पर रुिाक्ष धारण करे तो ईिान-मन्त्र से, कान में तत्पुरुष-मन्त्र से तथा गले ेऔर हृदय में अघोर-मन्त्र से रुिाक्ष धारण करने चाहिए। दोनों िाथों में तथा अघोर-बीज-मन्त्र से रुिाक्ष धारण करे।

तब भुिण्ड ने पुनिः प्रश्न ककया कक रुिाक्ष के दानों के तया भेद िैं और उनका तया व कैसा प्रभाव िै ?
कृपया मुझे ेइन कल्याणकारी रुिाक्षों के रिस्य, उनके ववशभन्न मुखों तथा सबका तया-तया फल िै, यि भी बताय।ें

भगवान् ्कालाजग्नरुि ने बताया कक एकमुखी रुिाक्ष साक्षात् ्शिव का स्वरूप िै। संयंशमत व्यजतत (जजसने अपनी इजन्ियों को तनयन्त्रण में कर शलया िो) यहद इसे ेधारण कर ले, तो वि परम सत्ता के साथ एक िो जाता िै। (रुिाक्ष के ववशभन्न मुखों के अनुसार उनके द्वारा प्राप्त फल की सूची तनमनांककत िै।)

मुख	**सवरूप**	**फल**
१	परम सत्य	मोक्ष-प्राजप्त
२	अधनवारीश्वर	अधनवारीश्वर की कृपा की प्राजप्त
३	त्रेताजग्न	अजग्नदेव की कृपा
४	ब्रह्मा	ब्रह्मा का आिीवादव
५	पंच ब्रह्मा	नरित्या के पाप से मुजतत
६	काततकेवय अथवा गणेि	श्रचत्त िुद्श्रध और ज्ञान की प्राजप्त
७	सप्तमल	उत्तम स्वास्थ्य और धन की प्राजप्त
८	अष्टवसु, अष्ट मात्रा या गंगा	इन देवताओंकी कृपा तथा सत्य-प्राजप्त
९	नवदजतत	नवदजततयों की उपलजब्ध
१०	यम	िाजन्त की प्राजप्त
११	एकादि रुि	सब प्रकार की धन-समपदा की प्राजप्त
१२	मिाववष्णु ुया द्वादि आहदत्य	मोक्ष-प्राजप्त
१३	कामदेव	समस्त इच्छाओंकी पूतत,व कामदेव की कृपा
१४	रुि	समस्त रोगों का नाि

रुिाक्षधारी मनुष्य अपने खान-पान में मंहदरा, मांस, लिसुन, प्याज, गाजर इत्याहद वजजतव पदाथों को त्याग दे। ग्रिण, ववषु संक्रांजन्त (मीन के अन्त तथा मेष के प्रारमभ का काल), अमावास्या, पूखणमवा तथा अन्य िुभ हदनों में रुिाक्ष धारण करने से व्यजतत समस्त पाप-तापों से मुतत िो जाता िै।

रुिाक्ष का मूल तो ब्रह्मा, नाशभ ववष्णु, इसका मुख रुि तथा इसका तछि समस्त देवता किे गये िैं।

एक हदन सनत्कुमार ने कालाजग्नरुि से पूछा - "भगवन्!् कृपया मुझे ेबतायें कक रुिाक्ष धारण करने के तया तनयम िैं?" उसी समय तनदघ, जड़भरत, दत्तात्रेय, कात्यायन, भारद्वाज, कवपल, वशसष्ठ, वपप्पलाद इत्याहद भी कालाजग्नरुि के पास आ गये। तब भगवान् ्कालाजग्नरुि ने उनके एकत्रत्रत िो कर आनेका कारण जानना चािा। उन्िोंनेकिा कक वि सब रुिाक्ष धारण करने की ववश्रध जाननेकी इच्छा से आये िैं।

तब कालाजग्नरुि ने बताया कक जो रुि के अक्ष (नेत्रों) से उत्पन्न िुए िैं, वि रुिाक्ष किलाते िैं। यहद इन रुिाक्षों को एक बार िाथ से स्पिव भी कर शलया जाये, तो दो सिस्र गायेंएक-साथ दान कर देनेजजतने फल की प्राजप्त िोती िै। यहद इन्िें कान में पिना जाये, तो एकादि सिस्र गाय दान के समान फलदायी िै। उसे ेएकादि रुिों की अवस्था की प्राजप्त िोती िै। यहद उन्िें शिसर पर धारण ककया जाये, तो उसे ेकरोड़ गोदान करने का फल प्राप्त िोता िै। अश्रधक तया किूँ, इन सब अंगों से बढ़ कर कानों में रुिाक्ष धारण करने का फल वणनवातीत िै।

जो भी इस रुिाक्ष जाबाल उपतनषद् का अध्ययन करता िै, वि भले िी बालक िो अथवा युवक िो, मिान् िो जाता िै। वि समस्त मन्त्रों के ज्ञाता शिक्षकों का भी गुरु बन जाता िै। उपतनषद् के इन मन्त्रों सहित िवन तथा अचनवा करनी चाहिए।

जो ब्राह्मण सन्ध्याकाल में इस उपतनषद् के मन्त्रों का उच्चारण करता िै, उसके हदन-भर में ककये गये पाप नष्ट िो जाते िैं; जो मध्याह्न (दोपिर) में उच्चारण करता िै, उसके छि जन्मों के पाप नष्ट िो जाते िैं, जो प्रातः सायं इसके मन्त्रों का उच्चारण करता िै, वि जन्म-जन्मान्तर के पापों से छूट जाता िै। उसे ेछि सिस्र लाख गायत्री जप का फल प्राप्त िो जाता िै।

वि ब्रह्म–ित्या, महदरा-पान, स्वण-वचोरी, गुरुपत्नी से संभोग, पापी के संग वातालवाप इत्याहद जैसे े मिापातकों से मुतत िो कर िुद्ध-पववत्र िो जाता िै।

उसे ेसमस्त तीथाटवन, समस्त पावन नहदयों के स्नान का पुण्य-लाभ िोता िै। उसे ेशिव सायुज्य की प्राजप्त िोती िै तथा उसका पुनजन्वम निींिोता।'

भस्म जाबाल उपतनषद्

म ेंकेवल वि परम ब्रह्म िूँ, जजसको अपने(आत्मा के साथ एकरूप िोनेके) सिी अथों में जान शलये जाने पर, संसार को सत्य समझने का तथा स्वयं से शभन्न िोनेका अज्ञान (भ्राजन्त या माया) परम ज्ञान की ववनािकारी अजग्न में जल कर भस्मीभूत िो जाता िै।

एक बार जाबाशल के पुत्र भुिण्ु कैलास पवतव पर गये और उन्िोंनेभगवान् ्मिादेव शिव जो ॐ कार स्वरूप िैं और जो ब्रह्मा, ववष्णु और रुि त्रत्रयेक परमेश्वर से अतीत िैं—के समक्ष दण्वित् ्प्रणाम ककया।

भिुण् ने भगवान् ् शिव की अत्यश्रधक श्रद्धापूवकव बारमबार फल, फूल और त्रबल्व पत्रों से पूजा की। तब उन्र्िनेभगवान् ्से प्रश्न ककया- "प्रभु! कृपया मुझे ेभस्म - धारण की ववश्रध से समबजन्धत समस्त वेदों का ज्ञान प्रदान कीजजए; तयोंकक मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र यिी उपाय ि ै। भस्म ककस वस्तु की बनी िुई ि ै? इसको किा ाँ
धारण ककया जाना चाहिए? कौन-सेमन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए ? कौन व्यजतत इसके उपयुतत ि ैं? इससे समबजन्धत तनयम तया-तया ि ैं? िीन जातत से उत्पन्न मुझे ेकृपया उपदिे करें।"
दयातनधान परमेश्वर ने किा- "सव वप्रथम भतत देवताओंके प्रभाव को ध्यान में िुए उश्रचत मुिूत वदेख कर प्रातिः काल िुद्ध पववत्र गोबर ले कर आये, इसे ेपलिा वृक्ष रखते ेके पत्ते पर रख कर वैहैदक मन्त्रों 'त्र्यमबकम्' ् इत्याहद के साथ धूप में सुखाये।

तब गाय के सूखे गोबर को ककसी सुववधाजनक िुद्ध स्थान में रख कर, गृह्य-सूत्र-वखणतव अपने वणाश्रवम के अनुकूल तनयमों के अनुसार ककसी भी अजग्न से जलाना चाहिए। उसके पश्चात् ्'सोमाय स्विाा' मन्त्रोच्चारण करते िुए घी, जौ और ततल की आिुततयााँ ालिनी चाहिए। कुल एक सिस्र आठ आिुततया ाँअथवा समभव िो, तो इससे िेढ़ गुणा अश्रधक िाले े। आिुतत िालने के शलए पत्ते का स्रुव बनाये; ऐसा करने से व्यजतत से कोई पाप निीं िोता।

तब अन्त में पूणािुवतत के समय 'त्र्यमबकम्' ् इत्याहद मन्त्र के साथ श्वेश्तकृत की आिुतत िालनी चाहिए। उसी मन्त्र के साथ अष्ट हदिाओं (अजग्न की) बशल अवपतव करनी चाहिए। तब भतत को अत्यन्त श्रद्धापूवकव ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए।

तभी वि पववत्र िोता ि ै। तत्पश्चात् ्उसे ेपात्र में से पंचं-ब्रह्म-मन्त्रों 'मानस्तोक' 'सद्योजातम्' ् इत्याहद के द्वारा इस भावना के साथ कक अजग्न भस्म ि ै, वायु भस्म ि ै, जल भस्म ि ै, आकाि भस्म ि ै, देवता भस्म ि ै, ऋवष भस्म ि ै, यि समस्त ववश्व और वस्तु-पदाथ वभस्म ि ैं; वि समस्त पापों को नष्ट करके पववत्र कर देने वाली भस्म के समक्ष प्रणाम करे।

इसके उपरान्त भतत पववत्र ककये िुए बाय ें िाथ के साथ 'वामदेवाय' (यि वामदेव के शलए ि ै) किते िुए 'त्र्यमबकम्' ् इत्याहद मन्त्रों के साथ तछड़क दे, कफर 'िुद्ध िुद्धेना' इत्याहद मन्त्र के साथ स्वच्छ करने के शलए इसे ेभली-भाताँत छान ले। तब उसे ेशसर सेपैर तक पाचाँ ब्रह्म-मन्त्रों सहित धूलन (मदवन या लेपन) कर लेना चाहिए। प्रथम, मध्यमा और अनाशमका से, उसे े'शसर के शलए' तथा 'ि े भस्म! तुम अजग्न में से िो' किते िुए शसर पर धारण कर लेना चाहिए।

भसम धारण करने के अंग	**मन्त्**
१. मस्तक	त्र्यमबकम् ्इत्याहद
२. ग्रीवा	नीलग्रीवाय इत्याहद

३. ग्रीवा की दाहिनी ओर	त्र्ययुिाम इत्याहद
४. दोनों कपोल	वाम इत्याहद
५. दोनों नेत्र	कालाय इत्याहद
६. दोनों कान	त्रत्रलोचनाय इत्याहद
७. चिेरा	श्री नवम् ् इत्याहद
८. वक्ष	प्रवरावाम इत्याहद
९. नाशभ	आत्माने इत्याहद
१०. दाहिनेकन्धे के नीचे े	नाशभिः इत्याहद
११. दाहिनेकन्धे के मध्य में	भवाय इत्याहद
१२. वक्ष के दाहिनी ओर	रुिाय इत्याहद
१३. दाहिनी भुजा के पीछे	वियव इत्याहद
१४. बाय ेंकन्धे के नीचे	पुिपतये इत्याहद
१५. बाय ेंकन्धे के मध्य	उग्राय इत्याहद
१६. बायीं ं भुजा के मध्य	अग्रेवधाय इत्याहद
१७. बायीं ंभुजा के पीछे	दूरेवधाय इत्याहद
१८. कााँखे ेया बगलें	नमो िन्त्रेइत्याहद
१९. समस्त अंग	कििाय इत्याहद

इसके उपरान्त भतत भगवान् ्शिव के समक्ष 'सोमाय' इत्याहद मन्त्र सहित प्रणाम करे। वि िाथ प्रक्षालन करे और जल शमश्रश्रत भस्म को 'आपिः पुनन्तु' इत्याहद मन्त्र सहित पान करे। ककसी भी कारण से उस भस्म शमश्रश्रत जल को श्रगराये निीं।

इस प्रकार यि भस्म धारण का ववश्रधपूवकव प्रातिः, दोपिर और सायं काल तीन बार अभ्यास करना चाहिए। ऐसा न करने से उसका पतन िो जायेगा। सभी ब्राह्मणों के शलए यिी ववधान िै। भस्म धारण ककये त्रबना, ऐसा ककये त्रबना वि जल तक ग्रिण न करे। यहद ककसी कारणवि ऐसा करने में भूल िो जाये, तो वि गायत्री जप भी उस हदन न करें, कोई यज्ञ न करे; देवताओं, ऋवषयों अथवा वपतरों को तपणव न करे। यि िाश्वत धम वै, जो पापों का निाक तथा मोक्ष प्रदान करने वाला िै।

ब्राह्मणों, ब्रह्मचाररयों, गृिस्थों, वानप्रजस्थयों और संन्याशसयों—सभी के शलए यिी तनत्य कक्रया का ववधान िै। इसमें यहद एक बार भी प्रमादवि भूल िो जाये, तो उसे ेकण्ठ तक जल में खड़ी कर १०८ गायत्री जप करना तथा उपवास करना चाहिए। यहद संन्यासी से भस्म-धारण एक हदन भी छूट जाये, तो उसे ेहदन-भर उपवास तथा एक सिस्र प्रणव जप करके िुद्श्रधकरण करना चाहिए। अन्यथा, भगवान् ्ऐसेसंन्यासी को कुत्तों और भेडड़यों के आगे ेफेंक देंगे।

यहद इस प्रकार की भस्म उपलब्ध न ि ो सके, तो कोई भी सुववधानुसार प्राप्त ि ो सकने वाली भस्म, तनधारवरत मन्त्रोच्चारणपूवकव धारण करें। ऐसा करने से सभी प्रकार पापों का नाि ि ो जाता ि ै। के

तब भिुण्ड ने पुनिः प्रश्न ककया- "ब्राह्मण के शलए अन्य कौन-से ऐसेतनत्य कम वकरने का ववधान ि ै, जजनके न करने पर उन्ि ें पाप का भागी ि ोना पड़ता ि ै? तब उन्ि ें ककसका ध्यान करना चाहिए? ककसेस्मरण करना चाहिए? ध्यान-ववश्रध तया ि ै? इसे ि ेकि ा ाँकरना चाहिए? कृपा करके मुझे ि ेववस्तार से कि ें!"

भगवान् ् ने संक्षेप में उत्तर हदया कक सवप्रवथम भतत को प्रातिः सूयोदय से पूव वनि द्रा त्याग देनी चाहिए। तनत्य कम,व ि ुद्श्रधकरण - कमों के पश्चात् ् उसेस्नान करना चाहिए। रुिसूतत पाठ सहित वि ि रीर ि ुद्श्रध करे। तब वि ि ुद्ध धुले वस्त्र धारण करे। इसके पश्चात् ् सूयदेवव का ध्यान करे तथा सभी तनधारवरत अंगों पर भस्म धारण करे। तब वि बताये गये तनयमानुसार श्वेत रुिाक्ष धारण करे। भस्म धारण करने के शलए तनमनांककत तनयम भी बताये गये ि ैं :

अंग	संख्या (रेखाओं ंकी)
१. शसर	४0
२. वक्ष	१ या ३
३. कान	११
४. ग्रीवा	३२
५. बाि ो	१६ प्रत्येक पर
६. कण्ठ	१२ दोनों ओर
७. अंगुष्ठ	६ प्रत्येक पर

इसके उपरान्त भतत ि ाथ में कुि ा ले कर सन्ध्या-वन्दन करे। उसे ि ेशिव-षिक्षर अथवा शिव अष्टाक्षर का जप करना चाहिए। **'ॐ नमः शिवाय'** तथा **'ॐ नमो महादेवाय'** दो मन्त्र ि ैं। यि परम सत्य और सवोच्च उपदेि ि ै। म ैंि ी देवाश्रधदेव, मिादेव भगवान् ् शिव ि ूाँ, जो समस्त लोक-लोकान्तरों का तनयन्ता ि ूाँ। म ैंि ी अव्यतत परम

ब्रह्म ि ूाँ, म ैं ॐकार ि ूाँ। म ैंि ी सबका स्रष्टा, पालनकता वऔर संिारकिताि ूाँ। मेरे ि ी भय से समस्त काय वतनयमानुसार चल रि े ि ैं। म ैंि ी यि जगत् ् ि ूाँ और इसके पंचमिाभूत ि ूाँ। म ैंि ी परम सत्य, परम सत्ता ि ूाँ। उपतनषदों का ब्रह्म म ैंि ी ि ूाँ। यि परम ववद्या ि ै।

मोक्ष का प्रदाता केवल म ैंि ी ि ूाँ। अतिः सभी लोग अजन्तम सियता के शलए मेरे ि ी पास आते ि ैं। यिी कारण ि ै कक जो मेरे त्रत्रिूल के ऊपर जस्थत कािी-वाराणसी में प्राण तजते ि ैं, उन्ि ें म ैंअपने स्वरूप में ि ी लय कर लेता ि ूाँ। इसशलए सबको वाराणसी में ि ी तप करना चाहिए। ककसी भी कारण से वाराणसी की उपेक्षा नि ीं करनी चाहिए। सबको जि ा ाँतक समभव ि ो, कािी में ि ी तनवास करने का प्रयत्न करना चाहिए। कािी से उत्तम कोई स्थान नि ीं ि ै।

वाराणसी में भी सवोत्तम पावन स्थल शिव मजन्दर ि ै, जिा ाँपूव वहदिा में धन का तनवास ि ै, दक्षक्षण में ववचार का वास ि ै, पजश्चम में वैराग्य तनवास करता ि ै तथा उत्तर ज्ञान ववद्यमान ि ै। वािाँइन सबके मध्य स्थान में मुझ परमात्मा की पूजा की जानी चाहिए। में वाराणसी – किाी का वि शलंगं सूय,व चन्द्मिा अथवा शसतारों द्वारा प्रकाशित निीं। उस स्वयं-प्रकाशित, 'स्वयमभू' शलंगं–'ववश्वेश्वर' का मूल पाताल में ि ै। वि म ैंिू ाँ। मेरी पूजा उसी के द्वारा की जानी चाहिए। जजसनेउपरोतत ववश्रध से भस्म और रुिाक्ष धारण ककये िुए िों, म ैंउसे ेसमस्त पाप-ताप से मुतत कर दूाँगा।

मेरा अशभषेक करने से वि मेरी सायुज्य अवस्था को प्राप्त िो जाता ि ै। मेरे अततररतत अन्य ककसी का अजस्तत्व निीं। म ैंसबको तारक मन्त्र सेदीक्षक्षत करता िू ाँ। जो मोक्ष के आकांक्षी ि ैं, उन्िें वाराणसी में तनवास करना चाहिए। म ैंउनके हित की रक्षा करता िू ाँ। म ैंब्रह्मा, ववष्णु ुऔर रुि – तीनों का प्रभु िू ाँ। जो भी नर-नारी वाराणसी में दिे त्यागेंगे, े भले िी वे ककतने भी दुराचारी तयों न िों, मोक्ष प्राप्त करेंगे। अन्य पापात्मा मृतूयु के पश्चात् ्प्रज्वशलत अजग्न कुण्डों में जलाये जायगें। अतिः प्रत्येक भतत को वाराणसी में िी तनवास करना चाहिए, जो कक मेरा प्राण शलंगं ि ै।

त्रत्रपुरतावपनी उपतनषद्

म ैंपरम सत्य की स्तुतत करता िू ाँ जो कक परम ज्ञान ि ै, उसे ेत्रत्रपुरतावपनी उपतनषद् की ववद्या द्वारा जाना जा सकता ि ै।

भगवान् ्ने भयंकर ववनिाकारी मिाकाल का रूप ले कर तीनों लोकों भूिः भुविः और स्विः को आच्छाहदत कर शलया। तब उन्िोंनेआहदजतत को प्रकट ककया, अथात्व ्आहदजतत उनके हृदय में से प्रकट िुई। यिी िजतत ि ै जो शिव माया नाम से जानी जाती ि ै और इसका बीज अक्षर 'ह्रीं' ि ै। तब समस्त जगत् ्इस िजतत द्वारा आच्छाहदत िो गया। तयोंकक उसनेतीनों लोकों अथवा पुरों को आच्छाहदत कर शलया, अतिः वि 'त्रत्रपुरा' किलायी ।

यि त्रत्रपुरा िजतत में श्रीववद्या नामक ववद्या ि ै, जो तनमन वैहदक मन्त्रों द्वारा प्राप्त िो सकती ि ै :

तत्सववतुवरेधण्यं भगो देवसय धीमहह ।
र्धयो यो नः प्रचोदयात् ्। परो रजसे ेसावदोम् ्॥
जातवेदसेसुनवाम सोममरातीयतो ननदहानत वेदः ।

सनः पषदधनत दुगुाणधण ववश्वा नावेव शसन्धुं दुरुरतात्यन्नः ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगनन्धंपुनटिवधनधम् ्।

उवारुधकशमव बन्धनान्मृत्योमुक्षधीय मामृतात् ्॥

यि िताक्षरी (सौ अक्षरों वाली) परम ववद्या ि ै। यि परमेश्वरी, स्वयं त्रत्रपुरा ि ै।

उपयुतवत मन्त्रों में प्रथम चार श्लोकों में परब्रह्म की महिमा का वणनव ि ै। द्ववतीय में िजतत की महिमा वखणतव ि ै। तृतीय में स्वयं भगवान् ्शिव की महिमा का वणनव ककया गया ि ै।

इस ववद्या में समस्त लोकों, समस्त वेदों, समपूण विास्त्रों, सभी पुराणों और समस्त धमों का वणनव ि ै तथा यि शिव और िजतत के योग से उद्भूत प्रकाि (ज्ञान) स्वरूप ि ै।..

अब िम इन पद्यांाि का अत्यन्त मित्त्वपूण वऔर गुह्य अथ वजाननेका प्रयास करेंगे। यिााँ'तत्'् िब्द से भाव स्वयं उस िाश्वत परब्रह्म सेि। यि उन भगवान् ्के शलए प्रतीक रूप से प्रयुतत िुआ ि ै जो समस्त पररभाषाओं और तकों सेपरे िैं। यि भगवान् ्स्वयं परावववद्या की साकार प्रततमा िैं, अथात्व ्वि चािते िैंकक वे परावववद्या के रूप में रिें। केवल वे िी मिाप्रभु शिव िैं जजनकी सन्त, योगी इत्याहद सभी यज्ञाहद द्वारा आकांक्षा रखते िैं। अतिः यि इच्छा की सृजृष्ट ि ै।

अतिः भगवान्,् जो कक समस्त इच्छाओंकी पिुाँच से परे िैं, तो भी स्वयं इच्छा करते िैं और सव-वइजच्छत भी िैं। भाषा की वणानुवक्रशमक सूची के स्रष्टा वे िी िैं। अतिः उन्िें'काम' अथवा कामना (इच्छा) किा जाता ि ै। काम को अशभव्यतत करने वाले अक्षर को 'क' किा गया ि ै, अतिः 'तत्'् िब्द 'क' अक्षर का प्रतीक ि ै। 'तत्'् िब्द का यि अथ वि ै।

'सववतिुः' संस्कृत के 'सुंज प्रातनपरासवे' े धातु से तनकला ि ै, जजसका अथ वि ै— सब प्राणी मात्र का रचतयता। वि मिान् ्िजतत ि ै। यि मिाजतत अथवा देवी त्रत्रपुरा मिाकुण्लिी (यन्त्र) में समाहित ि ै। अतिः अजग्न-गोलक (सूय वका) को जानना चाहिए। त्रत्रकोण की यि 'ई' िजतत अक्षर से अशभव्यतत िोती ि ै। अतिः िमें 'सववतिुः' ब्दि से अक्षर 'ई' जानना चाहिए।

"वरेण्यम्'् का अथ वि ै—पूजा करने योग्य, जो अनश्वर और प्रिंसा-स्तुतत करने योग्य िो । अतिः जान लेना चाहिए कक 'वरेण्यम्'् से अक्षर 'र' ले लेना चाहिए। अब 'भगो' और 'धीमहि' की व्याख्या की जायेगी। 'ध' अक्षर का अथ वि ै-धारणा अथवा एकाग्रता। भगवान् ्की धारणा सदैव 'धी' अथवा बुद्श्रध से की जाती ि ै। 'भग'व स्वयं भगवान् ्िैं, जजन्िें केवल चतुथ वअवस्था पर पिुाँचने पर िी अनुभव ककया जा सकता ि ै, और यिी वि परब्रह्म ि ै जो सवत्रव व्याप्त ि ै। इस चतुथ वअवस्था को अशभव्यतत करनेवाला अक्षर 'ई' ि ै और यिी मन्त्र के उपयुतवत िब्दों का अथ वि ै। अब िम 'महि' िब्द की व्याख्या करेंगे। 'महि' का अथ वि ै—मिानता, तनजष्क्रयता, िजतत, दृढ़ता; और यि

उस तत्त्व से समबजन्धत ि◌ै जजसमें ये गुण ि◌ैं। यि पृथ्वी ि◌ै जो 'ल' अक्षर से व्यतत ि◌ोती ि◌ै। यि परमोच्च अवस्था ि◌ै। अत: यि लकार पृथ्वी का गुण प्रततपाहदत करते ि◌ुए समस्त सागरों, वनों, पवतवों और सप्त द्वीपों का प्रतीक स्वरूप ि◌ै। अतिः देवी के रूप में पृथ्वी किलानेवाली यि 'महि' ि◌ब्द से जानी जाती ि◌ै।

अब 'श्रधयो यो निः प्रचोदयात्'◌् की व्याख्या करते ि◌ैं। 'परा' स्वयं अववनिाी शिव ि◌ैं, जो परमात्मा ि◌ैं। इसका तनहिताथ वइस प्रकार ि◌ै—में जड़ रूप लकार, अथवा ज्योततशलगिं, अथवा भगवान् ◌्शिव का ध्यान करना चाहिए, जो समस्त सत्ताधाररयों में परमोच्च ि◌ैं। यिा ◌ाँककसी भी प्रकार के ध्यान की इच्छा निीं ि◌ै। यि समस्त ध्यानों से अतीत अवस्था ि◌ै। अतिः ि◌म भगवान् ◌्से प्राथनवा करते ि◌ैं कक वि ि◌मारे मन को उस तनववकवल्प अवस्था की ओर उन्मुख करें, जिा ◌ाँपिुाँच कर समस्त श्रचन्तन समाप्त ि◌ो जाता ि◌ै। यि प्राथनवा मौखखक निींिोनी चाहिए। इसकी केवल मन में भावना करनी चाहिए।

अब ि◌ै - 'परो रजसेसावदोम्'◌् । परम सत्य के स्वरूप पर ध्यान करने के पश्चात् ◌्एक ि◌ुद्ध, आनन्दपूण,व ज्ञानपूण ववविाल प्रकाि उद्भूत ि◌ोगा, जजसका वास्तववक तनवास हृदय-गुिा में ि◌ै। समपूण वज्ञान और वाणी का यिी सार ि◌ै। यिी वास्तववक ि◌जतत ि◌ै। इसे ◌ेपंचाक्षर किते ि◌ैं, तयोंकक पंचभूतों का स्रष्टा यिी ि◌ै। ववविेकिील को यि भली-भाताँत जान लेना चाहिए।

यि ववद्या भतत के शलए सव वसुख प्रदातयनी ि◌ै। अतिः बत्तीस अक्षरों की इस ववद्या को भली-भाताँत जान लेनेके पश्चात् ◌्भतत को 'ि◌' अक्षर का श्रचन्तन करना चाहिए, जो शिव का स्वरूप , जो अववनिाी, तनत्यि्ुद्ध अवस्था ि◌ै। सूय वऔर चन्द्मा के योग से, अथात्व ◌्शिव और ि◌जतत के योग से उद्भूत यि अक्षर 'ि◌' 'ि◌ंस' ि◌ै। यि काम का बीज ि◌ै। इस ववद्या के द्वारा ि◌म परम ब्रह्म शिव का ज्ञान प्राप्त कर सकते ि◌ैं।

इस संयोजन को जीवात्मा के परमात्मा के साथ संयोग के रूप से भी जाना जाता ि◌ै। अतिः 'ि◌' से भाव िाश्वित अवस्था अथवा परम मोक्ष प्राजप्त सेभी ि◌ै।

यि श्रीववद्या की व्युत्पवत्त ि◌ै। जो इसे ◌ेजान लेता ि◌ै, वि रुि स्वरूप को प्राप्त ि◌ोता ि◌ै। वि ववष्णुलोक को भेद कर परब्रह्म तक पिुाँच जाता ि◌ै।

अब द्ववतीय मन्त्र आता ि◌ै। यि मन्त्र त्रत्रपुरादेवी की महिमा का वणनव करता ि◌ै।

'जात' ि◌ब्द का अथ वि◌ै भगवान् ◌्शिव। जजसने'वण-वमात्रत्रका' के प्रथम अक्षरों को उत्पन्न ककया, जो ॐ कार में त्रबन्दु ◌ुरूप सि◌ै, वि 'जात' किा जाता ि◌ै। अथवा इस प्रकार भी किा जा सकता ि◌ै कक जजसनेउत्पन्न ि◌ोते ◌े िी काम पूतत वकी इच्छा की उसे ◌े'जात' किा जाता ि◌ै। इस प्रकार देवी त्रत्रपुरा की ववद्या उसी प्रकार मन्त्र के ववशभन्न ि◌ब्दों की (मन्त्रिास्त्र के अनुसार) ववभजतत करके भली-भाताँत समझनी चाहिए। तब इस मन्त्र से सब प्रकार की रक्षा प्राप्त ि◌ो सकती ि◌ै। इसमें सवप्रवथम जानने योग्य यि ि◌ै कक 'जात' एकमेव प्रकाि स्वरूप परमात्मा िी। त्रत्रपुरा से समबजन्धत समस्त ववद्याओंका मूल आधार यिी मानना चाहिए। यिााँ यि भी जानना चाहिए कक

अक्षर 'स' िजतत का प्रतीक ि ै और अक्षर 'सोमम्'् शिव की अवस्था का द्योतक ि ै। जो यि जान लेता ि ै, उसे े यि और नाम की प्राजप्त िोती ि ै।

अत: यि ववद्या, जजसमें त्रत्रपुरादेवी का सदैव तनवास ि ै, को समस्त ववद्याओं का मूलाधार जानना चाहिए और भतत को सदैव इस ववद्या का स्वाध्याय और पाठ करना चाहिए। यि शिव और िजतत की िजततयों की द्योतक ि ै। इसे े स्वयं श्री त्रत्रपुरामबा की भुजा किा गया ि ै। यिी ववद्या जब ध्यान के शलए प्रयोग की जाती ि ै, तो 'सवतवोश्रधरा' किी जाती ि ै।

त्रत्रपुरा का यि श्री ववद्या चक्र समस्त चक्रों का सम्राट् ि ै। यि व्यजतत को अभीष्ट फल प्रदान करता ि ै। इसकी उपासना त्रबना ककसी भेदभाव के िर कोई कर सकता ि ै। यि चक्र मोक्ष का द्वार ि ै तथा योगी जन इस ववद्या के द्वारा ब्रह्म-भेदेन करके परम आनन्द को प्राप्त करते ि ैं। यि चक्र त्रत्रपुरादेवी का गिृ ि ै।

इसके पश्चात् ्मृतूयुंजय अनुष्टुप मन्त्र आता ि ै। 'त्र्यमबकम्'् ('त्रयनाम अमबकम्'्) का अथ वि-तीन लोकों के भगवान् ्प्रयनाम' का अथ वि-तीनों लोकों का "अमबकम्'् इनका पतत अथवा तनयन्ता 'यजामिे' का अथ वि 'सेवामिे' अथवा सेवा करो। इसके अततररतत 'मिे' का अथ विं— 'मृतूयुंजय' अथवा मृतूयु का निाक । अत 'बजामिे' िब्द यिााँअत्यन्त मित्त्वपूण वि।

'सुगजन्धम्'् िब्द का अथ वि सब ओर से यि प्राप्त करना। 'पुजष्टवधनवम्'् िब्द का अथ वि— जो समस्त लोकों की रचना करता ि ै, उनका पालन करता ि ै, उनमें ववद्यमान ि ैं और उनका मोक्ष प्रदाता ि ै।

उवारुवकम्'् का अथ वि-खीरा (ककड़ी फल)। 'उवारुवकशमव बन्धनान्मृतूयोमुक्षवीय माऽमृतृात्।्' खीरा लता के साथ जुड़ा (बधााँ) रिता ि ै। इसी प्रकार मनुष्य तथा अन्य जीव संसार के साथ बन्धन में बधेँा रिते ि ैं। यिााँइसका अथ वि- समस्त प्राखणयों को संसांर की माया के बन्धन से मुतत करके परमानन्द प्राप्त कराना, ठीक उसी प्रकार सिजता से, जैसे े खीरा अपनी लता के बन्धन से छूट जाता ि ै।

जो व्यजतत मृतूयु पर ववजय प्राप्त करना चािता ि ै, उसे े'मृतूयुंजय' मन्त्र का जप करना चाहिए। जो वि बनना चािता ि ै, उसे े'ॐ नमिः' मन्त्र का जप करना चाहिए। तब उसे े सवोत्तम फल की प्रतत िोगी।

इसके अततररतत एक और मन्त्र ि ै। 'तद् ववष्णोः परमं पदम्'् इत्याहद। ववष्णु ुवि ि ै जो समस्त ववश्व में व्याप्त ि ै। उसका लोक जो आकाि की भातँात ि ै, 'परमं पदम् ्किलाता ि ै। 'सूय'व का अथ वउन ववद्वानों से ि ै जो वास्तववकता को अथात् व ्ब्रह्मा इत्याहद को जान गये ि ैं। ववष्णु ुके उस परम पद का प्रत्येक जीव के अन्तर में तनवास ि ै। तनवास का अथ वि – 'वसतत' । इसीशलए वि 'वासुदेव' किलातिैं। श्री वासुदेव का िजतत समपन्न द्वादिाक्षरी मन्त्र ॐ नमो भगवते े वासुदेवाय' सब कुछ ि ै। वि व्यजतत को सव वपाप-तापों से मुतत करने में समथ व िै। इस मन्त्र का ज्ञाता उस ब्रह्म पुरुष तक पिुाँच जाता ि ै। जो अ, उ और म् ्इन तीन अक्षरों के प्रणव का साकार रूप ि ै।

इसके अततररतत एक अन्य िजतताली मन्त्र 'िंस सुश्रचित' इत्याहद िै। यि सूयदेवव का मिान् ्मन्त्र िै।
और एक अन्य जानने योग्य मन्त्र 'गणानांत्वा' िै। यि गणपतत का मन्त्र िै। जो इसका ज्ञान प्राप्त कर लेता िै तथा शिव, ववष्णु, ु सूय वऔर गणपतत मन्त्रों का जप करता िै, उसे ेत्रत्रपुरदेवी का साक्षात्कार प्राप्त िोगा।

गायत्री के चार पाद िैं। प्रातिः काल वि 'गायत्री' किलाती िै, अपराह्न में वि 'साववत्री' नाम से जानी जाती िै, सायंकाल में उसे े'सरस्वती' किते िैं। जब चतुथ वपाद में िोती िै, तो उसे ेसदा अजपा किते िैं। इस देवी का 'अ' से 'क्ष' तक पचास अक्षरों का स्वरूप िै। इस रूप में देवी द्वारा समस्त िास्त्र तथा समपूण वलोक आच्छाहदत िैं। उन देवी को बारमबार प्रणाम िै।

अतिः जो भतत त्रत्रपुरदेवी की इन मन्त्रों सहित उपासना करता िै, वि सत् ्स्वरूप परमात्मा का सत्य ष्टिा िो जाता िै। तब वि मोक्ष प्राप्त कर लेता िै। प्रत्येक को इसका भली-भाताँत ज्ञान िोना चाहिए।

अब िम त्रत्रपुर-उपासना के कमकवाण् की व्याख्या करेंगे। यि िजतत अथवा आहद माया परम ब्रह्म को तनहदवष्ट करती िै। वि ब्रह्म परावववद्या िै और परमात्मा नाम से जाना जाता िै। यि परब्रह्म िी सुनने वाला, जाननेवाला, देखनेवाला, तनदिेक, अनुभव करने वाला और परम पुरुष िै जो सब प्राखणयों का आत्मा िो कर उनके भीतर तनवास करता िै। यिी जानना आवश्यक िै। यिााँ न कोई जगत् ्िै, न िी अजगत् ्िै; न भगवान् ्िै, न भगवान् ्का अभाव िै; न प्राणी िै, न िी प्राणी का अभाव िै; न ब्राह्मण न िी अब्राह्मण िै; इस प्रकार तनवाणव उद्भाशसत िोता िै जो पर ब्रह्म िै।

'श्रचन्तन करने वाला मन बद्ध किलाता िै। जो कुछ भी श्रचन्तन निींकरता, वि मुतत किा जाता िै। ऐसेमन के द्वारा िी ब्रह्म का ज्ञान िो सकता िै। अतिः प्रत्येक व्यजतत को ववषय- श्रचन्तन से मन को मुतत रखना चाहिए।

जब तक मन ववचारों सेपूणतवया ररतत निींिो जाता, व्यजतत को प्राण- तनयन्त्रण का प्रयास करना चाहिए। यि िाश्वत ज्ञान िै। अन्य सब-कुछ मात्र व्यथ वपुस्तकीय ज्ञान िै। परब्रह्म में ववचार तथा अववचार में कुछ भेद निींिै। विााँसब एक समान िै। विााँ न कोई ववचार िै, न िी ववचार करने वाला।

इस प्रकार अन्ततिः भतत को धीरे-धीरे जान लेना चाहिए कक ब्रह्म उसका अपना तनज स्वरूप िी िै। तब वि आनन्दपूण वमोक्ष को प्राप्त िोगा।

यिी परम सत्य की व्याख्या िै। तब न कोई मोक्ष का आकांक्षी रिता िै, न िी मुतत रिता िै, न वैराग्य िेष रिता िै, न िी साधना, न िी कोई ववनाि रिता िै

ब्रह्म दो िैं—एक िब्द ब्रह्म और एक परब्रह्म। जो िब्द ब्रह्म की प्रवीणता प्राप्त कर लेता िै, वि परम ब्रह्म तक पिुँच जाता िै। जो यि समस्त ज्ञान प्राप्त कर लेतो िै, उसे ेज्ञान-प्राजप्त के उपरान्त उन पुस्तकों को उसी प्रकार त्याग देना चाहिए जैसे ेअनाज प्राप्त करने के शलए भूसे को फेंक हदया जाता िै।

इस प्रकार परमब्रह्म-पद की व्याख्या की गयी। जो इस मिाववद्या का ज्ञान प्राप्त कर लेता िै, वि सबके शलए उपास्य िो जाता िै, इसमें कोई सन्दिे निीं। यि एक मिाउपतनषद् िै ।

रुि उपतनषद्

अब म ैंउस परम ब्रह्म के पववत्र स्वरूप की िरण लेता िूँ जो रुिहृदय उपतनषद् नामक ववद्या द्वारा जानेजाते िैं।

एक बार श्री िुकदेव जी अपनेहृदय में श्री मिादेवरुि के पावन स्वरूप को नमन िुए, भस्म और रुिाक्ष धारण करके 'तारसार मिावातय मन्त्र' का जप मन में करते ेअपनेवपता श्री व्यास मिवष वके पास गये और इस प्रकार प्रश्न ककया:

प्रभो, समस्त देवताओं में भगवान् ्कौन िै? और सबका वास ककसमें िै? ककस देव की उपासना करने से समस्त देवता प्रसन्न िोंगे?

यि प्रश्न सुन कर व्यास जी ने इस प्रकार उत्तर हदया

भगवान् ्रुि में सब देवता तनवास करते िैं। सब देवता शिव स्वरूप िी िैं। रुि भगवान् ्के दक्षक्षण पाश्व वमें सूय,व चतुमुखवी ब्रह्मा तथा तीनों अश्नग्रया ाँिैं। बाम पाश्व वमें श्री उमा देवी, ववष्णु और सोम (चन्मिा) जस्थत िैं।

उमा िी ववष्णु िै। ववष्णु िी चन्मिा िै। अतिः जो ववष्णु की उपासना करते िैं, वि शिव की उपासना िै। और जो शिव की उपासना करते िैं, वि वास्तव में ववष्णुकी िी पूजा करते िैं। जो भगवान् ्रुि से द्वेष और घृणा करते िैं, वे वास्तव में श्री ववष्णु सेिी घृणा करते िैं। जो भगवान् ्शिव के तनन्दक िैं, वे वास्तव में श्री ववष्णु के िी तनन्दक िैं।

रुि जीव के उत्पवत्तकताव िैं और बीज का भूरूण रूप भगवान् ्ववष्णु िुै, शिव िी ब्रह्मा िैं, ब्रह्मा िी अजग्न िै।ैं रुि िी ब्रह्मा और ववष्णु रूप िैं। यि सारा ववश्व अजग्न और सोम से पूण विै। सृजृष्ट में जजतने प्राणी पुशलंगं रूप से िैं, वे सभी रुि िैं तथा स्त्रीशलंगांत्मक समस्त जीव श्री भवानी देवी िैं। इस प्रकार जड़-चेतन मय समपूण वसृजृष्ट उमा और रूि रूप िै। व्यतत संसार भगवती उमा का और अव्यतत संसार रुि का रूप िै। उमा और िंकर दोनों के शमलने से ववष्णु कि जाते िै।

अतिः सबको श्री मिाववष्णु को श्रद्धापूवकव नमन करना चाहिए। वि आत्मा िै। वि परमात्मा िैं। वि अन्तरात्मा िै। ब्रह्मा अन्तरात्मा िैं, शिव परमात्मा िै, ववष्णु ुइस ववश्व के िाश्वत आत्मा िै। लोक-त्रय रूप ववश्व की िाखाए ाँपृथूवी पर फैली िुई िैं। इसके अग्र भाग ववष्णु, मध्य भाग ब्रह्मा और मूल भाग रुि िैं।

काय वरूप ववष्णु,ु कक्रया रूप ब्रह्मा और कारण रूप रुि िैं। इस प्रकार भगवान् ्रुि ने िी प्रयोजन के अनुसार अपनेतीन रूप धारण कर शलये िै।

रुि धम वै, ववष्णु संसार रूप िै, ब्रह्मा ज्ञान रूप िै। इसशलए जो ज्ञानी पुरुष रुि नाम का जप और कीतनव करता िै, सब पापों सेछूट जाता िै।

रुि पुरुष िैं और उमा स्त्री िैं। इस रूप द्वय में भगवान् ्शिव को और भगवती उमा को नमस्कार िै!

रुि ब्रह्मा िै। उमा सरस्वती ि।ै दोनों रूपों में उमा मिेश्वर को नमस्कार

रुि ववष्णु िुैं। उमा लक्ष्मी िैं। दोनों रूपों में दोनों को नमस्कार िै।

सूय वरुि िैं। उमा छाया िैं। उनके इन दोनों रूपों को नमस्कार िै!

रुि चन्मिा िैं, उमा तारा िैं। उनके इन दोनों रूपों को नमस्कार िै!

हदवस रूप रुि, रात्रत्र रूप उमा को नमस्कार िै। यज्ञ और वेदेी रूप शिव और उमा को नमस्कार िै!

अजग्न और स्वािा रूप में रुि और उमा को नमस्कार िै!

वेद रूप में रुि और िास्त्र रूप में उमर को नमस्कार िै!

वृकूष रूप में रुि और लता रूप में उमा को नमस्कार िै!

सुगन्ध रूप में रुि और पुष्प रूप में उमा को नमस्कार िै।

अथ वरूप में रुि और िब्द रूप में उमा, दोनों को नमस्कार िै!

शलंगं और पीठ रूप में रुि और उमा दोनों को नमस्कार िै!

इस प्रकार श्री रुि और उमा को इन मन्त्रों सहित पृथृक्-पृथृक् नमस्कार करना चाहिए। िे पुत्र िुक! इन श्लोकों के द्वारा तुमिें उस परब्रह्म पर ध्यान करना चाहिए जो इजन्ियातीत िै, सत्–श्रचत्–आनन्द स्वरूप िै तथा मन, वाणी से अगोचर िै। जो यि जान लेता िै, उसे ेकफर और कुछ भी जानना िेष निीं रिता; तयोंकक सभी कुछ उनका िी रूप िै, उनसे ेशभन्न कुछ भी निीं।ि

परा और अपरा नाम की दो ववद्याए ाँिैं। यि साधक के शलए ज्ञातव्य िैं। चारों वेद और षिदिनव, रि अपरा ववद्या िैं। इनमें आत्म-ववषय के अततररतत अन्य सब ज्ञान भरा िुआ िै। परन्तु जजसके द्वारा आत्मा का ज्ञान िोता िै, वि परा ववद्या िै। उसी में परम अववनािी आत्म-तत्त्व िै। वि हदखायी निींपड़ता, न ग्रिण ककया जा सकता िै। उसका नाम, रूप, गोत्राहद कुछ निीं। उसके न नेत्र िैं, न कान, िाथ-पावाँ भी निीं। वि ववषयों से परे, तनत्य, सूक्ष्माततसूक्ष्म िोनेसेसवगवत और तनववकवार िै। सबका आश्रय िै, ज्ञानी पुरुषों के द्वारा वि जाना जाता िै।

भगवान ्शिव जजन्िोंने परम ज्ञान-माग वके रूप में घोर तप ककया, उन्िींमें से यि समपूण वजगत ्की रचना िुई, जजसे ेसमस्त जीव भोगतेिैं। यि जगत ्माया िै। यि स्वप्न के समान प्रतीत िोता िै। सत्य के समान हदखायी पड़नेवाला यि संसार, रस्सी में सप वके आभास के समान ब्रह्म में िी जस्थत िै। यिी परम सत्य िै। यथाथ व में कोई सृजृष्ट िै िी निीं। ब्रह्म अववनािी और सत्य िै। इस प्रकार जाननेवाला पुरुष मोक्ष को प्राप्त िो जाता िै।

केवल ज्ञान से िी संसार का पाि तछन्न-शभन्न िो सकता िै, कम वसे यि बन्धन निींकट सकता। अतिः मुमुक्षु ुको ब्रह्मतनष्ठ एवं श्रोत्रत्रय गुरु की िरण लेनी चाहिए। वि गुरु उस शिष्य को आत्मा और ब्रह्म के एकत्व का ज्ञान कराने वाली परा ववद्या शसखायेगा। अज्ञान अथवा अववद्या के बन्धन कट जानेपर शिष्य भगवान ् सदाशिव की िरण में जाये; सत्य स्वरूप मोक्ष के आकाक्षी के शलए यिी ज्ञातव्य िै।

ब्रह्म रूप लक्ष्य के शलए प्रणव धनुष रूप और आत्मिः बाण की भातााँत िै। बाण के सदृश्य िी आत्मा को ब्रह्म के साथ एक िो जाना चाहिए।'

ककन्तु धनुष, बाण और लक्ष्य—ये तीनों की सदाशिव से शभन्न निीं। जजस परमात्मा के परम धाम में चन्द्, सूय वऔर शसतारे भी निीं ंिोते,े जिा ाँवायु तथा अन्य देव गण भी पिुाँच निींपाते, वि ाँविींपरमात्मा साधक द्वारा श्रचन्तन ककये जानेपर अपनेतनमलव और तनगुणव रूप से सदा-सवदवा प्रकािमान िोते िैं।

इस िरीर रूपी वृकूष पर जीव और परमात्मा, दो पक्षक्षयों का तनवास िै। जीव अपने कमों का फल खाता (भोगता) िै; ककन्तु परमात्मा इससे अशलप्त रिता िै, वि साक्षी स्वरूप में प्रकाशित रिता िै। वि ककसी रूप में कता वनिीं ंिै। वि अपनी माया के द्वारा जीव का रूप ले लेता िै। यि शभन्नता वास्तव में ऐसिी िी िै जैसे े घटाकाि की परम आकाि से िै, वास्तव में दोनों में कोई शभन्नता िै िी निीं। एकमात्र शिव िी िै, अद्वैत और पररपूण,व ककसी भी प्रकार का कोई भेद िै िी निीं।

ऐसा ज्ञान जब िो जाता िै, तो मनुष्य िोक और मोि से मुतत िो जाता िै, माया का आवरण तछन्न-शभन्न िो जाता िै और अद्वैत परमानन्द की प्राजप्त सिज िी िो जाती िै। ववचार करें कक आप िी समस्त ववश्व के आधार िैं, आप एकमेव, केवल, सजच्चदानन्दघन िैं। सब लोग यि सत्य निींसमझ पाते। जो माया से मुतत िैं, विी इस रिस्य को जान पाते िैं। ऐसेशसद्ध पुरुष किीं ंआते-जाते ेनिीं। घटाकाि की परमाकाि के साथ एकता की भातााँत वे परब्रह्म के साथ स्वयं ब्रह्म िो जाते िैं। जो इस रिस्य का ज्ञाता िै, वि वास्तव में मुतन िै, स्वयं परम

ब्रह्म ि ै, सजच्चदानन्द ि ै, वि ी परम िाजन्त को प्राप्त ि ै।

अध्याय ११

िैविआचायव

अप्परअथवाततरुनावुकरसर

अप्पर चार तशमल ि ैव समय परमाचायों में सेएक ि ैं। वि समबन्धर के समकालीन थे। वि तशमलनािु में कुिलूर जजलेमें ततरुअमुर के एक (वेलाला) ककसान थे। उनका जन्म पुगलनार और महदतनयार के घर ि ुआ। माता-वपता ने उन्ि ें मरुलनीजतकयर (अन्धकार अथवा अज्ञान को दूरू करने वाला) नाम हदया। अप्पर का अथ वि ै वपता। मरुलनीजतकयर को अप्पर नाम सवप्रवथम समबन्धर द्वारा हदया गया था। उसने अपनेपरस्पर के अनेक सजममलनों में सेि ी एक बार के शमलन में इन्ि ें अप्पर कि कर बुलाया था। उनके आत्मोत्तेजक और श्रेष्ठ समबोधन गीतों ने उन्ि ें ततरुनावुतकरसर अथवा वागीि उपाश्रध से ववभूवषत करवा हदया। वि प्रभु प्रेररत व्यजतत थे। ववशभन्न देवालयों की तीथयवात्रा के समय उन्ि ोंनेप्रभुको समबोश्रधत करके अनेक अत्यन्त मनमोिक भजनों की रचना की। सातवीं ंसदी के मध्य वि अत्यश्रधक प्रशसद्ध सन्त कवव ि ुए।

ततलकवततयार अप्पर की बड़ी बिन थी। उनकी सगाई कजल्लपैयार नामक एक व्यजतत से ि ुई थी जो पल्लव राजा की सेना में सेनापतत था। कजल्लपैयार को उत्तरी भारत की ओर से आने वाले ेककसी आक्रमणकारी के साथ युद्ध करना पड़ा, जिााँयुद्धभूशम में वीरगतत को प्राप्त ि ो गये। ततलकवततयार के माता-वपता की भी मृतूयु ि ो गयी थी। कजल्लपैयार की मृतूयु का समाचार जब ततलकवततयार ने सुना, तो उसनेसाथ ि ी सती ि ोने का तनश्चय कर शलया। मरुलनीजतकयार को जब अपनी बिन के इस इरादे का पता चला, तो वि तत्काल उसके पास गये और उसके पैरों में श्रगर कर किने तुरन्त श्रचता में लगे- “म ैंकेवल आपके सिारे ि ी जीववत ि ूाँ, यहद आप अपना जीवन समाप्त करने लगेंगी, तो म ैंउससे पिले ि ी प्राण त्याग दूाँगा।” ततलकवततयार का हृदय यि सुन कर विवत ि ो गया। उसने अपना तनणयव बदल हदया और तनस्स्िाय छोटे भाई का सिारा बनने तथा तपोमय जीवन व्यतीत करने का तनश्चय ककया।

अप्पर धम वपररवतनव करके जैन धमावलमबी ि ो गये। उन्ि ोंनेसमस्त जैन धम वग्रन्थों का अध्ययन ककया। वि पाटलीपुत्र चले ेगये और जैन धम वग्रन्थों के प्रकाण्ि पजण्ित ि ोनेके कारण विााँधमगुवरुओंमें से एक ि ो गये।

अप्पर की बिन को जब उनके जैन धमावलमबी ो जाने का ज्ञान ुआ, तो वि दुिःख से अत्यश्रधक आक्रान्त ो गयी। वि अपना जन्म-स्थान छोड़ कर तनकट के गावाँ ततरु आहदग चली गयी। विााँशिव मजन्दर में ध्यान-प्राथनवा में समय व्यतीत करने लगी। वि भाई के प्रत्यावतनव के शलए भगवान् ्से प्राथनवा करती रिती थी।

अप्पर ऐसेभयंकर उदरूल से ग्रशसत ो गये, जो ककसी प्रकार भी ठीक निीिं रिा था। वि जैन पिोक तथा पात्र एक ओर फेंक कर अपनी बिन के पास चले ेगये। उसनेउनके मस्तक पर भस्म लगायी तथा उन्िें शिव मजन्दर में ले गयी और विााँ भगवान् ्के सममुख दण्वित् ्प्रणाम तथा पूजा करने के शलए कि। अप्पर ने इसी प्रकार ककया। भयंकर ो गया। उदरूल उसी क्षण काफूर उसनेभगवान् ्शिव की स्तुतत की।

जैनी आध्याजत्मक गुरु ने पाटलीपुत्र में अप्पर के पलायन की सूचना किवर को दी। किलूर उस समय पल्लव राजा किवर द्वारा ाशसत था। आध्याजत्मक गुरु ने राजा को अप्पर को उत्पीडड़त करने के शलए उकसाया।

अप्पर ने पल्लव राजधानी की ओर प्रस्थान ककया और राजा के सममुख उपजस्थत ुए। अप्पर को शभन्न-शभन्न ढंगों से उत्पीडड़त ककया गया। उन्िें प्रज्वशलत चूनाभट्ठी में फेंक हदया गया। उन्िें बलपूवकव ववषपान कराया गया। उन्िें मारने के शलए एक ाथी से कुचलवाया गया। एक भारी पत्थर के साथ बाधाँ कर उन्िें सिमु में कफंकवा हदया गया। ककन्तु प्रत्येक बार भगवान् ्ने उनकी रक्षा की। वे जीते–ेजागते ेततरुप्पततरुपुशलयूर पिुाँच गये।

पल्लव राजा अप्पर की मिानता को पिचान गये और उनके चरणों में श्रगर पड़े। उन्िोंनेभी जैन धम वका त्याग कर ैवमत को गले लगा शलया। उन्िोंनेततरुवहदगै में एक अत्यन्त भव्य शिव मजन्दर गुणतरवीच्चरम् ् बनवाया।

इसके पश्चात् ्अप्पर ववशभन्न पववत्र स्थलों के तीथाटवन के शलए तनकल पड़े। उन्िोंनेश्रचदमबरम्,् सीरकाशल तथा अन्य कई स्थलों के दिनव ककये तथा भगवान् ्शिव की प्रिंसा में तेवारम् ्(भजतत गीतों) की रचना करके गाया।

अप्पर ने उस समय ततंगंलूर में सन्त अप्पूहद अडिगल से भी भेंट की। उन्िोंने अप्पूहद के पुत्र को, जजसे े कोबरा सप वने ि स शलया था, पुनजीववत ककया।

तत्पश्चात् ्अप्पर ने ततरुवेनैनेलूर, ततरुवामत्तूरू, ततरुकोतयलूर तथा ततरुपेन्नािकम् ्इत्याहद पववत्र स्थानों के दिनव ककये तथा विााँभगवान् ्शिव की उपासना की। अन्ततिः वि ततरुतुंगानैमिम् ्पिुाँचे और भगवा से प्राथनवा की- "ि शिविंकर! ि अधनवारीश्वर! ि सबके जन्म दाता और प्राण िता व! म ैंजैनधशमयवों द्वारा स्पशितव अपनेइस िरीर को रखना निींचािता। आप मेरी दिे पर अपनेत्रत्रूल और नन्दी का श्रचह्न अंककत कर दें।" उन्िोंनेएक पहदगम (भजन) गाया। तत्काल भगवान् ्शिव की कृपा से शिव गण उपजस्थत ो गये और अप्पर के कन्धेपर त्रत्रूल और नन्दी की मिोर लगा दी।

तब अप्पर समबन्धर सेशमलने के शलए सीरकाशल की ओर चले। वे समबन्धर के चरणों में श्रगर पड़े। समबन्धर ने इस वेलाला सन्त को, "मेरे प्यारे अप्पर !” कि कर समबोश्रधत ककया।

एक बार समबन्धर पालकी में बैठ कर अप्पर से शमलने के शलए तंजोर जजले ेके ततरुप्पुन्दुरुवत्त में गये अप्पर उनसे ेपूव विी विा ाँपिुाँच गये और स्वयं पालकी उठा कर चलने लगे। समबन्धर ने पूछा- "अप्पर किा ाँिै?" अप्पर ने उत्तर हदया- "म ैंयिााँ िूाँ, पालकी को उठाये िुए िूाँ।" समबन्धर तत्क्षण पालकी से नीचे उतर कर उनके गले े लग गये और उनके नेत्रों से पे्रेमपूण वअश्रु ुप्रवाहित िोनेलगे।

अप्पर ततरुचट्हटमुटुम् ्गये। विााँउन्िोंनेएक पहदगम (भजततमय पद) गाया और कि- “ि प्रभु, मेरे रीर छोड़ने सेपिले,े अपने पद कमल मेरे शसर पर रख दें।" उन्िेंआकिावाणी सुनायी दी— "ततरुनल्लूर पिुाँच जाओ।" अप्पर ने ऐसा िी ककया, वि ततरुनल्लूर पिुाँच गये। भगवान् ्शिव ने अपना चरण अप्पर के शिर पर रख हदया। अप्पर धरती पर लोट गये, उनका हृदय अवणनवीय आनन्द से आप्लाववत िो गया।

तब अप्पर ततरुवंबर, ततरुकिवूर और शमलले गये। शमलले में भयंकर अकाल पड़ा िुआ था। विााँशिव भततों को भूख से तड़पते िुए देख कर अप्पर और समबन्धर के हृदय व्याकुल िो गये। भगवान् ्शिव ने उन दोनों को स्वप्न में दिनव हदये और कि- “दुिःखी मत िोओ, म ैंतुमिें स्वण वमुिाए ाँदूाँगा।" उन्िेंतनत्य प्रातिः मजन्दर में स्वण वमुिाए ाँपड़ी शमलने लगीं और उन्िोंनेलोगों को राजसी भोजन खखलाया।

अप्पर और समबन्धर ने तंजोर जजले ेके वेदारण्यम् ्मजन्दर के दिनव ककये। यि ाँएक प्राचीन शिव मजन्दर था, जजसके पट दीघकवाल सेबन्द पड़ेथे। पिले ेविााँस्वयंवेद भगवान् ्आ कर भगवान् ्शिव की पूजा करते ेथे, ककन्तु अब उन्िोंने आना छोड़ हदया था, तयोंकक लोगों नेजैन धम वके प्रभाव में आ कर वेद पढ़ने-पढ़ाने की उपेक्ेषा कर दी थी। समबन्धर ने अप्पर सेकि—"आइए और अपने भजततपद गायेंजजससे ेकक मजन्दर के पट खुल जाय।ें " अप्पर ने गाया और द्वार खुलु गये। तब कफर समबन्धर ने गाया जजससे ेकक द्वार पुनिः बन्द िो जायें, और ऐसा िी िुआ।

एक बार तीथयवात्रा के समय रास्ते ेमें अप्पर को बिुत भूख लगी। भगवान् ्शिव ने माग वमें एक तालाब और बगीचे की रचना कर दी और उन्िें भोजन भी हदया।

अप्पर ने कैलास पवतव जाने के शलए यात्रा प्रारमभ की। यात्रा अत्यन्त कहठन थी, उनके पावाँ में भयंकर घाव िो गये। उन्िेंआकिावाणी सुनायी दी। यि भगवान् ्शिव की आवाज थी- "ि अप्पर, उठो! सरोवर में स्नान कर लो। तुमिें ततरुवैयार में िी मेरे और कैलास पवतव के दिनव िोंगे।" अप्पर ने सरोवर में स्नान ककया और बािर तनकले, तो कावेरी के तट पर ततरुवैयार के एक मजन्दर में थे। बािर उन्िेंसवत्रव भगवान् ्शिव और मा ाँिजतत िी हदखायी हदये। वि मजन्दर के भीतर प्रववष्ट िुए और विा ाँउन्िें कैलास पवतव तथा कैलास पवतव के भगवान् ्शिव के दिनव िुए। अप्पर यि अद्भुत दृश्य देख कर आनन्दववभोर िो गये तथा पहदगम (पद) गानेलगे।

अन्ततिः वि ततरुवलूर के तनकट पुमपुकलर में पिुाँचेतथा अपनेजीवन के अजन्तम हदन उन्िोंनेविीं ं व्यतीत ककये। यिााँभगवान् ्ने उनकी मिानता लोगों को हदनेवके शलए उनकी परीक्षा ली और जब वि मजन्दर में सेवारत थे ेतो उनके पावाँ तले िीरे, जवािरात तथा स्वण वप्रकट कर हदया। अप्पर ने उन्िें पत्थर-कंकड़ की भााँतत एक ओर फेंक हदया। अप्सराओं ने भी उनके समक्ष प्रकट िो कर लुभाने का प्रयत्न ककया, ककन्तु अप्पर अपने ध्यान में अबाध मन रिे । अन्ततिः ८१ वष वकी आयु में आप भगवान् ्शिव की परम ज्योतत में लीन िो गये।

(२)

अप्पर ने अपनेभजततमय पदों के द्वारा िैव शसद्धान्त हदनव की ववचारधारा की नींव रखी। अप्पर के काव्यगीत कल्पना–जतत, आध्याजत्मक अन्तदृजवष्ट, धाशमकव भावनाओं तथा श्रेष्ठ आध्याजत्मक अनुभूतत से आपूररत िैं।

अप्पर समबन्धर सेअश्रधक ववद्वान थे। उनका व्यजततत्व अत्यन्त सितत था। उन्िोंनेएक अनुकरणीय शिव-भतत का जीवन व्यतीत ककया। उन्िोंने जैन धम वका प्रभाव समाप्त कर हदया। उन्िोंनेसदैव शिवपंचाक्षर मन्त्र का गुणगान ककया। उन्िोंनेकिा – "ब्राह्मणों का ववलक्षण आभूषण िै षिंगों सहित वेद तथा िैवों का ववलक्षण आभूषण पंचाक्षर िै।' उनके अनुकरणीय जीवन, सुमधुर काव्य, ववषद ववद्वत्ता तथा उत्कट भजतत भावना ने असंख्य लोगों को आकवषतव ककया। उनके अगखणत भतत तथा शिष्य थे। उनका प्रभाव अकथनीय था। अप्पर की कृततयों में से, उनकी तीन सौ के लगभग काव्य रचनाए ाँउपलब्ध िैं जो तीन पुस्तकों के रूप में प्राप्त िैं। इनकी बारि पुस्तकें तशमल िैव भजतत काव्य की िैं जो ततरुमुरै नाम से जानी जाती िैं।

अप्पर का कथन िै- -"सब कुछ भगवान् ्शिव का प्रकटीकृत स्वरूप िै। शिव नारायण, ब्रह्मा, चारों वेद, पववत्रतम, पुरातन और पररपूण विैं। यद्यवप शिव ये सब कुछ िैं, तथावप वे इनमें से कुछ भी निीं। वि नाम रूप से रहित, जन्म-मृत्यु और रोगों सेरहित िैं। वि सवातवीत और सवव्वयापी, एक िी साथ िैं।

"भगवान् ्शिव का प्रेमे अनुभव करना और कफर अशभव्यतत भी करना चाहिए। गीत गाय,ें प्राथनवा करें, पूजा करें, अश्रु बिायें, नृत्य करें! भगवान् ्शिव गीत का संगीत और लय िैं, फल की शमठास िैं, मन का श्रचन्तन िैं, आखाँों की चमक िैं। वे न पुरुष िैं, न िी नारी िैं। वे अपररमेय िैं।

'इजन्ियों को तनयजन्त्रत करें। तनयशमत ध्यान करें। चररयाई, कक्रयाई, योग और ज्ञान का अभ्यास करें। वैराग्य भाव ववकशसत करें। तीनों िरीरों से अतीत जाय।ें आत्मा को परमात्मा शिव के साथ संयुतत करें। आपको परम आनन्द और अमरत्व प्राप्त िोगा। आप भगवान् ्शिव के दिनव प्राप्त कर सकते िैं—यहद आप अपनेदेि रूपी गिृ के भीतर, मन के दीपक को, ध्यान के घृत सेभर कर, जीवन की बाती से, ज्ञान के प्रकाि में उनको तनिारने का अभ्यास करेंगे ेतो !

"सत्य का िल चलाय।ें ज्ञान-प्राजप्त की इच्छा के बीज बोय।ें असत्य क झाड़-झंखांड़ को तनकाल फेंकें। धैय वके जल से मन का शसंचंन करें। आत्म-ववश्लेषण और अन्ततनरवीक्षण द्वारा भीतर झाकाँते िुए अपनेकामों पर दृजष्ट रखें। यम और तनयमों अथवा सदाचार पालन की बाड़ बनाय।ें आप िीघ्र िी शिवानन्द अथात्व ्परम आनन्द की प्राजप्त करेंगे।

'अपनेिरीर को भगवान् ्शिव का मजन्दर समझें, मन को उपासक, सत्य को पूजा में अतनवाय विुद्श्रध और पववत्रता, मन रूपी आभूषण को शलंगं, प्रेम को घी, दूधू इत्याहद पूजन-सामग्री। इस प्रकार भगवान शिव की आराधना करें। मन की एकाग्रता और पंचाक्षर पर ध्यान के त्रबना भगवानू की प्राजप्त निीं िो सकती

आप सब अप्पर के उपदेिों और शिक्षाओंका अनुसरण करके शिव-पद की, परम आनन्द के तनत्य धाम की प्राजप्त करें!

ततरुज्ञान समबन्धर

समबन्धर का जन्म तंजीर जजले ेमें श्रचदमबरम् ्के तनकट सीरकाशल में ब्राह्मण दमपतत शिवपादहृदयर् ् एवं भगवती के घर िुआ।

एक बार शिवपादहृदयर् ्और भगवती स्नान के शलए सरोवर पर गये। बालक भी माता-वपता के संग चला गया। वे बालक को सरोवर-तट पर बैठा कर स्नान के शलए जल के भीतर उतर गये। माता-वपता को न देख कर बालक "अप्पर !" कि कर रोनेलगा। माता-वपता को बालक की आवाज सुनायी निींदी। भगवान् ्शिव और पावतवी को उसकी चीख सुनायी पड़ी। वे दोनों शििु के समक्ष प्रकट िो गये। पावतवी ने बालक को दूधू हदया। बालक ने दूधू के साथ िी हदव्य ज्ञान का दुगुध पान ककया। उसी क्षण से वि ववशभन्न शिव मजन्दरों में भगवान् ्शिव का स्तुतत गान करने लगे। उन्िोंनेभावोद्दीपक और उत्कृष्ट भजतत गीत तेवारम् ्गाये। यि घटना उस समय घटी, जब यि अभी तीन वष वके िी बालक थे।

माता-वपता जब स्नान करके बालक के तनकट आये, तो उसके मुख में दूधू लगा िुआ था और नेत्रों से अश्रु ु टपक रिे थे। वपता ने पूछा – "मेरे बच्चे, तुम्िें दूधू ककसने "हदया?" बालक के मुख से गीत की धारा फूट पड़ी, जजसमें शिव-पावतवी की अपार अनुकमपा का ववषद वणनव करते िुए समस्त घटना बतायी गयी थी। माता-वपता का हृदय आनन्द सेआप्लाववत िो गया। उन्िोंनेइसका नाम ततरुज्ञान समबन्धर रख हदया, तयोंकक उन्िें भगवान् ्की कृपा से हदव्य ज्ञान की उपलजब्ध िुई थी। यि वपल्लैयर नाम से भी जानेजातेथे।

तब समबन्धर ततरुकोलतका की ओर चल हदये। विााँभगवान् ्शिव के सममुख भजन गाया। भगवान् ्ने इन्िें स्वणि वकरताल उपिार हदया

ततरुएरुतकत्तंपुंशलयार में एक शिव-भतत था। उसका नाम ततरुनीलकण्ठ याल्पनार था। वि यालू (वीणा) वाद्य अत्यन्त तनपुणता से बजाता था। वि समबन्धर के प्रतत अपना सममान प्रकट करने के शलए सीरकाशल गया। समबन्धर उसे ेशिव मजन्दर ले गये और विीं ंपर उसका संगीत सुना । याल्पनार ने समबन्धर से अनुनय करते िुए कि- "कृपया मुझे ेसदा के शलए अपनेसाथ रख लें, म ैंआपके पहदगमों के साथ अपना यालू बजाया करूाँगा । मेरी प्राथनवा स्वीकार कर लें।" समबन्धर मान गये। तब समबन्धर, उनके माता-वपता और याल्पनार श्रचदमबरम् ्पिुाँचे ेऔर भगवान् ्नटराज की उपासना की। विा ाँएक हदन समबन्धर को तीन सिस्र ब्राह्मणों में, तीन सिस्र शिव गणों के दिनव िुए।

समबन्धर को अरत्तुरै में भगवान् ्शिव की पूजा करने की इच्छा िुई। वि पावाँ-पयादे िी चले ेअश्रधक थक जानेके कारण वि रास्तेमें मारनपाडि में रात्रत्र में रुक गये। तयोंकक वि अभी छोटे बालक िी थे, इसशलए अश्रधक चलने से उनके पावोंाँ में घाव िो गये । अरत्तुरै के भगवान ने पुजाररयों को स्वप्न में दिनव हदये और किा "समबन्धर मेरे दिनवाथ वरिा िै, मजन्दर के भीतर मोततयों वाला छत्र और मोती के परदे वाली पालकी पड़ी िै, वि ले जा कर उसे ेदो।" पुजारी उठ गये और मजन्दर में जाकर देखा तो स्वपन वाली दोनों वस्तुओं को विााँपड़ेपाया। उन्िोंनेदोनों चीजें ले जा कर मारनपाडि मेसमबन्धर को दीं,ं और साथ िी भगवान् ्के आदेि को भी उन्िें बताया। समबन्धर को पिले ेसेिी ज्ञात था, तयोंकक भगवान् ्ने उन्िें भी स्वप्न में यि सब बता हदया था।

कफर समबन्धर का पुजाररयों ने उपनयन संसं्कार ककया। समबन्धर ने वेदे-वेदांगों का अध्ययन निीं ककया था, ककन्तु उन्िोंने साथ-साथ वेदेमन्त्रोच्चारण ककया और उनकी व्याख्या भी की। पुजारी आश्चय वसे तिप्रभ िो गये।

अप्पर ने समबन्धर की महिमा सुनी। वि श्रचदमबरम् ्से सीरकाशल समबन्धर के प्रतत अपना सममान अशभव्यतत करने के शलए आये। समबन्धर उनका स्वागत करने आगे ेतक आये। दोनों परस्पर अत्यन्त स्निेपूवकव शमले। अप्पर उनके घर कई हदनों तक रुके।

मलाया देि की राजकन्या ककसी असाध्य रोग से पीडड़त थी। राजा सब प्रकार की श्रचककत्सा करवा चुका था । अन्ततिः वि उसको ततरुपाजस्सलशसरमम मजन्दर ले गया और विााँभगवान् ्के सममुख रख हदया। समबन्धर मजन्दर में आये और देखा कक राजकन्या अचेतावस्था में पड़ी िुई िै। उनका हृदय िवित िो गया। उन्िोंनेएक पहदगम् ्(भजततपद) गाया और भगवान् ्की पूजा की । प्रत्येक बन्द की अजन्तम पंजतत थी— “तया भगवान् ्के शलए इस कन्या को इतना कष्ट देना उश्रचत िै।" राजकन्या तुरन्त अच्छी भली िो गयी। वि उठ खड़ी िुई और समबन्धर के चरण-कमलों में प्रणाम ककया।

तब समबन्धर ततरुपट्टीस्वरम् ्मजन्दर की ओर चले। अत्यश्रधक ग्रीष्म ऋतु का हदन था। ततरुपट्टीस्वरम् ्के भगवान् ्ने अपनेगणों द्वारा, उनकी गरमी से रक्षा करने के शलए मोततयों की पालकी भेजी

समबन्धर ने एक पहदगम गा कर ततस्वाङ्गतुरे के प्रभु से एक सिस्र स्वणमुविाए ाँप्राप्त कीं।ं इस पद के प्रत्येक बन्द की अजन्तम पंजंतत में वि पूछते ि "मुझ पर िासन करने की यिी ववश्रध ि तया? तया आपके पास मुझे देनेके शलए कुछ भी निीं ंि? तया आपकी कृपा-दृजष्ट मुझ पर इसी भाताँत िोगी? मुझ पर दया करने का यिी ढंग ि तया?" उन्िोंनेस्वणमुविाएाँ अपनेवपता को दे दी।

समबन्धर तब ततरुमरुगल की ओर बढ़े। वि ाँएक यात्री को सप वने िस शलया था। उसकी पत्नी, पतत की मृतूयु से िोकातुर िो ववलाप कर रिी थी। समबन्धर ने करुणाजनक स्वर में पद गाया। यात्री पुनजीववत िो गया।

तब समबन्धर ततरुवीशलशमललेनामक स्थल पर पिुाँचे। विााँभयंकर अकाल पड़ा िुआ था। उन्िोंने भगवान् ्की स्तुतत की। उन्िें प्रततहदन भतत जनता में भोजन-सामग्री बाटाँने के शलए पयाप्वत धन मजन्दर में िी शमललै के भगवान् ्ने प्रदान ककया।

पाण्ड्या राजा के मन्त्री कुलजतसरैयार ने समबन्धर को मिल में आमजन्त्रत ककया। वि शिव भतत था। रानी मंग्यरकरशस भी शिव भतत थी। समबन्धर मदुरै गये और विााँभगवान् ्की पूजा की।

जैन धमावलजमबयों ने ईष्यावि समबन्धर के शिववर को आग लगा दी। समबन्धर ने एक पद गाया। अजग्न िशमत िो गयी, ककन्तु पाण्ड्या राजा को तीव्र ताप ने ग्रशसत कर शलया। श्रचककत्सक और जैन, कोई भी राजा का उपचार करने में सफल न िुए। राजा ने समबन्धर से प्राथनवा की। समबन्धर ने पववत्र भस्म की प्रिंसा में एक पद गाया और वि भस्म राजा के िरीर पर लगा दी। राजा उसी समय ठीक िो गया।

तब यि तनणयव ककया कक समबन्धर और जैन, दोनों को िी अपनेलेखन काय वअजग्न में िालने िोंगे ेऔर यहद समबन्धर का धम वअश्रधक अच्छा िै, तो उनके द्वारा अजग्न में िाले ेगये ताड़-पत्र जलेंगे ेनिीं। ऐसा िी िुआ, समबन्धर परीक्षा में सफल िो गये।

उसके पश्चात् ्एक परीक्षा और थी। जैन कट्टरपजन्थयों ने किा कक जो सच्चा धम विोगा, उसकी ताड़-पत्रों पर शलखखत कृततया ाँवैगैनदी की धारा के ववपरीत प्रवाहित िोनी चाहिए। मन्त्री ने प्रश्न ककया—"जो पराजजत िोगा, उसके शलए तया दण्ड रिेगा?" जैन पजन्थयों ने किा—"उसे ेमृतूयु-दण्ड हदया जायेगा।" जैन कट्टरपजन्थयों ने एक ताड़-पत्र नदी में िाला, वि धारा के प्रविा के साथ बि गया। समबन्धर ने एक ताड़ पत्र पर अपने पदों में से एक पद शलख कर नदी में छोड़ा, यि धारा के ववपरीत प्रवाहित िो कर ततरुवेंगै नामक स्थान पर पिुाँच गया। समबन्धर ने ताड़-पत्र को रोकने के शलए एक पद गाया, वि रुक गया। मन्त्री ने पत्र उठाया और राजा को हदखाया। कुछ कट्टरपन्थी जैनों को फासँी पर लटका हदया गया। िेष ने िैव धम वअपना शलया। समबन्धर राजा-

रानी के साथ मदुरै गये और विााँभगवान् ्की स्तुतत में पद गाये ।

समबन्धर ततरुकोल्लमपुदुरु में, वि ाँके भगवान शिव के दिनव करने के शलए गये, ककन्तु विााँनदी में बाढ़ आयी िुई थी। नाववकों ने नाव द्वारा नदी पार करने का ववचार त्याग हदया और तट पर िी नाव बाधाँ कर किीं ंचले े गये। समबन्धर ने नाव खोल ली और पद-गान करतिेुए अपने साश्रथयों के ले कर नदी के दूसूरी ओर पिुाँच गये।

समबन्धर के अनुयायी भतत जन यात्रा के समय ववजय का तूय-ववादन करते िुए जाते ेथे। यि देख कर बौद्ध उनसे ेईष्या वकरने लगे। उन्िोंनेअपनेआध्याजत्मक गुरु बुद्धनन्दी को सूचना दी। बुद्धनन्दी ने समबन्धर को वाद-वववाद करने के शलए आमजन्त्रत ककया।

समबन्धर के एक शिष्य समबन्धररनालयर, जो कक अपनेगुरु के सभी पदों को शलवपबद्ध करता था, ने समबन्धर के एक पद को गाया और कफर किा—"इस बुद्धनन्दी के शििी पर गाज श्रगरे!" तत्काल िी बुद्धनन्दी के शसर पर गाज श्रगर पड़ी और उसका विींप्राणान्त िो गया। कुछ बौद्ध भाग खड़े िुए, िेष ने िैव धम वको अपना शलया और मस्तक पर ववभूतत का लेपन कर शलया।

मतयलापुर में एक शिवनेसर चेट्टेहटयार नामक शिव भतत रिता था। गिन तपस्या के पश्चात् ्उसके घर एक कन्या ने जन्म शलया, जजसका नाम उसनेपूमपावैरखा। ज्ञानसमबन्धर की प्रिंसा सुन कर उसनेमन में धारणा बना ली कक वि अपनी समस्त धन-समपदा और कन्या इस सन्त को अवपतव करेंगे।े एक हदन जब पूमपावै उपवन में पुष्प चयन कर रिी थी, तो उसे ेभयंकर ववषयुतत सप वने िस शलया। उसी क्षण उसकी मृतूयु िो गयी। शिवनेसर ने उनकी अजस्थयााँएक घड़े में िालीं ंऔर उसेरेिमी वस्त्र से सुसजज्जत करके कजन्नकामिम में रख हदया। शिवनेसर ने समबन्धर को विााँआमजन्त्रत ककया। समबन्धर आये और कपालीश्वर भगवान् ्के दिनव ककये। भतत-समिू ने उन्िें शिवनेसर की कन्या की मृतूयुके समबन्ध में बताया। समबन्धर ने शिवनेसर से वि अजस्थ-राख युतत घड़ा ले कर आनेके शलए किा। शिवनेसर तत्काल घड़ा ले आया। समबन्धर ने एक पहदगम् ् (दस पद) गाया। पूमपावै अपार सौन्दय वसेयुतत कमल में से लक्ष्मी के समान घड़े में से प्रकट िो गयी। शिवनेसर का हृदय अपार आनन्द से भर गया। आकाि से देवताओं ने पुष्प वषा वकी। तब समबन्धर सीरकाशल चलेगये।

ब्राह्मण समबन्धर के पास गये और किा- "िे स्वामी, अब आपको ककसी योग्य कन्या से वववाि करना िी िोगा, जजससे ेकक वेदोतत यज्ञ ककये जा सकें।" समबन्धर मान गया। वपता तथा ब्राह्मणों ने नजमबयाण्डार नजमब की कन्या को दुल्िुन के रूप में चयन ककया। वववािोत्सव नल्लूरपेरुमणम में करना तनजश्चत िुआ। समबन्धर ने अपनी चयतनत दुल्िुन के साथ मजन्दर में प्रवेि ककया। जब वि भगवान् ्के तनकट पिुाँचे ेतो वि, उनकी िोनेवाली पत्नी तथा उनके सभी भतत-अनुयायी भगवान् ्की परम ज्योतत में लीन िो गये।

समबन्धर अपने पहदगमों में सेएक में किते िैं—"ओ मूख वप्राणी! हदनों को व्यथ वव्यतीत न िो जाने दो। भगवान् ्नीलकण्ठ की सेवा करो। उनके गुणगान का श्रवण करो। उनके रूप का ध्यान धरो। सदैव पंचाक्षर जपो शिव भततों की संगतत में रिो। उनका नाम आप और आपके बाल-बच्चों पर आनेवाले भय और कष्टों को दूरू कर देगा। भगवान् ्शिव की उपासना करो। वि आपको परम आनन्द और मोक्ष प्रदान करेंगे।"

सुन्दरमूतत व

तशमलनिाु के नावलूर नगर में एक िियनार नामकेब्राह्मणथे। वि अत्यंत धमात्वमा तथा शिव भतत थे। उनके एक अत्यन्त धमतवनष्ठ पुत्र थे, जजनका नाम नजमबआरुरर अथवा आलल सुन्दरर था। उर्न्े सुन्दरमूतत व नयनार नाम सेभी जाना गया िै।

सुन्दरमूतत वनयनार एक मिान् ्शिव भतत थे। यि चार िैवै आचायों में से एक िैं। ततरुण्णैनल्लूर के भगवान् ्शिव एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप में, उनके वववाि के हदन उनके समक्ष प्रकट िुए। उस वृद्ध ब्राह्मण ने किा कक यि सुन्दरर मेरा दास िै, अतः इसे ेमेरी सेवा करनी चाहिए। भगवान् ्का नाम तुित्ताट्कोण्ईश्वरर िै अथात्व ्वि भगवान् ्जजर्न्िोंने सुन्दरर को रोका और संसार से बचाया।

सुन्दरमूतत वने अनेकों मजन्दरों के दिनव ककये। वे अहदगैवीराट्टनम् ्गये। भगवान् ्शिव उनके सममुख प्रकट िुए और अपने चरण उनके शसर पर रख हदये। कफर सुन्दरर ततरुवारूर गये। भगवान् ्शिव ने उर्न्ें अपना शमत्र बना शलया।

कमशलतन कैलास में उमादेवी की सेववका थी। उसने अपनेहृदय में अलाला सुन्दरर के साथ वववाि करने की इच्छा रखी िुई थी, अतः उसे ेततरुवारूर में जन्म ले कर संसार में आना पड़ा। उसका नाम परवैरखा गया। उसकी वववाि योग्य आयु िो गयी। ततरुवारुर के भगवान् ्ने भततों को स्वप्न में दिनव हदये और किा- "परवैऔर सुन्दरमूतत वके वववाि का प्रबन्ध करो।" भगवान् ्शिव ने परवै ैऔर सुन्दरमूतत वको भी यि बता हदया। सुन्दरर ने परवेसे वववाि ककया और दोनों प्रसन्नतापूवकव रिे।

ततरुवारुर में अकाल पड़ गया। भगवान् ्शिव ने सुन्दरमूतत वको दिनव हदये और उर्न्ें अनाज के ढेर प्रदान ककये। इतनी अश्रधक मात्रा में अनाज को किीं ंऔर ले जाना िी असमभव था। सुन्दरमूतत वने भगवान् ्शिव को िी सियता करने के शलए किा। शिव गण प्रकट िुए और समस्त अनाज परवैके घर पिुाँचा हदया गया।

जब सुन्दरर ततरुप्पगलूर में थे,े तब उर्न्िोंने अपनी पत्नी के शलए भगवान् ्से स्वणमुिाए ाँदेनेकी प्राथनवा की और वि शसर के नीचे ेईंट रख कर सो गये। जब वि सो कर उठे, तो देखा वि ईंट सोने की बन गयी थी। एक अन्य बार जब वि ववरुद्धाचलम् ्की ओर जा रिे थे, तब भी उर्न्ें स्वण वप्राप्त िुआ । भगवान् ्के आदेि अनुसार उर्न्िोंनेइन स्वणमुिाओं को मखणमुत्तु ुनामक नदी में फेंक हदया, और उर्न्ें पुनिः वेी स्वनिुाएाँ ततरुवारुर के सरोवर में से शमल गयीं। भगवान् ्ने उर्न्ें तिरुकुिलैयारुर का माग वभी बताया।

जब सुन्दरर ततरुतकारुकावुर जा रिे थे, तब भगवान् ्ने उर्न्ें भोजन हदया तथा एक अन्य बार भगवान् ्ने उनके शलए शभक्षा भी मागीं।

सुन्दरमूतत वततरुवोवत्तयूर गये। विााँभगवान् ्शिव की सियता से एक गिन शिव-भतत सांश्रगली से उनका ववविा समपन्न िुआ। कैलासवाशसनी भगवती उमा की िी एक अन्य सेववका ने सांश्ंरगली के रूप में जन्म शलया था। सुन्दरमूतत वने भगवान् ्से प्राथनवा की कक जब वि सांश्रगली के साथ एकतनष्ठ रिने की िपथ लेंगे,े तो भगवान् ् मश्रगला वृकूष के नीचे ेरिें। सुन्दरर चािते थे ेकक सांश्ंरगली मजन्दर के भीतर चली जाये, ककन्तु भगवान् ्ने उसे ेपिले े िी बता हदया था कक वि मजन्दर में निीं, वृकूष के नीचे िोंगे। अतिः सांश्रगली ने सुन्दरर से वृकूष के नीचे िी आनेके शलए किा जो उन्िें स्वीकार करना पड़ा। बाद में जब उन्िोंने सांश्रगली को छोड़ कर अकेले िी उत्सव देखनेके शलए ततरुवारुर जा कर िपथ भंग कर दी, तो उन्िें नेत्र ज्योतत से िीन िोना पड़ा।

सुन्दरमूतत वने भगवान् ्से किा- "यहद आपनेमुझे अन्धा िी बनाना िै, तो कृपा करके मुझे एक छड़ी तो दे दो।" और भगवान् ्ने उन्िें तुरुवेण्पातकम में छड़ी प्रदान कर दी। जब सुन्दरर कांचीपुरम् ्आये, तो उनके बाय ेंनेत्र की ज्योतत वापस लौट आयी। जब उन्िोंनेततरुवारुर में भगवान् ्की स्तुतत की, तो दाहिने नेत्र की ज्योतत भी पुनिः प्राप्त िो गयी।

एक बार सुन्दरमूतत वततरुप्पुकोशलयूर में सड़क पर जा रिे थे, तो उन्िोंने माग वके एक ओर के घर में लोगों को रोते-श्रचल्लाते ेसुना और उसी के सामनेके घर में अन्य लोगों को प्रसन्नता से नाचतेदेखा। उन्िोंने आश्चयचवककत िो कर ककसी से इसका कारण पूछा, ज्ञात िुआ कक दो पााँच-पााँच वष वके बालक सरोवर में स्नान कर रिे थे, एक बालक तो मगर द्वारा तनगल शलया गया और दूसूरा बच गया। जजसे ेतनगल शलया गया, उसके घर में को माता-वपता अत्यश्रधक िोकाकुल िो ववलाप कर रिे िैं और जजसके प्राण बच गये, उसके माता-वपता बालक के यज्ञोपवीत का उत्सव मना रिे िैं।

सुन्दरर का हृदय व्याकुल िो गया। उन्िोंने एक पहदगम भगवान् ्शिव अववनािी की स्तुतत करते िुए गाया । भगवान् ्यम की आज्ञा से मगर बालक को सरोवर-तट पर जीववत छोड़ गया। बालक के माता-वपता आनन्दाततरेक से भर कर सुन्दरर के चरणों में श्रगर पड़े।

तीथयवात्रा करते िुए सुन्दरर कावेरी के तट पर पिुाँचे। नदी में बाढ़ आयी िुई थी। वि ततरुवायुर में भगवान् ् शिव के दिनव करना चािते थे।े उन्िोंनेएक पहदगम गाया। नदी ने उन्िें माग वदे हदया। वि ततरुवायुर पिुाँचे ेऔर भगवान् ्की आराधना की।

ततरुपेरूमंगलम में एक कशलकमार नामक भगवान् ्शिव के मिान् ्भतत थे। वि जन्म से वपल्लै ैजातत के थे। उन्िोंने यि समाचार सुना कक सुन्दरर ने भगवान् ्शिव को सन्देिवािक बना कर परवैके पास भेजा, तो उन्िोंनेकिा- "भतत िो कर भगवान् ्को अपना सेवक बना कर आज्ञा करता िै! और वि भी एक स्त्री के शलए? ऐसा करने वाला तया भतत िो सकता िै! म ैंिी पापी िूाँ, जो ऐसी बात सुन कर भी मेरे प्राण निींचलेगये! मनैं लिौ लािा से अपनेकान तयों निींबश्रधर कर शलए, भतत किलाने वाले की ऐसी बात सुन कर ?"

सुन्दरर को कजल्लकमर नयनार की ऐसी जस्थतत के समबन्ध में ज्ञात िुआ। उन्िें पिले िी अपनी मिान् ् भूल का बोध था। उन्िोंनेभगवान् ्से क्षमा की याचना की। भगवान् ्ने इन दोनों भततों का परस्पर मेल कराना चािा। उन्िोंने कशलकमार को जठरीथ के रोग से पीडड़त कर हदया तथा स्वप्न में दिनव दे कर किा - "इस रोग का केवल सुन्दरर िी उपचार कर सकता िै।" कजल्लकमर ने किा- "सुन्दरर से श्रचककत्सा करवाने से कष्ट सिन करना अच्छा िै।" भगवान् ्ने सुन्दरर को आज्ञा दी – "जाओ, कजल्लकमर को रोग मुतत करो।"

सुन्दरर ने अपने आनेका समाचार कजल्लकमर को भेजा। कजल्लकमर ने ववचार ककया—"सुन्दरर से उपचार करवाने सेपूव विी मुझे अपना प्राणान्त कर देना चाहिए।" उन्िोंनेअपनी आतों काट िालीं ंऔर प्राणान्त कर शलया। उनकी पत्नी ने अत्यन्त सममानपूवकव सुन्दरर का स्वागत ककया।

सुन्दरर ने कजल्लकमर की पत्नी सेकिा, "म ैंआपके पतत की श्रचककत्सा करना तथा उनके साथ कुछ समय व्यतीत करना चािता िूाँ।" वि मौन रिीं तथा आस-पास के लोगों से किा कक उन्िें बिता दें कक उसके पतत को कोई रोग निीं और वि सो रिे िैं। सुन्दरर ने यि सुन कर किा कक उनकी कजल्लकमर को देखने ेकी अत्यन्त तीव्र इच्छा िै। तब उन लोगों ने कजल्लकमर की मृत दिे हदखा दी। उनका िव देखते िी सुन्दरर ने अपने भी प्राणान्त कर लेनेके शलए तलवार तनकाल ली। भगवान् ्की कृपा से कजल्लकमर पुनजीववत िो उठे और उन्िोंने सुन्दरर के दोनों िाथों को पकड़ शलया। सुन्दरर उनके चरणों में श्रगर पड़े।

कजल्लकमर ने भी उनके चरण-कमलों में प्रणाम ककया। दोनों परस्पर आशलंगंनबद्ध िो गये। दोनों भगवान् ् के मजन्दर में गये और आराधना की। तब दोनों एक-साथ ततरुवारुर की ओर चले ।

परवैसुन्दरर के प्रतत अत्यश्रधक क्रोश्रधत थी; तयोंकक उन्िोंनेउसके अततररतत सांश्रगली से ववविा कर शलया था। सुन्दरर ने भगवान् ्सेपरवै का क्रोध िान्त करनेकी प्राथनवा की। भगवान् ्दो बार सांश्रगली के घर गये, उसे िान्त ककया और पुनिः उनका शमलन करवा हदया। अपनेभतत के शलए भगवान् ्ने सन्देिवािक दूत तक का काय वककया। अपने सच्चे भततों के शलए भगवान् ्दास तक बन जाते िैं।

सुन्दरमूतत वसांसाररक जीवन से ववरतत िो गये। उन्िोंनेभगवान् ्से प्राथनवा की कक वे इनको वापस कैलास ले चलें। तब भगवान् ्ने उनके शलए श्वेत िाथी भेजा।
सुन्दरमूतत वने ववशभन्न धाशमकव स्थलों पर मजन्दरों में भगवान् ्की स्तुतत में पद गाये । यि गीत तेवारम किलाते िैं। यि पुस्तक रूप में संग्रिीत िैं। आज भी सभी भतत अत्यन्त श्रद्धापूवकव यि तेवारम गाते िैं। सुन्दरमूतत,व अप्पर अथवा ततरुनावुतकरसर तथा ततरुज्ञान समबन्धर द्वारा गाये गये पद तेवारम किलाते िैं। माखणतकवाचकर द्वारा गाये गये पद ततरुवाचकम किे जाते िैं।

सुन्दरमूतत वकी भगवान् ्शिव के साथ सख्य भाव की भजतत थी। अतिः वि भगवान् ्के साथ पूणतवया शमत्रवत् ्भाव रखतेथेऔर अत्यन्त सिज भाव से भगवान् ्से स्वण,व मोती की माला, कस्तूरी, बिुमूल्य िीरे-

मोततयों के िार, ऐनक, छड़ी, वस्त्र, सुगजन्धत िव्य, आभूषण, वायु के वेगे से दौड़ने वाले ेघोड़े, स्वखणमव पुष्प, पालकी, ततरुवारुर की तताई समपदा इत्याहद कुछ भी मागाँ लेतेथे। वि स्वयं सुख भोगने की इच्छा से कुछ निीं ंमागाँते ेथे। उनकी तनजी स्वाथपूवण वइच्छा कुछ भी निींथी। अपनेशलए उन्ोंनेकुछ निीं रखा। जो उन पर आश्रश्रत थे, उन्ीं ंकी आवश्यकता के शलए इन वस्तुओं का उपयोग उन्ोंनेककया।

सुन्दरमूतत वने संसार को सख्य भाव की भजतत का माग वदियवा।

माखणतकवाचकर

माखणतकवाचकर का जन्म ब्राह्मण पररवार में िुआ। मदुरै से सात मील दूरू वैकै नदी के तट पर ततरुवाटूबुर नामक स्थान उनका जन्म-स्थान िै। समभवतया उनका जीवन-काल ६५० ई. से ६९२ई. तक का िै। कुछ ववद्वान् ्उनका काल दसवीं ंग्यारिवीं ंिताब्दी के मध्य का मानते िैं। उनकी शमत्रता मदुरै के राजा अररमदवन पाजण्यिन के साथ िो गयी और उनके प्रमुख मन्त्री बन गये। वि ततरुवादऊर के नाम से भी जानेजाते िैं।

पाण्ड्य नरेि ने माखणतकवाचकर को बिुत सा धन दे कर राज्य के शलए बहढ़या घोड़ेखरीदने के शलए भेजा। माग वमें ततरुपेरुन्दुरै के उपवन में उन्ोंने भगवान शिव का कीतनव-गायन सुना। विााँभगवान शिव एक शिवयोगी के वेष में अपने गुणों को शिष्यों के रूप में संग ले कर एक वृकूष के नीचे बैठे िुए थे। वे माखणतकवाचकर को शिवज्ञान में दीक्षक्षत करने के उिेय से िी आये थे।

माखणतकवाचकर ने भगवान् ्के चरणों पर श्रगर कर स्वयं को समवपतव कर हदया। भगवान् ्शिव ने उन्ें गुह्य शिवज्ञान में दीक्षक्षत ककया। माखणतकवाचकर जजतना भी पाण्ड्य नरेि का धन लाये थे, वि सब उन्ोंने शिव मजन्दरों के तनमाणव तथा शिव-भततों को भोजन खखलानेमें व्यय कर हदया। उन्ोंनेसवस्वव त्याग कर कौपीन धारण कर शलया और संन्यासी बन गये। राजा के पास इसकी शिकायत पिुाँची।

राजा ने माखणतकवाचकर को पत्र शलख कर भेजा और तुरन्त अपनेसामनेउपजस्थत िोने की आज्ञा दी। माखणतकवाचकर ने इस पर कोई ध्यान निींहदया। भगवान् ्ने उन्ें किा - "म ैंआवखण मूल में घोड़ेले कर पिुाँच जाऊाँगा, तुम तनजश्चन्त िो कर पिले ेपिुाँच जाओ और राजा को यि िीरक दे देना।" माखणतकवाचकर मदुरै पिुाँचे,े राजा को िीरक हदया और किा—"घोड़ेआवखण को यिााँ आ जायगें।" आवखण से दो हदन पूव वजब घोड़ों की कोई सूचना आती हदखायी निीं दी, तब राजा धैय वखो बैठा। उसने सोचा माखणतकवाचकर ने धोखा हदया िै; अतिः उन्ें कारावास में िाल हदया गया, अत्यश्रधक यातनाए ाँदी गयीं।

आवखण मूल की प्रातिः घोड़ेपिुाँच गये। भगवान् ्शिव ने साईस का वेष धारण ककया िुआ था। अपनेभततों के प्रतत ककतने दयालु िैं भगवान! राजा अत्यश्रधक प्रसन्न िुआ। उसनेमाखणतकवाचकर से क्षमा-याचना की और कारावास से मुजतत दी। भगवान् ्ने अपनी लीला द्वारा शसयारों को घोड़ेबना हदया था। प्रातिः सभी घोड़ेपुनिः

शसयार बन गये। राजा के क्रोध का पारावार न रि। उसने माखणतकवाचकर को अत्यश्रधक यातना देनी प्रारमभ कर दी। उर्न्े दौपिर १२ बजे ेकड़ी धूप में वैकै नदी की तपती रेत में खड़ा रखा गया। भगवान ने अपनेभतत के रक्षाथ व तत्काल नदी में बाढ़ ला दी। सारा नगर जलमग्न िो गया।

अन्य मजन्त्रयों ने राजा से किा कक एक मित्मा को कष्ट देनेके कारण िी िमें यि मुसीबत झेलनी पड़ रिी िै। राजा ने तुरन्त माखणतकवाचकर को मुतत कर हदया तथा ककसी भी प्रकार से यि बाढ़ रोकने की प्राथनवा करने लगा। जैसे िी माखणतकवाचकर नदी के तट पर आये, बाढ़ िान्त िो गयी। राजा ने समस्त प्रजा को एक-एक टोकरी शमट्टी नदी के तट पर िालनेकी आज्ञा दी। सभी दरारें भर दी गयीं। केवल वजन्द नामक एक बुहढ़या के हिस्से ेकी दरार िेष रि गयी। वि बूढ़ी अत्यन्त दुिःखी थी। भगवान् ्दयापूवकव एक कुली के रूप में उसके सममुख प्रकट िुए तथा मुट्ठी भर चावल के बदलेमें उसके शलए शमट्टी की टोकरी ढोने ेकी प्राथनवा की; ककन्तु शमट्टी से खेलते ेरिे, कुछ भी काम न ककया। राजा को इसका ज्ञान िुआ, तो उसे ेबिुत क्रोध आया और वि छड़ी से वजन्द के कुली को मारने लगा। छड़ी की चोट का कष्ट स्वयं राजा तथा समस्त प्रजा जनों को अनुभव िुआ। कुली अन्तधानव िो गया। राजा समझ गया कक यि सब भगवान् ्शिव की लीला थी। उसे ेमाखणतकवाचकर की मिानता का भी बोध िो गया।

तब माखणतकवाचकर को भगवान् ्शिव के दिनव िुए। भगवान् ्ने उर्न्े समस्त तीथस्वथलों के दिनव करने और कफर श्रचदमबर जाने की आज्ञा दी। माखणतकवाचकर ततरुवण्णमले,े कांश्रचपुरम् ्तथा अन्य तीथस्वथानों के दिनव करते ेऔर अपने ततरुवाचकम् ्गान करते िुए अन्तत: श्रचदमबरम् ्पिुँचे। यिींपर उर्न्ोंने'ततरुतकोवै' की रचना की।

तदुपुरान्त माखणतकवाचकर ने बौद्ध गुरु के साथ िास्त्राथ वककया और उसे ेपराजजत कर हदया। भगवती सरस्वती ने बौद्ध गुरु तथा उसके शिष्य—दोनों को मूक बना हदया। बौद्ध राजा ने उनसे ेकिा – “आपनेमेरे धमगुवरु और उनके समस्त शिष्यों को मूक बना हदया िै, यहद आप मेरी मूक पुत्री को वाचाल कर दें, तो म ैंऔर मेरी समस्त प्रजा—सभी िैव धम व"अपना लेंगे।” तब माखणतकवाचकर ने राजपुत्री से कुछ प्रश्न ककये। वि बोल कर उत्तर देनेलग गयी। इससे बौद्ध राजा तथा उसकी प्रजा ने िैव धम वग्रिण कर शलया। माखणतकवाचकर ने बौद्ध गुरु तथा उसके शिष्यों को भी वाणी लौटा दी।

तब भगवान् ्ब्राह्मण के रूप में माखणतकवाचकर के पास आये। माखणतकवाचकर ने समपूण व ततरुवाचकम् ्उनके सममुख गा हदया। ब्राह्मण ने उसे ेपनईताड़-वृकूष के पत्तों पर शलख हदया तथा अन्त में शलखा- "माखणतकवाचकर ने इसे ेसुनाया, ततरुश्रचत्तमबल उियार ने शलखा।" ब्राह्मण ने इसे े'पंचाक्षर पडि श्रचत्सवै' में रख हदया। तब श्रचदमबरम् ्के ब्राह्मणो ने इसे ेमाखणतकवाचकर को हदखाया तथा इसके पदों के अथ वकी व्याख्या करने की प्राथनवा की। माखणतकवाचकर ने उत्तर हदया- "यि ततल्लै ैनटराज िी इन पदों की व्याख्या िै। वि उसी समय भगवान् ्नटराज के चरणों में, बत्तीस वष वकी आयु में िी, लीन िो गये। माखणतकवाचकर के पदों की संख्या बावन िै। यि समस्त पदगीत 'ततरुवाचकम् ्नामक काव्य ग्रन्थ में संग्रिीत िै। यि अत्यन्त सौन्दययुवतत, पावन, उदात्त

तथा भावप्रेरक िैं। इसमें अलंकृत काव्य छठा िै। दक्षक्षण भारतीय भतत तनत्य ततरुवाचकम् ्गान करते िैं; जो भी इनका श्रवण करता िै, उसका हृदय उसी समय िववत िो जाता िै।

वप्रय पाठक जन! माखणतकवाचकर के जीवनचररत्र को पढ़ कर आप समझ सकते िैंकक भगवान् ्शिव भततों के दास बन जाते िैं।

ततरुमूलर

ततरुमूलर नयनार िैव शसद्धान्त दिनव के प्रमुख ग्रन्थों में से एक स्तोत्र-ग्रन्थ मानेजानेवाले 'ततरमजन्तरम्'् नामक आगम-ग्रन्थ के रचतयता थे।

वि एक मिान् ्शिवयोगी थेजजन्िोंने भगवान् ्शिव के द्वारपाल नन्दी की कृपा प्राप्त की थी। वि कैलास से दक्षक्षण भारत आये थे। उन्िें दक्षक्षण भारत में जस्थत पोहदगैपवतव पर अगस्त्य ऋवष के दिनव करने की इच्छा थी। वि केदारनाथ, नेपाल, अववमुततम्,् ववन्ध्याचल, कािी, कालिजस्त, ततरुवालंगािु, काजचचपुरम, ततरुवहदगै,ै श्रचदमबरम और पेरुपपुशलयर गये। तब वि ततरुवािुतुरे आ गये और वििंभगवान् ्की उपासना की।

जब यिााँसेवि आगे चले ेऔर कावेरी के तट पर जा रिे थे,े तो वािााँइन्िें गायों के रमभाने की आवाज सुनायी दी जजनका मूलन नामक ग्वाला, जो कक चात्तनूर का तनवासी था, मर गया था। यि शिवयोगीश्वर गायों की ऐसी िोकातुर जस्थतत देख करुणा से िववत िो गये। वि उस ग्वाले ेकी मृत दिे में प्रवेि कर गये और गायों को ले कर उनके घर की ओर चले। जब वि ग्वाले ेके घर पिुाँचे, तो मूलन की पत्नी उनके तनकट आयी; ककन्तु उन्िोंने स्वयं को स्पि वकरने से िटा हदया और उससेवाता वतक निींकी। मूलन की स्त्री, अपने पतत के इस तनष्ठुर व्यविार से अत्यन्त व्याकुल िुई और रात भर रोती रिी। मूलन के िरीर में प्रववष्ट शिवयोगी ध्यान लगा कर बैठ गये और बिुत देर तक तनश्चेष्ट समाश्रध अवस्था में िी बैठे रिे। उस समय लोगों ने उन्िें देखा और किा कक यि तो कोई मिान् ्योगी िै। वि समाश्रध से उठे और अपनेअसली िरीर में पुनिः प्रववष्ट िोनेके शलए उसी स्थान पर गये; ककन्तु उनका िरीर वािााँपर निींशमला। उन्िोंनेअपनी योगि–जतत द्वारा हदव्य दृजष्ट से जान शलया कक भगवान् ् की इच्छा िै कक उनके द्वारा िैवागम िास्त्र का दक्षक्षण भारत के लोगों के शलए तशमल भाषा में पद्यात्मक अनुवाद िो; इसशलए विी इनके िरीर को वापस कैलास लेगये िैं।

तब वि ततरुवािुतुरे चलेगये, भगवान् ्शिव पर ध्यान लगाया तथा िैव दिनव शसद्धान्त को तीन सिस्र पदों में, एक पद प्रततवष वकरके शलखा। उन्िोंनेसंस्कृत िैवागमों के िैव धम वशसद्धान्तों का तशमल भाषा में पद्यानुवाद ककया। उनकी रचनाए ाँनींव बनी, जजसके आधार पर तशमल िैव दिनव शसद्धान्त की संरचना िुई. यि मिान् ्काय वसमपन्न करने के पश्चात् ्वि पुनिः शिवधाम कैलास लौट गये।

• ततरुमूलर ने वणनव ककया िै कक राजयोग अथवा्अष्टांगयोग की साधना करने से तया-तया फल प्राजप्त िोती िै। यमों का अभ्यास करनेसे भगवती उमा का आिीवादव तथा अमरपतत पद की प्राजप्त िोती िै। तनयम-

साधना करने से योगी को शिव पद की उपलजब्ध िोती िै। आसन-साधना के द्वारा वि हदव्य-नाद-श्रवण करता िै। प्राणायाम-साधना करने से वि पद प्राप्त िोता िै जजसमें समस्त देवता उसका गुणगान करते िैं। प्रत्यािार-साधनाकरने से उसे ेशिव-सारूप्य प्राप्त िोगा तथा देवता भी उसे ेशिव-समान देख कर असमंजस में पड़ जायगें। धारणाकीसाधना करके वि ब्रह्मलोक तथा ववष्णुलोक तक किीं ंभी जा सकता िै। ध्यान-साधना करने से उसे े ब्रह्मा,ववष्णु, रुि और इन्ि के लोक की प्राजप्त, सालोतय प्राजप्त िोगी । समाश्रध-साधना करने के द्वारा योगी समस्तउपाश्रधयों से मुतत िो कर भगवान् ्शिव के साथ एकत्व अथात्व ्तत् ्पदम् ्की प्राजप्त कर लेगा ।

बसवन्न

बसवन्न मिान् ्वीरैव समाज के धाशमकव गुरु थे। वि बासवराजा, बासवेश्वर नामों से भी जानेजाते ेथे। वि गिन गमभीर श्रचन्तनील थे। उन्िोंनेसामाजजक समंजन तथा श्रचन्तनिैली में पयाप्वत पररवतनव ककये।

वि कनाटवक प्रान्त के िैव सुधारक थे। शिवाचार नाम से जानेजानेवाले समप्रदाय को वतमवान रूपरेखा उन्िोंनेिी दी थी।

उनका काल बारिवींिताब्दी था। उनका जन्म एक ब्राह्मण पररवार में िुआ। उन्िोंनेअपनी जातत की पूजा-पद्धतत अत्यन्त रूहढ़वादी तथा कमकवाण्ि-प्रधान िो जानेके कारण त्याग दी तथा वीर िैव समप्रदाय, जो उस समय अत्यन्त प्रचशलत था, को अपना शलया।

वि कल्याण के त्रबज्जाला राजा के दरबार में मुख्यमन्त्री थे। वि अत्यन्त लोकवप्रय मन्त्री थे। वि अत्यन्त दयालु, उदात्त, ववनम्र, अत्यन्त प्रीततकर तथा तनभीक व्यजतत थे। उन्िें भगवान् ्के प्रतत अथाि श्रद्धा और ववश्वास था। लोग उनकी आज्ञा का पालन करते ेतथा उनकी पूजा करते ेथे। वि जन-साधारण में भी घुल-शमल जाते ेथे। वि उनके कष्टों को प्ेरेमपूवकव सुनते थे ेऔर उन्िें दूरू कर देते ेथे। जनता के साथ उनका शमत्रवत् ् समबन्ध था। अपने धमप्रवचाराथ वउन्िोंनेअथक पररश्रम ककया। इस सकक्रय प्रचार-प्रसार के कारण उनके अनेक त्रिु बन गये। दिे में गृि आन्दोलन िो गये। इसी अराजकता के समय में राजा त्रबज्जाला की मृतूयु िो गयी, इसी समय बसवन्न का जीवन भी समाप्त िो गया। यद्यवप उनका प्राणान्त कैसे िुआ, यि स्पष्ट ज्ञात निीं।

वि एक सुधारक थे। वि वीर िैव लिर के नायक बन गये। उन्िोंनेऐसा समप्रदाय स्थावपत ककया जो आज अनेक लोगों को मान्य िै। इसके द्वारा तनधनव पुजारी वग ववकशसत िुआ। इसने प्राचीन पुरोहित वग वकी समाजप्त कर दी। जन साधारण में परम सत्य की स्थापना िेतु इसनेस्थानीय (दिी बोली) भाषाओंको माध्यम बनाया। इसमें जस्त्रयों को सामाजजक तथा धाशमकव क्षेत्र में वविेष मित्त्वपूण वस्थान हदया गया। इसनेउच्च तनमन सभी के शलए परम लक्ष्य प्राजप्त के शलए एक समान आदि वबताया।

बसवन्न ने सत्य के शलए मिान् ्त्याग ककया। लोगों ने उन्िेंअपना गुरु माना। उनके वचन, उनके हृदय की आवाज थे। अतिः वि सबके हृदय में सीधा प्रवेि कर जाने में सक्षम थे। वि सरल, सीधे और िजतत-समपन्न व्यजतत थे। उनके द्वारा स्थावपत सदाचार के तनयम उदात्त और प्रिंसनीय िैं। वे सत्य के सच्चे जजज्ञासु थेतथा सत्य-प्राजप्त िेतु बड़े-से-बड़ा बशलदान करने को तत्पर थे। वे प्रेम और करुणा की साकार प्रततमा थे। उनके उपदेिों का सारतत्त्व िै - प्राणी मात्र के प्रतत प्रेम अथवा वैश्व-प्रेम।

अध्याय १२.

शिव-भतत

सन्त और मनीषी

सन्त कौन िै? जो सदा भगवान् ्अथवा परब्रह्म में तनवास करता िै, जो अिंकार, रुश्रच-अरुश्रच, स्वाथपवरता, दमभ, ममता, काम, क्रोध, लोभ इत्याहद से मुतत िै, जो समदृजष्ट, सन्तुशलत मन, दया, सहिष्णुता, सदाचार तथा वैश्व-प्रेम की भावना से समपन्न िै तथा जजसको आध्याजत्मक ज्ञान प्राप्त िै, वि सन्त िै।

सन्त और मनीषी जन समस्त जगत् ्के शलए िी आिीवादव स्वरूप िैं। वे श्रेष्ठ आध्याजत्मक ज्ञान, आध्याजत्मक िजततयों तथा अनन्त आध्याजत्मक समपदा के परररक्षक िैं। राजा-मिाराजा तक उनके चरण-कमलों में नतमस्तक िोते िैं। राजा जनक ने ऋवष याज्ञवल्तय से किा था – “िे पूज्यवर ! आपश्री के उदात्त पावन तनदेिन में प्राचीन औपतनषहदक ज्ञान प्राप्त करके म ैंआपका ऋणी िूँ। आपके श्रीचरणों में म ैंअपना समपूण व राज्य समवपतव करता िूँ! और म ैंआपका अब दास िूँ। एक सेवेक िो म ैंआपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में िूँ।"

सन्त और ऋवषयों का ऐसा उदारचेता स्वभाव िोता िै। उनका अजस्तत्व मात्र अन्यों को प्रेरेरत करता तथा उकसाता िै कक वि भी उनके जैसे बनें और उसी आनन्दपूण वजस्थतत को प्राप्त करें जो कक उन्िेंप्राप्त की िुई िै। यहद उनकी ववद्यमानता से ऐसा न िोता, तो आपका आध्याजत्मक ववकास और मोक्ष भी न िोता उनकी महिमा अकथनीय िै। उनका ज्ञान अगाध िै। वि समुद्र के समान गिन, हिमालय की भाँतत जस्थर, हिम की भाँतत िुद्ध और सूय वके समान प्रकािमान िैं। व्यजतत जन्म-मरण के इस भयंकर संसार रूपी समुद्र को उनकी कृपा, सत्संग अथवा सन्त-संगतत के द्वारा पार कर लेता िै। उनके तनकट रिना सवोच्च शिक्षा िै। उनसे प्रेम करना सवोत्तम सुख िै। उनका नैकट्य िी सच्ची शिक्षा िै।

वेगावाँ-गावाँ घूम कर हदव्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार करते िैं। वे दर-दर भटक कर ज्ञान बाटाँते िैं। वे अपनी आवश्यकता पूतत वितु अल्पप्तम ग्रिण करते िैं और स्वयं सवोत्तम ज्ञान-संस्कृतत तथा प्रबुद्धता लोगों को प्रदान करते िैं। उनका जीवन िी लोगों के शलए अनुकरणीय उदिारण िै। वि प्रवचन करते िों अथवा न करते िों, ज्ञानोपदेि देते िों अथवा न देते िों, इससे कुछ अन्तर निीं पड़ता।

केवल सन्त और मनीषी िी राजा-मिाराजाओं के सच्चे ेपरामिदवाता बन सकते िैं, तयोंकक वे तनिःस्वाथ व भावना तथा सवोत्कृष्ट वववेक सेसमपन्न िोते िैं। मात्र वे िी जन-सामान्य में नैततक सुधार ला सकते िैं। केवल वे िी परम आनन्द तथा मोक्ष प्राजप्त का माग वदिा वसकतेिैं। शिवाजी के पथ-प्रदिकव समथ वस्वामी रामदास थे। राजा दिरथ के पथ-प्रदिकव मिवष ववशसष्ठ थे े

सन्तों के जीवन चररत्र पढ़ें, आप तत्क्षण प्रेरणा प्राप्त करेंगे। उनके वचन स्मरण करें, आप तत्काल उन्नत िो जायगें। उनके चरण-श्रचह्नों पर चलें, आप दुिःख-कष्टों से मुतत िो जायगें। इसशलए 'सन्त - चररत्र' नामक पुस्तक आपकी तनजश्चत रूप से'िाश्वत सखा' िोनी चाहिए। यि सदा आपके पास, आपकी जेब में, आपके शसरिाने िोनी चाहिए।

अपनी दोष दृजष्ट के कारण उन पर अकारण िी दोष अथवा त्रुहटयााँन थोपें । आप उनके गुणों का अनुमान निींलगा सकते। ववनम्र िो कर उनके चरणों में बैठें। अपने हृदय और आत्मा से उनकी सेवा करें और अपनेसंियों का तनवारण करें। उनसे ेतनदेिन प्राप्त करें तथा उन तनदेिों का गमभीरता से अभ्यास करें। तनिःसन्देि आप लाभाजन्वत िोंगे।

प्रत्येक ववद्यालय, प्रत्येक मिाववद्यालय, प्रत्येक छात्रावास, प्रत्येक कारावास, प्रत्येक संस्था और प्रत्येक घर में पथ-प्रदिकव के शलए सन्त का िोना अतनवाय वै। सन्तों का अभाव निींिै। आप उन्िें चािते िी निीं िै। आप उनके पास जाना िी निींचािते। आप उनकी सेवा करना निींचािते। आप उच्चतर वस्तु की आकांक्षा िी निींकरते। आप फूटी कौडड़यों और कााँच के टुकड़ों को ले कर िी पूणतविः सन्तुष्ट िैं। उच्चतर हदव्य ज्ञान तथा आन्तररक िाजन्त प्राप्त करने की आध्याजत्मक क्षुधा वपपासा आपमें िै िी निीं।

सन्तों और मनीवषयों की कोई जातत निींिोती। उनकी जातत-पातत न देखें। आपको सन्तोष निींिोगा। आप उनके सद्गुणों को हृदयंगम निींकर सकते। उच्चतर धम वमें न कोई जातत िै, न कोई मत-पथ । मोची, जुलािे और िीू मिान् ्सवश्रेवष्ठ सन्त िुए िैं। ववेवके और आत्मज्ञान केवल ब्राह्मणों की बपौती निींिै। दक्षक्षण भारत के ब्राह्मण केवल ब्राह्मण दण्डी स्वाशमयों का िी सममान करते िैं और केवल उन्िें िी भोजन-शभक्षा देते िैं। यि गमभीर त्रुहट तथा मिान् ्भूल िै। ककतनी िोचनीय जस्थतत िै उनकी! यिी कारण िै कक सन्त दक्षक्षण भारत भ्रमणाथ वनिींजाते,े वािााँतनवास निींकरते। पंजाब और गुजरात में सन्तों के प्रतत श्रद्धा-भजतत िै। इसीशलए सन्त उधर िी जाते िैं और लोग उनसे ेआध्याजत्मक लाभ प्राप्त करते िैं।

यि संसार इन सन्तों और ऋवष-मुतनयों से पररपूण वजो जाये! आप सब उनके सत्संग-लाभ और उपदि-लाभ से परम लक्ष्य प्राप्त करें! सन्त मनीवषयों के आिीवादव आप सब पर िों!

माकव णडेय

माकवणडेय भगवान् ्शिव के मिान् ्भतत थे। उनके वपता मृकृणडु ने पुत्र-प्राजप्त के शलए गिन तपस्या की। भगवान् ्प्रकट िुए और किा - "िे ऋवष ! आपको मूख वऔर दुष्ुट दीघ वआयुसमपन्न कुपुत्र चाहिए, अथवा ऐसा बुद्श्रधमान् ्सुपुत्र जो सोलि वष वकी आयु में मृतूयुको प्राप्त िो जायेगा ?" मृकृणडु ने उत्तर हदया- "िे प्रभु, मुझे ेसुपुत्र िी प्रदान करें।"

बालक को अपने भाग्य के समबन्ध में ज्ञात िो गया और उसनेगिन श्रद्धा-भजतत सहित समपूण वहृदय से भगवान् ्शिव की उपासना प्रारमभ कर दी। अपनी मृतूयुके शलए तनजश्चत हदन आ जाने पर वि गिन ध्यान और कफर समाश्रध में लीन िो गया। यमदूत उसके तनकट आ कर स्पि वतक करने का सािस न कर पाये। अतः यमराज स्वयं उसके प्राण लेनेके शलए आये। बालक ने भगवान् ्शिव से रक्षाथ वप्राथनवा की और शिवशलंगं को आशलंगंन बद्ध कर शलया। यमराज ने बालक तथा शलंगं दोनों पर मृतूयुपाि फेंका। भगवान् ्शलंगं में से तत्काल प्रकट िो गये और बालक की रक्षा करने के शलए यमराज को मार हदया। उसी समय से भगवान् ्मृतूयुंजय तथा काल-काल किलाने लगे।

तब देवता भगवान शिव के पास आये और प्राथनवा की- "िे प्रभु, आपको बारमबार प्रणाम िै! यमराज को अपनी भूल के शलए क्षमा कर दें! िे करुणातनधान, उन्िें जीवन-दान दें !" तब भगवान ने उनकी प्राथनवा पर यमराज को पुनिः जीवन प्रदान कर हदया। उन्िोंने माकवणडेय को भी वरदान हदया कक वि सदैव सोलि वषीय बालक िी रिेंगे। वि श्रचरंजीवी िैं। दक्षक्षण भारत में आज भी नर-नारी बालकों को आिीवादव देते ेसमय यिी किते िैं- "माकवणडेय सम श्रचरंजीवी रिो !"

तप और ध्यान द्वारा आप तीनों लोकों के ककसी भी वस्तु पदाथ वको प्राप्त कर सकते िैं।

ऋषभ योगी की कथा

स्कन्दपुराण के ब्रह्मोत्तर काणड में यि कथा सात अध्यायों में वणनव की गयी िै।

मन्दार अवन्ती के एक मिान् ्ववद्वान् ्थे। ककन्तुवि वपंगंला नामक वेश्या के साथ रिते ेथे। ऋषभ एक मिान् ्शिवयोगी थे, जो मन्दार के घर एक हदन अततश्रथ बन कर रिे थे। मन्दार और वपंगंला ने अत्यन्त श्रद्धा और भजततपूवकव उनकी सेवा की तथा आिीवादव प्राप्त ककया।

तनजश्चत समय पर दोनों की मृतूयु ि◌ो गयी। मन्दार का जन्म दसरना के राजा वज्रबिाु के पुत्र के रूप में ुआि। जब अभी वि मा ◌ाँके गभ वमें ि◌ी था, तो उसकी माता सुमतत को राजा की अन्य रातनयों ने ईष्यावि ववष दे हदया। मा ◌ाँऔर शिि◌ुदोनों अत्यन्त बीमार ि◌ो गये और उनका कोई उपचार न ि◌ो सका। राजा की आज्ञा से दोनों को वन में एकाकी छोड़ हदया गया।

भगवान् ◌्की कृपा से उन्ि्एिक धनाढ्य व्यापारी ले गया और उनकी भली-भाताँत देख-रेख करने लगा। बालक की दिा हदन-प्रततहदन त्रबगड़ती गयी और अन्तत: उसकी मृतूयु ि◌ो गयी। माता अपनेपुत्र की मृतूयु से अत्यन्त ि◌ोकातुर थी। अब ऋषभ का आगमन ि◌ुआ। उन्िोंने माता को धैय वबधााँने तथा दातवनक उपदेि देने का प्रयास ककया, ककन्तु उस पर इसका प्रभाव न ि◌ुआ। तब योगी ने शिव-भस्म से बालक को स्पिि ककया और बालक पुनिः जीववत ि◌ो उठा। उन्िोंने बालक और उसकी माता को अपनेयोग बल से पूणतवया स्वस्थ और सुन्दर बना हदया। उन्िोंनेबालक का नाम भिायु रखा और उसे ◌ेशिवकवच शसखाया। उन्िोंनेउसे ◌ेएक तलवार, एक ि◌ंख तथा दस सिस्र ि◌ाजस्त बल प्रदान ककया। उन्िोंनेउसे ◌ेशिव भस्म भी दी। तब योगी चलेगये।

भिायुतथा व्यापारी का पुत्र सुनया इकट्ठे प्रसन्नतापूवकव रिने लगे। भिायु ने सुना कक उसके वपता मगधनरेि ि◌ेमरथ द्वारा अपदस्थ करके बन्दी बना शलयेगये ि◌ैं। वि सुनया के साथ गया, ि◌त्रुओं को पराजजत ककया तथा अपनेवपता को छुड़ा शलया, साथ ि◌ी मगध राजा द्वारा बन्दी बनाये गये समस्त मजन्त्रयों और रातनयों को भी मुतत करवा हदया। वि मगध के राजा और उसके पररजनों को अपनेवपता के पास बन्दी छोड़ कर वापस घर लौट आया। उसनेअपने वपता को अपना पररचय निीं ◌ंहदया। वपता ने लड़के की वीरता की अत्यन्त प्रिंसा की तथा उसके प्रतत अत्यन्त आभार अशभव्यतत ककया। इस प्रकार मिान् ◌्शिवयोगी ऋषभ ने उस भिायु पर इतनी कृपा की जजसने मन्दार के रूप में चररत्रिीन ि◌ोनेपर भी उनकी एक हदन सेवा की थी।

आयवव्रत के राजा श्रचत्रवमा वके सीमजन्ततन नाम की कन्या थी। तनिाध के नल और दमयजन्त के कुछ ि◌ी काल पश्चात् ◌्जब वि नौकाववािर कर रिे थे, तो चन्द्रांगद यमुना में ि◌ूब गया। पुत्र इन्द्रसेन के बेटे चन्द्रांगद का इस सीमजन्ततन से वववाि ि◌ुआ। वववाि के नागकन्याए ◌ाँचन्द्रांगद को नागलोक में तक्षक के पास ले गयीं।

सीमजन्ततन को ज्योततवष द्वारा ज्ञात ि◌ो गया था कक वि चौदि वष वकी आयु में वैधैन्य को प्राप्त ि◌ोगी। अत: उसनेयाज्ञवल्तय की पत्नी मैत्रेयी से भगवान् ◌्शिव की सोमवार और प्रदोष-पूजन करनेकी दीक्षा ग्रिण की थी। ववधवा ि◌ो जाने के बाद भी उसनेयि पूजा तनरन्तर जारी रखी।

चन्द्रांगद के यि इच्छा व्यतत करने पर कक वि अपनी पत्नी के साथ जीवन व्यतीत करना चािता ि◌ै, तक्षक ने उसे ◌ेयमुना तट पर पुनिः छोड़ हदया। एक हदन सोमवार की सन्ध्या वेला में जब सीमजन्ततन यमुना तट पर स्नान के शलए गयी, तो उसका पतत से पुनशमलवन ि◌ो गया।

चन्‌िंगिद की अनुपजस्थतत में जो ित्रु राजा उसके वपता को अपदस्थ करके स्वयं राजा बन बैठा था, उसे ेचन्‌िंगिद ने पराजजत ककया और पुनिः अपनेवपता को शसंिासिन पर बैठा हदया। सीमजन्ततन और चन्‌िंगिद का भगवान् ्शिव की अनुकमपा से पुनशमलवन िो गया।

सीमजन्ततन प्रत्येक सोमवार को भगवान् ्शिव और पावतवी के सममानाथ वब्राह्मणों की सपत्नीक पूजा ककया करती थी और उपिार भेंट हदया करती थी। दो ब्राह्मण लड़के ववदभ-वनरिे के पास जा कर अपने वविािाथ व धन प्राजप्त की प्राथनवा करने लगे। राजा ने उन्िें किा कक तुम दोनों पतत-पत्नी का वेष धारण करके सीमजन्ततन के पास चलेजाओ। उन्िोंनेसीमजन्ततन की भजतत की परीक्षा लेनेके शलए ऐसा ककया। लड़कों ने इसी प्रकार ककया। सीमजन्ततन उन्िें देख कर िँस पड़ी और कफर शिव-पावतवी के रूप में उनकी पूजा की। दोनों में से एक लड़का जो लड़की बना िुआ था, स्त्री बन गया। जो सीमजन्ततन की िजतत से स्त्री बन गया था, उसके वपता ने राजा से इस मुसीबत से छुटकारा हदलाने की प्राथनवा की। राजा ने पावतवी से प्राथनवा की। पावतवी ने अपनी भतत के काय वमें स्तिक्षेप करने से इनकार कर हदया, ककन्तु उसके एक और पुत्र उत्पन्न िोने का वरदान दे हदया। उन दोनों लड़कों को परस्पर वववाि करके पतत-पत्नी रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

सीमजन्ततन के एक कृततमाशलनी नाम की पुत्री थी। यि कृततमाशलनी पूव-व -जन्म की वपंगंला वेश्या थी, जजसेशिव योगी ऋषभ की कृपा प्राप्त िुई थी। ऋषभ चन्‌िंगिद के पास गये और कृततमाशलनी का वववाि भिायु से कर देनेके शलए किा। उन्िोंने चन्‌िंगिद को भिायु की समस्त कथा सुनायी। चन्‌िंगिद ने भिायु के साथ अपनी पुत्री कृततमाशलनी का वववाि कर हदया। उन्िोंनेवववाि में भिायु के वपता को भी आमजन्त्रत ककया। जब वज्रबािु ने चन्‌िंगिद के दामाद को देखा, तो वि पिचान गया कक यि तो विी लड़का िै जजसने मगध नरिे को पराजजत करके इसका राज्य और स्वयं इसेभी छुड़वाया था। तब उसे े। मा–ँबेटे, सुमतत और भिायु की कथा बतायी गयी। वज्रबािु अपनी रानी, पुत्र और पुत्रवधू को अपनी राजधानी ले गये।

मिान् ्शिवयोगी ने अपनेश्रद्धालु उपासकों, मन्दार और वपंगंला को एक बार पुनिः शमला हदया। यद्यवप उन्िोंनेअसंयत, लमपट जीवन िी जजया था, तथावप भगवान् ्की कृपा के कारण उनकी रक्षा िुई तथा सुखपूवकव जीवन व्यतीत करने लगे। एक हदन भिायु वन में से जा रिा था, उसनेएक िेर द्वारा घसीट कर ले जायी जा रिी ब्राह्मण स्त्री के चीखने ेकी आवाज सुनी। उसने जी-तोड़ प्रयत्न ककया; ककन्तु स्त्री के रक्षाथ विेर को न मार सका । ब्राह्मण राजा को अपिब्द किनेलगा- "ओ कायर राजा! तुममें िेर को मार सकने का भी बल निीं, कैसे ेराजा िो तुम!" भिायु ने उस ब्राह्मण को उसकी पत्नी के स्थान पर कुछ भी वस्तु, यिाँतक कक स्वयं अपनी रानी भी, देनेका वचन हदया। ब्राह्मण ने उसकी रानी की िी मागाँ की। भिायु ने अपनी रानी उसे ेसौंप दी तथा रानी कृततमाशलनी के त्रबना जीववत न रिने की इच्छा से प्राण त्यागने को तत्पर िो गया।

तब भगवान् ्शिव तथा पावतवी उस शिव भतत राजा भिायु के सममुख प्रकट िुए और बोले— "िमने तुमिारी िजतत और धम वकी परीक्षा लेनेके शलए िी यि सब ककया था।" तब भगवान् ्ने भिायु और कृततमाशलनी

को शिव-सायुज्य प्रदान ककया तथा उनकी प्राथनवा से उनके माता-वपता को तथा वैश्य और उनके पुत्र को भी शिव सायुज्य प्रदान कर हदया। ब्राह्मण की पत्नी को पुनजीववत कर हदया तथा इन दोनों को आिीवादव हदया।

यि कथा शिव भजतत की महिमा को, शिव-भततों की मिानता को, प्रततहदन के वविेष रूप से सोमवार और प्रदोष के हदन सन्ध्यासमय शिव पूजन तथा शिव- -पूजन के मित्त्व को स्पष्ट रूप से प्रकट करती िै।

पुष्पदन्त

पुष्पदन्त एक मिान् ्शिव भतत थे। वि गन्धवरवाज थे। उनकी दन्तावशल मजल्लका पुष्प की भाताँत अत्यन्त सुन्दर थी। अतिः उनका नाम पुष्पदन्त 'पुष्प-जैसेदाताँों वाला' िो गया।

पुष्पदन्त वायु-गमन की शसद्श्रध से समपन्न थे। वि वाराणसी के राजा बिाु के उपवन से शिव पूजन के शलए पुष्प शलया करते ेथे। तयोंकक वि वायु में ववचरण कर सकते थे, अतिः उपवन के रक्षक माली उन्िें ढूाँढ़ निीं ं पाते थे। माशलयों को सन्देि िुआ कक कोई रिस्यमयी, अलौककक िजतत से समपन्न व्यजतत चुपके-चुपके उद्यान से फूल ले जाता ॥ िै अतिः उसे ेपकड़ने के शलए उन्िोंनेएक योजना बनायी।

उन्िोंनेभगवान् ्शिव पर चढ़ाये गये पुष्प उद्यान में शभन्न-शभन्न स्थानों पर त्रबखेर हदये। उन्िोंनेसोचा कक वि रिस्यमय व्यजतत उन पुष्पों पर पैर रख कर चलेगा।

सदा की भाताँत पुष्पदन्त पुष्प लेनेके शलए आये। वि उपवन में फैले ेफूलों के ऊपर चलते िै। अनजाने में भगवान् ्को समवपतव पुष्प रौंद हदये जानेसेउनके द्वारा भगवान अपमातनत ककये गये थे, अतिः उनकी वायु -ववचरण की िजतत जाती रिी। वि पकड़ शलये गये और राजा के सममुख प्रस्तुत कर हदये गये ।

पुष्पदन्त ने भगवान् ्शिव को प्रसन्न करने के शलए एक स्तुतत गायी और राजा के फूल चुरा लेनेके अपराध से स्वयं को बचा शलया। भगवान् ्की कृपा से वायुमें गमन करने की शसद्श्रध भी उन्िें पुनिः प्राप्त िो गयी।

यि प्रख्यात स्तुतत 'शिवमहिमनस्तव' के नाम से जानी जाती िै। यि पावन, उदात्त तथा प्रेरणास्प, भावनाओं से समपन्न िै। उत्तरी भारत के मजन्दरों में सायंकालीन पूजा-आरती के पश्चात् ्यि तनत्य गायी जाती िै। यि प्रत्येक व्यजतत के हृदय को छू लेनेवाली िै। यि प्रभावपूण,व लयपूण,व संगीतमय तथा गिन भजतत भावना से समपन्न िै। इसे ेकण्ठस्थ करके तनत्य गाना चाहिए। इससे आपको परम, िाश्वत, आनन्दमय शिव सालोतय की प्राजप्त िोगी।

कण्णप्प नायनार

ततण्णन, जो कण्णप्पन नाम से जानेजातेिंदक्षक्षण भारतकेउिुप्परनामक ककसी जंगली प्रदेि में व्याध जातत के सरदार नागन के पुत्र थे। नागन ककिोरावस्था से िी भगवान् ्सुब्रह्मण्यम के भतत थे। ततण्णन ककिोरावस्था से िी धनुष-बाण, भाला, तोमर तथा अन्य अस्त्र–स्त्र चलाने और आखेट करने में तनपुण िो गया। नागन पर बुढ़ापा आ रिा था। अतिः ततष्णन को अपनी जातत का सरदार बना हदया गया। अब ततण्णन अपनेअन्य साश्रथयों सहित आखेटे के शलए तनकला। वन-वन घूमते िुए उन्िेंएक जंगली सुअर शमला। जजसका बिुत देर तक पीछा करते–करते, े कभी पवतव के ऊपर, कभी नीचे भागते-भागते ेअन्ततिः उसको मारने में सफल िो गये। ककन्तु अत्यश्रधक थक जानेके कारण तथा क्षुधा पीडड़त िो जाने के कारण आखेटे को उसी समय पका कर खाने ेका ववचार ककया। इसशलए वि तनकट िी कालिाजस्त पवतव की ओर चल हदये। माग वमें ततण्णन के साथी ने पवतवों के अश्रधष्ठाता देवता कुिशमतेतेवर के दिनव करनेका आग्रि ककया; अत. वि पवतव देव के दिनवाथ वउसी ओर चल पड़े।

जैसे–जैसे ेवि पवतव की ओर ऊपर चढ़ते ेजाते ेथे, ततण्णन को प्रतीत िो रिा था मानो उनके ऊपर अब तक जो बोझ पड़ा िुआ लगता था, वि लुप्त िोता जा रिा उन्िोंने तनश्चय कर शलया कक भगवान् ्के दिनव पिले ेकरके तभी कुछ खायगें। जैसे िी वि मजन्दर के सममुख पिुँचे, तो देखा विााँशिवशलंगं िै। यि देख कर उनके आनन्द का पारावार न रिा। ईश्वर के दिनव करते िी वि तो प्रेम की साकार मूतत वी िो गये, अपूव वभजतत और अनन्त प्रसन्नता के रूप में पररखणत िो गये। जैसे ेमा ाँकी सहदयों से त्रबछुड़े अपने बच्चे को देखनेसे दिा िोती िै, ऐसे ततण्णन हदव्य प्रेम और िषातवतरेक की गिन भावपूण वसमाश्रध में लीन िो गये। वि! भगवान् ्शिव के प्रथम दिनव से िी तया असीम, अवणनवीय, अनन्त प्रसन्नता और उल्लास से वि भर गये। भगवान् ्के प्रतत आनन्द और प्रेम से भर कर वि आखोँ से अश्रु बिाते िुए शससककया ाँभर-भर कर रोनेलगे। उन्िेंसब कुछ ववस्मृत िो गया— भोजन, साथी और स्वयं अपना िरीर भी ।

वि यि सोच-सोच कर अत्यन्त व्याकुल िोते ेरिे कक भगवान् ्यिााँपवतव पर तनतान्त एकाकी िैं और वन्य पिुओं से भी सुरक्षक्षत निीं िैं। कोई भी उनको िातन पिुँचा सकता िै। अत: उन्िोंनेरात-भर विींरिना तनजश्चत कर शलया। भगवान् ्को भूख भी लगी िोगी, यि ववचार आते िी वे मारे िुए सुअर का मांस पका कर लानेके शलए भागे। उन्िोंनेस्वाद चख कर अच्छे-अच्छे टुकड़े चुने और उन्िेंभगवान् ्को खखलानेके शलए भून शलया, िेष को फेंक हदया। तब वि नदी की ओर गये और अशभषेक के शलए मुख में जल भर कर ले आये। माग वमें अच्छे सुन्दर फूल ढूाँढ़ कर उन्िेंअपनेकेिों के बीच खोंस शलया। इस प्रकार 'भली-भातााँत भगवान् ्की पूजा के शलए तैयार िो कर वि मजन्दर में पिुँचे। भगवान् ्पर जो फूल पिले ेचढ़े िुए थे, उन्िेंपैर के जूते द्वारा उतार हदया, मुख से िी जल तछड़क कर अशभषेके ककया, अपने केिों सेतनकाल कर पुष्प अवपतव ककये और अत्यन्त प्रेम से आग्रि करके भुने िुए मांस का भोग दोनों िाथों से उनके सममुख रखा। तब धनुष पर बाण चढ़ा कर मजन्दर के द्वार पर प्रभु की रक्षा के शलए रात-भर प्रिरी बन कर खड़ेरिे। प्रात: िोते िी, भगवान् ्के शलए पुनिः प्रसाद लानेके शलए, शिकार लेनेचल हदये।

जब ततण्णन आखेट के शलए गये िुए थे, तब मजन्दर का पुजारी शिवगोचररयार, जो कक भगवान् ्का भला और सच्चा भतत था, मजन्दर पिुँचा। उसके आश्चय वऔर तनरिा का हठकाना न रिा, जब उसनेदेखा कक मजन्दर में चारों तरफ कच्चा मांस, िड्डिया ाँत्रबखरी पड़ी िैं और पुष्प सज्जा भी खराब कर दी गयी िै। ककन्तु उसे ेकोई व्यजतत विााँहदखायी निीं हदया, जजसने यि काय वकरके मजन्दर की पववत्रता को नष्ट ककया था। अतिः स्थान-िुद्श्रिध के शलए उपयुतत मन्त्रोच्चारण करते िुए, • उसने मजन्दर को िुद्ध करके तनत्य की पूजा-अचनवा की तथा उसके उपरान्त मजन्दर के पट बन्द करके चला गया।

ततण्णन आखेट करके पूव वकी भातााँत मांस (गोश्त) का प्रसाद ले कर पिुँचे, पुजारी के सुसजज्जत पुष्पों को टिा कर अपनेढंग सेअपने लाये पुष्प चढ़ाये और प्रसाद अवपतव ककया। रात्रत्र-भर जाग कर पिरा हदया और प्रातिः पुनिः प्रसाद के शलए आखेटे करने चलेगये। इसी प्रकार पाचााँ हदन व्यतीत िो गये और माता-वपता के लाख अनुनय-ववनय करने पर भी वि भगवान् ्के िी पास रिनेशलए दृढ़ रिे ।

शिवगोचररयार प्रततहदन की इस घटना से इतने दुिःखी थेकक उन्िोंनेभगवान् ्से रो कर शिकायत की और प्राथनवा की कक वे िी इस समस्या का अन्त । भगवान् ्शिव ने उन्िें स्वप्न में दिनव हदये तथा उनकी अनुपजस्थतत में िोनेवाली इस घटना को सववस्तार बताया। यि भी बताया कक ततण्णन के इस समस्त काय वके पीछे उनका भगवान् ्के प्रतत अथाि िुद्ध ककन्तु अबोध प्रेम िी िै। भगवान् ्ने किा- "म ैंउनके द्वारा जल के अशभषेक की प्रतीक्षा में रिता िूाँ और उससे अतत प्रसन्न िूाँ। इसका मूल्य मुझे ेगंगा जल से भी अश्रधक प्रतीत िोता िै। िुद्ध और गिन श्रद्धा, भजतत और प्रेम सहित ककये गये काय वमुझे वैहदक मन्त्रों सहित ककये गये अनुष्ठानों और कमकवाण्डों से किीं ंअश्रधक मूल्यवान् ्लगतेिैं।" तब भगवान् ्गंगाधर ने पुजारी से आगामी प्रातिः मजन्दर में आने और ततण्णन तया करता िै, यि तछप कर देखने ेके शलए किा।

ततण्णन प्रसाद लाया और अपने तनत्य के ढंग सेअशभषेक और पुष्प सज्जा की तैयारी की। अब भगवान् ् ने सोचा कक शिवगोश्रचयार देखे और ततण्णन की प्रभु के प्रतत प्रेम और भजतत की सीमा को जाने। अतिः ततण्णन जब प्रसाद अवपतव कर रिा था, तो उसनेतया देखा कक भगवान् ्की दाहिनी आखाँ में से रतत के अश्रु प्रवाहित िो रिे िैं। ततण्णन त्रबलकुल िी घबरा गया। उसका हृदय दुिःख से कातर िो गया। उसे ेसमझ निीं आ रिा था कक तया करे ! वि रोने और ववलाप करने लगा। कभी वि रतत बन्द करने के शलए कोई-कोई पत्ता लाकर लगाने लगा। वि स्वयं अपने-आपको कोसने लगा; तयोंकक रतत की धारा अववरल बि रिी थी, और वि रोक निीं पा रिा था। अन्ततिः उसे े एक युजतत सूझी। उसनेतीखे बाण की नोक से अपनी दाहिनी आखाँ तनकाली और भगवान् ्की आखाँ पर रख कर धीरे से दबाया। उसके आनन्द का हठकाना न रिा; तयोंकक रतत बिना बन्द िो गया था। वि असीम प्रसन्नतापूवकव आनन्दोन्मत्त िो कर नाचने ेलगा। ककन्तुअचानक तया देखता िै कक भगवान् ्की बायीं ंआखाँ से भी रतत बि रिा िै। इस पर क्षण-भर के शलए दुिःख और सन्ताप में घबराया; ककन्तु िीघ्र िी पूव-वयुजतत उसे ेस्मरण िो आयी और वि सभाँल गया और उसनेतुरन्त अपनी बाय आखाँ भी तनकाल कर भगवान् ्को लगाने के तनश्चय कर शलया। ककन्तु जब उसकी दोनों आखोंं िी निीं रिेंगी, तब वि रतत बिनेवाली भगवान् ्की आखाँ कैसे ेदेख कर

ठीक जगि पर अपनी आखाँ लगा पायेगा। अत: उसनेअपने बाय ेंपैर के जूते की नोक भगवान् ्की बायीं ंआखाँ के ऊपर रखी और अपनेिाथ के बाण की नोक से अपनी बायीं ंआखाँ तनकालने लगा। ककन्तु भगवान् ्इतनेतनष्ठुर निींकक अपनेभतत को इतना कष्ट सिते ेदेख सकें । तत्क्षण भगवान् ्प्रकट िो गये और ततण्णन का िाथ पकड़ कर रोकते िुए बोले–े "ठिरो, मेरे कण्णप्प (कण-आखाँ, अप्प - वत्स)। कफर भगवान् ्ने उसे ेअपने तनकट खींच शलया और इन त्याग व प्रेम की मूतत वको अपनेदाहिनी ओर सदा के शलए रख शलया।

उपरोतत कण्णप्प की कथा सवोच्च श्रद्धा और ववश्वास का ज्वलन्त उदािरण प्रस्तुत करती िै।
यद्यवप वि जातत सेव्याध थेजो कक भगवान् ्की आराधना के नीतत-तनयमों से पूणतवया अनशभज्ञ और लापरवाि थे, तथावप भगवान् ्के प्रतत उनकी श्रद्धा, भजतत और त्याग सवोपरर थे। उनकी मात्र यि गिन भजतत और प्रेम की भावना िी उन्िेंभगवान् ्से सवोच्च वरदान, अथात्व ्आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करवा पायी। केवल छि हदन िी उन्िोंनेअपनेढंग सेभगवान् ्की पूजा की; ककन्तु उनकी भजतत में जो श्रद्धा और प्रेम था, वि असीम था।

आप सबको इन मिान् ्शिव-भतत कण्णप्प का आिीवादव प्राप्त िो! आप सब भी इन मिान् ्दक्षक्षण भारतीय भतत के उदािरण का अनुसरण करके अपनेजीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करें!

शसरुत्तोण्ड नायनार

ततरुचेट्टेटांकुडि के परंजोहदयार, चोला नरेि के राज्य में सेनापतत थे। वि युद्ध-कला में प्रवीण थेतथा चोल-नरेि के शलए उन्िोंने बिुत सेयुद्ध जीत कर हदये थे।े सेनापतत िोते िुए भी उनकी भगवान् ्शिव के प्रतत तथा शिव भततों के प्रतत भी अपार श्रद्धा और भजतत थी और यि तनत्यप्रतत ववकशसत िोती जा रिी थी। भगवान् ्के भतत के रूप में वि अपनी ववनम्रता के शलए प्रशसद्ध थेऔर उन्िें ठीक िी शसरुत्तोण्ड नायनार किा जानेलगा। उन्िोंनेअपने सेनापतत पद से त्याग ले शलया और अपना जीवन भगवान् ्शिव की उपासना तथा शिव भततों की सेवा में लगा हदया। कोई एक हदन भी ऐसा निींिोता था, जब वि शिव भततों को खखलाये त्रबना स्वयं भोजन कर लें। इतनी उनकी श्रद्धा और भजतत थी। इस प्रकार वि अपनी पत्नी और पुत्र सीरालन के साथ आनन्दपूवकव रिते े थे।

एक बार तया िुआ कक भगवान् ्शिव वैरवर (भैरव) के वेष में उनके द्वार पर शभक्षा के शलए आये। उसी समय शसरुत्तोण्ड भोजन के शलए शिव-भततों की खोज में गये थे। वैरवर (भैरव) द्वार पर कुछ समय प्रतीक्षा करते े रिे, तभी शसरुत्तोण्ड कोई भी शिव-भतत न शमलने कारण अत्यन्त तनरािा िो कर वापस लौटे, द्वार पर खड़े े प्रतीक्षारत वैरवर (भैरव) को देख वि अत्यन्त िवषतव िो गये। अब वैरवर ने किा कक वि उनके घर भोजन करने के इच्छुक िैं; ककन्तु उनकी अपनी कुछ इच्छाए ाँिैं, यहद वि उन्िें पूण वकरेंगे,े केवल तभी वि भोजन ग्रिण करने को तैयार िोंगे। शसरुत्तोण्ड के सिष वस्वीकार कर लेने पर वैरवर (भैरव) ने किा कक उनके शलए एक ऐसे पाचाँ वषीय बालक का मांस पकाया जाये जो पूणतविः स्वस्थ िो तथा उसके समस्त अंग पूण विों। जो िरीर और हदमाग से पूणतविः स्वस्थ और ववकार रहित िो। यद्यवप भतत पिलेऐसा बालक किीं ंसे भी ढूाँढ़ कर निींला सकने की

श्रचन्ता में ककंश्रचत् ्घबराया; ककन्तु िीघ्र िी उन्िोंनेअपने पुत्र सीरालन को समवपतव करने का तनश्चय कर शलया, जजससे ेकक शभक्षुका भोजन िो जाये।

पतत-पत्नी इजच्छत भोजन तैयैार करने में िीघ्रता से जुट गये। माता ने अपने पुत्र को गोद में रखा और वपता ने उसकी गरदन तथा प्रत्येक टागाँ बिाँ इत्याहद काट कर पकानी आरमभ की। इस प्रकार शसर के अततररतत सब-कुछ पका हदया। और कफर शभक्षुके किने पर शसर भी पका हदया गया। जब भोजन तैयैार कर परोस हदया और वैरवर खाने ेके शलए बैठा, तो उन्िोंनेखाने ेसेइनकार कर हदया कक पिले ेशसरुत्तोण्ि अपने पुत्र को बुला कर अपने साथ बैठाये, तब िी वि भोजन करेंगे। पिले ेतो शसरुत्तोण्ि ने किा कक उनका पुत्र अभी निींआ सकता; ककन्तु उनके बारमबार आग्रि करने पर वि इस प्रकार सीरालन को, भगवान् ्में अत्यन्त श्रद्धा और गिन ववश्वास रखते े िुए, पुकारने लगे मानो वि ववद्यालय से आ रिा िो। उनके आश्चय वका हठकाना न रिा, जब उनकी पुकार के उत्तर में बालक ने जवाब हदया और गली के दूसूरे ककनारे से ठीक इसी प्रकार आता हदखायी हदया मानो ववद्यालय से आ रिा िो। बालक को ले कर वि घर में प्रववष्ट िुए; ककन्तु तब विााँ पका िुआ मांस था, न िी वैरवर। ककतनी व्याकुलता उन्िें िुई ! ककन्तु तभी भगवान् ्शिव पावतवी और साथ में सुब्रह्मण्यम् ्सहित प्रकट िो गये। उन्िोंने पतत-पत्नी दोनों िी को अपने प्रतत तीव्र भजतत और गिन श्रद्धा के शलए अत्यन्त आिीवावद हदये तथा शसरुत्तोण्ि को पररवार सहित अपनेसाथ ले गये। साधु के भोजन के शलए अपने पुत्र का बशलदान कर देने वाले भतत को भगवान् ्ने ऐसा वरदान हदया।

आप सबके हृदय में भगवान् ्के प्रतत ऐसा उत्कट प्रेम और ऐसा दृढ़ ववश्वास व गिन भजतत ववकशसत िो! शसरुत्तोण्ि के आिीवावद आप सब पर िों !

भगवान् शि्व की माता

प्राचीन काल में दक्षक्षण भारत में कारैतकाल में धनदत्तन नाम का एक धनवान् ्व्यापारी रिता था। भगवान् ्के आिीवावद से उसके एक पुत्री का जन्म िुआ। कन्या का नाम पुतनतावतत रखा गया। यिी पुतनतावतत बाद में करैतकात अममैयार के नाम से जानी गयी। यि नायनारों (दक्षक्षण भारत के प्रशसद्ध शिव भततों) में से एक मानी जाती िै।

पुतनतावतत अत्यन्त ववदुषी, सुन्दर तथा पुण्यात्मा थी। वि भगवान् ्शिव की स्तुतत तथा नाम स्मरण ककया करती तथा मस्तक पर भस्म धारण ककये रिती थी।
नागपट्हटणम के धनाढ्य व्यापारी के पुत्र परमदत्तन के साथ उसका वववाि िुआ। परमदत्तन भी अत्यन्त सुन्दर और बुद्श्रधमान् ्व्यजतत थे। वि अत्यन्त उच्च चररत्र से समपन्न थे। अपनेवपता से आज्ञा ले कर वि अपने श्वसुर के घर रिते ेथे।

पुतनतावतत अत्यन्त भजततभाव और प्रसन्नतापूवकव तनत्य शिव भततों को भोजन खखलाया करती थी तथा भगवान् ्के भजन गाते ि्ुए श्रवण ककया करती थी। वि सदैव **'अनतर्थ देवो भव'** वेदोजतत का स्मरण ककया करती थी। भततों को भोग लगा कर ि्ेष अन्नभोग को दोनों पतत-पत्नी अत्यन्त पे्रेमपूवकव अमृततुल्य मान कर ग्रिण करते ्ेथे।

एक हदन एक रमते साधुउनके घर आये तथा परमदत्तन को दो पके ि्ुए आम दे गये। परमदत्तन ने वि आम अपनी पत्नी को दे हदये और स्वयं अपनेकाम में लग गये। बाद में एक कोई भतत आये और अत्यन्त भूखे ्े िोनेके कारण ि्ीघ्र कुछ खाने को मागाँ। भोजन अभी तैयार नििंथा; अतिः उन्िोंनेइन दोनों आमों में से एक आम और साथ में दूधू दे हदया।

परमदत्तन जब घर आये और भोजन कर चुके, तो पुतनतावतत ने उन्िें ि्ेष बचा ि्ुआ दूसूरा आम हदया। परमदत्तन को वि आम अतत-सुस्वादु ्ुलगा; अतिः उन्िोंने दूसूरा आम भी लानेको किा। पुतनतावतत ने भगवान् ् शिव से प्राथनवा की, तत्क्षण एक आम उनके ि्ाथों में आ श्रगरा। यि एकदम पिले ्ेआम के जैसा ि्ी था। उन्िोंनेवि अपनेपतत को दे हदया। जब खाया तो उन्िें यि पिले ्ेआम से सिस्र गुणा अश्रधक सुस्वादु ्ुप्रतीत ि्ुआ। उन्िोंने पत्नी से पूछा – "वप्रय, यि आम तुमिें किा ्ाँसे शमला?" उन्िोंने सारी बात बता दी। परमदत्तन ने किा-' "मुझे एक आम और ला दो।" पलक झपकते ि्ी पुतनतावतत ने एक और आम ला हदया।

परमदत्तन आश्चयचवककत रि गये। वि समझ गये कक उनकी पत्नी भगवान् ्की अतत वप्रय भतत ि्ै। उन्िोंनेमन में सोचा - "म ्ैंअतत पापी ि्ूाँ। भगवान् ्शिव की वप्रय भतत को मनैंअपनी दासी समान समझा। अब म ्ैं उसे ्ेअपनी पत्नी नििंसमझ सकता। ककन्तु उसे ्ेअकेला छोड़ देना भी पाप ि्ोगा। म ्ैंतया करूाँ?'

वि उलझन में पड़ गये। अन्ततिः उन्िोंनेपुतनतावतत से अलग ि्ोनेका ि्ी तनश्चय ककया। उन्िोंनेकिा कक वि व्यापार के काय वसे कििंबिार जा रि ि्ैं। इस प्रकार उसकी अनुमतत से वि मदुरै चलेगये और विीं ्ंअन्य ववविा करके रिने लगे। इस दूसूरी पत्नी सेउन्िें एक पुत्री ि्ुई, जजसका नाम उन्िोंनेपुतनतावतत ि्ी रखा।

पुतनतावतत अत्यन्त व्याकुलता सेपतत के लौटनेकी प्रतीक्षा करती रिी। जब तनजश्चत समय पर भी वि नििंलौटे, तब वि अत्यन्त ि्ोकाकुल ि्ो गयी। कुछ समय पश्चात् ्उन्िें पतत के समबन्ध में कुछ ज्ञात ि्ुआ, तब वि उनसे ्ेशमलने मदुरै की ओर चली।

पदरदत्तन ने अत्यन्त प्रसन्नतापूवकव उनसे ्ेभेंट की और उनके चरणों में प्रणाम करके बोले—े "म ्ैंघोर संसारी पुरुष ि्ूाँ। म ्ैंकामी और लोभी ि्ूाँ। आप देवी ि्ैं। आपको अब पत्नी के रूप में म ्ैंनिीं देख सकता। कृपया आप मुझे क्षमा कर दें। मेरी यिी प्राथनवा ि्ै । "

पुतनतावतत ने उत्तर हदया- "मेरे स्वामी! मनैंअपने यौवन और सौन्दय वको आपके शलए सभाँल कर रखा था। अब यहद आप नििंचािते, तो म ्ैंअपनेप्रभु की ओर उन्मुख ि्ो जाऊाँगी।"

उन्ोंनेआस-पास एकत्रत्रत लोगों में अपनेसमस्त आभूषण ववतररत कर हदये । वि ब्राह्मणों की सेवा-पूजा करने लगीं ंतथा योग-बल से अपनी समस्त दिे सुखा कर कंकाल मात्र रि गयी। अब वि उत्तर की ओर अग्रसर िुईं।

वि कैलास पवतव की ओर चलीं। पावन हिमालय को पैरों से रौंदते िुए चलना उन्ोंनेपाप समझा; अतिः अपनेतप-बल से वि शसर के बल चलने लगीं।
पावतवी ने भगवान् ्शिव से पूछा- "िे प्रभु! यि कौन इस भातँत चल कर िमारी ओर आ रिी िै ?" भगवान् ्शिव ने उत्तर हदया – "यि पववत्र आत्मा स्त्री मेरी माता िै, जजसने मेरे भतत को सदैव भोजन खखलाया िै।"

भगवान् ्स्वयं उठ खड़े िुए और पुतनतावतत की ओर चल कर उनका स्वागत करते िुए बोले- "मेरी प्यारी मा,ँ आप ठीक तो िैं?"

पुतनतावतत ने भततों को मा ँकी भातँत भोजन कराया, भततों में और भगवान में कोई अन्तर निीं।

उन्ोंनेकिा िै- "भतत मेरे हृदय में िैं, और म ैंउनके हृदय में िूँ। वि मेरे अततररतत अन्य ककसी का श्रचन्तन निींकरतेऔर म ैंउनके शसवा अन्य ककसी को स्मरण करता।" निींकरता।"

परम वपता परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में जस्थत िैं। अतिः अततश्रथ पूजनीय श्रुततयों का कथन िै : **"अनतर्थ देवो भव"** -अततश्रथ को भगवान् ्समझो!

ततरेसठ नायनार सन्त

नायनार भगवान् ्शिव के सच्चे तथा उत्कट भतत थे। कुछ अप्पर और समबन्धर के समकालीन थे। अत्यल्प िी ने उनमें से आगमों का अध्ययन ककया िुआ था। अश्रधकांशतो िुद्ध सरल ककन्तु तीव्र भतत िी थे। उन्ोंनेभगवान् ्के भततों की सेवा की और भगवान् ्के प्रतत पररपूण वआत्म-समपणव ककया। दिनव से वि पूणतवया अनशभज्ञ िी थे। उन्ोंनेचररयै साधना की। उन्ोंनेमजन्दर प्रांगणों की सफाई की, भगवान् ्के शलए पुष्पमालाए ँबनायीं,ं मजन्दरों में दीप प्रज्वशलत ककये, फूलों के बगीचे लगाये और भगवान् ्के भततों को भोजन कराया अथवा उनकी सेवा की। शिव भततों की सेवा भगवान् ्की पूजा-अचनवा से भी अश्रधक उत्तम मानी जाती थी।

वास्तव में वांतछत वस्तु तो सच्ची भजतत िै। कण्णप्प व्याध िैव शसद्धान्त, दिनव अथवा उपासना पद्धतत से पूणतवया अनशभज्ञ था; ककन्तु अपनी भजतत की तीव्रता और गिनता से मात्र छि हदनों में िी शिव-भततों के शलए सवोच्च प्राप्तनीय परम पद प्राप्त कर शलया । कण्णप्प की भजतत सामान्य शिव भततों की भजतत से त्रबलकुल िी शभन्न प्रकार की थी।

नायनारों में से कुछेक के नाम इस प्रकार से ि ैं——निुमार नायनार, कण्णप्प नायनार, शसरुत्तोण्रि, अप्पूहद अहदगल, मुरुग नायनार, ततरुनीलकण्ठ नायनार, कुंगशलयतकलय नायनार, गणनाथ नायनार, चेरमान पेरुमान नायनार, सोमाशसमार नायनार इत्याहद ।

ततरुनीलकण्ठ नायनार श्रचदमबरम् ्के एक कुमिार थे। एनाहद नायनार ताड़ी बनाने वाले थे। ततरुकुररप्पुत्तोण्रि धोबी थे। अररपत्त नायनार जातत से मछुआरे थे। उच्च जातत के शिव-भततों ने अन्य जाततयों के भततों के संग बैठै कर भोजन ककया। उनमें जातत-पातत भेदभाव निींथा। उन्िोंने भगवान् ्शिव के प्रतत भजततमय जीवन को, जात-पातत के तुच्छ भेदों से अश्रधक मित्त्व हदया।

ततरुनीलकण्ठ नायनार एक हदन पूजा कर रिे थे। भगवान् ्के श्रचत्र पर एक मकड़ी श्रगर गयी। उनकी पत्नी ने उसे ेतुरन्त उड़ा हदया तथा जिा ाँवि श्रगरी थी, उस स्थान पर थूकू हदया। इससे सन्त अत्यन्त श्रचढ़ गये। उन्िोंनेसोचा कक श्रचत्र अिुद्ध िो गया िै। उन्िोंनेअपनी पत्नी का पररत्याग कर देना चािा। ककन्तु उन्िें स्वप्न में भगवान् ्ने दिनव हदये और हदखाया कक जिा ाँमकड़ी श्रगरी थी उतनी जगि जिा ाँथूकूा गया था, के अततररतत समस्त िरीर पर फफोले ेपड़ गये थे। इससे सन्त की आखोँ खुल गयीं। अब उन्िें समझ में आया कक िास्त्रज्ञान की अपेक्षा सच्ची भजतत की भावना का िोना अश्रधक अतनवाय विै।

शसरुत्तोण्रि ने अपने िाथों सेअपनेपुत्र की ित्या की तथा शिव भततों को प्रसन्न करने के शलए उसका मांस पकाया। वि धमग्रवन्थों के तनयमों का उल्लंघन करने को तत्पर िो गया, ककन्तु शिव-भजतत साधना का पररत्याग निींककया। उनमें कोई ववद्वत्ता निींथी, वि कोई दितवनक और योगी निीं ंथा; ककन्तु शिव-भततों के प्रतत उसकी तनष्ठा अकथनीय थी। शिव-भतत की सेवा के शलए कैसा मिान् ्बशलदान उसनेहदया ! भगवान् ्शिव पावतवी और सुब्रह्मण्यम् ्सहित प्रकट िो गये और शसरुत्तोण्रि वरदान हदया। शसरुत्तोण्रि के पुकारने पर उनका पुत्र भागता िुआ उनकी ओर आ गया। भतत और पके मांरा की थाली अदृश्य िो गये। भगवान् ्अपने भततों के शलए सब कुछ कर देते िैं।

कुंगशलयतकलय नायनार, ततरुतकिवूर के मजन्दर में धूप-अगरबत्ती ले जाया करते ेथे। उनका सारा धन चला गया, घर में कुछ भी िेष न बचा। तब उनकी पत्नी ने एक थाली दे कर किा कक इसे ेबाजार में दे कर इसके बदले ेकुछ चावल खाने ेको ले आओ। नायनार उसके बदले ेधूप-अगरबत्ती खरीद कर मजन्दर ले गये। उस हदन भगवान् ्ने उनकी पत्नी को पयाप्वत धन समपवत्त का वरदान हदया और नायनार को घर जा कर भोजन करने के शलए किा। उसके बाद नायनार को समाचार शमला कक राजा ककसी भी प्रकार से शिवशलंगं को सीधा खड़ा करवा सकने में सफल निींिो रिा िै। नायनार ततरुप्पण्िलि मजन्दर में गये और शिवशलंगं से बाधोँ गयी रस्सी को अपनी गरदन में बाधाँ कर खींचंनेलगे। उसी समय शिवशलंगं सीधा खड़ा िो गया। सबको उनकी भजतत की गिनता का बोध िो गया। नायनार को वेदें अथवा आगमों का कोई ज्ञान न था; ककन्तु वि भगवान् ्के सच्चे ेभतत थे। यि सच्ची भजतत का िोना िी आवश्यक िै। िास्त्र-ग्रन्थों मात्र का अध्ययन, भजतत के अभाव में, व्यजतत में अशभमान उत्पन्न करके प्रभु से दूरू कर देता िै।

कण्णप्प नायनार ने स्वयं अपना नेत्र तनकाल कर भगवान् ्के घायल नेत्र के स्थान में लगा हदया था। वि
दूसूरा नेत्र भी लगाने को तत्पर िो गये थे;े ककन्तु भगवान् ्ने ऐसा करने से रोक हदया। कण्णप्प को दृजष्ट पुनिः
प्राप्त िो गयी; इतना िी निीं, भगवान् ्ने उन्िें अपनेसाथ रख शलया और वि भी भगवान् ्िी बन गये। उन्िोंने
कोई रुि अथवा चमकम् ्पाठ निींककया था, वि ब्राह्मण भी निींथे। वि तो जातत और कम वसे व्याध थे। उन्िोंने
अपनेमुख के कुल्लेके जल से अशभषेके करके, अपने िोंठों से तनकाल कर पुष्प चढ़ा कर तथा भुना िुआ मास स्वयं चख
कर बहढ़या-बहढ़या भगवान् ्को भोग लगा कर अपने िी ढंग से पूजा की। पजण्ित और िास्त्री एक सिस्र
एक रुि पाठ करते िैं; ककन्तु भगवान् ्से दूरू िी रिते िैं, तयोंकक उनमें सच्ची भजतत रतती-भर भी निींिोती। उनके
हृदय पाषाण सदृश्य, ऊसर तथा पाप-भावना के कारण कठोर िो गये िोते िैं।
इयरपगै ैनायनार ने िपथ ली िुई थी कक शिव भतत उनसे ेजो भी कुछ मागेंगे, विी वि दे देंगे। भगवान् ्
शिव ने उनकी परीक्षा लेनी चािी। वि एक ब्राह्मण शिव-भतत ककन्तु व्यशभचारी व्यजतत के वेष में आये और
नायनार से बोले - "मुझे अपनी पत्नी दे दो।" नायनार नेप्रसन्नतापूवकव ऐसा िी ककया। उनके सगे-समबन्धी इस
पर ववरोध प्रकट करते िुए उनसे ेझगड़नेलगे। नायनार ने उस छद्मवेषी को सुरक्षक्षत वन में पिुाँचा हदया। ककन्तु
वि छद्मवेषधारी योगी विााँ पिुाँचते िी अदृश्य िो गया और उनके समक्ष अपने वास्तववक रूप में वृषृभ पर आरूढ़
भगवान् ्शिव ने प्रकट िो कर दिनव हदये।

एररपत्त नायनार ने उस िाथी और पाचाँ मनुष्यों की भी ित्या कर दी थी जजन्िोंने शिवकाशम अण्िार के
पास के भगवान् ्को अवपतव करनेवाले पुष्प नष्ट कर हदये थे। भगवान् ्शिव ने तब प्रकट िो कर राजा की, नायनार
की, पाचाँ मृत् पड़ेव्यजततयों की तथा िाथी की भी रक्षा की।

अररवट्टाय नायनार इसशलए अपनी गरदन काट िालनेको तत्पर िो गये थे कक वि भगवान् ्को हदये
जानेवाले लाल चावल का भोग देनेमें असमथ वि िो गये थे। भगवान् ्शिव ने उन्िें न केवल ऐसा करनेसे रोका,
प्रत्युत उन्िें अपनेशिवलोक में भी लेगये।

मूतत वनायनार मदुरै में भगवान् ्शिव को चन्दन तघस कर समवपतव ककया करते ेथे। एक हदन जब चन्दन
की लकड़ी न शमली, तो वि पत्थर पर जोर-जोर से अपनी कोिनी तघसनेलगे। भगवान् ्शिव का हृदय िववत िो
गया। नायनार राजा बन गये। उन्िें भगवान् ्के शिवलोक में वास शमला।

नन्दनार िरिजन जातत के थे। वि अजग्न में प्रवेि कर गये और उसमें से पुनिः भगवान् ्शिव की कृपा से
यज्ञोपवीत धारण ककये िुए तपस्वी के रूप में बािर तनकल आये।

ततरुकुररप्पतोण्िर जातत से धोबी थे। उन्िोंनेशिव-भततों के कपड़े धोये। भगवान् ्ने उनकी परीक्षा लेने
का ववचार ककया। वे एक तनधनव व्यजतत के रूप में अत्यन्त मैला फटा चीथड़ा धोने ेके शलए ले कर आये। सन्त

धोबी ने उसे ेधो हदया; ककन्तु अत्यश्रधक वषा वके कारण सुखा न सके। उनका हृदय बिुत दुि:खी िुआ और वि कपड़े धोने ेवाले पत्थर पर अपना शसर मारने लगे। भगवान् ्प्रकट िुए और उर्न्ें मौक्ष प्रदान कर हदया।

नशमनजन्द अडिगल ने भगवान् ्की कृपा प्राप्त करके पानी से िी दीपक जला हदये। भगवान् ्का भतत प्रभु की कृपा द्वारा कुछ भी कर सकने में सक्षम िै।
कशलकमब नायनार शिव-भततों को अपनेघर बुला कर उनके चरण धो कर भोजन कराया करते ेथे। उनकी पत्नी भी इस काय वमें उनकी सियता ककया करती थी। एक बार एक व्यजतत, जो पिले ेउनका सेवक (दास) िुआ करता था, शिव-भतत के रूप में उनके घर आया। नायनार सदा की भाताँत उसके पैर धोने ेलगे; ककन्तु उनकी पत्नी ने सियता करने से इनकार कर हदया। नायनार ने उसके िाथ काट िाले ेऔर स्वयं उसकी सेवा में लग गये। उर्न्ें भी शिवलोक की प्राजप्त िुई।

कशलय नायनार तेल ला कर मजन्दर में दीप जलाया करते ेथे। उनकी समस्त धन-समपवत्त चली गयी। उर्न्िोंनेअपनी पत्नी को भी बेच देनेकी सोची; ककन्तु कोई भी खरीददार न शमला। तब उर्न्िोंनेतेल की जगि अपना रतत िाल कर दीप प्रज्वशलत करने का ववचार ककया। जब वि ऐसा कर रिे थे, तभी भगवान् ्शिव प्रकट िो गये और उसे ेवरदान हदये।

कणमपुल्लै नायनार भी शिव मजन्दर में दीप जलाया करते ेथे। इसी में उनकी धन-समपवत्त समाप्त िो गयी। वि घास काट कर बेचने लगेऔर उससेप्राप्त धन से दीप जलाने लगे। एक हदन घास त्रबकी निीं, तो घास िी जिलाने लगे। एक हदन कफर उर्न्ें घास भी निींशमली, तब उर्न्िोंनेअपनेकेि जलाने का तनश्चय ककया। ऐसा करते िी भगवान् ्ने उर्न्ें हदनव हदये तथा सालोतय मुजतत प्रदान की।

सन्त चेरुतु नायनार ने रानी की नाक काट िाली; तयोंकक रानी ने उस फूल को उठा कर सूंघ शलया था जो भगवान् ्को चढ़ानेके शलए चयन ककया गया था और अचानक श्रगर पड़ा था। राजा को जब यि ज्ञात िुआ, तो उसने रानी को और भी दजण्ित करने के शलए उसका सर भी काट िाला। आकाि से पुष्प वषाव िोने लगी। राजा कलरुंग नायनार भगवान् ्के कृपापात्र बने ।

नायनार शिव शसद्धान्त अथवा िैव हदनव के समबन्ध में वविेष ज्ञान निींरखते थे। उनका इससे कुछ वविेष लेन-देन भी निींथा। उर्न्िोंनेशिव आराधना को िी अत्यश्रधक मित्त्व हदया। भले िी सामान्य दृजष्ट से वि उश्रचत िो अथवा न िो। शिव उपासना के बाह्य स्वरूप को उर्न्िोंनेपरम आवश्यक माना। अपनेजीवन तक को न्योछावर करके उर्न्िोंनेइन बाह्य ववधानों का पालन ककया। धमान्वधता को भी उर्न्िोंने इसके ववपरीत निींमाना। इन नायनारों के जीवन-चररतों सेआपको स्पष्टतया यि ज्ञात िो जायेगा कक व्यजतत ककसी भी जातत से िो, कुछ भी कम वकरता िो, वि भगवान् ्का कृपापात्र िो सकता िै।

उस समय के िैव दृढ़ शिव भतत थे। इन नायनारों पर सामान्य नीतत-तनयम लागू निींकर सकते।

अध्याय १३

उत्सव और पवव

अरुणाचलकाज्योततपव व

(कानतकैवदीपम् ्)

भगवान् ्शिव ने तशमलनिु के ततरुवन्नमले में पववत का रूप धारण ककया। उन्िोंनेयिा ाँपर स्वयं को एक-दूसूरे से बड़ा समझ कर परस्पर झगड़ते िुिए ब्रह्मा और ववष्णु ुके अशभमान को कुचल हदया था। एक हदन जब भगवान् ्शिव समाश्रध में थे, े तब पाववती उन्िें छोड़ कर अरुणाचल पववत पर चली गयी। विााँउन्िोंनेगिन तप ककया। वि गौतम ऋवष की अततश्रथ बन कर रिीं। इसी समय के बीच दुगाववने पाववती के आदेि से महिषासुर का वध ककया था। पाववती ने भगवान् ्शिव के अरुणाचलेश्वर के रूप में दिनव ककये। भगवान् ्ने पाववती को पुनिः अपने वामांग में ग्रिण करके अधनवारी (अवपताकु चमबा) बनाया।

अरुणाचलेश्वर तेजौशलंगं िै। अरुणाचल पंचभूत क्षेते्र के अजग्न तत्त्व का प्रतीक िै।

अरुणाचलम् ्ततरुवन्नामले का अन्य नाम िै। प्राचीन समय में अनेकों शसद्ध पुरुष इस पववत पर रिे। इतिकिार, अरुणश्रगररनादर यिींरिे। यि स्थान ज्योतत पव व(कातततकैव दीपम्) ् के शलए प्रशसद्ध िै। जो कक प्रत्येक वष वकातततकव मास (नवमबर) में जब पूखणमवा के हदन कातततकैव नक्षत्र में आता िै, तब मनाया जाता िै। सन्ध्या के समय, लगभग ५ या ५.३० बजे ेके आस-पास यि प्रकिा ककया जाता िै। पववत में एक वविाल गड्ढे में घी भर हदया जाता िै, साथ िी तेल और कपूरव भी िाल देते िैं, तब एक बिुत बड़ी बत्ती उस घी में िाल कर प्रज्वशलत कर दी जाती िै। इस प्रकिा को १६ मील दूरू से भी देखा जा सकता िै। यि मान्यता िै कक जो कोई भी इस प्रकिा के दिनव कर लेता िै, उसका पुनिः जन्म निीं ंिोता। यि ज्योतत तनरन्तर तीन मास तक प्रज्वशलत रिती िै।

अरुणाचल पवतव के शिखर पर इस ज्योतत को आवृतूत कर हदया जाता ◌ि◌ै। सन्ध्या के ५.३० बजे ◌ेज्यों–ी कातत्कैव नक्षत्र उहदत ◌ि◌ोता ◌ि◌ै, लोग मजन्दर में से ईश्वर-ववग्रि को बिार ले आते ◌ि◌ैं। तब पवतव की ओर से आकिा में एक आततिबाजी छोड़ दी जाती ◌ि◌ै । पवतव पर जो व्यजतत ज्योतत का प्रभारी ◌ि◌ोता ◌ि◌ै, वि उसी क्षण आवरण को ◌ि◌टा देता ◌ि◌ै। तब समस्त एकत्रत्रत व्यजतत ववशाल ज्योतत को ◌ि◌ाथ जोड़ कर दिनव कर प्रणाम करते ◌ि◌ैं। वि सब उच्च स्वर में '◌ि◌रिरा, ◌ि◌रीरा' का उद्घोष करते ◌ि◌ैं।

इसका गुह्य अथ वयि ◌ि◌ै कक जो भी व्यजतत सतत ध्यान के द्वारा अपनी हृदय गुिा में तनरन्तर प्रज्वशलत ज्योततयों की परम ज्योतत के दिनव करता ◌ि◌ै, वि अमरत्व (मोक्ष) प्राप्त करता ◌ि◌ै। अरुणाचल का ज्योतत पव व आपके शलए यि सन्दिे ले कर आता ◌ि◌ै कक आत्म-तत्त्व अथवा भगवान् ◌्शिव स्वयं प्रकाि ज्योतत स्वरूप ◌ि◌ैं, ज्योततयों की परम ज्योतत ◌ि◌ैं, सूयों के भी सूय विं।

पवतवों की ववशाल ज्योतत भगवान् ◌्शिव अथवा परमात्मा की द्योतक ◌ि◌ै। अजग्नशिखा (आततिबाजी) जीव अथवा जीवात्मा ◌ि◌ै। आवरण जीवात्मा को आवृतूत करके रखने ◌ेवाली अववद्या ◌ि◌ै। अजग्नशिखा (आततिबाजी) आवरण को भस्मीभूत करके स्वयं ववषद दीप - ज्योतत में लीन ◌ि◌ो जाती ◌ि◌ै। इसी प्रकार यहद आप ध्यान तथा ववचार की अजग्न द्वारा अववद्या को नष्ट कर दें, तो आप स्वयं को उस ज्योततयों की ज्योतत परमात्मा में ववलीन कर सकते ◌ि◌ैं।

कांचीवरम्,◌् जमबूकेश्वर, ततरुवन्नमलै, कालिाजस्त और श्रचदमबरम् ◌्पंचं भूतशलंगं क्षेत्र ◌ि◌ै। कांचीवरम् ◌् पृथूवी-शलंगं ◌ि◌ै, अपस-शलंगं जमबूकेश्वर ◌ि◌ै, तेजौ-शलग ततरुवन्नमलिै, वायु-शलंगं कालिाजस्त ◌ि◌ै और आकाि-शलंगं श्रचदमबरम् ◌्◌ि◌ै।

इस समपूण वजगत् ◌्को बनाने वाले पंचभूतों की प्रतीक 'पंच- त्रत्रकोणीय आकृतत' के, यि पाचाँैं स्थान पाचाँ कोणो की नोक को अशभव्यतत करते ◌ि◌ैं। तेजस्–्तत्त्व पाचाँ भूत के मध्य में ◌ि◌ै। यि उस माग वका तनमाणव करता ◌ि◌ै जजसमें से परमात्मा अथवा भगवान् ◌्शिव जीवात्मा के द्वारा जाना, देखा अथवा अनुभव ककया जा सकता ◌ि◌ै। ध्यान की अश्रग्न जीव की अववद्या को जला कर परम प्रकाि में लीन ◌ि◌ो जानेमें उसकी सिायता करती ◌ि◌ै।

वेदान्ती के मतानुसार वाक् ब्रह्म ◌ि◌ै। वि शसद्ध करता ◌ि◌ै कक वाक् अजग्न ◌ि◌ै और वि इसी में से अपने एकत्व के शसद्धान्त का पररणाम तनकालता ◌ि◌ै। अजग्न वाक् का अश्रधष्ठाता देवता ◌ि◌ै। वाकू अश्रग्न ◌ि◌ै। वाक् ब्रह्म ◌ि◌ै।

पंचमूतत वअथवा पंचतत्त्व उस समय शमलते ◌ि◌ैं, जब न रात ◌ि◌ोती ◌ि◌ै न ◌ि◌ी हदन जब सूय वऔर चन्मिा दोनों ◌ी चिमकते ◌ि◌ैं। पवतव का प्रकाि सोलि मील की दूरूी से भी हदखायी देता ◌ि◌ै। यि ब्रह्म अथवा 'पूणकवला' का द्योतक ◌ै।

योगी ध्यानावस्था में शसर की चोटी (शिखर) में प्रकिा के दिनव करता ि◌ै (जजसे अरुणाचल पवतव शिखर अशभव्यतत करता ि◌ै) और तनववकवल्प समाश्रध में स्वयं को लीन कर देता ि◌ै।

अनव, कम वऔर माया रूपी तीनों अिुद्श्रधयों को ध्वंस कर दें। आत्मज्ञान अथवा शिवज्ञान की अजग्न में मन, इजन्ियों और वासनाओं को जला ि◌ालें। पूण वप्रबोधन को प्राप्त करें और उस ज्योततयों की परम ज्योतत के दिनव करें जो मन, बुद्श्रध, सूय,व तारे, ववद्युत् ्◌और अजग्न सबको उद्भाशसत करती ि◌ै। यिी वास्तववक 'काततकैव दीपम्'◌् ि◌ै।

प्रकिों का वि परम प्रकिा आप सबको उद्भाशसत करे! भगवान् ्◌शिव आपको और अश्रधक प्रकिा प्रदान करें! आप उस परम प्रकिा में स्वयं को ववलय कर दें और अमरत्व का परम आनन्द प्राप्त करें।

ववजयादिमी

भगवान् ्◌का मातृ ◌ृरूप ि◌जतत, वैभव और ज्ञान का स्रोत ि◌ै तथा इसकी नवरात्र अथवा ििेरे के हदनों में दुगाव, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में पूजा की जाती ि◌ै। प्रत्येक रूप की तीन रात्रत्रयों में पूजा ि◌ोती ि◌ै।

ववजयादिमी आजश्वन मास के ि◌ुतल पक्ष का दिम हदवस ि◌ोता ि◌ै। यि अत्यश्रधक भावपूण वउत्सव ि◌ै जो समस्त भारतवष वमें अत्यश्रधक धूमधाम सेमनाया जाता ि◌ै।

इस ववजयादिमी को ि◌ी वीर पाण्िव अजुनव ने, दुष्ुट कौरवों से युद्ध प्रारमभ ि◌ोने से पूव वदेवी की उपासना की थी। इसी हदन श्री राम के द्वारा रावण का वध ककया गया था।

यि ववजय का हदवस ि◌ै। बालकों को इस हदन ववद्यालय में भेजना प्रारमभ ककया जाता ि◌ै। उन्िें सवप्रवथम **'हरर ॐ', 'नारायणाय शसद्धम्'**◌्, **'ॐ श्री गणेिाय नमः', 'ॐ श्री हयग्रीवाय नमः'** शसखाया जाता ि◌ै। जजज्ञासु साधक को इस हदन मन्त्रदीक्षा दी जाती ि◌ै।

इस स्मरणीय हदवस पर बढ़ई, दजी, राजशमस्त्री, कलाकार, गायक, वादक, टाइप करने वाले ◌ेतथा अन्य सभी कमचवारी अपने-अपने औजारों, उपकरणों और यन्त्रों की पूजा करते ि◌ैं। यि आयुध-पूजा ि◌ै। वे इन औजारों व उपकरणों में ि◌जतत के दिनव करते ि◌ुए अपनी सफलता, समपन्नता और ि◌ाजन्त ि◌ेतु देवी की उपासना करते ि◌ैं।

श्री राम ने 'संयुतत भारत' स्थावपत ककया। श्री राम ने रावण को ववजजत ककया, जजसनेअपनी राजधानी तो लंका में बनायी ि◌ुई थी; ककन्तु अपना साम्राज्य भारत के अश्रधकांि क्षेत्र् में फैलाया ि◌ुआ था। ववजयादिमी, एक संयुतत भारत साम्राज्य की जन्म जयन्ती ि◌ै। यि राक्षसराज रावण पर श्री राम की मिान ववजय के स्मरणोत्सव के रूप में मनायी जाती ि◌ै। यि अधम वके ऊपर धम वकी ववजय का हदवस ि◌ै।

अंगद, िनुमान् ्तथा अन्य सबनेधमतवनष्ठ ववभीषण के नेतृतूव में श्री राम की रावण के ऊपर ववजय को अत्यन्त धाशमकव उत्सिा से मनाया, मैत्रीभाव से परस्पर एक-दूसूरे का आशलंगंन ककया तथा श्री राम के प्रतत गिन श्रद्धा-भजतत को अशभव्यतत ककया। उसी हदन से सभी हिन्दू ूइस हदन को मिान् ्ववजय हदवस के रूप में प्रततवष व

मनाते िैं। रावण के ऊपर राम की ववजय वास्तव में भौततकता पर आत्म-तत्त्व की ववजय िै, सत्त्व की रजस् ्और तमस् ्पर ववजय िै, आत्मा की मन, इजन्द्रयों और दिे पर ववजय िै, भौततकवाद पर आदिवाद की ववजय िै, बुराई पर भलाई की ववजय िै, प्रेमे और सत्य की घृणा और असत्य पर ववजय आत्म-बशलदान और त्याग की स्वाथपवरता और आश्रधपत्य पर ववजय िै, उत्पीडड़त की उत्पीड़क अत्याचारी पर ववजय िैं, श्रशमकों की पूंजीपततयों और साम्राज्यवाहदयों पर ववजय िै। इस हदवस की स्मृतृत दीनिीन, दुःुखी तथा तनरिा दशमत व्यजततयों के हृदयों में आिा और प्रसन्नता भर देती िै। यि धनवानों, िजततिाशलयों और ववद्वानों के अशभमान को ववनम्रता में पररवतततव कर देती िै तथा उन्िें तनधनव, तनबलव और अशिक्षक्षतों को प्रेम तथा भ्रातृभाव से आशलंगंन करने के शलए प्रेररत करती िै। यि सभी वग वके लोगों में परस्पर एकत्व की भावना जाग्रत करती िै।

इस प्रकार ववजयादिमी वैश्व एकता, भ्रातृतूव, िाजन्त और आनन्द की भावना जाग्रत करनेवाला उत्सव बन गया िै।

िाित पुराण इसकी व्याख्या अन्य ढंग से करते िैं। राम ने अपनी तनजी वीरता और पराक्रम के द्वारा ववजजत िोनेका प्रयत्न ककया; ककन्तु असफल रिे। अन्ततिः अपना अिंकार िमिाजतत को समवपतव करके वि उन्िींके िाथो का उपकरण मात्र बन गये। तब वस्तुतिः देवी ने रावण के साथ युद्ध ककया और श्री राम को ववजय हदलायी।

देवताओंऔर असुरों में तनरन्तर युद्ध चलता रिता िै। मानव-मन के भीतर िी सत्त्व और रज-तम के बीच, दुभुावनाओं और सद्भावनाओं के मध्य यि संघष वअववराम चलता रिता िै, देवता साजत्त्वक ववृत्तयों के तथा असुर दुषुप्रववृत्तयों के द्योतक िैं। जजस हदन व्यजतत काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर इत्याहद कुप्रववृत्तयों को नष्ट करके देवी माँकी कृपा से आत्मज्ञान अथवा प्रबोधन प्राप्त कर लेता िै, विी हदन उसके शलए वास्तव में ववजयादिमी का अथवा आत्म-ववजय का हदन िै।

देवी मा ाँदुगुा,व मानव मात्र को धम वऔर सत्य का माग;व िाजन्त, आनन्द और सन्तोष का माग वदिायव ेंऔर परम आनन्द प्रदान करें!

नवरात्र् (दििरा)

नवरात्र भगवान् ्की मातृ ृरूप में पूजा करने का हिन्दुओं का सवोच्च मिोत्सव िै। समस्त ववश्व में हिन्दू ू धम विी एकमात्र ऐसा धम वि जजसमें भगवान् ्के मातृ ृरूप पर इतना अश्रधक बल हदया गया िै। समस्त मानवीय समबन्धों में मा ाँका समबन्ध वप्रयतम और मधुरतम िै। अत: भगवान् ्को मातृ ृरूप में देखना समुश्रचत िी िै।

ि़दिरा, दुगुापूवजा तथा नवरात्र, एक िी ि़ैं। दुगुाव भगवान् ्शिव की ि़जतत ि़ैं। वि परमात्मा की ि़जतत की द्योतक ि़ैं। भगवान् ्और भगवान् ्की ि़जतत में कोई भेद नि़ीि़ीं। वि संसार के काम-काज की देख-रेख करती ि़ैं। दुगुावके रूप में देवी मा ाँको दस ि़ाथ में दस ववशभन्न अस्त्र धारण ककये ि़ुए हदखाया गया ि़ै। उनका विान ि़ेर ि़ै। यि दितवा ि़ै कक समस्त ि़जततयों पर, उनका तनयन्त्रण ि़ै। यिााँतक कक पिववक क्रूर ि़जततयों— जजनका प्रतीक ि़ेर ि़ै— पर भी उनका तनयन्त्रण ि़ै ।

ऋग्वेद संहिता के देवीसूतत में आप पायगें ेकक अजमभन वऋवष की पुत्री वाक् ने उस देवी मा ाँके साथ अपने तनजस्वरूप का साक्षात्कार कर शलया था, जो कक परमात्मा की ि़जतत के रूप में समस्त ववश्व के देवताओं, मनुष्यों, पिुओं और जलचर इत्याहद सभी प्राखणयों में व्याप्त ि़ै।

केनोपतनषद् में आता ि़ै कक देवी भगवती ने इन्ि तथा अन्य सभी देवताओं को ज्ञान प्रदान ककया और कि़ा कक देवताओंने असुरों पर ववजय, भगवान् ्की ि़जतत की सि़ायता से िी प्राप्त की ि़ै।

महिषासुर नामक राक्षस देवताओंपर अत्यश्रधक अत्याचार कर रि़ा था। देवताओं ने सि़ायता के शलए मा ाँ दुगुावका आह्वान ककया। देवी मा ाँदसभुज रूप में प्रकट ि़ुईं, उनके दसों ि़ाथ में ववशभन्न प्रकार के दस आयुध धारण ककये ि़ुए थे। वि तनरन्तर नौ हदवस और नौ रात तक असुरों से युद्ध करती रि़ीं और दसवें हदन तक एक-एक करके समस्त असुरों को उनकी सेनाओं सहित समाप्त कर हदया। दसवें हदवस की सन्ध्या को सेनाओंसहित समस्त असुर ववध्वंस ि़ो जाने सेवि ववजयादिमी कि़लायी। ये दस हदन देवी की उपासना के पावन हदवस ि़ैं।

बंगाल के हिन्दू ूभगवती दुगुा वकी उपासना ववजयादिमी से तीन हदन पूव वप्रारमभ कर देते ि़ैंऔर ववजयादिमी को ववसजनव (जल-प्रवाि) समारोि़ समपन्न करते ि़ैं। माच-वअप्रैल मास में वसन्त-पूजा के समय भी दुगुावपूजा की जाती ि़ै।

हिमालय के राजा हिमवान् ्की पत्नी अपनी पुत्री दुगुा वसे शमलने को लालातयत ि़ोती ि़ै, तब भगवान् ्शिव-दुगुावको वष वमें तीन हदन के शलए अपनी माता से शमलनेभेजे देते ि़ैं। दुगुा-वपूजा का उत्सव मा ाँदुगुावके इस संक्षक्षप्त आगमन के उपलक्ष्य में मनाया जाता ि़ै जो उनके कैलास वापस लौटने के हदन अथात्व ्ववजयादिमी को समाप्त ि़ो जाता ि़ै।

रावण से युद्ध से पूव वभगवान् ्श्री राम ने दुगुाव भगवती की सि़ायता के शलए उनका आह्वान इन्ि़ीं ि़ं ववजयादिमी सेपूव वके हदनों में ककया था। उसके पश्चात् ्युद्ध ि़ुआ और मा ाँि़जतत की सि़ायता से ववजय प्राप्त की।

बंगाल में दुगुा-वपूजा एक बड़ा त्योिार िै। जो लोग घरों से दूरू रिते िैं, वि सब दुगुा वपूजा के हदनों में अपने-अपनेघर लौट आते िैं। माताओं का सुदूरू तनवासी पुत्र-पुत्रत्रयों से तथा पजत्नयों का अपने पततयों से शमलन िोता िै।

कुमिार कलाकार मूततयवा ाँबनाने में अपनी कला का प्रदिनव करते िैं, श्रचत्रकार सुन्दर श्रचत्रों द्वारा अपनी सवोत्तम कला अशभव्यतत करतीं, गायक अपनेगायन-वादन की कला तथा पुजारी अपने मन्त्रोच्चारण की योग्यता अशभव्यतत करते िैं। बंगाली लोग इस उत्सव को आनन्दपूवकव मनाने के शलए वष वभर धन संचय करते े तथा पूजा के हदनों में व्यय करते िैं। वस्त्र ववतररत ककये जाते िैं।

बंगाल की हिन्दू ूजस्त्रया ाँदेवी का मातृभाव से स्वागत करती िैं तथा देवी के ववग्रि की ववदाई का उत्सव उसी प्रकार प्रत्येक रीतत-ररवाज के साथ नेत्रों में जल भरे िुए करती िैं जैसे ेउनकी बेटी अपने पतत के गृि जा रिी िो।

आप सब दुगुावदेवी की उपासना अत्यन्त श्रद्धा-ववश्वास सहित करें तथा उनकी कृपा से परमानन्द और अमरत्व प्राप्त करें! देवी भगवती दुगुा वकी जय िो! उनके पतत परमेश्वर जगद्ववता भगवान् ्शिव की जय िो!

वसन्त नवरात्र

वसन्त नवरात्र के समय भी देवी की पूजा की जाती िै। यि वसन्त ऋतु में आता िै। देवी की उपासना का ववधान उनके िी तनदेि सै। यि देवी भागवत की इस कथा से स्पष्ट िो जाता िै।

बिुत प्राचीन काल की बात िै। एक बार ध्रुवशसन्धुनामक सूयविंिी राजा कोिल देि पर राज्य करता था। वि अत्यन्त दयालु और धमात्वमा था। उसकी दो रातनया।ाँ थीं— मनोरमा और लीलावती। मनोरमा बड़ी थी। दोनों ने अतत सुन्दर पुत्र रत्नों को जन्म हदया । मनोरमा के पुत्र का नाम सुदिनव तथा लीलावती के पुत्र का नाम त्रिुजजत रखा गया।

राजा ध्रुवशसन्धु ुआखेट के शलए गया और विा ाँिेर द्वारा काल का ग्रास बन गया। युवराज सुदिनव का राजततलक करने की तैयाररयााँ िोनेलगीं। ककन्तु उधर रानी लीलावती के वपता और उज्जैन के राजा युधाजजत और दूसूरी ओर रानी मनोरमा के वपता और कशलंगं के राजा वीरसेन दोनों ने िी अपने-अपने दौहित्रों को कोिल राज्य के शसंिासन पर बैठाने की लालसा ले कर परस्पर युद्ध प्रारमभ कर हदया। राजा वीरसेन युद्ध में मारे गये। रानी मनोरमा पुत्र सुदिनव और एक खोजा (नपुंसक) को साथ ले कर वन में चली गयी। उन्िोंनेविााँभारद्वाज ऋवष के आश्रम में आश्रय शलया।

राजा युधाजजत ने अपनेदौहित्र ित्रुजुजत को किोल की राजधानी अयोध्या के शसंासिन पर आरूढ़ कर हदया। उसनेमनोरमा और उसके पुत्र को ढूाँढ़ने का प्रयास ककया, जजससे ेकक उन्ें माग वसे िटा दे; ककन्तु सफल न ुआ। कुछ समय के पश्चात् ्उसे ेज्ञात िो गया कक वे भारद्वाज ऋवष के आश्रम में िैं।

वविाल सेना सहित उसने भारद्वाज ऋवष के आश्रम की ओर प्रस्थान ककया। उसने अिंकार और क्रोधपूवकव ऋवष से मनोरमा और उसके पुत्र को समवपतव कर देनेकी आज्ञा दी। ऋवष ने किा कक अपनी िरण में आये िुओं को वि कदावप निीं ंदे सकते। युधाजजत के क्रोध का पारावार न रिा। वि ऋवष पर आक्रमण करने को तत्पर िो गया; ककन्तु उसके मन्त्री ने उसे ेऋवष के कथन की सत्यता से अवगत कराया। युधाजजत अपनी राजधानी वापस लौट गया।

अब युवराज सुदिनव का भाग्योदय प्रारमभ िुआ। एक आश्रमवासी के पुत्र ने खोजा को उसके संस्कृत नाम 'तलीब' से पुकारा। युवराज ने उसका प्रथमाध व'तलीं' ग्रिण कर शलया और उसको 'तलीं'ं कि कर पुकारने लगा। यि 'तलीं'ं परिाजतत का अत्यन्त िजततिाली बीजाक्षर िै। युवराज को इससे अत्यश्रधक िाजन्त की प्राजप्त ुई और साथ िी इसके बारमबार उच्चारण करने से देवी मा ाँकी कृपा प्राजप्त िोनेलगी। देवी उसके सममुख प्रकट िो गयीं,ं उसे ेआिीवादव हदये और हदव्यास्त्र तथा अक्षय तरकि प्रदान ककया।

बनारस के राजा के गुप्तचर आश्रम के तनकट से जा रिे थे।े उन्िोंनेसौमय िीील युवराज सुदिनव को देखा, तो उसे ेबनारस की राजकुमारी िशिकला के शलए उपयुतत वर के रूप में राजा के समक्ष प्रस्ताव रख हदया। स्वयंवर रचा गया, जजसमें िशिकला ने सुदिनव का चयन कर शलया। युधाजजत भी विााँ उपजस्थत था। िशिकला और सुदिनव का वववाि समपन्न िुआ। युधाजजत बनारस-नरेि से युद्ध करनेलगा। देवी ने सुदिनव और उसके श्वसुर की सिायता की। युधाजजत ने देवी का उपिास ककया। देवी ने युधाजजत और उसकी सेना को शमट्टी में शमला हदया।

सुदिनव, उसकी पत्नी और श्वसुर ने देवी की स्तुतत की। देवी अत्यन्त प्रसन्न िुई । उन्िोंनेउनको चारों नवरात्रों—आषाढ़, आजश्वन, माघ और चैत्र में िोम इत्याहद सहित ववश्रध-ववधान से देवी-पूजन की आज्ञा दी। यि नवरात्र िुतल प्रथमा से प्रारमभ िोते िैं। इस प्रकार आज्ञा दे कर देवी अन्तधानव िो गयीं।

तत्पश्चात् ्राजकुमार सुदिनव और राजकुमारी िशिकला भारद्वाज ऋवष के आश्रम में लौट आये। मिवष व भारद्वाज ने दोनों को आिीवादव हदया और युवराज सुदिनव को राजमुकुट पिना कर किोल-नरेि के पद पर आसीन ककया। सुदिनव, िशिकला और बनारस-नरेि मा ाँभगवती की आज्ञा पालन करतेिुए प्रत्येक नवरात्र में भव्य रूप से देवी-पूजन करने लगे।

सुदिनव के वंिज श्री राम और लक्ष्मण ने भी वसन्त नवरात्रों में देवी-पूजन ककया और मा ाँिजतत की सिायता से सीता को पुनिः प्राप्त करने में सफल िुए।

आपको भी अपनी भौततक और आध्याजत्मक भलाई व उन्नतत के शलए वसन्त नवरात्र में देवी-पूजन करके सुदिनव और श्री राम द्वारा स्थावपत उदिारण का अनुसरण करना चाहिए। माँभगवती की कृपा के त्रबना आप कुछ भी प्राप्त निींकर सकते। देवी मा ँका स्तुतत गान करें ! उनके मन्त्र और नाम का जप करें! उनके रूप का ध्यान करें! आराधना करें! प्राथनवा करें और उनकी कृपा व आिीवादव प्राप्त करें!

गौरीपूजा

भगवती गौरी अथवा पावतवी भगवान् ्शिव की अधाश्रिंगनी िैं। वि शिव की िजतत िैं। भारतीय नारीत्व की वि सवोच्च आदि वमानी जाती िै। वि जस्त्रयोश्रचत सद्गुणों का श्रेष्ठतम आदि विैं। कुमारी कन्याए ँउपयुतत श्रेष्ठ वर की प्राजप्त के शलए गौरी पूजन करके उनसे ेकृपा और आिीवादव प्राप्त करती िैं। वववाहित जस्त्रयााँ अखण्ि सौभाग्यवती रिने की शलए उनकी पूजा करती िैं।

कुछ वविेष हदन गौरी पूजन के शलए वविेष पववत्र मानेजाते िैं। हिन्दू ूजस्त्रया ँउस हदन उपवास रखती िैं और गौरी-पूजा करती िैं तथा बालचन्ि में उनके दिनव करके उपवास का पारन करती िैं।

अध्याय १४

शिव योग माला

ैवि साहित्य

-

अट्ठाईस ि व आगम तथा ि वै सन्तों के भजतत पद(तेवारम् ्और ततरुवासकम् ्) प्रमुख रूप से दक्षक्षणी ैवि मत के मूल स्रोत िैं। नजमब अण्ारि नजमब (१००० ईस्वी) द्वारा संकशलत समस्त ि व भजतत पद समिू 'ततरुमुरै' कि जाते िैं। 'तेवारम्'् में समबन्धर, अप्पर और सुन्दरर के पद िैं। माखणतकवासकर के भजन 'ततरुवासकम्'् कि जाते िैं।

आगमंत अथात्व ्ि व शसद्धान्त में २८ संस्कृत आगमों का सारतत्त्व िै। सजतकलर पेररपुराणम् ्(११ वीं ंिताब्दी) ने ततरेसठ ि व सन्तों का वणनव ककया िै।

'ततरुवासकम्'् इतकावन अद्ववतीय आध्याजत्मक अनुभूततयों से समपन्न भव्य काव्य संग्रि िै। ि. जी. वी. पोप ने इसका अगाँरेजी में अनुवाद ककया िै।

'शिवज्ञानबोधम्'् के प्रततजष्ठत लेखक, सन्त मेये्कन्रि के द्वारा १३ वीं ंिताब्दी के प्रारमभ में ि व शसद्धान्त दितवनक गततववश्रध का प्रारमभ िुआ। शिवज्ञानबोधम् ्को रौरव आगम के द्वादि पदों का ववस्तरण माना जाता िै। यि पुस्तक ि वै शसद्धान्त दृजष्टकोण की आदि वमानक िै। इसमें इस शसद्धान्त की क्रमबद्ध सुव्यवजस्थत और सार रूप में व्याख्या की गयी िै। इसने तशमल लोगों की इस दिनव की सवोच्च श्रे्ष्ठता के प्रतत आखोँ खोल दीं। सन्त मेय्कन्रि ने अपनेदिनव की उनचास (४९) शिष्यों को शिक्षा दी तथा इस शसद्धान्त का प्रचार-प्रसार ककया और लोकवप्रय बनाया।

मेय्कन्रि के उनचास में से प्रथम शिष्य अरुलनजन्द शिवाचररयर मित्त्वपूण वकृतत 'शिव ज्ञान शसद्श्रधयार' के लेखेक िैं। वि 'इरुपा इरुपदु'ु के भी लेखेक िैं।

१३ वीं ंतथा १४ वीं ंिताब्दी में ि व शसद्धान्त िास्त्र के मानदण्ि मानी जाने वाली चौदि दितवनक रचनाए ंाँआयीं। वि इस प्रकार िैं—ततरुवुजन्दयार, ततरुकशलदुपुाडियार, उपमैववलतकम, शिवप्रकाम्,् ततरुवरुलपयन, ववनावेमेबा, पोहट्र पूिरी, कोहटतकावव, नेन्जु ुववि दु,ु उण्मै ैनेरर ववलतकम और िंकर पतनरािरणम् ्।

शिवप्रकिाम् ्और ततरुवरुल पयन श्री उमापतत शिवाचाररयैर (िताब्दी १४ वीं)ं द्वारा रश्रचत अत्यन्त प्रशसद्ध ग्रन्थ िैं। वि इस समिू के षि िास्त्रों के भी रचतयता िैं।

ततरुवुजन्दयार की रचना १२ वीं ंिताब्दी के मध्य में ततरुवयलूर के सन्त उय्यवन्द- देव-नायनार के द्वारा िुई। ततरुतकिवूर उय्यवन्द देव - नायनार ततरुकशलटुपाडियार के रचतयता थे।

ततरुमजन्दरम् ्िैव शसद्धान्त को मूत वरूप प्रदान करने वाले ग्रन्थों में अत्यश्रधक प्रामाखणक कृततयों में से ै। इसके लेखक ततरुमूल नायनार िैं। इस रचना ने ऐसी नींवं की रचना की, जजसके ऊपर बाद में िैव शसद्धान्त दिनव का ढाचाँा तनशमतव िुआ। इस पुस्तक में संस्कृत आगमों के िैव शसद्धान्तों का अनुवाद ककया गया िै। इसमें तीन सिस्र पदों की रचना िै जो कक तीन सिस्र वषों में की गयी िै। इनमें िैव धम वऔर दिनव के व्याविाररक तथा सैद्धाजन्तक पक्षों पर ववचार ककया गया िै।

'ज्ञानामृतृम्'् प्रथम पुस्तक िै जजसमें शसद्धान्त पक्ष का आधुतनक वैज्ञातनक ढंग से तनरूपण ककया गया ै।

ैवि शसद्धान्त वेदों और आगमों की दिोरी परमपरा पर आधाररत िै। १४ वीं ंिताब्दी में नीलकण्ठ ने इन दोनों का ववश्रधवत् ्समन्वय ककया। उन्िोंने ब्रह्मसूत्रों पर टीका शलखी। उन्िोंने इसकी व्याख्या िैव-पद्धतत के प्रकाि में की।

अप्पय्य दीक्षक्षत की टीका का नाम शिवारका मखण दीवपका िै जो अत्यन्त मित्त्वपूण वग्रन्थ िै।

शिवपुराण, शलंगंपुराण, शिवपराक्रम, ततरुववलैयाल पुराणम्,् पेररय पुराणम् ्भगवान् ्शिव की महिमा का प्रततपादन करते िैं। ये सब ग्रन्थ तशमल भाषा में अनूहदत भी िैं। भतत ववलासम् ्संस्कृत रचना िै। यि स्कन्दपुराण का उप पुराण िै।

काश्मीर की घाटी में अट्ठाईस आगमों की रचना िुई। जैन धम वके उत्कष वसे पयाप्वत समय पूव वयि आगमन्त उत्तर भारत में उद्भूत िो गये थे। वािाँये प्रततशभज्ञा दिनवम् ्के नाम से जाने जाते ेथे। तदुपुरान्त यि पजश्चम तथा दक्षक्षण की ओर फैल गये। पजश्चमी भारत में यि 'वीर-मिेश्वर-दिनवम्'् के नाम से प्रशसद्ध िुए और दक्षक्षण भारत में यि 'िुद्ध-िैव-दिनवम्'् के नाम से जाने गये। शलंगंपुराण को वीर-मिेश्वरों द्वारा अत्यश्रधक सममानजनक दृजष्ट सेदेखा जाता िै।

श्रचदमबर रिस्य

श्रचदमबरम् ्में भगवान् ्शिव की उपासना तनराकार ववद्यमानता के रूप में, आकािशलंगं के रूप में की गयी िै। श्रचदमबरम् ्धम वऔर संस्कृतत का प्राचीन केन्ि िै। श्रचदमबरम् ्में शिव का नटराज रूप में नतनव मुिा में पूजन

ककया गया ि ै। प्रत्येक वष वमागिवीष वमास में श्रचदमबरम् ्में दक्षक्षण भारत का अत्यन्त मित्त्वपूण वपव व'आि दिनव' मनाया जाता ि ै।

मजन्दर के भीतर 'नृत्ृय सभा' ि ै। मुख्य मजन्दर के सामनेकाष्ठ का ऊँचा भवन ि ै जजसकी छत स्वखणमव ैं। यि 'कनक सभा' किी जाती ि ै। मध्य में नटराज मजन्दर ि ै। यि सादा काठ का भवन प्रस्तर चबूतरे के ऊपर बना िुआ ि ै; ककन्तु इसके पीछे काले ्प्रस्तर का पररष्कृत कक्ष ि ै जजसकी छत स्वण वपट्हटकाओंसे बनी िुई ि ै। शिवगंगा सरोवर के सामने "राज सभा' ि ै जजसमें एक सिस्र ग्रेनाइट प्रस्तर स्तमभ ि ैं।

शिव मजन्दर के पाचाँ प्रकार, दि े के पंच कोिों के प्रतीक ि ै। ककन्िींमजन्दरों के तीन प्रकार मानव के तीनों िरीरों के द्योतक ि ै। गभगृवि, अधमवण्पि, मिामण्पि, स्नानमण्पि, अलंकारमण्पि और सभामण्पि िरीर के षिचक्र अथवा षिाधार के प्रतीक ि ैं।

धमोपतनषद् का कथन ि ै- "श्रचदमबरम् ्हृदय के केन्र्में ि ै। श्रचदमबरम् ्ववराट् पुरुष का हृदय ि ै।" सिस्र स्तमभों वाला मण्पि, सिखार का प्रतीक ि ै। शिवगंगा सिखार में जस्थत अमृतृववप का द्योतक ि ै। जजस स्थान पर ज्योततशलगिं और गुरुमूतत वि,ै वि वविुद्ध चक्र का सूचक ि ै। ततरुश्रचत्तमबलम अथवा मिासभा में ब्रह्मा, ववष्णु, ु रुि, मिेश्वर और सदाशिव के शलए पंचपीठ ि ै। पाचाँ सोपान पंचाक्षर के पाचोंाँ अक्षरों के तथा आच्च न अववद्या अथवा आवरण का प्रतीक ि ै। ९६ तत्त्व के सूचक ९६ गवाक्ष ि ैं। चार स्वणस्वतमभ जो मध्य में जस्थत ि ैं, चारों वेदों के सूचक ि ैं। उनके चारों ओर के अट्ठाईस स्तमभ, २८ आगमों के द्योतक ि ैं। इन स्तमभों का मध्य स्थान िुद्ध ववद्या को प्रकट करता ि ै। भगवान् ्नटराज का आसन प्रणव पीठम् ्पर जस्थत ि ै।

इसके पीछे 'ततरुश्रचत्तमबलम' ि ै। यिी श्रचदाकाि अथवा प्रशसद्ध 'श्रचदमबरम् ्रिस्य' ि ै। शिवकाम सुन्दरी अथवा परिाजतत का पीठ गभगृवि में ि ै। रिस्य तनष्कल ि ै। आनन्द नटराज मूतत वसकल ि ै।

प्राची में ब्रह्मा ि ै। दक्षक्षण में ववष्णु ि ै उत्तर में भैरव अथवा संिारकरुि ि ै। गुमबद में नौ कलि ि ै। ये नौ जिततयों को द्योततत करते ि ै।ैं गुमबद को आलमबन देने वाले ्चौंसठ काष्ठ के आधार नौसठ ववद्याओंअथवा कलाओं के पररचायक ि ैं। जो स्वण वआवृत पीतल की इतकीस सिस्र छि सौ पट्हटकाए ्ाँ(पत्तर) ि ैं, वि मनुष्य द्वारा तनत्य शलये जानेवाले इतकीस सिस्र छि सौ (२१,६००) श्वास-प्रश्वासों की प्रतीक ि ै। बित्तर िजार कील, िरीर की बित्तर िजार स्नायु अथवा सूक्ष्म तजन्त्रकाओंकी द्योतक ि ै।

कनक सभा के अट्ठारि (१८) स्तमभ, अट्ठारि पुराणों के प्रतीक ि ै। कनक सभा, मखणपूर (चक्र की पररचायक ि ै। पाचाँ सभाए,ाँ पंच कोिों को द्योततत करती ि ैं।

यहद व्यजतत श्रचदमबर मजन्दर के रिस्यों को उश्रचत रूप में जान जाये और वि भगवान् ्नटराज की आराधना गिन ववश्वास, भजतत, श्रद्धा, पववत्रता और मन की पूण वएकाग्रता सहित एकतनष्ठता से करे, तो वि ज्ञान और परम आनन्द प्राप्त करेगा। वि समस्त बन्धनों से मुतत िो जायेगा।

ततरुवरुर में जन्म िोनेसे मुजतत की प्राजप्त िोती िै। वाराणसी (किी) में मृतूयु िोनेसे मुजतत शमलती िै। श्रचदमबरम के नटराज के दिनवों सेमोक्ष िो जाता िै।

कनकसभा सेसंलग्न गोववन्दराजा अथवा ववष्णु का मजन्दर िै। यि शिक्षा देता िै। शिव और ववष्णु ु वस्तुत: एक िैं तथा एक वीर िैव तथा वीर वैष्ैणव को कट्टरपन का त्याग करना चाहिए। उन्िें अपना हृदय वविाल करके भगवान् ्शिव और भगवान् ्ववष्णु के प्रतत समान भजतत भाव रखना चाहिए तथा समस्त मूततयवों में अपनेइष्ट के िी दिनव करने चाहिए।

भगवान् ्नटराज और शिवाकािम आप सब पर कृपा करें और श्रचदमबर रिस्य का बोध कर सकने वाला हृदय प्रदान करें!

शिव और ववष्णु एक िैं

भगवान् ्शिव का भतत िैव िै। ववष्णु ुभगवान् ्का भतत वैष्णव िै। उपासना का अथ विै—तनकट आसन (बैठना) अथात्व ्पूजा करना। जो उपासना करता िै, वि उपासक िै। उपासना अथवा आराधना करने से ईश्वरानुभूतत प्राप्त िोती िै। धमान्वध वीर िैव ववष्णु ुभगवान् ्के प्रतत अपनेमन में दुभ्ाावना रखता िै, वैष्णवों तथा ववष्णु ुभगवान् ्से समबजन्धत पुराणों से घृणृा करता िै। वि कभी भी ववष्णु ुमजन्दर में प्रवेि निींकरता। वि कभी वैष्णव के िाथ से पानी निींपीता। वि कभी वैष्णव के िाथ से अथवा साथ बैठे कर भोजन निींखाता। कभी मुख से िरर िब्द निींबोलता । वि सदैव भगवान् ्िरर, वैष्णवों तथा ववष्णुपुराण के प्रतत अपिब्दों का िी प्रयोग करता िै। वि समझता िै कक भगवान् ्ववष्णु भगवान् ्से श्रेष्ठ िैं। वि कभी ववष्णुपुराण पढ़ कर निींदेखता।
तया
यि मूढ़ता शिव पराकाष्ठा निीं? तया यि अज्ञान की चरम सीमा निीं िै? उसने भगवान् ्शिव का वास्तववक स्वरूप िी निींसमझा िै? उसे वास्तववक धम वका बोध निीं। वि कट्टरपन्थी की िै, धमान्वध िै, अल्पज्ञ िै, संकीण वसामप्रदातयकता तथा संकीण वहृदय वाला िै। वि ऐसा कूपमण्डूक िै जो सागर की वविालता से पूणतवया अनशभज्ञ िै।
एक धमान्वध वैष्णव भगवान् ्शिव के प्रतत, िैवों और शिव-समबन्धी पुराणों के प्रतत घृणृापूण वभाव रखता िै। वि कभी शिवालय में प्रवेि निींकरता, कभी िैव से मैत्री भाव निींरखता । वि कभी िैव के िाथ से जल ग्रिण निींकरता। वि भी एकदम वीर िैव जैसा िी व्यविार करता िै। ऐसेव्यजतत की जस्थतत भी अत्यन्त िोचनीय िै।

तशमलनािु के ततरुनलवेशल जजले में िंकरनारायण कोइल में एक मजन्दर िै, जजसमें ववग्रि का अधग शिव िैं, और अधागिं ववष्णु रूप में हदखाया गया िै। उसका अन्तरंग मित्त्व यि िै कक भगवान् ्शिव तथा भगवान् ्ववष्णु एक िैं। श्री आहदिंकराचाय वजी ने भी अत्यन्त स्पष्टतया किा िै कक शिव और ववष्णु एक िी सवव्यापक परमात्मा िैं।

एक बार एक वीर िैव िकरनारायण कोइल में पूजा के शलए मजन्दर में गया। उसनेधूप अवपतव की। उसने ववष्णु भगवान् ्की ओर की नाशसका में रूई लगा दी; तयोंकक धूप का धूम्र और उसकी सुगन्ध उनकी नाशसका में भी जा रिी थी। उसके पश्चात् ्एक वीर वैष्ैणव पूजा के शलए गया। उसनेभगवान् ्शिव की नाशसका रूई से बन्द कर दी जजससे ेकक सुगजन्ध उधर न जाये। कट्टरपजन्थयों की ऐसी संकीणहृवदयता िै! भतत को तो वविालहृदयी िोना चाहिए। उसको तनजश्चत रूप से भगवान् ्के प्रत्येक रूप में अपनिी अश्रधष्ठ देवता को देखना चाहिए। प्रारमभ में उसे े अपने इष्ट के प्रतत अत्यश्रधक प्रेम रखना आवश्यक िै , जजससे े कक स्वरूप - वविेष के प्रतत उसकी प्रेमतनष्ठा

पररपतक िो जाये। ककन्तु उसे ेभगवान् ्के अन्य सभी रूपों के प्रतत भी समान श्रद्धा िोनी चाहिए। शिव और ववष्णु ुवस्तुतिः एक िी सत्ता िैं। वास्तव में वि एक िी िैं। सवव्वयापक एकमेव परमात्मा के ववशभन्न पक्षों के अनुसार, उनको हदये गये यि ववशभन्न नाम िैं। **"शिवसय हृदयं ववटणु ुववटणोश्च हृदयं ंशिवः "** - शिव का हृदय ववष्णु िैं और ववष्णु का हृदय शिव िैं।'

यि सामप्रदातयक भावना िाल िी की उपज िै। कान्ताचाय वका िैव शसद्धान्त मात्र पाचाँ सौ वष वपिले ेका ैं। मध्व और श्रीरामानुजाचाय वका वैष्णव समप्रदाय क्रमिः केवल छि सौ तथा सात सौ वष वप्राचीन िै। सात सौ वष वसे पूव वयि सामप्रदातयक उपासना निींथी।

परमात्मा का सृजृष्टकताव पक्ष ब्रह्मा िै, जस्थततकतावववष्णु ुतथा संिरकिता वरूप शिव िैं। यि त्रबलकुल इसी प्रकार िै जैसे ेआप ववशभन्न अवसरों पर उसके अनुकूल शभन्न-शभन्न वस्त्र धारण करते िैं। जब आप पूजागृि में उपासना करते िैं, तब और प्रकार की विेभूषा िोती िै, घर में आपकी पोिाक अन्य प्रकार की िोती िै। जब आप अपनेकायालवय में कायरवत िोते िैं, तब और ढंग से तैयार िोते िैं। शभन्न-शभन्न समय और स्थान के अनुसार आप शभन्न-शभन्न प्रकार के स्वभाव को प्रदशितव करते िैं। इसी प्रकार भगवान् ्जब रजस् ्से संयुतत िो कर सृजृष्ट-संरचना का काय वकरते िैं, तब वि ब्रह्मा किलातिैं। सत्त्वगुण से युतत िो कर संसार का पालन करते िैं, तब ववष्णु ुकि जाते िैं। जब वि तमोगुण से संयुतत िो कर संसार का संिार करते िैं, तब वि रुि अथवा शिव किलाते ैं।

ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर शिव को चेतना की तीन अवस्थाओंके साथ सिसमबजन्धत ककया गया िै। जाग्रत अवस्था में सत्त्व प्रधान िोता िै! स्वप्नावस्था में रजस् ्की प्रधानता िोती िै। सुषुप्तावस्था में तमस् ्प्रधान िोता ै। अतिः ववष्णु, ब्रह्मा और शिव चेतना की क्रमिः जाग्रत, स्वप्न और सुषुजप्त अवस्था की मूततयवा ाँिैं। तुरीय अथवा चतुथ वअवस्था परब्रह्म िै। तुरीय अवस्था गिन सुषुजप्त अवस्था से परे िै। भगवान् ्शिव की आराधना तत्काल चतुथ वअवस्था की प्राजप्त कराने वाली िै।

ववष्णुपुराण में ववष्णु ुभगवान् ्की महिमा गायी गयी िै और कई स्थलों पर भगवान् ्शिव को तनमन स्थान हदया गया िै। शिवपुराण में भगवान् ्शिव की महिमा का वणनव िै और ववष्णु ुको तनमन स्थान पर रखा गया ै। देवी भागवत में देवी को सवोच्च पद पर रखा गया िै तथा ब्रह्मा, ववष्णु ुऔर शिव को उनसे ेनीचे ेस्थान हदया

गया ि। यि केवल इस स्वरूप-वविेष के प्रतत उनके भततों के हृदय में गिन और दृढ़ श्रद्धा व भजतत की वृद्श्रध करने के उद्देश्य को लेकर िी ककया गया ि। वास्तव में तो कोई भी स्वरूप ककसी से उत्तम अथवा तनमन श्रेणी का निीं। आपको लेखक के वास्तववक उद्देश्य को सिी रूप में ग्रिण करना चाहिए।

आप सबको शिव और ववष्णु के एकत्व का बोध िो! आप सब िुद्ध सूक्ष्म बुद्श्रध और समुश्रचत ज्ञान से समपन्न िों!

शिवरात्रत्र महिमा

(१)

पावतवीपतत भगवान् शिव को प्रणाम ि! ब्रह्म की संरिकारी िजतत को प्रणाम ि! जो िमभू, िंकर, मिादेव, सदाशिव, ववश्वनाथ, िर, त्रत्रपुरारर, गंगाधर, िूलपाखण, नीलकण्ठ, दक्षक्षणामूतत,व चन्द्रिेखर, नीललोहित इत्याहद नामों से जानेजाते िैं, जो अपनेभततों पर िुभता, अमरत्व और हदव्य ज्ञान की वृजृष्ट करने वाले िैं, जो प्रलय-काल में ताण्डव नृत्य करते िैं और जो संरिकारी निीं प्रत्युत पुनरुज्जीवन प्रदाता ि, उनको िम मौन प्रणाम करते िैं!

मिाशिवरात्रत्र का अथ वि-भगवान् शिव का ध्यान करने वाली मिातनिा । मिाशिवरात्रत्र फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुदविी ततश्रथ को (फरवरी-माच वमास में) पड़ती ि।

मिाभारत के िाजन्त पव वमें भीष्मवपतामि जब िरिय्या पर लेटे िुए धमोपदेि कर रिे थे, उस समय वे राजा श्रचत्रभानु को मिाशिवरात्रत्र व्रत करने का उपदेि देते िैं।

एक बार समस्त जमबूद्वीप पर जब ईक्ष्वाकू वंि के राजा श्रचत्रभानु का राज्य था, तब वि और उनकी पत्नी मिाशिवरात्रत्र का उपवास ककये िुए थे। उस समय ऋवष अष्टावक्र उनके राजदरबार में आये।

ऋवष ने प्रश्न ककया — "ि राजन्! आपनेआज उपवास तयों ककया ि?" तब राजा श्रचत्रभानु ने यि व्रत रखने का कारण बताया। उसको अपनेपूव वजन्म की स्मृतत रिने का वर प्राप्त था।

उसनेअष्टावक्र ऋवष से किा- "म अपनेपूव वजन्म में सुस्वर नामक व्याध था। पिु-पक्षक्षयों को मार कर बेचना िी मेरी आय का साधन था। एक हदन म शिकार की खोज में वन में भटक रिा था। आखेट करते–करते रात्रत्र का अन्धकार छा गया। माग वन सूझ पाने से घर लौटनेमें असमथ िो, हिंस्र जन्तुओं के आक्रमण के भय से वृक्ष पर चढ़ गया। वि त्रबल्व का वृक्ष था। मनें एक मृग का शिकार ककया था; ककन्तु उसे घर ले जानेका समय निीं शमला था। अत्यश्रधक क्षुधा और वपपासा सेआक्रान्त िोने के कारण म रात्रत्र-भर जागता रिा। यि श्रचन्ता करते–करते कक मेरी पत्नी और बच्चे मुझे न पा कर ककस दिा में भूखे-प्यासे तड़प रिे िोंगे— म फूट-फूट कर रोने लगा

और व्याकुलता में वृकूष के पते्ते तोड़ता रि। उस त्रबल्व-वृकूष के मूल में एक शिवशलंगं था । मेरे शिवशलंगं पर मेरे अनजाने ि ी श्रगरते ेरि। अश्रु और बेल-पत्र शिवशलंगं पर मेरे अनजाने ि ी श्रगरते ेरि ।

"प्रातिः िुई। म ैंघर पिुँचा और आखेट ककया मृगृ बेचा। पररवार और अपनेशलए भोजन का सामान लाया। म ैंव्रत खोलने वाला ि ी था कक एक अज्ञात व्यजतत आया और मुझसे कुछ खाने ेके शलए मागाँनेलगा। मनैंपिले े उसे ेभोजन हदया, कफर स्वयं खाया। अपनी मृतूयु के समय मनैं भगवान् ्शिव के दो गण देखे। वि दोनों भगवान् ् द्वारा मेरी जीवात्मा को शिवलोक ले जानेके शलए भेजेगये थे। तब मुझे प्रथम बार मिाशिवरात्रत्र के हदन उपवास करने की महिमा का ज्ञान िुआ, यद्यवप मनैंतो वि उपवास अनजाने में संयोग से ि ी ककया था। मनैंदीघ वकाल तक शिवलोक में रि कर हदव्य आनन्द का उपभोग ककया और अब पुन: इस संसार में श्रचत्रभानुके रूप में उत्पन्न िुआ िूँ।"

(२)

'शिवरात्रत्र' का अथ वि— भगवान् ्शिव की तनिा । इस धाशमकव अनुष्ठान के मित्त्वपूण वअंग िैं—चौबीस घण्टे का उपवास और रात भर का जागरण । प्रत्येक सच्चा शिव-भतत शिवरात्रत्र की रात को जागरण करते िुए गिन जप ध्यान करता िै तथा व्रत करता िै।

भगवान् ्शिव की आराधना में पुष्प द्वारा अचनवा, त्रबल्व पत्र तथा अन्य पदाथ वभगवान् ्के स्वरूप शलंग को अवपतव करना तथा दूधू, दश्रध, घृतृ, मधु, गुलाब जल इत्याहद वववववध िव्यों द्वारा अशभषेक करना सजममशलत िै।

सृजृष्ट संरचना पूण वि जाने के उपरान्त शिव और पावतवी जब कैलास शिखर पर तनवास कर रि थे, तब एक बार पावतवी ने भगवान् ्से पूछा - "ि भगवन्! ् धम,व अथ,व काम और मोक्ष—इस चतुवगव वके आप ि ी िेतु िैं।
साधना से सन्तुष्ट ि आप ि ी मनुष्य को यि प्रदान करते ि ।ैं अतिः यि जाननेकी इच्छा ि कक ककस कम,व ककस
व्रत या ककस प्रकार की तपस्या से आप सवाश्रवधक प्रसन्न िोते िैं?" भगवान् ्शिव ने उत्तर हदया- "फाल्गुन के कृष्ण
पक्ष की चतुदवी ततश्रथ को आश्रय कर जो रात उदय िोती िै, उसी को 'शिवरात्रत्र' किते िैं। उस हदन जो उपवास करता िै, भतत नश्रािार रि मुझे सन्तुष्ट करता िै। उस हदन उपवास करने से मैं जजतना प्रसन्न िोता िूँ, वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प अपपवण से भी निीं िोता। प्रत्येक प्रिर तीन घण्टे का िोता िै। बिुमूल्य रत्न, धन अथवा पुष्पों की अपेक्षा म ैंअल्प त्रबल्व-पत्रों से ि ी अश्रधक सन्तुष्ट िोता िूँ। भतत को मेरी पूजा-अशभषेक प्रथम प्रिर में दुगुध द्वारा, द्ववतीय प्रिर में दश्रध द्वारा, तृतीय प्रिर में घृतृ द्वारा एवं चतुथ वमें मधु द्वारा करनी चाहिए। प्रभात में ववसजनव के पश्चात् ्ब्राह्मणों को भोजन करा कर ववश्रध-ववधान सहित व्रत-कथा सुन कर पारण करना चाहिए। इससे बढ़ कर सरल और सन्तोष-प्रदायक अन्य कुछ भी निीं िै।

“ि वप्रय, इसके साथ जो कथा संयुतत ि, उसका श्रवण करने से इस व्रत की महिमा और िजतत का ज्ञान गिा।

"एक बार वाराणसी नगर में एक व्याध रिता था। वि एक हदन वन में शिकार करने गया। विााँअनेक मृगों का शिकार करके लौटते ेसमय माग वमें वि थका-मादाँा ककसी वृक्ष के नीचे सो गया। नींदं टूटने पर उसने देखा, चारों ओर भीषण अन्धकार ि। यि । शिवरात्रत्र की रात थी, ककन्तु वि इससे अनजान था। वि वृक्ष के ऊपर चढ़ गया, शिकार ककये िुए जन्तुओं के गट्ठर को एक िाल में बाधाँ हदया और प्राततः िोने की प्रतीक्षा करने लगा। भाग्यवि वि वृक्ष, मेरा अतत वप्रय त्रबल्व वृक्ष था।

"वृक्ष की जड़ में एक अतत प्राचीन शिवशलंगं था। वि वृक्ष से बेल-पत्र तोड़-तोड़ कर नीचे ेश्रगरानेलगा। वसन्त की रात्रत्र में ओस की बूदेँ उसकी दिे सेलग कर नीचे ेश्रगरनेलगीं। उस शिकारी के अनजाने में िी ककये गये इन कृत्यों से मेरे सन्तोष का पार न रिा। प्राततः िुई और शिकारी अपनेघर लौट गया।

'समय आनेपर वि व्याध बीमार पड़ा और प्राण तनकलने लगे। यमदूत उसे ेयमराज के पास ले जाने के शलए आये। मेरे गण भी मेरी आज्ञा से उसे ेमेरे धाम में लानेके शलए पिुाँच गये थे। दोनों में भीषण युद्ध िुआ। यमदूत बुरी तरि से िार कर यमराज के पास पिुाँचे और सारी घटना सुनायी। यमराज स्वयं उसकी जीवात्मा को ले कर मेरे धाम में आये। तब नन्दी ने उन्िें शिवरात्रत्र व्रत की महिमा तथा उसी के कारण व्याध के प्रतत मेरे प्रेम का रिस्य समझाया। यमराज व्याध की जीवात्मा को मेरे पास छोड़ कर चले ेगये!

"वि व्याध जन्म-मरण के बन्धन से छूट गया और सालोतय मुजतत को प्राप्त िुआ और वि भी अनजाने में िी शिवरात्रत्र को ककये गये उपवास और त्रबल्वापणव मात्र िी से। इस रात्रत्र की इतनी िजतत, पववत्रता और महिमा ि!"

भगवान् ्के मुख से शिवरात्रत्र और उसके पूजन उपवास की ऐसी पववत्रता और महिमा श्रवण करके पावतवी अत्यश्रधक प्रभाववत िुईं। उन्िोंने यि कथा अपनी सखखयों से किी और उन सबनेआगे ेपृथ्वी पर राज करने वाले राजा-रानी को सुनायी। इस प्रकार शिवरात्रत्र की महिमा सवत्रव व्याप्त िो गयी।

द्वादिज्योततशलगंातन

सौराटरे सोमनाथंच श्रीिैले मनल्लकाजुनधम् ्।
उज्जनयन्यांमहाकालं ंओंकारममलेश्वरम् ्॥ १ ॥
परल्यां ंवैद्यनाथंच डाककन्यां भीमिंकरम् ्।

सेतुबन्धेतु रामेिं ंनागेिं दारुकावने ॥२॥

वाराणसयांतु ववश्वेिंत्र्यम्बकं गौतमीतिे ।

हहमालये तुकेदारं घुसृणेिं ंच शिवालये ॥ ३ ॥

एतानन ज्योनतशलगंानन सायं ंप्रातः पठेन्नरः ।

सप्त जन्म कृतं ंपापं ंसमरणेन ववनश्यनत ॥४॥

॥ इनत द्वादिज्योनतशलगंानन ।।

१. सौराष्ट्र (गुजरात) में **सोमनाथ**, २. श्रीिैल (आन्ध्र प्रदेि) में **मनल्लकाजुनध**, ३. उज्जैन (मध्य प्रदेि) में **महाकाल**, ४. नमदवा तट पर (मध्य प्रदेि) अमलेश्वर में **ओंकारेश्वर**, ५. परळी (मिाराष्ट्र) में **वैद्यनाथ**, ६. िाककनी (मिाराष्ट्र) में **भीमिांकर** ७. सेतुबन्धन, (तशमलनािु) में **रामेश्वर**, ८. दारुकावन (गुजरात) में **नागेि**, ९. वाराणसी (उत्तर प्रदेि) में **ववश्वेि**, १०. नाशसक (मिाराष्ट्र) में गोदावरी तट पर **त्र्यम्बक**, ११. हिमालय (उत्तरांचल) में **केदारनाथ**, १२. शिवालय (कनाटवक) में **घुसृणेि** |

जो कोई प्रातिः सायं इन द्वादि ज्योततशलगंों का स्मरण करता िै, वि गत सात जन्मों में ककये गये पापों से मुतत िो जाता िै।

दक्षक्षण भारत में पाचाँ प्रशसद्ध शिवशलंग िैं, जो पाचाँ तत्त्वों के द्योतक िैं।

१. कांचीवरम् ्(तशमलनािु) में **पृथ्वीशलंग** िै। २. ततरुवनैकोइल (तशमलनािु) में **आप:शलंग** िै। यि शलंग सदैव जल में रिता िै। ततरुवनै कोइल **जम्बुकेश्वर** नाम से प्रशसद्ध िैं। ३. कालिस्ती (आन्ध्र प्रदेि) में **वायुशलंग** िै। ४. ततरुवन्नामलै (तशमलनािु) में **ज्योनतशलगं** (अरुणाचलेश्वर) िै, तथा ५. श्रचदमबरम् ्(तशमलनािु) में **आकाि- शलंग** िै।

शिवनाम कीतनव

१. शिवाय नमिः ॐ शिवाय नमिः,
शिवाय नमिः, ॐ नम शिवाय।
शिव शिव शिव शिव शिवाय नमिः ॐ
रि िर िर िर नमिः शिवाय।
शिव शिव शिव शिव शिवाय नमिः ॐ
बम बम बम बम नमिः शिवाय।
सामबसदाशिव सामबसदाशिव

सामबसदाशिव सामबशिवाय ।
ॐ नमिः शिवाय ॐ नमिः शिवाय
ॐ नमिः शिवाय ॐ नमिः शिवाय।
...शिवाय नमिः, ॐ शिवाय नमिः ।

२. ॐ शिव ॐ शिव ॐकारा शिव
उमामिेश्वर तव चरणम्।्
ॐ शिव ॐ शिव ॐकारा शिव
परात्परा शिव तव चरणम्।्
नमाशम िंकर भवानी िंकर
श्रगररजा िंकर तव चरणम् ्।
नमाशम िंकर भवानी िंकर
मिृानी िंकर तव चरणम् ्।
रि िर शिव शिव िमभो
३. रि िर शिव शिव िमभो
रि िर शिव शिव िर िर िमभो
रि िर शिव शिव िमभो
रि िर शिव शिव िमभो ।

नमस्ते ेनमस्ते ेववभो ववश्वमूते
४. नमस्ते ेनमस्ते ेश्रचदानन्दमूते
नमस्ते ेनमस्ते ेतपोयोगगमय
नमस्ते ेनमस्ते ेश्रुततज्ञानगमय ।
किरनिंकरनिेमभो गंगाधरने
किरनिंकरनिेमभो गंगाधर ने
५. कीीववश्वनाथ सदाशिव,
बम बोलो कैलासपतत बम बोलो कैलासपतत ।
६. रि िर मिादेव िमभो कीीववश्वनाथ गंगे े
ववश्वनाथ गंगे ेकिाी ववश्वनाथ गंगे।
ॐ शिव िर िर गंर्गेरि िर,

७.

८.

ॐ शिव िर िर गंगीर िर ।

ॐ शिव िर िर ॐ शिव िर िर,

बम बम िर िर ॐ शिव िर िर

९. मिादेव शिव िंकर िमभो

उमाकान्त िर त्रत्रपुरारे

मृतूयुंजय वृषृभध्वज िूशलन

गंगाधर मिृ मदनारे

जय िमभो जय िमभो

शिव गौरी िंकर जय िमभो

जय िमभो जय िमभो

जय गौरी िंकर जय िमभो

रिं पिुपतत ईिानम् ्

कालय कािीपुरीनाथम् ्

रि शिव िंकर गौरीम् ्

वन्दे गंगाधरमीिम् ्।

जय शिव िंकर िर त्रत्रपुरारे

१०. पाहि पिुपतत वपनाकधाररन ।

चन्ीखिेर चन्ीखिेर चन्ीखिेर पाहि माम् ्।

११. चन्ीखिेर चन्ीखिेर चन्ीखिेर रक्ष माम् ्।

१२. अगड़ बम अगड़ बम बाजे िमरू,

नाचे सदाशिव जगद्गुरु

नाचे ब्रह्मा नाचे ेववष्णु ुनाचे मिादेव,

खप्पर ले के काली नाचे ेआहददेव।

(अगड़ बम...)

१३. नटराजा नटाराजा नतनव सुन्दर नटराजा

शिवराजा शिवराजा शिवाकामी वप्रय शिवराजा ।

१४. बोल िंकर बोल िंकर िंकर िंकर बोल

रि िर िर िर मिादेव िमभो िंकर बोल

शिव शिव शिव शिव सदाशिव िमभो िंकर बोल ।

जय जगद्-जननी, संकटि–रणी

१५. त्रत्रभुवन ताररणी मिोश्वरी ।

१६. जय गंगे ेजय गंगे ेरानी

जय गंगे ेजय िर गंगें े।

१७. देवी भजो दुगाा वभवानी

देवी भजो दुगाा व

जगद्-जननी महिषासुर महदवनी

देवी भजो दुगाा व।

राधेगोववन्द भजो राधे गोपाल

राधेगोववन्द भजो राधे गोपाल ।

१८.

१९.

बूरूहि मुकुन्देतत रसने (बूरूहि)

किव माधव गोववन्देतत

कृष्णानन्दा सदानन्देतत (बूरूहि)

राधा रमण िरे रामेतत राजीवाक्षा घन श्यामेतत (बूरूहि) ।

गौरी रमण करुणाभरण

२०. पाहि कृपा-पूण विरण

नीलकण्ठ-धर गौर िरीर

नाथ जना िुभकरा मन्दार (गौरी)

बालचन्ि-धर पुण्य- िरीर

सोम-सार-मद- िर िंकर (गौरी)

वपब रे राम रसम् ्रसने

वपब रे राम रसम् ्

२१. दूरूरकृता-पातक-संसगम्

व ्

पूररत नाना ववध फल वगमव (वपब रे)

जनन-मरण-भयि–ोक ववदूरूम् ्

सकल िास्त्र-तनगमागम सारम् ्(वपब रे)

पररपाशलता-सरशसज गभण्विम् ्

परम पववत्रत्रकृत पिान्दम्।् (वपब रे)
ुद्धि - परमिंसाश्रम-गीतम् ्
ुकि ि ौ तनक कौशिक मुख पीतम् ् (वपब
रे)।

२२. शिवोऽ शिवोऽ शिवोऽ सिोम् ्
शिवोऽ शिवोऽ शिवोऽ सिोम् ्
सजच्चदानन्द स्वरूपोऽमि् ् ।

२३. श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽ शिवोऽमि् ्।
श्रचदानन्दरूपिः शिवोऽ शिवोऽमि् ्।
अरुणाचल शिव अरुणाचल शिव

२४. अरुणाचल शिव अरुण शिव,
अरुणाचल शिव अरुणाचल शिव
अरुणाचल शिव अरुण शिव।

अध्याय १५

शिवस्तोत्रम् ◌्

श्री शिवअष्टोत्तरितनामावली

१. ॐ शिवाय नमिः

२·ॐमिश्वरायनमिः

३. ॐ ◌िमभवे ◌ेनमिः

४. ॐ वपनाककनेनमिः

५. ॐ ◌िशिैखेराय नमिः

६. ॐ वामदेवाय नमिः

७. ॐ ववरूपाक्षाय नमिः

८. ॐ कपहदवने नमिः

९. ॐ नीललोहिताय नमिः

१०. ॐ ◌िंकराय नमिः

११. ॐ ◌ूलपाणये नमिः

१२. ॐ खट्वांश्रगने नमिः

१३. ॐ ववष्णुवल्लभाय नमिः

१४. ॐ शिवपववष्टाय नमिः

१५. ॐ अजमबकानाथाय नमिः

१६. ॐ श्रीकण्ठाय नमिः

१७. ॐ भततवत्सलाय नमिः

१८. ॐ भवाय नमिः

१९. ॐ ◌िवायव नमिः

२०. ॐ त्रत्रलोकिाय नमिः

२१. ॐ शितितकण्ठाय नमिः

२२. ॐ शिवावप्रयाय नमिः

२३. ॐ उग्राय नमिः

२४. ॐ कपाशलने नमिः

२५. ॐ कामारयेनमिः

२६. ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमिः

२७. ॐ गंगाधराय नमिः

२८. ॐ ललाटाक्षाय नमिः ३०. ॐ कृपातनधये नमिः

२९. ॐ कालकालाय नमिः

३१. ॐ भीमाय नमिः

३२. ॐ पर्रिुस्ताय नमिः

३३. ॐ मृगृपाणये नमिः

३४. ॐ जटाधराय नमिः ३६. ॐ कवश्रचने नमिः

३५. ॐ कैलासवाशसने नमिः

३७. ॐ कठोराय नमिः

३८. ॐ त्रत्रपुरान्तकाय नमिः ४०. ॐ वृषृभारूढाय नमिः

३९. ॐ वृषांकाय नमिः

४१. ॐ भस्मोद्धूशूलतववग्रिाय नमिः

४२. ॐ सामवप्रयाय नमिः

४३. ॐ स्वरमयाय नमिः

४४. ॐ त्रयीमूतयेवनमिः

४५. ॐ अनीश्वराय नमिः

४६. ॐ सवज्ञवाय नमिः

४७. ॐ परमात्मनेनमिः

४८. ॐ सोमसूयाजवग्नलोचनाय नमिः

४९. ॐ िववषे ेनमिः

५०. ॐ यज्ञमयाय नमिः

५१. ॐ सोमाय नमिः

५२. ॐ पंचवतत्राय नमिः

५३. ॐ सदाशिवाय नमिः

५४. ॐ ववश्वेश्वराय नमिः

५५. ॐ वीरभिाय नमिः

५६. ॐ गणनाथाय नमिः

५७. ॐ प्रजापतयेनम

५८. ॐ हिरण्यरेतसे नमिः

५९. ॐ दुधुषवायव नमिः

६०. ॐ श्रगरीाय नमिः

६१. ॐ श्रगररिाय नमिः

६२. ॐ अनघाय नमिः

६३. ॐ भुजंगभूषणाय नमिः

६४. ॐ भगायव नमिः

६५. ॐ श्रगररधन्वने नमिः

६६. ॐ श्रगररवप्रय नमिः

६७. ॐ कृवत्तवाससे नमिः

६८. ॐ पुराराातये नमिः'

६९. ॐ भगवते नमिः

७०. ॐ प्रमथाश्रधपाय नमिः

७१. ॐ मृतूयुंजयाय नमिः

७२. ॐ सूक्ष्मतनवेनमिः

७३. ॐ जगद्व्यावपने नमिः

७४. ॐ जगद्गुरवेनमिः

७५. ॐ व्योमकेिाय नमिः

७६. ॐ मिासेनजनकाय नमिः

७७. ॐ चारुववक्रमाय नमिः

७८. ॐ रुिाय नमिः

७९. ॐ भूतपतये नमिः

८०. ॐ स्थाणवे ेनमिः

८१. ॐ अहिबुध्न्याय नमिः

८२. ॐ हदगमबराय नमिः

८३. ॐ अष्टमूतयेव नमिः

८४. ॐ अनेकात्मनेनमिः

८५. ॐ साजत्त्वकाय नमिः

८६. ॐ िुद्धववग्राय नमिः

८७. ॐ िाश्वताय नमिः

८८. ॐ खण्पिरिवे ेनमिः

८९. ॐ अजाय नमिः

९०. ॐ पिावमोचनाय नमिः

९१. ॐ मृिाय नमिः

९२. ॐ पिुपतये नमिः

९३. ॐ देवाय नमिः

९४. ॐ मिादेवाय नमिः

९५. ॐ अव्ययाय नमिः

९६. ॐ िरये नमिः

९७. ॐ पूषदन्तशभदे नमिः

९८. ॐ अव्यग्राय नमिः

९९. ॐ दक्षाध्वरिराय नमिः

१००. ॐ िराय नमिः

१०१. ॐ भगनेत्रशभदे नमिः

१०२. ॐ अव्यतताय नमिः

१०३. ॐ सिस्राक्षाय नमिः

१०४. ॐ सिस्रपदे नमिः

१०५. अपवगप्रवदाय नमिः

१०६. ॐ अनन्ताय नमिः

१०७. ॐ तारकाय नमिः

१०८. ॐ परमेश्वराय नमिः

॥ इनत श्री शिव-अटोत्तरित नामावली ॥

श्रीदेव्यष्टोत्तरितनामावशलिः

१. ॐ आहदिततये नमिः

२. ॐ मिादेव्यै ैनमिः

३. ॐ अजमबकायै नमिः

४. ॐ परमेश्वयैनमिः

५. ॐ ईश्वयैनमिः

६. ॐ अनीश्वयैनमिः

७. ॐ योश्रगन्यै ैनमिः

८. ॐ सवभूवतेश्वयैनमिः

९. ॐ जयायै नमिः

१०. ॐ ववजयायै नमिः

११. ॐ जयन्त्यै नमिः

१२. ॐ िामभव्यै नमिः

१३. ॐ िान्त्यै नमिः

१४. ॐ ब्राह्म्यै नमिः

१५. ॐ ब्रह्माण्धिाररण्यै ैनमिः

१६. ॐ मिारूपायैनमिः

१७. ॐ मिामायायै नमिः

१८. ॐ मिेश्वयै नमिः

१९. ॐ लोकरक्षक्षण्यै नमिः

२०. ॐ दुगायैव नमिः

२१. ॐ दुगुपवारायै नमिः

२२. ॐ भततश्रचन्तामण्यै नमिः

२३. ॐ भूत्यै नमिः

२४. ॐ शसद्ध्यै नमिः

२५. ॐ मूत्यै नमिः

२६. ॐ सवशवसद्श्रधप्रदायैनमिः

२७. ॐ मन्त्रमूत्यै नमिः

२८. ॐ मिाकाल्यैनमिः

२९. ॐ सवमूवततस्ववरूवपण्यै नमिः

३०. ॐ वेदमूत्यैनमिः

३१. ॐ वेदभूत्यै नमिः

३२. ॐ वेदान्तायैनमिः

३३. ॐ व्यविाररण्यैनमिः

३४. ॐ अनघायैनमिः

३५. ॐ भगवत्यै नमिः

३६. ॐ रौायै नमिः

३७. ॐ रुिस्वरूवपण्यैनमिः

३८. ॐ नारायण्यै नमिः

३९. ॐ नारशसंह्यैनमिः

४०. ॐ नागयज्ञोपवीततन्यै नमिः

४१. ॐ िखंचक्रगदाधाररण्यै नमिः

४२. ॐ जटामुकुटीशभन्यैनमिः

४३. ॐ अप्रमाणायैनमिः

४४. ॐ प्रमाणायै नमिः

४५. ॐ आहदमध्यावसानायै नमिः

४६. ॐ पुण्यदायै नमिः

४७. ॐ पुण्योपचाररण्यै नमिः

४८. ॐ पुण्यकीत्यैनमिः

४९. ॐ स्तुतायै नमिः

५०. ॐ वविालाक्ष्यै नमिः

५१. ॐ गमभीरायैनमिः

५२. ॐ रूपाजन्वतायैनमिः

५३. ॐ कालरात्र्यै नमिः

५४. ॐ अनल्पशसद्ध्यैनमिः

५५. ॐ कमलायै नमिः

५६. ॐ पद्मवाशसन्यै ैनमिः

५७. ॐ मिासरस्वत्यै नमिः

५८. ॐ मनिःशसद्धायै नमिः

५९. ॐ मनोयोश्रगन्यै नमिः

६०. ॐ मातंश्रगन्यै नमिः

६१. ॐ चण्मुिण्चिाररण्यै नमिः

६२. ॐ दैत्यदानवनाशिन्यैनमिः

६३. ॐ मेषज्योततषायैनमिः

६४. ॐ परंज्योततषायै नमिः

६५. ॐ आत्मज्योततषायै नमिः

६६. ॐ सवज्वयोततस्वरूवपण्यै नमिः

६७. ॐ सिस्रमूत्यै नमिः

६८. ॐ िवाण्वयै नमिः

६९. ॐ सूयमूवततस्ववरूवपण्यै नमिः

७०. ॐ आयुलक्ष्वमयैनमिः

७१. ॐ वद्यालक्ष्मयैनमिः

७२. ॐ सवलवक्ष्मीप्रदायैनमिः

७३. ॐ ववचक्षणायैनमिः

७४. ॐ क्षीराणववाशसन्यैनमिः ७६. ॐ वाशसद्ध्यै नमिः ७८. ॐ बलायैनमिः

७५. ॐ वागीश्वयैनमिः

७७. ॐ अज्ञानज्ञानगोचरायै नमिः

७९. ॐ परमकल्याण्यै नमिः

८०. ॐ भानुमण्लिवाशसन्यैनमिः

८१. ॐ अव्यततायैनमिः

८२. ॐ व्यततरूपायै नमिः

८३. ॐ अव्यततरूपायै नमिः

८४. ॐ अनन्तायै नमिः

८५. ॐ चन्यिै ैनमिः

८६. ॐ चन्मिण्लिवाशसन्यैनमिः

८७. ॐ चन्मिण्लिमजण्तायैनमिः

८८. ॐ भैरव्यैनमिः

८९. ॐ परमानन्दायै ैनमिः

९०. ॐ शिवायै नमिः

९१. ॐ अपराजजतायै नमिः

९२. ॐ ज्ञानप्राप्त्यै नमिः

९३. ॐ ज्ञानवत्यैनमिः

९४. ॐ ज्ञानमूत्यैनमिः

९५. ॐ कलावत्यै नमिः

९६. ॐ श्मिानवाशसन्यै ैनमिः

९७. ॐ मात्रेनमिः

९८. ॐ परमकजल्पन्यै नमिः

९९. ॐ घोषवत्यै नमिः

१००. ॐ दाररद्र्यिाररण्यैनमिः

१०१. ॐ शिवतेजोमुख्यै नमिः

१०२. ॐ ववष्णुवल्लभायैनमिः

१०३. ॐ किववभूवषतायै नमिः १०४. ॐ कूमायैव नमिः
१०५. ॐ महिषासुरघाततन्यै नमिः १०६. ॐ सवरवक्षायै नमिः
१०७. ॐ मिकाल्यै ैनमिः १०८. ॐ श्रीमिालक्ष्मयै ैनमिः

॥ इनत श्रीदेव्यटोत्तरितनामावशलः ॥

अथ शिवनीराजनम् ्

रिर ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सिस्रमूतयेव सिस्रपादाक्षक्षशिरोरुबािवे। सिस्रनामनेपुरुषाय िाश्वते सिस्रकोहटयुगधाररणे ेनमिः ॥ १ ॥

ॐ जय गंगाधर िर शिव जय श्रगररजाधिी, शिव जय गौरीनाथ। त्व मां ंपालय तनत्यं त्वं ंमां ंपालय मिभो कृपया जगदिी । ॐ िर िर िर मिादेव ॥ २ ॥

कैलासे श्रगरररशिखरे कल्पिुमुववववपने शिव कल्पिुमुववववपनेगुंजतत मधुकुरपुंजे ेगुंजतत मधुकुरपुंजे ेकुंजवने गिने। कोककल कूजतत खेलतत िंसावशललशलता शिव िंसावशललशलता रचयततकलाकलापं रचयततकलाकलापं ं नृतूयतत मुदसहिता । ॐ िर िर िर मिादेव ॥ ३ ॥

तजस्मलाँशलतसुदेि िालामखणरश्रचता, शिव िालामखणरश्रचता, तन्मध्ये िरतनकटे तन्मध्ये िरतनकटे गौरी मुदसहिता । क्रीिां ंरचयतत भूषां रंजजततनजमीिं, शिव रंजजततनजमीिं,ं इन्द्राहिदकसुरसेववत ब्रह्माहदकसुरसेववत प्रणमतत ते िीषम्व ्। ॐ िर िर िर मिादेव ॥४॥

ववबुधवधूबिुव नृतूयतत हृदये मृदृसहिता, शिव हृदये मृदृसहिता, ककन्नरगानं कुरुते ककन्नरगानंकुरुते सप्तस्वरसहिता। श्रधनकत थेथेश्रधनकत मृदृंग वादयते,े शिव मृदृंग वादयते, तवणतवणलशलता वेणुं ं तवणतकणलशलता वेणुं ंमधुरं नादयते । ॐ िर िर िर मिादेव ||५||

कण कण-चरणेरचयतत नूपुरमुज्वशलतं, शिव नूपुरमुज्वशलतं, चक्राकारं भ्रमयतत चक्राकारं भ्रमयतत कुरुते तां ंश्रधकताम्।् तां ंतांलुप-चुप तालंनादयते, शिव तालं नादयते, अंगुष्ठांगुशलनादं अंगुष्ठांगुशलनादं लास्यकतां ंकुरुते। ॐ िर िर िर मिादेव ।। ६ ।।

कपूरवद्युततगौरं पंचाननसहितं, शिव पंचाननसहितं,ं त्रत्रनयन िशिधरमौले ेत्रत्रनयन िशिधरमौलेववषधर कण्ठयुतं। सुन्दरजटाकलापं पावकयुतफालं, शिव पावकयुतफाल, िमरुत्रत्रिूलवपनाकं िमरुत्रत्रिूल वपनाकं करधृतृनृकपालम। ॐ िर िर िर मिादेव ॥७॥

खितननादं कृत्वा झल्लरर नादयते, शिव झल्लरर नादयते, नीराजयते ◌ेब्रह्मा नीराजयते ◌ेववष्णुवेद ऋचं पठते। इतत मृदुचुरणसरोजं ◌ंहृहद कमले ◌ेधृतूवा, शिव हृहद कमले ◌ेधृतूवा, अवलोकयतत मििें शिवलोकयतत सुर्रिें, ईि्◌ंअशभनत्वा । ॐ ◌िर ◌िर ◌िर मिादेव ॥ ८ ॥

रुण्ौ◌िैरचयतत मालां पन्नगमुपवीतं, शिव पन्नगमुपवीतं, वामववभागे ◌ेश्रगररजा वामववभागे ◌ेगौरी रूपं ◌ं अततलशलतम् ◌्। सुन्दरसकलिरीरे कृतभस्माभरणं शिव कृतभस्माभरणं ◌ंइतत वृषृभध्वजरूपं ◌िर शिवि्ंकर-रूपं ◌ं तापत्रयिरणम् ◌्। ॐ ◌िर ◌िर ◌िर मिादेव ॥ ९ ॥

ध्यानंआरततसमये हृदये इतत कृत्वा शिव हृदये इतत कृत्वा रामं ◌ंत्रत्रजटानाथं ◌ं◌िमभुं त्रत्रजटानाथं ईि्◌ं अशभनत्वा। संगीतमेवं ◌ंप्रततहदन पठनं ◌ंयिः कुरुते शिव पठनं यिः कुरुतेशिवसायुज्यं गच्छतत ◌िरसायुज्यं गच्छतत भततत्या यिः ◌िृणुते। ॐ ◌िर ◌िर ◌िर मिादेव ।। १० ।।

जय गंगाधर ◌िर शिव जय श्रगररजाधिी, शिव जय गौरीनाथ। त्वं ◌ंमां ◌ंपालय तनत्यं त्वं ◌ंमां ◌ंपालय ◌िमभो कृपया जगदिी। ॐ ◌िर ◌िर ◌िर मिादेव ॥ ११ ॥

।। इतत श्री शिवनीराजनं समपूणम्व ◌्॥

अथ शिवध्यानावशलिः

ॐ वन्दे देवमुमापततं ◌ंसुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगृधरं वन्दे पिूनां पततम् ◌्।
वन्दे सूयिविांक वजह्ननयनंवन्दे मुकुन्दवप्रयं
वन्दे भततजनाश्रयं ◌ंच वरदं वन्दे शिवं ◌ं◌िंकरम् ◌्॥ १ ॥
िान्तिं ◌ंपद्मासनस्थंिशिधरमुकुटं पंचवतत्रंत्रत्रनेत्रं,
िूलिवज्रं ◌ंच खड्गं ◌ंपरिुमभयदं दक्षक्षणांगे ◌ेविन्तम् ◌्।
नागं ◌ंपिां च घण्टां ◌िमरुकसहितंचांकुिं वामभागे,
नानालंकारदीप्तं ◌ंस्फहटकमखणतनभं पावतिीं ◌ंनमाशम ॥ २ ॥
कपूरवगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रिारिम् ◌्।
सदावसन्तं ◌ंहृदयारववन्दे भवंभवानीसहितं ◌ंनमाशम ॥३॥

अशसतश्रगररसमं ◌ंस्यात् ◌्कज्जलं ◌ंशसन्धुपात्रे ◌े
सुरतरुवरिाखा लेखनी पत्रमुवी ।
शलखतत यहद गृिीत्वा ◌िरदा सवकवालं ◌ं

तदवप तव गुणानामिमी पारं न यातत ॥४॥

त्वमेव माता च वपता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव वविद्यावववणं त्वमेव
त्वमेव सव िंमम देव देव ॥५ ॥

करचरणकृतं वातकायजं ंकमजंवा
श्रवणनयनजंवा मानसंवाऽपराधम् ्।
ववहितमववहितं ंवा सवमेवतत् ्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री मिादेव िमभो ॥ ६ ॥
चन्द्रिाशसतिेखेरे स्मरिरे गंगाधरे िंकरे
सपैभूवषतकण्ठकणववरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।
दजन्तत्वतकृतसुन्दरांबरधरे त्रैलौतयसारे िरे
मोक्षाथ िंकुरु श्रचत्तवृवृत्तमचलामन्यैस्तु ककं कमशवभिः ॥७॥
॥ इतत शिवध्यानावशलिः समपूणा व॥

अथ शिवपुष्पांजशलिः

रिर ॐ । यज्ञेन यज्ञमयजन्त देविाः तातन धमाखवण प्रथमा न्यासन्।्
ते ि नाकं महिमानिः सचन्ते ेयत्र पूवे साध्यिाः सजन्त देविाः ॥

ॐ राजाश्रधराजाय प्रसह्य साहिने।
नमो वयंवैश्रवणाय कुमिेव।
स मे कामान् ्कामकामाय मह्यं ।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय मिाराजाय नमिः ॥
ॐ ववश्वतश्चक्षुरुत ववश्वतो मुखं ंववश्वतो बिुरुत ववश्वस्तपात् ्।
बिुभ्यां धशम समपतत्रैद्यवावाभूमी जनयन्देव एकिः ॥
ॐ तत्पुरुषाय वविद्मिे मिादेवाय धीमहि ।

तन्नो िरिः प्रचोदयात् ◌्॥

नानासुगन्धपुष्पाखण यथाकालोद्भवातन च ।
मयाऽहृतातन हदव्यातन गृिाण परमेश्वर ।।
॥ इतत शिवपुष्पांजशलिः समपूणा व॥

त्रबल्वाष्टकम् ◌्

त्रत्रदलंत्रत्रगुणाकारं त्रत्रनेत्रं च त्रत्रयायुधम् ◌्।
त्रत्रजन्मपापसंिारमेकत्रबल्वंशिवापणवम् ◌्॥१ ॥
त्रत्रिाखैत्रबल्ववपत्रैश्च ह्यजच्छिैः कोमलैः िुभैः
शिवपूजां कररष्याशम ह्येकत्रबल्वं शिवापणवम् ◌्॥२॥
अखण्त्रिबल्वपत्रेणे पूजजते नजन्दकेश्वरे ।
िुद्ध्यजन्त सवपवापेभ्यो ह्येकत्रबल्वंशिवापणवम् ◌्॥३॥
िाशिलग्रामशिलामेकोंववप्राणां ◌ंजातु अपयेवत् ◌्।
सोमयज्ञमिापुण्यमेकत्रबल्वंशिवापणवम् ◌्॥४॥
दजन्तकोहटसिस्राखण वाजपेययितातन च ।
कोहटकन्यामिादानमेकत्रबल्वंशिवापणवम् ◌्॥५ ॥
लक्ष्मयािः स्तनत उत्पन्नं मिादेवस्य च वप्रयम् ◌्।
त्रबल्ववृकूषं ◌ंप्रयच्छाशम ह्येकत्रबल्वं शिवापणवम् ◌्॥६॥

दिनंव त्रबल्ववृकूषस्य स्पिनंव पापनािनम् ◌्।
अघोरपापसंिारमेकत्रबल्वं ◌ंशिवापणवम् ◌्॥७ ॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो ववष्णुरूवपणे ◌े।
अग्रतिः शिवरूपाय ह्येकत्रबल्वं शिवापणवम् ◌्॥८॥

त्रबल्वाष्टकशमदं पुण्यं यिः पठेजच्छवसजन्नधौ ।
सवपवापववतनमुतवतिः शिवलोकमवाप्नुयात् ◌्॥९ ॥

॥ इतत त्रबल्वाष्टकं समपूणम्प्र ्॥

शिवमहिमनिः स्तोत्रम् ्

ॐ श्रीगणेिाय नमिः ।

रिर ॐ गजाननं भूतगणाश्रधसेववतं
कवपत्थजमबूफलसारभक्षणम् ्।
उमासुतं िोकववनािकारणंनमाशम ववघ्नेश्वरपादपंकजम् ्॥

महिमनिः पारं ते परमववदुषो यद्यसदृिी
स्तुततब्रह्ममादीनामवप तदवसन्नास्त्वतय श्रगरिः ।
अथाऽवाच्यिः सविःव स्वमततपररणामावश्रध गृणृन् ्
ममाप्येषिः स्तोत्रे िर तनरपवादिः पररकरिः ॥ १ ॥

अतीतिः पन्थानं ंतव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चककतमशभदत्ते श्रुततरवप
स कस्य स्तोतव्यिः कततववधगुणिः कस्य ववषयिः
पदे त्ववाचवीने ेपतति न मनिः कस्य न वचिः ॥ २ ॥
मधुस्फीता वाचिः परमममृतंतनशमतववत-
स्तव ब्रह्मन् ्ककं वागवप सुरगुरोववस्वमयपदम् ्।
मम त्वेतां ंवाणीं ंगुणकथनपुण्येन भवतिः
पुनामीत्यथेऽजस्मन्पुरमथन बुद्श्रधव्यववशसता ॥ ३ ॥
तवैश्वय िंयत्तज्जगदुदुयरक्षाप्रलयकृत् ्
त्रयीवस्तु व्यस्तं ंततसृषु गुणशभन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामजस्मन्वरद रमणीयामरमणीं ं
वविन्तुं व्याक्रोिींववदधत इिैके जिश्रधयिः ॥ ४ ॥

ककमीिीः ककं कायिः स खलुककमुपायजस्त्रभुवनं
ककमाधारो धाता सृजतत ककमुपादान इतत च।

अतयैश्वये त्वय्यनवसरदिु:स्थो ितश्रधयि:
कुतकोऽयं कांजश्चन्मुखरयतत मोिाय जगति: ॥५॥

अजन्मानो लोकिा: ककमवयववन्तोऽवप जगता-
मश्रधष्ठातारं ककं भववववश्रधरनादृत्य भवतत ।
अनीिो वा कुयाद्भुवनजननेकि: पररकरीः
यतो मन्दास्त्वां ्प्रत्यमरवर संिेरते इमे े॥ ६ ॥
त्रयी सांख्यं योगि: पिुपततमतंवैष्णवशमतत
प्रशभन्ने प्रस्थाने ेपरशमदमदि: पथ्यशमतत च ।
रुचीनां वैश्र चत्र्यादृजुकु हटलनानापथजुष ां
नृणामेको गमयस्त्वमशस पयसामणव इव ॥७॥
मिोक्षि: खट्वांगंपरिुरतनजंभस्म फखणनि:
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ्।

सुरास्तां तामृद्धश्रधं ंदधतत तु भवद्भ्रप्रखणहितां ं
न हि स्वात्मारामं ंववषयमृगतृष्णा भ्रमयतत ॥ ८ ॥
ध्रुवं कजश्चत्सव िंसकलमपरस्त्वध्रुवशमदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगतत गदतत व्यस्तववषये ।
समस्तेऽप्येतजस्मपुरमथन तैवैवजवस्मत इव
स्तुवंजजह्वेशम त्वां ंन खलु ननु धृष्टा मुखरति: ॥ ९ ॥
तवैश्वय िंयत्नाद्यदुपरर ववररंश्रचिवररररधि:
पररच्छेत्तुं ंयातावनलमनलस्कन्धवपुषि: ।
ततो भजततश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां श्रगरर यत् ्
स्वयं तस्थे ेताभ्यां ंतव ककमनुवृवृत्तन वफलतत ॥ १० ॥
अयत्नादापाद्य त्रत्रभुवनमवैरव्यततकरं
दिास्यो यद्बािूनभृत रणकणि्ूपरिवान् ्।
शिर: पद्मश्रेणीरश्रचतचरणामभोरुबले:
जस्थरायास्त्वद्भततेजस्त्रपुरिर ववस्फूजजतवशमदम् ्॥ ११ ॥

अमुष्य त्वत्सेवासमश्रधगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽवप त्वदश्रधवसतौ ववक्रमयति: ।।

अलभ्या पातालेऽप्यलसचशलतांगुष्ठशिरशस
प्रततष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपश्रचतो मुह्यतत खलिः ॥ १२ ॥
यदृद्श्रधं ◌ंसुत्रामणो वरद परमोच्चैरवप सती-
मधश्चक्रे बाणिः पररजनववधेयजस्त्रभुवनिः ।
न तजच्चत्रंतजस्मन्वररवशसतरर त्वच्चरणयो-
न वकस्या उन्नत्यै भवतत शिरसस्त्वय्यवनततिः ॥ १३ ॥
अकाण्ब्रिह्माण्क्षियचककतदेवासुरकृपा-
ववधेयस्यासीद्यजस्त्रनयन ववषं ◌ंसंतिवतिः ।
स कल्माषिः कण्ठे तव न कुरुते न श्रश्रयमिो
ववकारोऽवप श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसतननिः ॥ १४ ॥
अशसद्धाथाव नैव तवश्रचदवप सदेवासुरनरे
तनवतन्वते ◌ेतनत्यं जगतत जतयनो यस्य ववशिखािः ।
स पश्यन्निी त्वाशमतरसुरसाधारणमभूतू-
स्मरिः स्मतव्वयात्मा न हि वशिषुपथ्यिः पररभविः ॥ १५ ॥
मिी पादाघाताद्व्रजतत सिसा संयिपदं

पदं ववष्णोभ्रामवयद्भुजपररघरुग्णग्रिगणम् ◌्।
मुिुद्यवौदीस्थ्यं यात्यतनभृतृजटाताडिततटा
जगिक्षायै त्वं ◌ंनटशस ननुवामैवै ववभुता ॥ १६ ॥
ववयद्व्यापी तारागणगुखणतफेनोद्गमरुश्रचिः-
प्रवािो वारां ◌ंयिः पृषृतलघुदृष्टिः शिरशस ते ।
जगद्वीपाकारं जलश्रधवलयंतेने कृतशम-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतृमहिम हदव्यंतव वपुिः ॥ १७ ॥
रथिः क्षोणी यन्ता ◌ितधृतृतरगेन्द्रो धिनुरथो
रथांगे ◌ेचन्द्राकौ रथचरणपाखणिः ◌िर इतत ।
हदधक्षोस्ते ◌ेकोऽयं त्रत्रपुरतृणमािमबरववश्रध-
ववधेयैिः क्रीन्त्यो न खलु परतन्त्रािः प्रभुश्रधयिः ।। १८ ।।
रिरस्तेसािस्रं ◌ंकमलबशलमाधाय पदयो-
यदेकोनेतजस्मजन्नजमुदिरन्नेत्रकमलम् ◌्।

गतो भतत्यैिकिः पररणततमसी चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायैत्रत्रपुरिर जागतत वजगताम् ॥ १९ ॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमशस फलयोगे क्रतुमतां
तव कम वप्रध्वस्तं फलतत पुरुषाराधनमृतृे ।
तस्त्वां संपे्रेक्ष्य क्रतुषुफलदानप्रततभुवं
श्रुतौ श्रद्धांबद्धवा दृढपररकरिः कमसुव जनिः ॥ २० ॥

कक्रयादक्षो दक्षिः क्रतुपततरधीस्तनुभृतृा-
मृषीणामाजत्वज्वयं िरणद सदस्यािः सुरगणािः ।
क्रतुभं्रंस्त्वित्तिः क्रतुफलववधानव्यसतननो
ध्रुवं कतुिःव श्रद्धाववधुरमशभचाराय हि मखािः ॥ २१ ॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमशभकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रररमतयषुमृषृ्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेयातंव हदवमवप सपत्राकृतममुं
वसन्तं तेऽद्यावप त्यजतत न मृगृव्याधरभसिः ॥ २२ ॥
स्वलावण्यांसा धृतृधनुषमह्नाय तृणृवत्
पुरिः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमवप ।
यहद स्त्रैणं दैवी यमतनरत दिेाधघवटना-
दवैतत त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयिः ॥ २३ ॥ ।
श्मिानेष्वाक्रीिा स्मरिर वपिाचािः सिचरा-
जश्चताभस्मालेपिः स्रगवप नृकृरोटीपररकरिः ।

अमंगल्यं िीलं तव भवतु नामैवैमखखलं
तथावपस्मतृणवां वरद परमं मंगलमशस ॥ २४ ॥
मनिः प्रत्यश्रचते्ते सववधमवधायात्तमरुतिः
प्रहृष्यिोमाणिः प्रमदसशललोत्संश्रगतर्दिृः ।
यदालोतयाह्लादं ह्रद इव तनमज्यामृतृमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं ककमवप यशमनस्तजत्कल भवान् ॥ २५ ॥
त्वमकवस्त्वंसोमस्त्वमशस पवनस्त्वं िुतवि-

स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमुधरखणरात्मा त्वशमतत च ।
पररजच्छन्नामेवं ◌ंत्वतय पररणता त्रबभ्रतु श्रगरं
न ववद्मस्तत्तत्त्वं वयशमि तु यत्त्वंन भवशस ।। २६ ।।

त्रयींततस्रो वृतूतीजस्त्रभुवनमथो त्रीनवप सुरान्–्
अकाराद्यैवणैवजस्त्रशभरशभदधत्तीणववकृतत ।
तुरीयं ते धाम ध्वतनशभरवरुन्धानमणुशभिः
समस्तं ◌ंव्यस्तं ◌ंत्वां ◌ंिरणद गृणृात्योशमतत पदम्॥◌्२७॥
भविः िवो र्रुिः पिुपततरथोग्रिः सिमिां–ं
स्तथा भीमेिानाववतत यदशभधानाष्टकशमदम् ◌्।
अमुजष्मन्प्रत्येकं प्रववरचतत देव श्रुततरवप ।
वप्रयायास्मै ◌ैधामने ◌ेप्रखणहितनमस्योऽजस्म भवते ◌े॥ २८ ॥
नमो नेहदष्ठाय वप्रयदव दववष्ठाय च नमोन
नमिः क्षोहदष्ठाय स्मरिर महिष्ठाय च नमिः ।
नमो ववषष्ठाय त्रत्रनयन यववष्ठाय च नमो
नमिः सवस्वमैते तहददशमतत सवायव च नमिः ॥ २९ ॥

बिुलरजसे ववश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमिः
प्रबलतमसेतत्संहारे िराय नमो नमिः ।
जनसुखकृते सत्वोहिततौ मृिाय नमो नमिः
प्रमिशस पदे तनस्त्रैगुण्येशिवाय नमो नमिः ॥ ३० ॥
कृिपररणतत चेतिः तलेिवश्यं तव चेर्दं
तव च तव गुणसीमोल्लंतघनी िश्वदृद्श्रधिः ।
इतत चककतममन्दीकृत्य मां ◌ंभजततराधाद्
वरद चरणयोस्तेवातयपुष्पोपिारम् ◌्॥३१॥

अशसतश्रगररसमं ◌ंस्यात् ◌्कज्जलं ◌ंशसन्धुपात्रे ◌े
कम सुरतरुवरिाखा लेखेनी पत्रमुवी ।
शलखतत यहद गृिीत्वा िारदा सवकवालं ◌ं
तदवप तव गुणानामीमी पारं न यातत ॥ ३२ ॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरिश्रचतवस्येन्दुमौले-
ग्रश्रवथतगुणमहिमनो तनगुणवस्येश्वरस्य ।
सकलगणवररषिः पुष्पदन्ताशभधानो
रुश्रचरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥ ३३ ॥

अिरिरनवद्यंधूजटेविः स्तोत्रमेतत् ्
पठतत परमभतत्या िुद्धश्रचत्तिः पुमान् ्यिः ।
स भवतत शिवलोके रुितुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायिुः पुत्रवान् ्कीततमवांश्च ॥ ३४ ॥
दीक्षा दानं ंतपस्तीथ िंज्ञानं यागाहदकािः कक्रयािः ।
महिमनिः स्तवपाठस्य कलांनािवजन्त षिोिीम् ्।। ३५ ।।
आसमाप्तशमदं स्तोत्रं ंपुण्य गन्धवभवावषतं ।
अनौपमयं मनिोारर शिवमीश्वरवणनवम् ्॥ ३६ ॥
मिैान्नपरो देवो महिमनो नापरा स्तुततिः ।
अघोरान्नपरो मन्त्रो नाजस्त तत्त्वंगुरोिः परम् ्॥३७॥
कुसुमदिननामा सवगवन्धवरवाजिः
शििधरवरमौलेदेवदेवस्य दास
स खलु तनज महिमनो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनशमदमकाषीद्हदव्यहदव्यं महिमनिः ॥ ३८ ॥

सुरवरमुतनपूज्यंस्वगमवोक्षैकिेतुं
पठतत यहद मनुष्यिः प्रांजशलनान्वयचेतािः
व्रजतत शिवसमीपं ंककन्नरैिः स्तूयमानिः
स्तवनशमदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ्।। ३९ ।।

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजतनगतेवन
स्तोत्रेणे ककजल्बषिरेण िरवप्रयेण ।
कण्ठजस्थतेन पहठतेन समाहितेन
सुप्रीखणतो भवतत भूतपततमिेिविः ॥ ४० ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
अवपतवा तेन देविवः प्रीयतां ंमे सदाशिवः ॥ ४१ ॥
यदस्तं ंपदं भ्रष्टं मात्रिीनंच यद्भवेत् ्।
तत्सव िंक्षमयतांदेव प्रसीद परमेश्वर ॥ ४२ ॥

।। इतत श्रीपुष्पदन्ताचायववरश्रचतंशिवमहिमनिः स्तोत्रं ंसमपूणम् ्॥

अथ शिवस्तुतत:

ॐ मिादेव शिव िंकर िमभो उमाकान्त िर त्रत्रपुरारे
मृतूयुंजय वृषृभध्वज िूशलन् ्गंगाधर मिृ मदनारे।
रि शिव िंकर गौरिींवन्दे गंगाधरमिी
रिंं पुिपततमिीानं कलयेकिीपुररनाथम् ्॥ १ ॥
जय िमभो जय िमभो शिव गौरिींकर जय िमभो।
जय िमभो जय िमभो शिव गौरिींकर जय िमभो ॥२॥
ॐ नमिः पावतवीपतये िर िर मिादेव ॥

वेदसार शिवस्तव:

पिूनां पततं ंपापनिां ंपरिंगजेन्द्रस्य कृवत्तं ंवसानं वरेण्यम् ्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गांगवाररं ंमिादेवमेकं स्मराशम स्मराररम् ्॥ १ ॥

मिें ंसुरिंसुरारातनिवां ववभुं ववश्वनाथं ववभूत्यंगभूषम् ्।
ववरूपाक्षशमन्द्वकववजह्नत्रनेत्रं ंसदानन्दमिी प्रभुं पंचवतत्रम् ्॥२॥
श्रगरिीं ंगणिींगले नीलवण िंगवेन्द्राश्रिधरूढं गुणातीतरूपम् ्।
भवं भास्वरं भस्मना भूवषतांगं भवानीकलत्रं भजेपंचवतत्रम् ्॥३॥
शिवाकान्त िमभो िांकाधमवौले मिीान िूशलन् ्जटाजूटूधाररन् ्।
त्वमेको जगद्व्यापको ववश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूणरूवप ॥ ४ ॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं

तनरीं तनराकारमोंकारवेद्यं ं

यतो जायते ेपाल्यते ेयेन ववश्वं

तमीं ंभजे ेलीयते ेयत्र ववश्वम् ्॥५ ॥

न भूशमन वचापो न वजह्वन ववायु-

न वचाकिमास्तेन तन्ा नि तनिा ।

न ग्रीष्मो न िीतं ंन दिो न वेषो

न यस्याजस्त मूततजवस्त्रमूतत ितमीं ॥ ६ ॥

अजं िाश्वतं ंकारणं ंकारणानांशिवंकेवलंभासकं भासकानाम् ्।

तुरीयं तमिः पारमाद्यन्तीनंप्रपद्ये परं पावनं द्वैतीनम् ्॥७॥

नमस्तेनमस्ते ेववभो ववश्वमूतेनमस्ते ेनमस्ते ेश्रचदानन्दमूते ।

नमस्तेनमस्ते ेतपोयोगगमय नमस्तेनमस्ते ेश्रुततज्ञानगमय ॥ ८ ॥

प्रभो िूलपाणे ेववभो ववश्वनाथ मिादेव िमभो मिमे त्रत्रनेत्र ।

शिवाकान्त िान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यिः ॥ ९ ॥

मिभो मिमे करुणामय िूलपाणेरीपते ेपुिपते पुिपािनाशिन् ्।

किीपते करुणया जगदेतदेक- स्त्वं िंशस पाशस ववदधाशस मिेश्वरोऽशस ॥ १० ॥

त्वत्तो जगद्भवतत देव भव स्मरारे त्वय्येव ततष्ठतत जगन्मृ ववश्वनाथ ।

त्वय्येव गच्छतत लयंजगदेतदीदी शलंगांत्मकं िर चराचर ववश्वरूवपन् ्॥ ११ ॥

॥ इतत श्रीमच्छंकराचायववरश्रचतं वेदसारशिवस्तोत्रंसमपूणम् व ्॥

श्री शिवमानसपूजा

ॐ श्रीगणिौय नमः

रत्नैः कजल्पतमासनं हिमजलैः स्नानं च हदव्यामबरम्।्

नानारत्नववभूवषतं मृगमदामोदांककत चन्दनम्।्

जातीचमपकत्रबल्वपत्ररश्रचतं पुष्पं च धूपं तथा ।
दीपं ंदेव दयातनधे ेपुिपते हृत्कजल्पतं गृह्यताम् ्॥ १ ॥

सौवणेमखणखण्रित्नरश्रचते पात्रे घृतं पायसम् ्।
भक्ष्यं पंचववधं पयोदश्रधयुतंरमभाफलं पानकम् ्।
ाकिनामयुतं जलं ंरुश्रचकरं कपूरवखणािज्ज्वलम् ्।
तामबूलं मनसा मया ववरश्रचतं भतत्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥

छत्रंचामरयोयुगंव व्यजनकं चादिकंव तनमलवम् ्।
वीणा भेररमृदंगकिालकलागीतंच नृतूयं तथा।
साष्टांगंप्रणततिः स्तुततबुिववधा ह्येतत्समस्तंमया ।
संकल्पेन समवपतंव ंतव ववभो पूजां गिृाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं ंश्रगररजा मततिः सिचरिाः प्राणिाः िरीरं गिृम् ्।
पूजा ते ववषयोपभोगरचना तनिा समाश्रधजस्थततिः ।
संचार: पदयोिः प्रदक्षक्षणववश्रधिः स्तोत्राखण सवा वश्रगरो ।
यद्यत्कम वकरोशम तत्तदखखलं ंिमभो तवाराधनम् ्॥४ ॥
इत्येवं ंिरपूजनं प्रततहदनंयो वा त्रत्रसन्ध्यंपठेत् ्।
सेवाश्लोकचतुष्टयंप्रततहदनं पूजा िरेमानवशस।
सोयंसौख्यमवाप्नुयाद् द्युततधरं साक्षाद्रिदेविनवम् ्।
व्यासस्तेन मिावसानसमये कैलासलोकं गततिः ॥ ५ ॥

करचरणकृतं वातकायाजं ंकमजंव
श्रवणनयनजंवा मानसं ंवापराधम् ्।
ववहितमहितं ंवा सवमेवतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्रीमिादेव िमभो ॥६॥
॥ इतत श्रीशिवमानसपूजा समाप्तम् ्।।

॥ रुिं चमकं च ॥

ॐ अस्य श्रीरुिाध्यायप्रश्नमिामन्त्रस्य, अघोर ऋवषिः, अनुष्टुप् ्छन्दिः, संकषणवमूततस्ववरूपो योऽसावाहदत्यिः, परमपुरुषिः स एष रुिो देवता । नमिः शिवायेतत बीजम् ्। शिवतरायेतत िजततिः । मिादेवायेतत कीलकम् ्। श्रीसामबसदाशिवप्रसादशसद्ध्यथे ेजपे ेववतनयोगिः ॥

ॐ अजग्नोत्रात्मने अङ्गष्ठाभ्यां ंनमिः । ॐ दिपूवणमवासात्मनेतजनवीभ्यां ंनमिः । ॐ चातुमास्वयात्मने मध्यमाभ्यां ंनमिः । ॐ तनरूढपिुबन्धात्मने अनाशमकाभ्यां ंनमिः । ॐ ज्योततष्टोमात्मने कतनजष्ठकाभ्यां ंनमिः । ॐ सवक्रवत्वात्मनेकरतलकरपृषूठाभ्यां नमिः ।

ॐ अजग्नोत्रात्मने हृदयाय नमिः । ॐ दिपूवणमवासात्मनेशिरसे स्विाा । ॐ चातुमास्वयात्मने शिखायै वषट् । ॐ तनरूढपिुबन्धात्मने कवचाय िंुं । ॐ ज्योततष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सवक्रवत्वात्मने अस्त्राय फट् । भूभुवस्सुवरोशमतत हदग्बन्धिः ॥

ध्यानम्–्

आपाताळनभिःस्थलान्तभुवनब्रह्माण्मिाववस्फुर-
ज्योततिःस्फाहटकशलङ्गमौशळववलसत्पूणेन्दुवान्तामृतैिः ।

अस्तोकाप्लुतमेकमीमतनिंरिानुवाकाचजपन् ्
ध्यायेदीजप्सतशसद्धये ध्रुवपदं ववप्रोऽशभवषचचेजच्छवम् ्॥
ब्रह्माण्व्याप्तदेिा भशसतहिमरुचा भासमाना भुजङ्गैिः
कण्ठेकालािः कपदावकशलततिशिकलाश्चण्किोदण्िर्िस्तािः ।
त्र्यक्षा रिाक्षमालाप्रकहटतववभवािः िामभवा मूततभेविदािः
रिािः श्रीरुिसूततप्रकहटतववभवा निः प्रयच्छन्तु सौख्यम् ्॥
ॐ गणानां ंत्वा गणपतत िवामिे कववं ंकवीनामुपमश्रवस्तमम् ्। ज्येष्ठराजं ंब्रह्मणांब्रह्मणस्पत आनिःश्रुण्वन्नूततशभस्सीदसादनम् ्॥ ॐ श्रीमिागणाश्रधपतयेनमिः ॥
िंचि मे मयश्च मेवप्रयं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भिं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यिश्च मे भगश्च मे िववणं च मेयन्ता च मेधतावच मे क्षेमश्च मे धृतृतश्च मे ववश्च च ॥ १ ॥ मे मिश्च मे सवाँवश्च मे ज्ञात्रं ंच मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं ंच मेऽमृतंच मेऽयक्ष्मंच मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीघायुवत्वं च मेऽनशमत्रंच मेऽभयं च मे सुगं च मे ियनंच मे सूषा च मे सुहदनं च मे ॥

ॐ िाजन्तिः िाजन्तिः िाजन्तिः ॥

॥ श्रीरुिप्रश्निः ॥

प्रथमोऽनुवाकः

ॐ नमो भगवतेरुिाय ॥

ॐ नमस्ते ेरुि मन्यव उतोत इषवेनमिः। नमस्ते ेअस्तु धन्वने बिाुभ्यामुत ते नमिः। या त इषिुः शिवतमा शिवं ंबभूव ते धनिुः। शिवा िरव्या या तव तया नो रुि मृिय। या ते रुि शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा िन्तमया श्रगररिंताशभचाकिीहि । याशमषु श्रगररिंतं िस्ते।।१।। त्रबभष्यस्वतवे। शिवांश्रगररत्र तां ंकुरु मा हि सी: पुरुषं जगत्।् शिवेन वचसा त्वा श्रगररिाच्छावदामशस । यथा निः सवशवमज्जगदयक्ष सुमना असत्।् अध्यवोचदश्रधवतता प्रथमो दैव्यो शभषक् । अिौ ंश्च सवाचवजभयन्त्सवाश्चच या तु धान्यिः । असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभुरुिः सुमङ्गलिः । ये चे मा रुि अशभतो हदक्षु।। २ ।। श्रश्रतािः सिस्रोऽवैषा ं ंिि ईमिे । असौ योऽवसपतवत नीलग्रीवो ववलोहितिः । उतैनं गोपा अदृिन्नदृिन्नुदिायिःव। उतैनंववश्वाभूतातन स दृष्टो मृियातत निः । नमो अस्तु नीलग्रीवाय सिस्राक्षाय मीढुषे । अथो ये अस्य सत्वानोऽिं तेभ्योऽकरन्नमिः । प्रमुचच धन्वनस्त्वमुभयोराजत्वयवोज्याम् व।् याश्चते िस्त इषविः ।। ३ ।। परा ता भगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व ं ंसिस्राक्ष तिषुधे े। तनीय विल्यानां ंमुखा शिवो निः सुमना भव । ववज्यंधनिुः कपहदवनो ववल्यो बाणवा उत। अनिेन्नस्येषव आभुरस्य तनषङ्गततिः। या ते तितमीढुष्टम स्ति बभूव ते धनिुः । तयाऽस्माजन्वश्वतस्त्वमयक्ष्मया पररब्भुज । नमस्ते ेअस्त्वायुधायानातताय धृषूणवे । उभाभ्यामुत ते नमो बिाुभ्यां तव धन्वने। पररतेधन्वनो िततरस्मान्वृणततुववश्वतिः अथो य इषुश्रधस्तवारे अस्मजन्नधेहि तम् ्॥४ ॥ मिभवे ेनमिः ।।

नमस्ते ेअस्तु भगवजन्वश्वेश्वराय मिादेवाय त्र्यमबकाय त्रत्रपुरान्तकाय त्रत्रकालाजग्नकालाय कालाजग्नरुिाय नीलकण्ठाय मृतूयुंजयाय सवेश्वराय सदाशिवाय श्रीमजन्मिादेवाय नमिः ।

द्ववतीयोऽनुवाकः ।।

नमो हिरण्यबािवेसेनान्ये हदिांच पतये नमो नमो वृकूष्येभ्यो िररकेिभ्यिः पिूनां पतये नमो नमिः सजस्पचजराय जत्वषीमते ेपथीनां ंपतये नमो नमो बभ्लुिाय ववव्याश्रधनेऽन्नानां पतये नमो नमो रररकेिायोपवीततनेपुष्टानां पतये नमो नमो भवस्य िेत्यै जगतांपतये नमो नमो रुिायाततावववने क्षेत्राणां पतये नमो नमिः सूतायािन्त्याय बनानां ंपतये नमो नमिः ॥५॥ रोहिताय स्थपतये वृकूषाणां पतये नमो नमो मजन्त्रणे े वाखणजाय कक्षाणां ंपतये नमो नमो भुवंतये वाररवस्कृतायौषधीनांपतये नमो नम उच्चैघोषायाक्रन्दयते पत्तीनां ं पतये नमो नमिः कृत्स्नवीताय धावते ेसत्त्वनांपतये नमिः ।। ६ ।।

तृतीयोऽनुवाकः

नमिः सिमानाय तनव्याश्रधन आव्याश्रधनीनांपतये नमो नमिः ककुभाय तनषङ्श्रगणे स्तेनानां ंपतये नमो नमो तनषङ्श्रगण इषुश्रधमते तस्कराणां ंपतये नमो नमो वचचतेपररवचचते ेस्तायूनां पतये नमो नमो तनचेरवे पररचरायारण्यानां ंपतये नमो नमिः सृकाववभ्यो जजघा सद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोऽशसमद्भ्यो नततंचरद्भ्यिः प्रकृन्तानां पतये नमो नमिः उष्णीवषणे ेश्रगररचराय कुलुचचानां पतये नमो नमिः ॥७॥ इषुमद्भ्यो धन्वाववभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यिः प्रततदधानेभ्यश्च वो नमो नम आयच्छद्भ्यो ववसृजद्भ्यश्च वो नमो

नमिः आसीनेभ्यिः ियानेभ्यश्च वो नमो नमिः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमजस्तष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमिः सभाभ्यिः सभापततभ्यश्च वो नमो नमो अश्वेभ्योऽश्वपततभ्यश्च वो नमो नमिः ॥८ ॥

चतुथोऽनुवाकः ।।

नम आव्याश्रधनीभ्यो ववववव्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तु ितीभ्यश्च वो नमो नमो गृतूसेभ्यो गृतूसपततभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपततभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्ेयो गणपततभ्यश्च वो नमो नमो ववरूपेभ्यो ववश्वरूपेभ्ेयश्च वो नमो नमो मिद्भ्यिः क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रश्रथभ्योऽरथेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यिः || ९ || रथपततभ्यश्च वो नमो नमिः सेनाभ्यिः सेनेोतनभ्यश्च वो नमो नमिः क्षतृभूयिः संग्रिीतृभूयश्च वो नमो नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्च वो नमो नमिः कुलालेभ्यिः कमररभ्यश्च वो नमो नमिः पुजज्जष्टेभ्यो तनषादेभ्यश्च वो नमो नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्च वो नमो नमो मृगृयुभ्यिः श्वतनभ्यश्च वो नमो नमिः श्वभ्यिः श्वपततभ्यश्च वो नमिः ॥१० ॥

पञ्चमोऽनुवाकः ।।

नमो भवाय च रुिाय च नमिः िवायव च पिुपतये नमो नीलग्रीवाय च शिततकण्ठाय च नमिः कपहदवनेच व्युप्तकेिाय नमिः सिस्राक्षाय च ितधन्वने च नमो श्रगररिाय च शिवपववष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो ि्रस्वाय च वामनाय च नमो बृिते च वषीयसे ेच नमो वृद्धाय च संवृधूवने च ॥ ११ ॥ नमो अश्रग्रयाय च प्रथमाय च नम आिवे ेचाजजराय च नमिः िीतघ्रयाय च िीभ्याय च नम ऊमयायव चावस्वन्याय च नमिः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च ॥ १२ ॥

षटठोऽनुवाकः ॥

नमो ज्येष्ठाय च कतनष्ठाय च नमिः पूवजवाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुजध्नयाय च नमिः सोभ्याय च प्रततसयायव च नमो यामयाय च क्षेमेयाय च नम उवययवायव च खल्याय च नमिः श्लोतयाय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमिः श्रवाय च प्रततश्रवाय च ॥१३॥ नम आिुषेणाय चिािुरथाय च नमिः िूराय चावशभन्दते ेच नमो वशमणेव ेच वरूश्रथनेच नमो त्रबजल्मनेच कवश्रचने ेच नमिः श्रुताय च श्रुतसेनाय च ॥ १४ ॥

सप्तमोऽनुवाकः।।

नमो दुन्दुभ्याय चािन्याय च नमो धृषूणवे च प्रमृिाय च नमो दूताय च प्रहिताय च नमो तनषङ्श्रगणे चेषुश्रधमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुश्रधने च नमिः स्वायुधाय च सुधन्वने च नमिः स्तुत्याय च पथ्याय च नमिः काट्याय च नीप्याय च नमिः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्याय च वैन्ताय च ॥१५॥ नमिः कूप्याय चावट्याय च नमो वष्यायव चावण्यायव च नमो मेघ्याय च ववद्युत्याय च नम ईश्रध्रयाय चातप्याय च नमो वात्याय च रेजष्मयाय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च ॥ १६ ॥

अटिमोऽनुवाकः ।।

नमिः सोमाय च रुिाय च नमस्ताम्राय चारुणाय च नमिः िङ्खाय च पुिपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो अग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो िन्त्रे ेच िनीयसे ेच नमो वृकूषेभ्यो िररकेभ्यो नमस्ताराय नमश्भिवे च मयोभवे च नमिः िंकराय च मयस्कराय च नमिः शिवाय च शिवतराय च ॥१७॥ नमस्तीथ्यायव च कूल्याय च नमिः पायायव चावायायव च नमिः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नम आतायायव चालाध्याय च नमिः िष्प्याय च फेन्याय च नमिः शसकत्याय च प्रवाह्याय च ॥ १८ ॥

नवमोऽनुवाकः ॥

नम इररण्याय च प्रपथ्याय च नमिः कक शिलाय च क्षयणाय च नमिः कपहदवने च पुलस्तये च नमो गोष्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमिः काट्याय च गिरेष्ठाय च नमो हृदय्याय च तनवेष्याय च नमिः पा ाँ ूसव्याय च रजस्याय च नमिः िुष्तयाय च िररत्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च ॥ १९ ॥ नम ऊव्यायव च सूमयायव च नमिः पयायव च पणिवद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाशभघ्नतेच नम आजख्खदते ेच प्रजख्खदते ेच नमो विः ककररकेभ्यो देवाना ाँहृदयेभ्यो नमो ववक्षीणकेभ्यो नमो ववश्रचन्वत्केभ्यो नम आतनिवतेभ्यो नम आमीवत्केभ्यिः ॥२०॥

दिमोऽनुवाकः ।।

िापे ेअन्धसस्पते दररिन्नीललोहित । एषां ंपुरुषाणामेषांपूिनां मा भेमाऽवरो मो एषां ंककं चनाममत् ्। या ते रुि शिवा तनूजश्िवा ववश्विाभेषजी। शिवा रुिस्य भेषजी तया नो मृि जीवसे ॥ इमा रुिाय तवसे कपहदवने क्षयद्वीराय प्रभरामिे मततम् ्। यथा निः िमसद्ववपदे चतुष्पदे ववश्वंपुष्टं ग्रामे अजस्मन् ्॥ २१ ॥ अनातुरम् ्। मृिा नो रुिोत नो मयस्कृश्रध क्षयद्वीराय नमसा ववधेम ते । यच्छं च योश्च मनुरायजे ेवपता तदश्याम तव रुि प्रणीतौ । मा नो मिान्तमुत मा नो अभकंव मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षक्षतम् ्। मा नोऽवधीः वपतरं मोत मातरं वप्रया मा नस्तनुविः ॥२२॥ रुिरीररषिः । मा नस्तोके तनये मा न आयुवष मानो गोषु मा नो अश्वेषु रीररषिः । वीरान्मा नो रुि भाशमतोऽवधीववष्मन्तो नमसा ववधेम ते। आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुमनमस्मे ते अस्तु । रक्षा च नो अश्रध च देव ब्रह्मथा च निः िम वयच्छद्ववर्बािः व । स्तुहि ॥२३॥ श्रुतं गतसवदं युवानं मृगन्न भीममुपित्नुमुग्रम् ्। मृिा जररत्रेरुि स्तवानो अन्यन्ते अस्मजन्नवपन्तु सेनािः । पररणो रुिस्य ितुवृणवततु परर त्वेषस्य दुमुतवतरघायोिः।

अव जस्थरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीस्तोकाय तनयाय मृिय । मीदुष्टुम शिवतम शिवो निः सुमना भव । परमेवृकूष आयुधजन्नधाय कृवत्तं ंवसान आचर वपनाकम् ्॥ २४ ॥ ववभ्रदागहि । ववककररद ववलोहित नमस्ते ेअस्तु भगविः । यास्ते ेसिस्र - ितयोन्यमस्मजन्नवपन्तु तिाः । सिस्राखण सिस्रधा बाुिवोस्तव ितयिः । तासामीिानो भगविः पराचीना मुखा कृश्रध ॥ २५ ॥

एकादिोऽनुवाकः ।।

सिस्राखण सिस्रिो ये रुिा अश्रध भूमयाम् ्। तेषा सिस्रयोजनेऽवधन्वातन तन्मशस । अजस्मन् ्
मित्यणवेऽन्तररक्षे ेभवा अश्रध । नीलग्रीवाजश्तितकण्ठिाः िवावअधिः क्षमाचरिाः । नीलग्रीवाजश्तितकण्ठा हदव रुिा उपश्रश्रतिाः । ये वृकूषेषु सजस्पचजरा नीलग्रीवा ववलोहितिाः । ये भूतानामश्रधपतयो ववशिखास: कपहदवनिः । ये अन्नेषु ववववविध्यजन्त पात्रेषु वपबतो जनान् ्। ये पथा पश्रथरक्षय ऐलबृदा यव्युधिः । ये तीथातवन ॥ २६ ॥ प्रचरजन्त सृकावन्तो तनषङ्श्रगणिः । य एतावन्तश्च भूया सश्च हदिो रुिा ववतजस्थरे । तेषा सिस्रयोजनेऽवधन्वातन तन्मशस । नमो रुिभ्यो ये पृथूरथव्यां येऽन्तररक्षे ये हदवव येषामन्नं वातो वषशवमषवस्तेभ्यो दि प्राचीदवि दक्षक्षणा दि प्रतीचीदविोदीचीदविोध्वास्वतेभ्यो नमस्ते ेनो मृियन्तु ते यंद्ववष्मो यश्च नो द्वेजेष्ट तं वो जमभेदधाशम ॥२७॥

ॐ त्र्यमबकं यजामिे सुगजन्धं ंपुजष्टवधनवम् ्। उवारुवकशमव बन्धनान्मृतूयोमुक्षवीय माऽमृतात् ्। यो रुिो अग्नौ यो अप्सुय ओषधीषु यो रुिो ववश्वा भुवनाववविे तस्मै ैरुिाय नमो अस्तु । तमु ष्टुहि यिः जस्वषुिः सुधन्वा यो ववश्वस्य क्षयतत भेषजस्य । यक्ष्वामिे सौ मनसाय रुिं नमोशभदेवमसुरं दुवुस्य । अयं मे िस्तो भगवानयं मे भगवत्तरिः । अयं मे ववश्वभेषजोऽयं शिवाशभमिनविः । ये ते सिस्रमयुतं पािा मृतूयो मत्यायव िन्तवे। तान्यज्ञस्य मायया सवानवव यजामिे । मृतूयवे स्वािा मृतूयवे स्वािा । ॐ नमो भगवते रुिाय ववष्णवे ेमृतूयुमे पाहि । प्राणानां ं ग्रजन्थरशस रुिो मा वविान्तकिः । तेनान्नेनाप्यायस्व ||

ॐ िाजन्तिः िाजन्तिः िाजन्तिः ॥

|| चमकम् ्||

प्रथमोऽनुवाकः ।।

ॐ अग्नाववष्णू ूसजोषसेमा वधन्वतु वां ंश्रगरिः । द्युमनैवाजेवशेभरागतम् ्। वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयततश्च मे प्रशसततश्च मे धीततश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतुतश्च मे ज्योततश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानिः ॥ १ ॥ च मेव्यानश्च मेऽसुश्च मे श्रचत्तं ंच म आधीतंच मे वातच मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रंच मे दक्षश्च मे बलंच म ओजश्च मे सिश्च म आयुश्च मे जरा च म आत्मा च मे तनूश्च मे िम वच मे वम वच मेऽङ्गातन च मेऽस्थातन च मेपरूवष च मे िरीराखण च मे ॥ २ ॥

द्ववतीयोऽनुवाकः ।।

ज्यैष्ठ्यं च म आश्रधपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽमभश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वररमा च मे प्रश्रथमा च मे वष्मा वच मे िाघुया च मे वृदूधं ंच मे वृदूश्रधश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च ||३ || मे धनं ं च मे विश्च मे जत्ववषश्च मे क्रीिा च मे मोदश्च मे जातं ंच मे जतनष्यमाणं ंच मे सूततं च मे सुकृतं च मे ववत्तं ंच मे वेद्यं च मे भूतं च मे भववष्यच्च मे सुगंच मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्श्रधश्च मे तलृपूतं च मे तलृजृप्तश्च मे मततश्च मे सुमततश्च मे ।।४।।

तृतीयोऽनुवाकः ।।

िचि मे मयश्च मे वप्रयं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भिं च मे श्रे्रेयश्च मे वस्यश्च मे यिश्च मे भगश्च मे िववणं च मे यन्ता च मे धतावच मे क्षेमच मे धृतृति मे ववश्वंच ।।५ । मे मिश्च मे सवाँवश्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मेलयश्च म ऋतंच मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मंच मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीघायुवत्वं च मेऽनशमत्रंच मेऽभयं च मे सुगं च मे ियनंच मे सूषा च मे सुहदनं च मे ॥ ६ ॥

चतुथोऽनुवाकः ।।

ऊच वमे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतृंच मे मधु ुच मे सजग्धश्च मे सपीततश्च मे कृवषश्च मे वृजृष्टश्च मे जैतै्रंच म औद्शभद्यं च मे रतयश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुजष्टश्च मे ववभु च प्रभु च मे बिु च मे भूयश्च मे पूण िंच मे पूणतवरं च मेऽक्षक्षततश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नंच मेऽक्षुच्च मे व्रीयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे ततलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मेगोधूमाश्च मे मसुराश्च मे वप्रयंगवश्च मेऽेणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे ॥८॥

पञ्चमोऽनुवाकः ।।

अश्मा च मे मृवृत्तका च मे श्रगरयश्च मे पवतवाश्च मे शसकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसंच मे त्रपुश्च मे श्यामंच मे लोिं च मेऽजग्नश्च म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च ।।९ ॥

मेऽकृष्टपच्यं च मे ग्रामयाश्च मेपिव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां ंववत्तं ंच मे वववत्तश्च मे भूतं च मे भूततश्च मे वसु च मे वसततश्च मे कम वच मे िजततश्च मेऽथश्चच म एमश्च म इततश्च मे गततश्च मे ॥ १० ॥

षटठोऽनुवाकः ।।

अशमश्च म इन्श्रि मेसोमश्च म इन्श्रि मे सववता च म इन्श्रि मे सरस्वती च म इन्श्रि मे पूषा च म इन्श्रि मे बृिस्पततश्च म इन्श्रि मे शमत्रश्च म इन्श्रि मे वरुणश्च म इन्श्रि मे त्वष्टा च ।। ११ ।। म इन्श्रि मे धाता च म इन्श्रि मे ववष्णुश्च म इन्श्रि मेऽजश्चनौ च म इन्श्रि मे मरुतश्च म इन्श्रि मे ववश्वे च मे देवा इन्श्रि मे पृशूरथवी च म इन्श्रि मेऽन्तररक्षंच म इन्श्रि मे द्यौश्च म इन्श्रि मे हदिश्च म इन्श्रि मे मूधा वच म इन्श्रि मे प्रजापततश्च म इन्श्रि मे ॥ १२ ॥

सप्तमोऽनुवाकः ।।

अ िंश्च मे रजश्मश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽश्रधपततश्च म उपा ंिंश्च मेऽन्तयामवश्च म ऐन्विायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आजश्वनश्च मे प्रततप्रस्थानश्च मे िक्रश्च मे मन्थी च म आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऋतुग्रिाश्च ॥ १३ ॥ मेऽततग्रह्याश्च म ऐन्िनिश्च मे वैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे मिोन्श्रि म आहदत्यश्च मे साववत्रश्च मे सारस्वतश्च मेपौष्णश्च मे पात्नीवतश्च मे िाररयोजनश्च मे ॥ १४ ॥

अटिमोऽनुवाकः ।।

इध्मश्च मे बहिश्चच मेवेहेदश्च मेश्रधजष्णयाश्च मे सुचश्च मे चमसाश्च मे ग्रावाणश्च मे स्वरवश्च म उपरवाश्च मेऽश्रधषवणे ेच मिौणकलिश्च मे वायव्यातन च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च म आग्नीध्रं च मे विवधानंव ंच मे गिृाश्च मेसदश्च मे पुरोिाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथृश्च मे स्वगाकारश्च मे ।। १५ ।।

नवमोऽनुवाकः ।।

अजग्नश्च मे धमश्चच मेऽकवश्च मे सूयश्चच मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृशूरथवी च मेऽेहदततश्च मे हदततश्च मे द्यौश्च मे ितकरीरङ्गुलयो हदिश्च मे यज्ञेन कल्पन्तामृतृच मे साम च मे स्तोमश्च मे यजुश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म ऋतुश्च मे व्रतंच मेऽिोरात्रयोवृष्वट्या बिृन्थरे च मे यज्ञेन कल्पेताम् ्।।१६।।

दिमोऽनुवाकः ।।

गभाश्चच मेवत्साश्च मे त्यववश्च मे त्र्यवी च मे हदत्यवाट् च मे हदत्यौिी मे पचश्चाववश्च मे पचचावी च मे त्रत्रवत्सश्च मे त्रत्रवत्सा च मे तुयवाट् च मेतुयौिी च मे पष्ठवाट् च मे पष्ठौिी च म उक्षा च मे विा च म ऋषभश्च

।। १७ ।। मे विच्च मेऽनड्वाचच मेधेनुश्च म आयुयज्ञेवन कल्पतां ंप्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन कल्पतां ंव्यानो यज्ञेन कल्पतां ंचक्षुयज्ञेवन कल्पता श्रोत्रंयज्ञेन कल्पतां ंमनो यज्ञेन कल्पतांवाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ंयज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ्।।१८।।

एकादिोऽनुवाकः।।

एका च मे ततस्रश्च मे पचच च मेसप्त च मे नव च म एकादि च मे त्रयोदि च मे पचचदि च मे सप्तदि च मे नवदि च म एकववंतितिश्च मे त्रयोववंतितिश्च मे पश्चववंतितिश्च मे सप्तववंतितिश्च मे नववव िततश्च म एकत्रत्र िच्च मे त्रयजस्त्र िच्च मे चतस्रश्च ।। १९ ।। मेऽष्टौ च मे द्वादि च मे षिोि च मे वविततश्च मे चतुवव व तितश्च मेऽष्टावव ाँिततश्च मे द्वात्रत्र ं ंिच्च मे षट्त्रत्रं ंिच्च मे चत्वारर ं ंिश्च मे चतुश्चत्वाररं ंिश्च मेऽष्टाचत्वारर िश्च मे वाजश्च प्रसवश्चावपजश्च क्रतुश्च सुवश्च मूधा वच व्यजन्नयश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवनश्चाश्रधपततश्च ।। १० ।।

ड्डा देवूिमनुवयज्ञवनीबृिवस्पततरुतथामदा तनि शसषद्वश्वेदेविाः सूततवाचः पृशूरथवव मातमावमा हि ाँ सीमधुव ुमतनष्ये मधु जतनष्ये मधु वक्ष्याशम मधु वहदष्याशम मधुमर्ती देवेभे्यो वाचमुद्यास िश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मा देवा अवन्तु िोभायैवपतरोऽनुमदन्तु ।।

ॐ िाजन्तिः िाजन्तिः िाजन्तिः ।।

ॐ भवाय देवाय नमिः ।	ॐ भवस्य देवस्य पत्नै नमिः ।
ॐ िवायव देवाय नमिः |	ॐ िवस्वय देवस्य पत्नै नमिः ।
ॐ ईिानाय देवाय नमिः ।	ॐ ईिानस्य देवस्य पत्नै नमिः ।
ॐ पिुपतये देवाय नमिः ।	ॐ पिुपतेदेवस्य पत्नै नमिः ।
ॐ रुिाय देवाय नमिः |	ॐ रुिस्य देवस्य पत्नै नमिः । ॐ
ॐ उग्राय देवाय नमिः ।	उग्रस्य देवस्य पत्नै नमिः । ॐ
ॐ भीमाय देवाय नमिः ।	भीमस्य देवस्य पत्नै नमिः । ॐ
ॐ मिते ेदेवाय नमिः |	मितोदेवस्य पत्नै नमिः ।
ॐ तनधनपतये नमिः ।	ॐ तनधनपताजन्तकाय नमिः |
ॐ ऊध्वायव नमिः ।	ॐ ऊध्वशवलङ्गाय नमिः |

ॐ हिरण्याय नमिः ।
ॐ सुवणायव नमिः ।
ॐ हदव्याय नमिः ।
ॐ भवाय नमिः ।
ॐ िवायव नमिः ।
ॐ शिवाय नमिः ।
ॐ ज्वलाय नमिः ।
ॐ आत्माय नमिः |
ॐ परमाय नमिः ।

ॐ हिरण्यशलङ्गाय नमिः ।
ॐ सुवणशवलङ्गाय नमिः |
ॐ हदव्यशलङ्गाय नमिः |
ॐ भवशलङ्गाय नमिः ।
ॐ िवशवलङ्गाय नमिः |
ॐ शिवशलङ्गाय नमिः |
ॐ ज्वलशलङ्गाय नमिः
ॐ आत्मशलङ्गाय नमिः ।

ॐ परमशलङ्गाय नमिः ।

एतत् ्सोमस्य सूयस्वय सवशवलङ्ग ं ंस्थापयतत पाखणमन्त्रं पववत्रम् ्।।

रिरिः ॐ सद्यो जातं ंप्रपद्याशम सद्यो जाताय वैनमो नमिः । भवे भवे नातत भवे भवस्य मांभवोद्भवाय नमिः । वामदेवाय नमो, ज्येष्ठाय नमिः श्रेष्ठाय नमो, रुिाय नमिः कालाय नमिः कलववकरणाय नमो बलववकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमिः सवभूवतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमिः ।।

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यिः ।
सवेभ्यिः सविववेभ्यो नमस्तेअस्तु रुिरूपेभ्यिः ।।
ॐ तत्पुरुषाय ववद्महे मिादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुििः प्रचोदयात् ्।।

ईशानिः सववववद्यानामीश्वरिः सवभूवतानां
ब्रह्माश्रधपततब्रह्मणोश्रधपततब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ्।।
ॐ नमो हिरण्यबािवे ेहिरण्यवणायव हिरण्यरूपाय
हिरण्यपतयेऽजमबकापतयेउमापतये पिुपतये नमो नमिः ॥
ॐ तच्छंयोरावृणीमिे । गातुं यज्ञाय ।
गातुं यज्ञपतये । दैवीस्वजस्तरस्तुनिः । स्वजस्तमानुवषेभ्यिः ।

ऊध्व िंजजगातु भेषजम् ्। िं नो अस्तु द्वपदे । िं चतुष्पदे ।।

ॐ िाजन्तिः िाजन्तिः िाजन्तिः ॥

जगदिी - आरती

ॐ जय जगदिी िरे, स्वामी जय जगदिी िरे ।

भतत जनन के संकट, क्षण में दूरू करे	ॐ जय...
जो ध्यावे ेफल पावे, दुखु ववनसेमन का,	दुखु ववनसे ेमन का
स्वामी सुख समपतत घर आवे, कष्ट शमटे तन का ।। ।	ॐ जय...
मातु वपता तुम मेरे, िरण गिूाँ ककसकी,	स्वामी िरण गिूाँ ककसकी ।
तुम त्रबन और न दूजूा, आस करूाँ ककसकी ।।	ॐ जय..
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तयामवी, .	स्वामी तुम अन्तयामवी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।।	ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकता व	स्वामी तुम पालनकताव।
म ैंमूरख खल कामी, कृपा करो भताव।।	ॐ जय....
तुम िो एक अगोचर, सबके प्राणपती,	स्वामी सबके प्राणपती ।
ककस ववश्रध शमलूाँ दयामय, तुम सेम ैंकुमती ।	ॐ जय...
दीनबन्धु ुदुखिुता,व तुम रक्षक मेरे,	स्वामी तुम रक्षक मेरे ।
अपनेिाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।।	ॐ जय...
ववषय ववकार शमटाओ, पाप िरो देवा,	स्वामी पाप िरो देवा ।
श्रद्धा भजतत बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।।	ॐ जय....

शिव- आरती

जय शिव ओंकारा, िर जय शिव ओंकारा ।

ब्रह्मा ववष्णु ुसदाशिव अधाङ्वगी धारा ।। जय शिव ....

एकानन चतुरानन, पचचानन राजै,ै शिव पचचानन राजै ै।

सिासन गरुिासन, िंसासन गरुिासन, वृषृभासन साजै ै॥

जय शिव…

दो भुज चार चतुभुजव, दिभुज ते सिौ, शिव दिभुज ते सिौ ।

तीनों रूप तनरखता, तीनों रूप तनरखता, त्रत्रभुवन जन मिौ ।

जय शिव....

अक्षमाला वनमाला, रुण्मिालाधारी, शिव रुण्मिालाधारी ।

चन्दनमृगृमद चन्दा, चन्दनमृगृमद चन्दा, भाले िुभकारी ।।

श्वेतामबर पीतामबर, बाघमबर अङ्गेशिव बाघमबर अङ्गे े।

जय शिव...

सनकाहदक प्रभुताहदक, सनकाहदक प्रभुताहदक, भूताहदक सङ्गे॥

कर मध्ये करमण्लि चक्र त्रत्रिूल धताव, शिव चक्र त्रत्रिूल धताव।

जगकता वजगभता,व जगकतावजगभता,व जग का संतिा व।

जय शिव ....

ब्रह्मा ववष्णु ुसदाशिव जानत अववववेका, शिव जानत अववववेका ।

प्रणव अक्षरनु मध्ये, प्रणव अक्षरनु मध्ये, ये तीनों एका ॥

त्रत्रगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै,

जय शिव...

कित शिवानन्द स्वामी, मनवाजचछत फल पावै ै॥

जय शिव....

शिव जो कोई नर गावै ।

जय शिव….